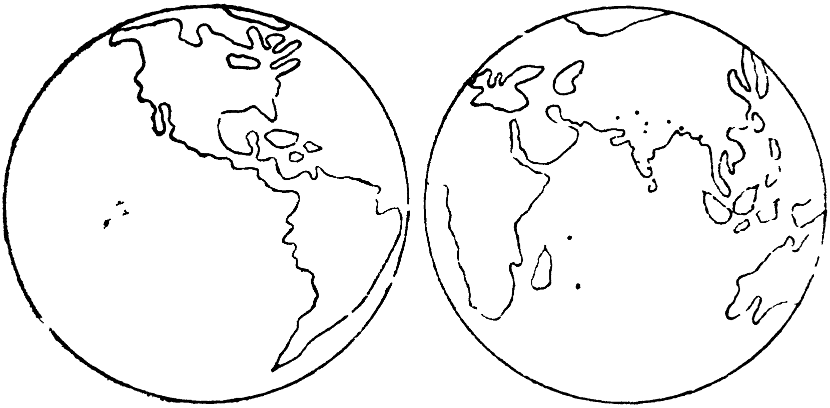
ओ३म्

ज्येष्ठ शुक्ला १

दयानन्द-अब्द १०३

भूमण्डल

मई 1926



कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥ वेद ॥

सम्पादक नारायण स्वामी

सहायक सम्पादक— डा० केशवदेव शास्त्री M. D.
प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री M. A.

वार्षिक मूल्य २)

एक प्रति का मूल्य =)

विदेश से ३॥)

विषय सूची

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त्तीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

सार्वदेशिक

वर्ष १ | ज्येष्ठ १ सम्वत १९८४ वि० | अङ्क २

मई १९२७ ई०] [दयानन्दाब्द १०३

नवजीवन-उत्पादक वैदिक शिक्षायें

लेखक—श्री० डाक्टर केशवदेव शास्त्री

भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति का प्रधान अङ्ग ब्रह्मचर्य की शिक्षा था। ब्रह्मचर्य पर ही संस्कारों का आधार था। ब्रह्मचर्य पर ही योग की ऋद्धि सिद्धियों का दारोमदार था। समय था जब विश्वासपूर्वक ऋषि महर्षि ब्रह्मज्ञान के जिज्ञासुओं को ब्रह्मचर्य के धारण करने और तदन्तर प्रश्नों के उत्तर मांगने का आदेश दिया करते थे। समय की निराली गति ने भारत वर्ष के निवासियों की वह दुर्दशा की कि जहां नित्यप्रति लोग ब्रह्मचर्य के गीत गाते थे, वही बाल विवाह का शिकार बन रहे हैं। सुश्रुत में बताया है कि यदि २५ वर्ष से न्यून आयु का पुरुष और १६ से न्यून वर्ष की कन्या विवाह करेंगे तो प्रथम तो कुक्षि में ही गर्भ की हानि होगी। यदि बालक उत्पन्न हो भी जावे तो चिरकाल पर्य्यन्त जीवेगा

नहीं और यदि जीता भी रहा तो दुर्बलेन्द्रिय होगा।

पाठक गण! विचारिये, आज हमारी क्या स्थिति है? क्या लाखों बालक बालिकायें शिशु जीवन धारण कर मर नहीं रहे और यदि जीते भी हैं तो करोड़ों नर नारी दुर्बलेन्द्रिय बन रोगों में ग्रसित दिखाई देते हैं। कितनी बार हम लोगों ने इन जातीय त्रुटियों पर आंसू बहाये हैं परन्तु निदान ही जब भूल युक्त हो तो लाभ की आशा कैसे हो सकती है?

वेद ने तो स्पष्ट कहा है कि:—

ब्रह्मचर्य्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।
अनड्वान् ब्रह्मचर्य्येणाश्वो घासं जिघीर्षति॥

गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का अधिकार केवल ब्रह्मचारी पुरुष और ब्रह्मचारिणी कन्या को ही प्राप्त है।

शाकभोजी बैल और घोड़े ब्रह्मचर्य की शक्ति द्वारा बोझ को खींचते और विजय को प्राप्त करते हैं। जब पशु ब्रह्मचर्य के द्वारा बल प्राप्त करते हैं तो मनुष्य ब्रह्मचर्य की महिमा से कितनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति कर सकते हैं, इसका कोई परिमाण नहीं। वेद में तो दर्शाया है कि कोई राजा योग्य व्यक्ति बन उत्तमता से राज्य भी नहीं कर सकता जो पूर्ण ब्रह्मचारी न हो। यथा:—

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति!
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते॥

ब्रह्मचर्य और तपस्या द्वारा राजा राज्य की विशेष रीति से रक्षा करता है और आचार्य्य ब्रह्मचर्य द्वारा ब्रह्मचारी की इच्छा करता है। राजा स्वयम् ब्रह्मचारी तथा तपस्वी होना चाहिये तभी उसमें रक्षक की क्षमता उत्पन्न हो सकती है।

जो महात्मा आचार्य बनना चाहे उसे प्रथम स्वयम् ब्रह्मचारी बनना उचित है। ब्रह्मचर्य की वृत्ति से वह मेधावी बन ब्रह्मज्ञान का उपदेश कर सकता है।

ब्रह्मचर्य का किसी समय इतना प्रचार था कि इस देश में आने वाले महापुरुषों ने इस शिक्षा का प्रचार सर्वत्र भूगोल में कर दिया था। आर्यों का तो ब्रह्मचर्य में यहां तक विश्वास था कि प्रत्येक तपस्वी ब्रह्मचर्य को धारण करता और मृत्यु पर विजय पाने की कामना किया करता था। अथर्ववेद के इसी अध्याय में वर्णित है कि—!

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्यु मुपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्॥

ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा देवों ने मृत्यु को नष्ट कर दिया। ब्रह्मचर्य द्वारा ही इन्द्र देवों के लिए सुख लाया है। वेद में एक सौ वर्ष पर्यन्त जीने का आदेश मिलता है। आत्मा सुखी तभी रहता है जब इन्द्रियाँ स्वस्थ हों जब सौ वर्ष पर्यन्त वह सबल रहकर अपने अपने कर्त्तव्य का यथोचित पालन करें। क्योंकि जीवात्मा ब्रह्मचर्य के द्वारा ही इन्द्रियों को सुखी बना सकता है। स्वस्थ स्त्री पुरुष ही आनन्द मय जीवन का उपभोग कर सकते हैं।

इस प्रकार वेद में ब्रह्मचर्य की महिमा पर अनेक वेद मन्त्रों द्वारा उपदेश दिया गया है। ब्रह्मचर्य की अवधि २४, ३६ और ४८ वर्ष पुरुषों के लिए और ३६ १८ और २४ वर्ष स्त्रियों के लिए बतलाया गया है।

४८ वर्ष का ब्रह्मचर्य उत्तम बताया है २५ वर्ष का निकृष्ट परन्तु हम हैं कि अपने बालक बालिकाओं को २४ और १६ वर्ष की आयु तक पहुंचने ही नहीं देते कि उनके विवाहों की चिन्ता करने लगते हैं। वेदानुसार तो वर कन्या को

पारस्परिक स्वयम्वर रीति द्वारा विवाह की आज्ञा है। आज पौराणिक संस्कारो में फंसी हुई आर्य सन्तान वर और कन्या के अधिकार छीन माता पिता को विवाह का अधिकार दिये बैठे हैं। अनपढ़ पठान ब्रह्मचर्य द्वारा हृष्ट पुष्ट सन्तान पैदा कर सकते हैं परन्तु वेदों के मानने वाले आर्य दुर्बलेन्द्रिय बन अपने शरीरों को बोदा और निकम्मा बना रहे हैं। आवश्यकता है कि आर्य नरनारी वेद की ब्रह्मचर्य सम्बन्धी शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दें और अपने अन्दर विश्वास धारण करें कि ब्रह्मचारी अमोघ वीर्य होता है। ऋतुगामी गृहस्थी जब चाहें गर्भाधान कर सन्तानोपन्न कर सकते हैं। इस लिये ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी बन वह अपने शरीरों को सुदृढ़, सबल और हृष्ट पुष्ट रखें ताकि उनमें सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हो और वह निरन्तर स्वस्थ चित्त हो एक सौ वर्ष पर्यन्त स्वाधीन और आनन्दमय जीवन को धारण कर सकें।

स्वप्नावस्था को उपयोगी बनाओ

(ले०—श्री नारायणस्वामी जी महाराज)

वेद में लिखा है कि "यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति" (यजुर्वेद ३४।१) जिसका भाव यह है कि मस्तिष्क जिस प्रकार जागृत-अवस्था में काम किया करता है उसी प्रकार स्वप्नावस्था में भी। मुख्य मस्तिष्क, जिस में इच्छाशक्ति निवास करती है, जाग्रत-अवस्था में काम करता रहता है परन्तु दूसरा मस्तिष्क, जिसका संबन्ध अनिच्छित कार्य्यों से है, और जिसे उपचेतना (Sub-conscious mind) भी करते हैं, स्वप्नावस्थामें काम किया करता है। दूसरे मस्तिष्कका संबन्ध शरीर के समस्त कर्म से संबन्ध रखनेवाली मांसपेशियों से है। अतः दूसरे मस्तिष्क प्रभावित करदेने से मनुष्य का समस्त कार्मिक जीवन प्रभावित हो जाता है। मनुष्य किस प्रकार अपने दूसरे मस्तिष्क को प्रभावित कर सका है उस के कतिपय साधन यहां बतलाये जाते हैं:—

(१) कुछ एक अभ्यासों द्वारा, जिनके यहां विवरण देने की जरूरत नहीं है, यत्न करके ऐसी अवस्था ले आनी चाहिए जो जागने और सोने के बीच की अवस्था है। उस अवस्था में मनुष्य के उच्चारण किए गये प्रत्येक शब्द का प्रभाव उसके दूसरे मस्तिष्क पर पड़ जाया करता है, जबतक यह अभ्यास न हो सके उस समय तक एक दूसरा प्रकार भी है जिस से मनुष्य, उपर्युक्त अभ्यास के किये बिना भी, थोड़ा बहुत काम चला सका है। वह प्रकार यह हैं:—

(२) जब समस्त कार्य्यों से निश्चिन्त होकर मनुष्य सोने के लिए अपने सोने के कमरे में प्रवेश करे और शान्ति के साथ शय्या पर लेट जावे उस समय दिन के समस्त कार्यों से चित्त हटा कर शरीर को शिथिल करके नींद लाने की चिंता करता हुआ अपने चित्त को उस प्रकार के भावों से भर लेवे और उन का बार २ स्मरण करता रहे जैसा वह अपने को बनाना चाहता हो। यदि इन्हीं भावों से पूर्ण हृदय होकर वह सो जायगा तो ये भाव रात्रि भर काम

करने रहेंगे और मस्तिष्क को प्रभावित कर देंगे।

(३) मनुष्य को आम तौर से अपनी अवस्था को उच्च बनाने के लिए आवश्यक है कि सोते समय यत्न करें कि:—

(क) उदासीनता के प्रभाव उस समय बाकी न रहें।

(ख) किसी प्रकार का क्रोध, ईर्ष्या द्वेष उस के हृदय में न रहे।

(ग) विषय भोग के विचार, मन में न आने पावें।

(घ) प्रसन्नता और शान्ति के भाव अधिक से अधिक मात्रा में जागृत होजावें।

यदि चित्त के विक्षिप्त अथवो अत्यन्त चंचल होने से उपर्युक्त यत्न में सफलता न हो तो सोने वाले को यत्न करना चाहिए कि कोई अच्छा जीवन चरित्र कोई अच्छा शिक्षाप्रद पुस्तक पढ़ना शुरू करे और उन्हीं को पढ़ता २ सोजावे।

(४) अथवा अपने या अन्यों के किये हुए ऐसे कार्य्यों का स्मरण करता हुआ सोवे जो अच्छे उपयोगी और संसार के हर्ष समुदाय के वृद्धि कारक हों।

(५) यह बात एक वार नहीं अपितु अनेक बार अनुभव में आचुकी है कि सोते समय रोगों के विरुद्ध विचार कर के एक रोगी अपने रोग को भी दूर कर सका है।

(६) जो लोग भूत प्रेत के काल्पनिक भय से भयभीत रहा करते हैं वे भी सोते समय भूत प्रेत की कल्पनाओं के विरुद्ध मानसिक आन्दोलन करके इस भय से मुक्त होसकते हैं।

(७) बच्चों का दूसरा मस्तिष्क अपने कार्य्यों में बहुत फुरतीला और चुस्त हुआ करता है इसलिए उन के रोगों की चिकित्सा बहुत सुगमता से, बिना किसी औषधि के, रोग के विरुद्ध उन के मस्तिष्क में आन्दोलन उत्पन्न करा देने मात्र से, होसकती है। जो बच्चे पढ़ने में सुस्त और हतोत्साही होते हैं उन की यह कुटेव भी उपर्युक्त प्रकारसे से दूर हो-सकती है।

मनुष्यों के भीतर में दूसरे मस्तिष्क की अपूर्व शक्ति मौजूद है, जिस के द्वारा काम न लेने से वे अनेक सुफलों और सौभाग्यों से वंचित रहते हैं, और काम लेने से पुरुषार्थ के प्रत्येक विभाग में बड़ी से बड़ी सहायता पहुंचा सकते हैं। यदि इस मस्तिष्क से, काम लाने की ओर ध्यान न दिया जावे और उपर्युक्त साधनों में से भी किसी से काम न लिया जावे तो यह नहीं होसकता कि दूसरा मस्तिष्क काम न करे। वह तो अपना काम करेगा, जैसा कि सदैव करता ही रहता है। ऐसी दशा में विचारणीय बात यह होगी कि इस अवस्था में इस मस्तिष्क के कार्य्यों का आधारभूत क्या होगा? प्रश्न का उत्तर सुगमता से दिया जासकता है और वह यह है कि जो बातें सोते समय अनायास हमारे ध्यान में आ-जावेंगी अथवा उस समय जो बातें बिना सोचे समझे हमारी जुबान से निकल जावेंगी वे ही दूसरे मस्तिष्क के स्वप्नावस्था के कार्य्यों का केन्द्र बनेंगी। जिन नवयुवकों को स्वप्नदोष होने लगता है, खोज करने से पता चलता है कि उन में से कई ऐसे होते हैं जो सोते समय विषय भोग का स्मरण करते हुए सोजाया करते हैं। भयानक परिणाम उस का स्वप्नदोष के रूप में उन के सामने आजाता है, परन्तु वे अज्ञानवश यह नहीं समझते कि अपने शरीरों में इस घुन के लगाने का कारण स्वयमेव वे हैं। यहां एक बात और भी समझ लेनी चाहिए कि जो शब्द हम उच्चारण किया करते हैं उन्हें दूसरे लोग तो पीछे सुनते हैं, सब से पहिले वे उच्चारण कर्त्ता के ही कान में पहुँचा करते हैं। हमारे शब्दों का, जिस प्रकार का, प्रभाव दूसरों पर पड़ा करता है उसी प्रकार का उन का असर हम पर भी हुआ करता है। हम कुछ बातें तो इरादा करके किया करते हैं परन्तु

कुछ शब्द बिना इरादे के भी हमारी जुबान से निकला करते हैं। जैसे किसी को यह बुरा अभ्यास होगया है कि वह बात २ पर बात चीत करते हुए अपशब्द (गाली) मुंह से निकाला करता है इस का नतीजा यह निकलता है कि इन का प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ने से उस का स्वभाव सदा के लिए दूषित होजाता है। ये दो बातें उदाहरण के तौर पर यहां दी गईं। इसी प्रकार अनेक अच्छी और बुरी बातों का प्रभाव, मनुष्य के विचार और आचार के अनुसार, उस पर पड़ा करता है और उसी के अनुकूल अच्छा या बुरा उसका भविष्य बनता रहता है। निष्कर्ष यह है कि दूसरे मस्तिष्क (Sub-conscious Mind) की शक्ति समझ कर उसे काम में लाकर अपने स्वप्नावस्था को जागृतावस्था की सदृश उपयोगी बना सकते हैं।

———:o:———

मद्रास में वैदिक धर्म का प्रचार

मंगलौर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव गत १५ से १७ अप्रैल तक बड़े समारोह के साथ हुआ। १३ ता० को प्रातः समुद्र तट पर ८४ सज्जनों ने समाज में प्रवेश किया और उन्हें श्रीयुत धर्मदेव विद्यावाचस्पति ने गायत्री उपदेश देकर यज्ञोपवीत दिये। १५ ता० को प्रातः बड़े हवन के पश्चात् पं० धर्मदेव जी ने प्रार्थना कराकर 'निर्भयता की प्राप्ति का उपाय' इस विषय पर वेद मन्त्रों की व्याख्या करते हुए कर्णाटक भाषा में उपदेश दिया। अनन्तर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती जी का कर्णाटक भाषा में व्याख्यान और हिन्दी में भजन हुए और मन्त्री द्वारा समाज के कार्य की रिपोर्ट पढ़े जाने के बाद प्रातःकाल की कार्य्यवाही समाप्त हुई। सायं ४ बजे से 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली' के विषय में मलाबार से आमन्त्रित साधु शिव प्रसाद, श्रीयुत गङ्गोली कृष्णराव B. A L. L. B. श्रीयुत कर्नाड सदाशिवराव B. A. L L. B. श्रीयुत कृष्ण भट्ट B. A. B. L. हाईकोर्ट वकील तथा पं० धर्मदेव जी के शिक्षाप्रद मनोरञ्जक व्याख्यान सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत श्रीनिवास पई B. A. B. L. के सभापतित्व में हुए और अन्त में यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ।

"This meeting of the citizens of Mangalore assembled in the Samaj Mandir on the occasion of the Arya Samaj anniversary, desires to place on record its homage to the memory of Shri Swami Shraddhananda ji, the founder of the Gurukula at Hardwar and sympathy with the objects of the noble institution and to convey its congratulations to the authorities of the Gurukula on its Silver Jubilee. This meeting further records its opinion that in the best interests of our District, it is necessary to start a branch of the

Gurukula and spread its creed in the District."

इसके पश्चात् बड़ी धूमधाम के साथ आर्य समाज मन्दिर से नगर कीर्त्तन करता हुआ जलूस निकला जिसमें ३ भजन मण्डलियां थीं। मध्य में देवियों की भजन मंडली थी जिसकी नायिका श्रीमती विद्यावती जी थीं। 'दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे' 'सिर जाए तो जाए मेरा वैदिक धर्म न जाए' आदि इत्यादि जोशीले भजन गाये गये। ?०० के करीब प्रतिष्ठित सज्जन तथा देवियां जलूस में शामिल थीं। इसका नगरवासियों पर स्थायी प्रभाव पड़ा।

१६ ता० को प्रातः पं० शान्तिस्वरूप जी विद्यालङ्कार का वेदोपदेश और साधु शिवप्रसाद जी आर्य मिशनरी मालाबार का वैदिक धर्म पर बहुत ही ओजस्वी भाषण हुआ।

सायं ४॥ बजे से पं० शान्तिस्वरूप जी विद्यालङ्कार के सभापतित्व में राष्ट्रभाषा (हिन्दी सम्मेलन) बड़ी उत्तमता से हुआ जिसमें नगर के अत्यन्त प्रतिष्ठित सज्जनों यथा राय बहादुर सुब्बाराव भू० डिस्ट्रिक्ट बोर्ड प्रेसीडेन्ट, श्रीयुत कर्नाड सदा शिवराव B. A. L L. B. श्रीयुत भण्डार कर B. A. B. L. हाईकोर्ट वकील, श्रीयुत पुरुषोत्तम नायक बी. ए. इत्यादि के भिन्न २ प्रस्तावों पर हिन्दी में भाषण हुए। श्रीमती विद्यावती देवी जी द्वारा शिक्षित श्रीमती पद्मावती जी और ब्रह्मचारिणी सीता देवी के हिन्दी व्याख्यानों को और ब्रह्मचारिणी सरोजिनी तथा भवानी के संस्कृत हिन्दी भजनों को जनता ने बहुत ही पसन्द किया। अन्त में पं० शान्तिस्वरूप जी ने लोगों के उत्साह की प्रशंसा करते हुए कहा कि सारे मद्रास प्रान्त में ऐसा हिन्दी प्रेम मुझे कहीं दिखाई नहीं दिया यह साफ तौर पर पं० धर्मदेव जी तथा उनकी धर्मपत्नी के सराहनीय परिश्रम का परिणाम है। इस अधिवेशन के समय तथा अन्य अवसरों पर देवियों की भजन मण्डली ने हिन्दी के मनोहर भजन गाये।

१७ ता० प्रातः मंगलौर आर्यसमाज के ही इतिहास में ही नहीं बल्कि सारे दक्षिण भारत के वर्तमान धार्मिक इतिहास में नया एक कार्य किया गया। इस अवसर पर श्रीयुत धर्मदेवजी ने आचार्य और श्रीमती विद्यावती जी ने आचार्या का कार्य किया और १५ कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार कराया। यज्ञोपवीत देने से पूर्व उन से प्रतिदिन सन्ध्या करने, सत्य बोलने, मांस मत्स्यादि का कभी भूलकर भी सेवन न करने इत्यादि विषयक प्रतिज्ञाएं सब के सम्मुख कराई गईं। इस संस्कार की कार्य्यवाही अत्यन्त गम्भीर, पवित्र और प्रभावोत्पादक थी। सायंकाल ४॥ से लगभग ८। तक कर्नाटक प्रान्त के सुप्रसिद्ध नेता श्रीयुत कर्नाडसदा शिवरावजी B. A. L. L. B. के सभापतित्व में समाजसुधार सम्मेलन हुआ। आर्यसमाज का विशाल मन्दिर सब जातियों के प्रतिनिधि सज्जनों और देवियों से खचाखच भरा हुआ था। श्रीयुत रामचन्द्राचार्य M A. B L, श्रीयुत पुत्तुर संजीव M. A. B. L श्रीयुत भण्डारकर B. A. LL B, श्रीयुत राम चन्द्र राय बी. ए. साधु शिवप्रसाद इत्यादि और श्रीमती मनोरमाबाई B. A. L T श्रीमती ललिता बाई इत्यादि देवियों के बालविवाह, जातिभेद अस्पृश्यता, दहेज प्रथा, अनावश्यक खर्च इत्यादि के विरोध में बड़े ही प्रभावशाली भाषण हुए। कार्य्यवाही लम्बी होने पर भी श्रीमती विद्यावती जी तथा उनकी शिष्याओं के मनोहर भजनों के कारण बड़ी मनोरञ्जक बनी रही। बालविवाह के समर्थकों के उत्तर में श्रीयुत धर्मदेव विद्यावाचस्पति के भाषण को जनता ने बहुत ही पसन्द किया। अन्त में धन्यवाद आदि देने के पश्चात् शान्ति पाठ के साथ उत्सव को समाप्त किया गया।

माधवराव B. A. B. L.

मंत्री आर्यसमाज मंगलौर।

— ——:o:———

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा-देहली

मास मार्च का कार्य विवरण

प्रचार विभाग

देहली खास और प्रान्त :—

म० कर्मचन्द जी उपदेशक सभा ने निम्न-स्थानों पर प्रचार किया :—

पहाड़ी गली, सबजी मण्डी, कौटला. तालाब शाह जी, सराय मोर, सिविल लाइन, किन्स वे, शहादरा, देहली गेट, रामा थियेटर, नई बस्ती, सलीमपुर, श्रद्धानन्द बाजार, गन्दा नाला, कश्मीरी गेट, तेलीवाड़ा, फराशखाना, कलां मसजिद, मोरीगेट कदमशरीफ, मेला बुढ्ढो माता पर प्रचार, बी० बी० एण्ड सी० आई० के क्वार्टर।

२. म० प्रकाश मुनि जी द्वारा वजीराबाद, पचकुइया, सुनहरी बाग, ईदगाह, पहाड़ गञ्ज, बारह खम्बा, तुर्कमान गेट, पुरानी ईदगाह मुल्तानी ठांडा, तेली वाड़ा, करौली बाग, सबजी मण्डी, नरौला, भोगलपुर, चिराग दिल्ली, महरौली, गुड़ की मण्डी, पहाड़ी धीरज, बिल्ली मारान आदि में प्रचार हुआ।

३. पं० छेदीलाल जी व पं० भोलासिंह जी उपदेशक द्वारा दिल्ली आर्यनगर, मुल्तानी ठांडा, मानिकपुरा, करौल बाग, मेला बुढ्ढो माता पर प्रचार हुआ।

४. बाज़ार सीताराम में सासियों की समाज तथा तिमारपुर में बाल्मीकी समाज स्थापित की गई।

गुड़गांव प्रान्त :—

१. म० कर्मचन्द जी ने भीखी, भढौली, काशी पुर, फाटक नगर, हसनपुर, अथवा ग्राम कुशक नाई का नगला आदि में प्रचार किया। इन ग्रामों में मेहतर ईसाइयों के प्रभाव में थे। प्रचार होने से सारों ने चोटियां रखी। काशीपुर में ईसाइयों से शास्त्रार्थ हुआ, जिसका असर बहुत अच्छा रहा।

२. म० छेदीलाल जी उपदेशक भोलासिंह जी भजनीक द्वारा असावटी, फरीदाबाद, खेड़ी, बतमादपुर, नीम का, बरौली मचघर, बल्लभगढ़, पलवल, आल्हापुर आसावटा, खेड़ा, अहरामा, चिराबटी आदि में प्रचार हुआ।

रोहतक व हिसार प्रान्त :—

१. म० नानकचन्द जी द्वारा देवसर, हिसार, कैरूं, वजीना, भिवानी, भरड़, रोहतक, हांसी, अमरा, मंगाली, सुल्तानपुर, जमालपुर, बवानी, बलियाली मुरबना, क्रोड़ आदि में प्रचार हुआ। ग्राम अमरा में समाज स्थापित की।

भिवानी में २५-३-२७ की शाम को दो मुसलमान पल्लेदारों ने एक धानुक पल्लेदार को पीट डाला। जिससे शहर में सनसनी फैल गई। नियमानुसार रिपोर्ट की गई, परन्तु पुलिस ने बुरा बर्ताव किया।

२. म० मौजीराम जी ने गोहाना, जनुआं भटगांव, खांडा, झटौत, सचाना, भौरड़, हुमायूं पुर, सूनीपत, संभालका, माँडी जागन, सफेहूं, अजायब, नदौना फरमाना जलाना आदि में प्रचार किया।

३. म० भजनानन्द जी ने हुमायूंपुर, रोहतक, सलाना, भिवानी, भौरड़, असौध, बादात में प्रचार किया।

४. आत्मानन्दजी ने सांपला, दतौड, माधरा, अटायल, मसामा, भौरड़ आदि स्थानों में प्रचार किया।

बुलन्दशहर प्रान्त :—

१. श्री प्रकाशमुनि ने अगोरा हीरापुर, करौरा परखना और खुर्जा में प्रचार हुआ।

२. चौ० गोकुलचन्द जी ने दनकौर, सिकन्दराबाद, दादरी, कुवरसेना धमरावली, चूहरा, ध्वासपुर, मामन आदि में प्रचार किया।

३. म० डालचन्द जी द्वारा मुंडाखेरा, बलराव दीघ्री अछजा कुंवरसेना, धर्पा, पसेडां, रनुआ आदि स्थानों में प्रचार हुआ।

सिकन्दराबाद—में मेहतरों को जन्म मृत्यु की रिपोर्ट देने की शिकायत बहुत दिनों से चली आती है। इसकी रिपोर्ट वहां की कमेटी तथा डिस्ट्रिक्ट सुपरिंटेण्डेण्ट पुलिस को भी जा चुकी हैं, परन्तु अभी स्थिति संभली नहीं है पत्र व्यवहार जारी है।

धर्पा—ग्राम में २७ मार्च को कान्फ्रेन्स हुई जिसमें आस पास के ग्रामों के ५०० प्रतिनिधि शामिल थे। बहुत से उपयोगी तथा अच्छे व्याख्यान हुए तथा जिमीदारों ने उनको तंग न करने और धर्म पर दृढ़ रहने का आदेश दिया।

मेरठ प्रान्त :—

मेरठ प्रान्त के पिलखुआ स्थान में म० कर्मचन्द जी ने प्रचार किया।

अलीगढ़ प्रान्त :—

म० विश्वम्भरनाथ जी कपूर उपदेशक ने निम्न स्थानों पर प्रचार किया। लाला नगला, टकनगला, रमनपुर, नाई नगला, खनदारी गढ़ी, गर्बापुरकलां आदि।

नाईनगला—सभा के प्रचार तथा पाठशाला के उन्नत अवस्था में चलने से मास्टर पोलूश जो कि वहां के ईसाई स्कूल का मास्टर है बहुत जलता है। उसने गतमास में जलकर सभा की पाठशाला में बालकों को छेड़ा और झूठ मूठ की रिपोर्ट कलेक्टर जिला को करदी जिस में उसने हमारी पाठशाला के अध्यापकों पर उनके बच्चों को मारने और बाइबिल फाड़ने और बर्तन उठाने का दोषारोपण किया। सभा की ओर से नियमानुसार कार्यवाही कीगई है। स्थानीय अधिकारी ईसाइयों का पक्ष लेते होते प्रतीत हैं अधिकारियों ने हमारे अध्यापकों को बुलाकर धमकाया और पाठशाला जिस मकान में है उस के मालिक मकान को मकान छुड़वाने के लिए मजबूर किया यहांतक कि मालिक मकान जाटव से दबाकर अर्जी इस विषय की कि मकान खाली कर दिया जाय, लिखाली। पाठशाला जारी है। जिलाधीश तथा प्रान्तीय सरकार से पत्र व्यवहार होरहा है। इस की रिपोर्ट विस्तृत रूप से जनता की जानकारी के लिए पहले प्रकाशित होचुकी है।

पीलीभीत प्रान्त :—

पीलीभीत के चमार व महतर विधर्मी होगए थे। समाचार मिलने पर सभा ने म० कर्मचंद जी को वहां भेजा एक सप्ताह प्रचार हुआ जिस से सब लोग स्वधर्म में आगए।

मद्रास प्रचार :—

मद्रास में म० (M. J. Sharma.) प्रचार कर रहे हैं। थोड़े दिन का ज़िक्र है कि वहां मद्रास में पुलिस मैन नं० ६६९ ने एक ब्रह्मचारी को मारा और M. J. Sharma को गालियां दीं और दोनों को थाने में लेगया। जिस का अभियोग चला। मैजिस्ट्रैट ने केस ख़ारिज कर दिया वहां कार्य खूब होरहा है

संयुक्त प्रान्तीय जरायम पेशा कौमें

सभा ने १०२४ के नवम्बर में संयुक्त प्रान्तीय सरकार से जरायम पेशा कौमों के सुधार आश्रम से अपने हाथ में लेने के लिए पत्र व्यवहार किया था जिस का सरकार ने कोई सन्तोष जनक उत्तर नहीं दिया था। अब प्रान्तीय कौंसिल में रायबहादुर ठा० हनूमानसिंहजी के इस संबन्ध में प्रस्ताव पर वादविवाद करके सभा ने पुनः संयुक्त प्रान्तीय सभा से पत्र व्यवहार किया जो इस समय सरकार के विचाराधीन है।

शिक्षा विभाग :—

शिक्षा का कार्य पूर्ववत जारी है। सभा की ३० पाठशालायें भिन्न २ जिलों में जारी है। गतमास स्कूलों में स्काउटिंग शिक्षा के लिए बुलन्दशहर स्थान में यू. पी. स्काउटिंग एसोसियेशन मंत्री म० रामा शंकर जी द्वारा अध्यापकों को शिक्षा दीगई।

सभा यत्न कर रही है कि दलित बच्चों को शिल्प शिक्षा के लिए खुर्जा में शिल्प विद्यालय खोला जावे। सरकार ने ९६०) सालाना तथा १५) सामान के लिए सहायता देना स्वीकार कर लिया शीघ्र ही स्कूल खोला जायगा।

आर्य नगर :—

के बनने की तैयारियां होरही हैं। मंदिर के चित्र स्वीकृत होकर शीघ्र बनना जारी होजायगा। नगर में दो विशेषता होंगी। प्रथम भाइयों की शिक्षा द्वितीय उपसंस्कार सुधार और सत्संग लिए मंदिर का निर्णय होगा। इस के लिए रुपये की अति आवश्यकता है दानी महानुभावों को धन भेज कर सहायता देनी चाहिए।

मंत्री श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा

देहली।

आर्य वीरदल का संगठन

आर्य महानुभाव अपनी २ सम्मति दें

(ले०—इन्द्र विद्यावाचस्पति स० मन्त्री आर्यसार्वदेशिक सभा दिल्ली)

आवश्यकता

आर्य सार्वदेशिक सभा ने निश्चय किया है कि देश भर में एक आर्य वीर दल का संगठन किया जाय, और मेरे सुपुर्द यह सेवा की है कि मैं आर्य जनता के सम्मुख दल की आवश्यकता रख कर, उन से सम्मति मांगूं। इस समय आर्य वीरदल के संगठन की परम आवश्यकता है। बहुत से कार्य हैं, जो ऐसे संगठन के न होने से अधूरे पड़े हुए हैं, या उनकी पूर्ति का कोई यत्न नहीं हो सकता।

आर्यसमाज जैसी जीवित सोसायटी के पास सेवकों की सेना का अभाव आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। बहुत से ऐसे अवसर बतलाये जासकते हैं जब आर्यसमाज को केवल इस लिए कि उस के स्वयं सेवकों की शिक्षित सेना नहीं है या तो कार्य क्षेत्र में आने से रुकना पड़ा, या दूसरों का सहारा लेना पड़ा। ऐसे अवसरों में से कुछ का निर्देश यहां करता हूं।

(१) आर्यसमाजों के उत्सवों पर अपने स्वयं सेवकों का प्रबन्ध नहीं होता। आर्यसमाज जैसी शक्ति शालिनी संस्था को दूसरी सेवा सम्मतियों से स्वयं सेवक मांगने पड़ते हैं। कभी नहीं मिलते तो साधारण से प्रबन्ध के लिए जनता से अपील करनी पड़ती है।

(२) यह तो हुई प्रतिदिन की बात। विशेष अवसरों पर शिक्षित स्वयं सेवकों का अभाव और अधिक अखरता है। मथुरा में श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी हुई। उस में देश देशान्तर से लाखों आर्यपुरुष एकत्र हुए। बड़ा भारी प्रबन्ध था, परन्तु जिस वस्तु का अभाव अनुभव होता था, वह थे आर्य स्वयं सेवक। शिक्षित स्वयं सेवकों के न होने से जो जो दिक्कतें पेश आईं, उन्हें वह लोग जानते हैं जो उस महोत्सव में शामिल हुए थे।

(३) गुरुकुल कांगड़ी का महोत्सव प्रति वर्ष होता है। उस पर पन्डाल में बार बार स्वयं सेवकों के लिए अपील करनी पड़ती है। परन्तु फिर भी काफी स्वयं सेवक नहीं मिलते।

(४) जब कभी दुर्भिक्ष या बाढ़ में सेवा का कार्य करना पड़ता है तब जानकार कार्यकर्ताओं के न होने से बड़ी कठिनाई का सामना होता है। या तो कार्यकर्ता मिलते ही नहीं, यदि मिलते भी हैं तो बहुत कम और सेवा कार्य में अर्धशिक्षित। परिणाम यह होता है कि जितना कार्य होना चाहिए, उसका आधा भी नहीं होता।

(५) सब से अन्तिम अभाव जो स्वयं सेवकों की आवश्यकता को सिद्ध करता है, यह है कि जब कभी आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारों की रक्षा

का प्रश्न सामने आता है तब प्रश्न उठता है कि अधिकार रक्षा के युद्ध में आगे कौन बढ़ेगा? उस समय शिक्षित सिपाहियों का अभाव अनुभव किया जाता है।

इन सब न्यूनताओं की पूर्ति का एक ही उपाय है, और वह उपाय है आर्यसमाज के स्वयं सेवक दल का संगठन।

संगठन का रूप

आर्यसमाज का संगठन जैसा उत्तम और पूर्ण हैं वैसा किसी दूसरी संस्था का नहीं है। कांग्रेस हिंदू महासभा मुस्लिम लीग आदि के संगठन आर्यसमाज के संगठन की अपेक्षा बहुत कमज़ोर है। उसी संगठन का एक अंग बना कर यदि स्वयं सेवक दल को संगठित किया जाय तो कोई भी दिक्कत नहीं हो सकती।

संगठन का निर्माण इस प्रकार हो सकता है। प्रत्येक आर्यसमाज के साथ एक एक आर्यवीर दल हों, उसके थोड़े बहुत खर्च आर्य समाज बर्दाश्त करे।

देशभर के आर्य वीर दलों को एक शृंखला में संगठित करने के लिए सार्वदेशिक सभा एक स्थायी कमेटी बनाये जो आर्य वीर दलों का नियन्त्रण किया करे, उनके शासन के लिए नियम तथा निर्देश बनाया करे और समय पड़ने पर उन्हें धर्म की रक्षा के लिये एकत्र कर सके।

निवेदन

यहां कोई पूरा कार्यक्रम नहीं दिया गया, और न देने का विचार है। यह एक खाका मात्र दिया गया है। इस लेख का उद्देश आर्यवीर दल की स्थापना के सम्बन्ध में लोकमत एकत्र करना है। आर्य समाचार पत्रों, आर्यसज्जनों और आर्यसमाजों से मेरी प्रार्थना है कि वह इस मोटी सी स्कीम की उपयोगिता तथा संगठन के सम्बंध में विचार करें, और अपनी सम्मति की सूचना मुझे ऊपर लिखित पते पर दें। सम्मतियों का संग्रह होजाने पर पूरी नियमावली प्रकाशित की जायगी।

आर्यसमाज और टाइम्स आफ इण्डिया

बम्बई के प्रसिद्ध गोरे पत्र टाइम्स आफ इंडिया ने आर्यसमाज के सम्बन्ध में टिप्पणी करते हुए निम्नलिखित विचार प्रगट किये हैं:—

"हमारे संवाददाता की सम्मति में आर्यसमाज ही उन तमाम लड़ाई झगड़ों तथा दंगों की जड़ है जो देश के भिन्न भिन्न भागों में बार बार हुआ करते हैं। और गवर्नमेंट निहत्थे आदमियों पर गोली चला कर अत्यन्त निन्दनीय कार्य करती है। आगे चलकर हमारा संवाददाता कहता है कि या तो सरकार को चाहिए कि वह आर्यसमाज को

बिल्कुल दबा दे और अगर वह ऐसा करने में असमर्थ है और जनता के जानोमाल की रक्षा नहीं कर सकती और शान्ति स्थापित नहीं रख सकती तो उसे चाहिए कि अपनी असमर्थता को खुल्लमखुल्ला स्वीकार करले और शासनका काम एक दम छोड़ दे। हमारी सम्मतिमें इन जातिगत लड़ाई झगड़ों के कारणों की जांच जरूर करनी चाहिए और साथ ही साथ यह भी जांच करने की जरूरत है कि तंजीम शुद्धि और संगठन इत्यादि आंदोलनों का देश पर क्या असर पड़ता है। हम अपने संवाददाता से संगी परिणामों को स्वीकार नहीं कर सकते पर इतना अवश्य कहेंगे कि यदि जांच करने पर गवर्नमेंट को यह पता लगजावे कि आर्य-समाज ही तमाम झगड़ों की जड़ है तो फिर बिना किसी हिचकिचाहट के गवर्नमेंट को आर्यसमाज को दबा कर बंद कर देना चाहिए। ऐसा करने पर अनेक लोग यह आंदोलन उठायेंगे कि सरकार हमारे धर्म में हस्तक्षेप कर रही है पर इस प्रकार के आन्दोलन से किसी भी गवर्नमेंट को जो अपने को न्याय के पक्ष में समझती है, नहीं न डरना चाहिये।"

आर्यसमाज का उत्तर

टाइम्स आव इण्डिया के उपर्युक्त लेख का आर्यसमाज की ओर से निम्न लिखित उत्तर दिया गया है।

१. श्री मान्य नारायण स्वामी जी, प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा

२८-४-२७ के टाइम्स आफ इण्डिया (Times of India) में एक पत्र प्रेरक ने "हिन्दुस्तान में मजहबी बलवे" शीर्षक से एक लेख लिख कर इन सब बलवों का कारण आर्य्य समाज को ठहराते हुए उसके दबा देने की बात कहते हुये उसने लिखा है कि यदि सरकार ऐसा नहीं कर सकती तो उसे हिन्दुस्तान छोड़कर रुखसत हो जाना चाहिए।

इस पर पत्र के सम्पादक ने एक लम्बा मुख्य लेख लिख कर सरकार से चाहा है कि वह आर्य्य समाज के विरुद्ध इन इलजामों की जांच करे और इस जांच में तञ्जीम शुद्धि और संगठन का देश में क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसे भी शामिल कर लेवे। फिर इसी पत्र के सम्पादक ने जब उसे मालूम हुआ कि उस पर आर्यसमाज के विरुद्ध अनुचित पक्षपात करने का इलजाम लग रहा है, तब उसने अपने ७-५-२७ के पर्चे में अपनी सफाई देते हुए कुछ ढीलेपन के साथ लिखा है कि वह किसी भी संस्था का विरोधी नहीं है किन्तु वह निष्पक्षता के साथ सरकार द्वारा जांच चाहता है। इस समय जिस प्रकार कुछ लोग आर्यसमाज की कार्य प्रणाली से असन्तुष्ट हैं, उससे कहीं अधिक मात्रा में मुसलमानी सभा,

उपसभा, लीग और कमेटियों से असन्तुष्ट हैं। फिर केवल आर्य समाज के विरुद्ध कथनोपकथनों की ही जांच क्यों की जावे मुसलमानी संस्थाओं के विरुद्ध इलजामों की जांच क्यों न की जावे?

इसका कोई कारण समझ में नहीं आता—हां—इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि टाइम्स के सम्पादक ने तञ्जीम के जांच के लिए भी सिफारिश की है परन्तु उत्तर में हमारा कथन यह है कि तञ्जीम के मुकाबिले में उसने शुद्धि और संगठन के जांच की भी सिफारिश की है। परन्तु आर्य समाज, तनज़ीम, शुद्धि और संगठन के सदृश कोई संगठन नहीं है किन्तु आर्य समाज एक चर्च है जिस प्रकार के चर्च इसलाम और इसाइयत हैं फिर एक हीं चर्च की जांच क्यों होनी चाहिए? यदि होनी चाहिए तो सभी चर्चों की जिन के विरुद्ध उस से बढ़कर और भयानक बातें कही जाती हैं जितनी बातें आर्य समाज के विरुद्ध न कहीं जाती और न कही जा सकती हैं। परन्तु असलियत यह है कि इन बलवों का कारण न आर्यसमाज है और न कोई अन्य संस्था। इसका कारण और एक मात्र कारण सरकार का निष्पक्ष न होना और समय पर अपने कर्त्तव्य का पालन न करना है। यू० पी० गवर्नमेण्ट इस विषय में खास तौर से बदनाम है। यदि सरकार दृढ़ संकल्प होकर तय्यार हो जावे कि प्रत्येक धर्मानुयायियों को जो अधिकार धार्मिक स्वतन्त्रता के नियमों और कानून की दृष्टि से प्राप्त हैं उनको प्रत्येक धर्मानुयायी उपभोग करें और किसी भी अन्य मतावलम्बी की "किन्तु परन्तु" को न सुने तो एक दम सारे झगड़े शान्त हो सकने हैं। परन्तु सरकारी कर्मचारी एक ओर तो ऐंग्लो इण्डियन अखबार दूसरी ओर अपने कृत्यों से किसी न किसी मतावलम्बी को राह दे दिया करते हैं, जिससे वे और भी अधिक झगड़े करने के लिये तैयार हो जाते हैं। टाइम्स के उपर्युक्त लेख का भी क्रियात्मक परिणाम यही निकलेगा कि इससे मुसलमानों को आर्यसमाज के विरुद्ध शोरोगुल करने की उत्तेजना मिलेगी, जैसा कि एक सिन्ध निवासी एसेम्बली के मुसलमान सदस्य ने टाइम्स की प्रस्तावित जांच के लिये वायसराय को तार भी दिया है। हम जांच के विरुद्ध नहीं हैं परन्तु किसी एक चर्च के विरुद्ध जांच के सर्वथा विरोधी है। जांच यदि की जावे तो निम्न विषयों की:—

[१] आर्य समाज कहां तक प्रचलित अशान्ति का उत्तरदाता है और उसके साप्ताहिक और वार्षिक संघों में कौन कौन से कार्य अशान्ति फ़ैलाने वाले होते हैं?

[२] इसलाम कहांतक प्रचलित अशान्ति का उत्तर दाता है और प्रति सप्ताह जुम्मे के दिन मुसलमानी मस्जिदों में जो बाज मौलवी मुल्ला दिया करते हैं वे तथा उनके विशेष अधिवेशनों के कार्य और वक्तृतायें कहां तक अशान्ति फैलाने के उत्तरदाता हैं?

[३] सरकारी अफसरों के पक्षपात पूर्ण कार्य कहां तक इस अशान्ति के उत्तर दाता हैं? और जांच करने वाली कमेटी निष्पक्ष पुरुषों से बनाई जावे और उसका सभापति भी कोई सरकार कर्मचारी न हो। इस प्रकार जांच करने से सही हालात प्रकट हो सकते हैं. जो एक प्रकार से प्रकट भी हैं और समझदार आदमियों से छुपे हुये नहीं हैं। ऐसा न करके यदि कोई यह चाहे कि धींगा धींगी करके ही आर्यसमाज को दबा दे या नष्ट कर दे तो इसे पागलपन के सिवा कुछ न समझा जावेगा। आर्यसमाज कठपुतलियों का खेल नहीं हैं उसने बलिदान पर बलिदान देकर वह शक्ति प्राप्त कर ली है कि अब उसका दबा देना

असम्भव हो गया है। विरोधी मतावलम्बी तथा सरकार जब उसे उसके शिशुकाल में न दबा सके तो अब युवा अवस्था प्राप्त कर लेने पर उसे कौन दबा सकता है? आर्यसमाज के सदस्य यदि जीना जानते हैं तो साथ ही उन्हें मरना भी आता है। आर्यसमाज के सदस्यों में जबतक रक्त की अन्तिम बूंद भी बाकी रहेगी उस समय तक आर्यसमाज को दबाना असम्भव है। यह बात टाइम्स और उसके पत्र प्रेरक दोनों को कान खोल कर सुन लेनी चाहिये।

२. श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति स० मन्त्री आर्य सार्वदेशिक सभा

इसे पढ़कर हमें प्रसन्नता हुई। सोना आग में पड़कर चमका करता है। कस्तूरी घिसी जाकर सुगन्ध देती है। किसीके विश्वासकी परीक्षा कठिनाई में पड़कर हुआ करती है। ऋषि दयानन्द के शिष्य अपना इम्तिहान देने को तैयार हैं क्योंकि उन्हें विश्वास है कि जिस उद्देश्य को लेकर वह खड़े हुए हैं वह बहुत ऊंचा है, जिस सिद्धांत का उन्होंने आश्रय लिया है वह पत्थर की चट्टान की तरह मजबूत हैं, और जिस ध्वजा को उन्होंने खड़ा किया है उस की जड़ पाताल में है। यदि आर्यसमाज की नींव ईश्वरी सिद्धांत और लोकहित के विचार पर न रखी गई होती तो आज तक यह छोटा समूह कभी का नष्ट होगया होता। आर्यसमाज के दुश्मनों की संख्या कम नहीं है। ब्रिटिश सरकार ने एक बार नहीं कई बार आर्यसमाज पर चोट करने की कोशिश की है। ईसाई पादरियों ने अपनी ओर से आर्यसमाज को बदनाम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कुछ मुसलमानोंका पारा बहुतऊपर चढ़ गया है। वह तो, बस चले तो आर्यसमाजियों को पीस कर खाजायें। सनातन विचार के हिंदुओं का विरोध अब जाता रहा। अब उन्हें मालूम होगया है कि आर्यसमाज उनका शत्रु नहीं, मित्र ही है। अंग्रेजी सरकार ईसाई और मुसलमान यह मिल कर काफी बड़ा दुश्मनोंका समुदाय बनजाता है। इनसब ने समय २ पर आर्य समाज पर चोटें की हैं। आज भी चोटें जारी हैं। अगर आर्यसमाज कच्ची नींवपर खड़ा होता तो आज से पहिले वह समाप्त होजाता। टाइम्स आफ इंडिया ने सरकार को सलाह दी है कि यदि तहकीकात से मालूम होजाय कि सारे भारतवर्ष में आर्यसमाज ने ही कुहराम मचा रक्खा है तो सरकार को उसे दबाने में कुछ भी संकोच न करना चाहिये। बहुत अच्छी बात है। आर्यसमाज तो पैदा ही कुहराम मचाने के लिए हुआ है। हजरत ईसा ने कहा था कि "मैं बाप से बेटे को लड़ाने आया हूं" आर्यसमाज भी बाप से बेटे को लड़ाने आया है। वह संसार से गुलामी को हटा कर स्वाधीनता की स्थापना करने के लिए पैदा हुआ है। वह धार्मिक समाजिक या राजनीतिक ठेकेदारियों को तोड़ कर धार्मिक उत्तरदायिता के सिद्धान्त का प्रचारक है। ऐसे समाज के कार्य से घर घर में अशांति पैदा हो जाना स्वभाविक है। जहां भी गुरुडम या गुलामी का रूप होगा, आर्यसमाज का प्रचारक सचाई और तर्क की गदा लेकर वहीं पहुँचेगा और प्रहार करेगा। परिणाम में कुहराम अवश्य मचेगा। सुधार का कोई आन्दोलन भी हलचल पैदा किए बिना नहीं रहसकता। जो शक्तियें मनुष्य की दिमागी या शारीरिक गुलामी से फायदा उठाकर दुनियां में मौज मारती हैं, उन्हें आर्यसमाज के कार्य से अवश्य हानि पहुंचेगी उन का घबराना स्वभाविक है। ऐसे सुधारक समाज से यदि मस्जिद गिर्जा और कोतवाली तीनों की दीवारें हिल जायं तो आश्चर्य क्या है?

हम टाइम्स आफ इंडिया की घबराहट को समझ सकते हैं। हमारी समझ में आसकता है

कि अंग्रेजी राज्य की बुनियाद जिस मोह जाल पर रक्खी गई है, विचारों के स्वाधीन प्रवाह के सामने भी नहीं ठहर सकती। वह हिले तो क्या आश्चर्य है। आर्यसमाज राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं रखता, तो भी विदेशी राज्य, विचारों के स्वाधीन प्रवाह को नहीं सह सकता। यदि गोरे अखबार आर्यसमाज से जलें तो क्या अचम्भा है?

फिर गोरों की मुसलमानों को प्रसन्न करने की नीति का अन्तिम परिणाम यह होना ही चाहिए। मुसलमान आर्यसमाजियों का सिर चाहते हैं। देवता की मांग है, भक्तों को पूरी करनी होगी। गोरे पुजारी मुस्लिम देवता की मांग पर कहते हैं—"तथास्तु' यह लो आर्यसमाज का सिर हाजिर है। आर्यसमाज की ओर से हम बड़े विनय परन्तु बड़ी दृढ़ता के साथ इतना ही कहना चाहते हैं-'आओ और हमारी परीक्षा लेलो'। यदि हमारे सिद्धान्त सच्चे हैं तो आग में पड़कर और अधिक चमकेंगे, और यदि वह कच्चे हैं तो उनका जितना शीघ्र नाश होजाय अच्छा है।

३. आर्यमित्र आगरा

आर्यसमाज के बाल्यकाल में ही अपने ही भाइयों द्वारा किये गए अत्याचारों को आर्यसमाज ने शान्तिपूर्वक सहा—हिन्दू भाइयो! कहो चुप क्यों हो? आर्यसमाज की किशोर अवस्था में बिरादरी द्वारा किये गए घोर अत्याचारों को चुपचाप सहने में आर्यसमाज ने पराकाष्ठा दिखलायी और वह संसार का आदर पात्र हुआ—बिरादरी के लोगो क्यों नहीं बोलते? परिणाम यह हुआ कि अत्याचार करने वाले ही आर्यसमाज के पक्के अनुयायी बने और अपनी पहिली अज्ञानताओं अथवा मूर्खताओं पर पछताने लगे। आर्यसमाज की किशोर अवस्था की समाप्ति में यवनों ने लेखराम को बलि लिया और उसके यौवनकाल में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हुआ। जग जानता है कि तब और आर्य समाज ने कैसी विचित्र शान्ति का पाठ पढा और कैसा आदर्श लोगों के सन्मुख रक्खा। जग जानता है कि सर इबिटसन के जमाने में आर्यसमाज की लाज, पत और राय किस खतरे में पड़ी थी—लाला जी निर्वासित हुए, आर्यसमाज के रजिस्टर जब्त होने लगे, आर्यों पर पुलिस के अत्याचार प्रारम्भ हुए, एक घोर संकट था, स्मरण करते ही आज भी हृदय कांप उठता है। उस समय भी संसार ने देखा कि आर्यसमाज नागराज हिमांचल की भान्ति कैसे स्थिर रहा है? किसी कवि ने ठीक ही कहा है "अवाति वायौ न हि तूल राशेः गिरेश्च कश्चित्प्रतिभाति भेदः।"

जब तक तूफान न चलें अन्धड़ न उठें तब तक रुई के ढेर और पहाड़ में क्या भेद प्रतीत हो सकता है।

सारांश—क्या घर वालों ने, क्या बाहर वालों ने, क्या सरकार ने सब ने ही समय समय पर आर्यसमाज का सिर ऊखली में देकर बड़े बड़े मूसलों से साठी के धान की तरह कूट कूट कर देखा। परिणाम में आर्य तथा उनका प्रिय आर्यसमाज शुद्ध ही निकल आया। अब इस 'टाइम्स' बावले को यह क्या सूझ पड़ी कि इस तरह बड़बड़ करने लगा—इस तरह आर्यसमाज को दबाने के लिये नग्न नृत्य करने लगा। ज़रा छेड़कर तो देखो क्या होता है? जरा दबा कर तो देखो क्या बनता है? हम को पूर्ण आशा है कि सरकार 'टाइम्स' की इस मूर्खतापूर्ण सलाह पर तनिक भी ध्यान न देगी क्योंकि वह आर्यसमाज को अच्छी तरह जांच और आँच देकर आजमा चुकी है। अब हम अपने आर्य भाइयों से केवल इतना पूछना चाहते हैं कि यदि ऐसा अवसर आवे तो आप क्या करेंगे—यदि सरकार अनुचित रूप से दबाने के लिए कटिबद्ध हो जाय, हमारे धर्म कर्मों में अड़चन डालने लगे, शान्ति पूर्वक जैसा कि हम अब तक अपने

मार्गप्रदर्शक आचार्य के निर्देशानुसार शान्तिपूर्वक मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं-कार्य करने में भी बाधा डालने लगे, तो आप क्या करेंगे? हम को पूर्ण आशा है कि वे वीर वैदिकधर्माभिमानियों की भांति सर्वात्मना परीक्षा के लिये कटिबद्ध होंगे और शम, दम, तितिक्षा द्वारा परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर आर्य संस्कृत और आर्यधर्म की सनातन कीर्ति को उज्वल करेंगे। यह परीक्षा काल है, ऐसे परीक्षा समय जब आते हैं तभी सच्चे धर्मानुयायियों का महत्व बढ़ता है। उन के धर्म का नाम उज्ज्वल होता है, चलिये तैयारी कीजिये, देखो रणदुन्दुभि बज रही है, आपको प्रोत्साहन दे रही है, विजयपताकाएं फहरा रही हैं, आप को बुला रही हैं, चलिये, उठिये, वीरोचित वेश धारण कर के इस आह्वान का उत्तर दृढ़ता, निर्भयता सहिष्णुता द्वारा दीजिये। महाभारत के इस बचन को कभी न भूलिये और अपनी शांति शीलता तथा धर्मध्रुवता के मार्ग में बराबर बढ़ते जाइये।

"यतो धर्मस्ततो जयः"

जिधर धर्म होता है। उधर ही जीत होती है आर्यो! दिशाओं और उपदिशाओं से नीचे से, ऊपर से प्रतिध्वनि आ रही है।

"यतो धर्मस्ततो जयः"

४ 'लीडर'

'टाइम्स आफ इण्डिया' के लेख पर टिप्पणी करता हुआ मशहूर अखबार लीडर लिखता है-

"......जो लोग समझते हैं कि सरकारी व्यवस्था से आर्यसमाज और शुद्धि-संगठन का दमन हो जायगा वह गलती पर हैं। यह दवा रोग से भी अधिक भयावह सिद्ध होगी। आर्यसमाज के दमन द्वारा वह भयङ्कर परिस्थिति पैदा हो जायगी जो गदर के बाद से आज तक देश में नहीं पैदा हुई। 'टाइम्स' ने जो दमन की दवा बतायी है उससे अभीष्ट फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। सब से पहिले सरकार और उसके अफसरों को निष्पक्ष नीति को अविलम्बन करना चाहिए। इस बात का पूरा ध्यान रखने की जरूरत है कि सरकार किसी के साथ रियायत या पक्षपात से काम न ले। प्रत्येक व्यक्ति के वैध और न्यायानुमोदित धार्मिक कर्त्तव्य पालन में किसी प्रकार बाधक न हो। लोगों के चिरसेवित धार्मिक अधिकारों की प्रत्येक प्रकार से रक्षा करना सरकार का मुख्य काम है। जो लोग सार्वजनिक शान्ति भंग करने की धमकी दें उनका उचित उपाय करने में सरकार को पूरी प्रबन्धचातुरी दिखानी चाहिए। ......आर्यसमाज या किसी दूसरी धार्मिक संस्था को दमन करने की बात बिल्कुल व्यर्थ है। ऐसी सम्मति को बिल्कुल मूर्खतापूर्ण विचार समझना चाहिए। आर्यसमाज दबाया नहीं जासकता और वह दबाया भी नहीं जाना चाहिये। आर्यसमाज कभी अपना दमन न होने देगा। सब से पहले सरकार और उस के अफसरों को निष्पक्षता तथा नागरिकों की अधिकार रक्षा की ओर दत्त चित्त होना चाहिये' शासन की सुव्यवस्था और सुप्रबन्ध द्वारा साम्प्रदायिक झगड़ों की तादाद बहुत कम हो जायगी। उसके बिना स्थिति में कुछ भी परिवर्तन न होगा। बल्कि वह उत्तरोत्तर बुरी होती जायगी।

५ अभ्युदय

"...राष्ट्रनिर्माण के कार्य में आर्यसमाज जो प्रशंसनीय उद्योग कर रहा है, उसके कारण वह स्वार्थी लोगों के दिलों में खटकता है।......यदि सरकार टाइम्स के मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव को कार्य में लावे और आर्यसमाज को बिलकुल दबा देने की चेष्टा करे तो एक दृष्टि से हम उसका स्वागत करेंगे। क्योंकि हम भली भांति जानते हैं कि सरकार अपने इस असम्भव प्रयत्न में कदापि सफल नहीं हो सकेगी। हां वह इस तरह से आर्यसमाज को और भी अधिक शक्तिशाली बना सकती है।

उन्ताले का किला

(१)

उन दिनों उदयपुर में राणा सांगा का अधिपत्य था। उदयपुर के बच्चे बच्चे में उन्ताले के किले को जीतने की धुन थी। उसको जीतने के लिए सभी अपने गर्दन की बाजी लगाने को तैयार थे। न उनको बूढ़ों की चिन्ता थी न बाल बच्चों की फिक्र। स्वाधीनता ही सब को आराध्य देवी थी जिसको प्राप्त करने के लिये राजस्थान के सभी राजपूत एक थे। राणा की जबान पर हर समय उन्ताला ही उन्ताला रहता था। सोते, जागते, उठते, बैठते वे उन्ताला की रट लगाते रहते थे। कभी कभी सपने में बड़बड़ा उठते। उन्ताला! हाय उन्ताला! कौन कह सकता है उनको उन्ताला कितना प्यारा था? जिस किले में उनके भाइयों ने प्राण गंवाये; जिसकी रक्षा के लिये उन्ताले के हरएक राजपूत ने अपने टुकड़े २ करा दिये, जिस का चप्पा चप्पा उनके भाइयों के रक्त से रंगा था। उस पर विधर्मी शासन करें यह किस राजपूत बच्चे को सह्य हो सकता था। राणा पलंग पर पड़े थे, उनके आंखों में नींद कहां? करवटें बदल रहे थे, कभी दांतें पीसते और कभी आंखें चढ़ाते। सहसा पलंग से उठ पड़े और द्वारपाल को पुकारा। आवाज़ भर्रायी सी थी, द्वारपाल चौंक उठा। वह डरते डरते कांपती हुई आवाज़ में हाथ जोड़कर बोला—"म-ह-रा-ज क्या आ-ज्ञा-है?" राणा तन कर बोले—मन्त्री को कह दो आज शाम को ४ बजे सब सामन्तों सहित मन्त्रणा गृह में उपस्थित हों। किसी अत्यन्त आवश्यक विषय पर विचार करना है" द्वारपाल भय से कांप रहा था। "जो-आ ज्ञा" कह कर दबे पांव चला गया।

(२)

शाम के चार बजने वाले थे। उदयपुर के किले में एक और मन्त्रणागृह बना हुआ था, यहां कभी चिड़िया भी नहीं फटकने पाती थी। किले से मन्त्रणागृह तक विश्वस्त सिपाहियों का कड़ा पहरा था। प्रधान अधिकारियों तथा सामन्तों को छोड़ किसी को उधर जाने की इजाजत न थी। इनको भी एक पत्र दिखलाना पड़ता था जिसपर राना संग्राम सिंह की मुहर लगी हो। धीरे धीरे एक एक सामन्त इकट्ठे हो रहे थे। मन्त्रणागृह के विशालभवन में कुछ गद्दियां बिछी हुई थीं। बीच में एक विशाल सिंहासन था जिस पर महाराजाधिराज विराजते थे। अभी चार बजने में कुछ मिनट शेष हो थे कि राणा पहुंच गये। सब तो पहले से ही चिन्तित थे, उठ खड़े हुए और फिर बैठ गये। थोड़ी देर तक निस्तब्धता छाई रही किन्तु तुरन्त ही राणा ने गरजती हुई आवाज में कहा—"प्रधान मन्त्री जी तथा शूरवीर सामन्तो! आप लोग चिन्तित होंगे कि मैंने आप को असमय में क्यों बुलाया है, कौन सा ऐसा आवश्यक विषय आ पड़ा है जिसको हल करने के लिये मैंने आप को बुलाया है,' सचमुच हमपर कोई नई विपत्ति नहीं आई है किन्तु जो विपत्ति हमारे सिर पर हरदम सवार है क्या हम उसका प्रतिकार न करें?

सब सामन्त—"महाराजाधिराज !"

हम सब करने को तैयार हैं, हम आपके लिये सर्वस्व स्वाहा कर सकते हैं।"

राणा—"यह आप लोगोंकी अनुकम्पा है। आपही लोगोंके भरोसे मैं दुरूह से दुरूह काम करने को तैयाररहता हूं। आपको पता होगा, उन्तालेका किला बाबर के हाथ में हैं, हमारे भाइयों की सम्पत्तियों पर विदेशियों ने कब्जा कर लिया है। अफसोस, हम लोग जबान तक नहीं हिलाते। आप लोग राजपूत हैं, आप लोगों ने राजपूतानियों का दूध पिया है, जिनके पूर्वजों ने स्वदेश और स्वजाति के लिये अपने को मिटा दिया उन्हीं के वंशज आप हैं। आप कभी लड़ने, मरने से डरेंगे !! जाइये रात भर तैयारी कीजिए और सुबह होते २ उन्ताले पर धावा बोल दिया जायगा।"

सब सामन्त—"जो आज्ञा ! हम कभी पीछे न हटेंगे। राजस्थान हमारा प्राण है, सेना थोड़ी है तो क्या है कल धावा बोल दिया जाय।"

राणा—"आशा है आप अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहेंगे। प्राण जाय तो जाय पर हार कर कोई लौटे नहीं। थोड़ी सेना है तो कोई चिन्ता नहीं। एक बार फिर विश्वास दिलाइये आप अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहेंगे।"

सब सामन्त—"अटल रहेंगे"

राणा—"हर हर महादेव"

सब एक साथ—"हर हर महादेव"

(३)

अभी आध घड़ी रात शेष थी। उदयपुर में धूम मच गई। स्त्रियें कहती थीं—"जीत कर आना" बच्चे कहते थे—"पिताजी जीत कल आना"। मातायें कहती थीं—"बेटा आशीर्वाद, परमात्मा करे तुम जीत कर लौटो।"

स्त्रियें पतियों से, मातायें पुत्रों से और भाई भाइयों से बिछुड़ रहे थे पर किसी के आंख में आंसू की बूंदें नहीं थीं। सभी एक दूसरे की मङ्गल कामना में रत थे। थोड़ी देर में उन्ताले के किले में कुहराम मच गया। जोरदार मुकाबला था। दोनों ओर से तोपें चलने लगीं, सैकड़ों लोगों के जीवन की इति श्री हो गई, घमासान लड़ाई हुई, राजपूत अड़े थे तो मुसलमान भी पीछे हटने वाले नहीं थे। राजपूत थोड़े थे तो क्या दृढ़ चित्त थे, मरने मारने के इरादे से आये थे। थोड़ी देर में उन्ताले पर राजपूती झंडा लहराने लगा। मुसलमान भाग निकले किन्तु अभी किला बाकी था। विजय कैसा जब तक किला नहीं लिया गया। उन दिनों में हाथियों से किले तुड़वाये जाते थे। राजपूतों ने भी मौका देखा और मस्त हाथियों को छोड़ दिया। लेकिन हाथी जाते और वापिस लौट आते थे। किले में लोहे की नोकीली कीलें गड़ी हुई थीं। हाथी डरते थे। घण्टा भर बीत गया। उन्ताले का किला नहीं टूटा। विजय श्री हाथ से निकलना चाहती थी कि एक सैनिक दौड़ा दौड़ा आया और कीलों के आगे खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर प्रसन्नता थी, हृदय में बल था।

उस की ओट में नोकीले कीले छिप गये और मस्त हाथियों ने धक्के लगाना शुरु किया। किला टूट गया। उदयपुर की पताका उन्ताले के किले पर लग गई परन्तु राजपूतों की कड़ी परीक्षा के बाद। राणासांगा की इच्छा पूरी हुई पर उस वीर सैनिक की हड्डी पसली का कहीं पता भी नहीं ! कोई नहीं जानता उस का नाम क्या है ? किन्तु वास्तव में उन्ताले का किलेके सेहरा उसी के सिर पर है जिस ने अपने को मिट्टी में मिलाकर उदयपुर की नाक रख ली।

जगदीश चन्द्र शास्त्री

———:०:———

महिला जगत्

एम० ए० में सर्व प्रथम

पण्डित श्यामलाल नेहरु की पुत्री कुमारी श्यामकुमारी नेहरु इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की एम. ए. की परीक्षा की प्रथम परीक्षा में सर्व प्रथम उत्तीर्ण हुई है।

लाहौर के दंगे की तह में एक सिक्ख महिला

कहा जाता है कि लाहौर के भीषण दंगे का कारण एक सिक्ख महिला का अपमान था जो पहले मुसलमान हो गई थी किन्तु फिर अपने धर्म में वापिस आगई।

स्त्रियां बाहर न सोवें

केपटाउन के एक मजिस्ट्रेट ने एक मामले में एक बदमाश को ३ मास की सख्त कैद और ३७५) जुर्माने की आज्ञा देते हुए यह चेतावनी दी है कि युवती स्त्रियां आत्मरक्षा का पर्याप्त साधन किये बिना कमरे के बाहर बरामदे में न सोवें। कहा जाता है कि एक शरीफ महिला मुहल्ले में बरामदे में सोई थी। एक बदमाश पहुंच गया और उसे भ्रष्ट करना चाहा। पर बालिका चिल्ला पड़ी और उस के पिता तथा और लोगों ने उस बदमाश को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया।

महिला विधवा को जला दिया

सिलहट में कोई व्यक्ति मदरसा गांव के एक युवती विधवा का सतीत्व नष्ट करने की नियत से रात के समय उस के घर में घुस गया। पर जब उस ने इस का प्रस्ताव स्वीकृत नहीं किया तो उस दुष्ट ने उसके कपड़ों में आग लगादी। जिस से वह वेचारी जल कर भस्म हो गई। दौरा जज मि० डी० पी० घोष ने अपराधी को दफा ४५७ में तीन वर्ष की सख्त कैद की सजा दी है।

मानहानि की नालिश

गर्ल्स स्कूल करांची की प्रधानाध्यापिका ने सौराष्ट्र के सम्पादक पर मानहानि की नालिश की है क्योंकि उस ने २९ जनवरी के अङ्क में एक लेख छापा था जिस में लिखा था कि उक्त स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने कई बालिकाओं के चरित्र भ्रष्ट करने की कोशिश की। उस में यह भी लिखा था कि कच्छ में स्त्रियों का सतीत्व सुरक्षित नहीं है। वादी ने भी पहले नोटिस दिया था कि वह उस लेख के लेखक का नाम बतलावें नहीं तो नालिश करनी पड़ेगी। परन्तु सम्पादक ने नाम नहीं बतलाया अतएव नालिश दायर हो गई। अदालत ने सम्पादक पर ५०० दफा लगाया है। अगली पेशी २० मई को है।

सामाजिक संसार

पुस्तक जब्त

पञ्जाब सरकार ने हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'शहीद सन्यासी' को जब्त कर लिया है।

रंगीला रसूल के प्रकाशक बरी

रंगीला रसूल के प्रकाशक म० राजपाल जी लाहौर पर बहुत दिनों से मुकद्दमा चल रहा था। अदालत ने धारा १५३ ए के अनुसार उनको १८ मास की सजा तथा १०००) रु० जुर्माने का दण्ड दिया था। सेशन से सजा घट कर ६ महीने रह गई थी पर जुर्माना जैसा का तैसा रहा। हर्ष की की बात है कि अपील में जस्टिस दलीपसिंह ने उनको साफ छोड़ दिया और फैसले में लिख दिया कि यह धारा इन पर लागू नहीं होती क्योंकि यह जातिगत द्वेष फैलाने की नियत से नही लिखा गया था।

हिन्दुओं के मुसलमान होने की झूठी खबर

लखनऊ के 'हमदम' ने अपने १३ अप्रैल के पर्चे में एक खबर दी थी कि बदायूं के दो प्रतिष्ठित हिन्दुओं ने इस्लाम ग्रहण का लिया है। उनमें ला० प्रह्लादीलाल बदायूं के रईस व आनरेरी मजिस्ट्रेट और जिले के खजाञ्ची हैं और उनके सुपुत्र आनरेरी मुनसिफ हैं। इन दोनों ने 'हमदम' के सम्पादक को इस आशय का नोटिस दिया है कि इस खबर को सच्चा साबित करो नहीं तो मुकदमा चलाया जायगा। अब 'हमदम' के एडीटर साहब ने इन दोनों से माफी मांगली है।

आर्य समाजियों को सजा

दरभङ्गा के डिपुटी मजिस्ट्रेट मि० मुमताज हुसैन ने शुद्धि केसका फैसला सुना दिया। जिस में आनन्द बिहारी और इस्माइल उर्फ अवध ठाकुर पर ३६३ और ३५२ धाराएं लगाई गई थीं। उनपर जुर्म लगाया गया था कि वतूलन मुसम्मात के ४ वर्ष के लड़के को उन्होंने जबरन छीन लिया। स्त्री को मारा पीटा और बाद को लहेरिया सराय के आर्य समाजियों ने उसकी शुद्धि करली। यद्यपि अभियुक्तों की ओर डिपुटी मजिस्ट्रेट बा० भवानीप्रसाद और गवर्नमेंट प्लीडर बा० लक्ष्मण प्रसाद जैसे प्रतिष्ठित सज्जनों ने गवाही दी तो भी डिपुटी मजिस्ट्रेट ने आनन्द बिहारी को १ साल की कड़ी कैद की सजा सुना दी। आप पर २५) रु० जुर्माना भी किया गया। अवध ठाकुर को ६ मास की सजा और २५) जुर्माना हुआ। हर्ष की बात है कि अवधबिहारी ने अपने को निरपराध जान कर अपील की है वह ५००) की जमानत पर छोड़े गये हैं। देखें ऊंट किस करवट बैठता है।

खूंटी में आर्य समाज

रांची जिला अन्तर्गत खूंटी सबडिविजन के खूंटी ग्राम में जो रांची शहर से २४ मील दक्षिण है श्रीमान् मातृ भिक्षुक आर्य की अध्यक्षता में ता० १० अप्रैल १९२७ ई० को आर्य समाज की स्थापना हुई।

बख्तीराम सराय में एक आर्यसमाजी पर छुरे का वार

श्री राधो कृष्ण वर्मा जो आर्य समाज सरिया के एककार्य कर्ता हैं और कोपर के व्यापारी । आप खद्दरधारी नव युवक हैं । बाजार में घूम रहे थे कि एक नवयुवक साधु ने इन के पास आकर कहा मैं राजपूत हूं और गरीबी के कारण इस वेश में भीख मांगता हूं । आप यदि मेरी नौकरी करा दें तो मैं बड़ा उपकार मानूं । वर्मा जी ने उसे गृहस्थी हो जाने का उपदेश दिया और उसने उसी समय चोटी रखवा ली उन्होंने उसके लिये दर्जी को कमीज का कपड़ा भी दिया । एक दिन एकाएक उसने उनसे कपड़ा मांगा । वह दर्जी से लेकर दे ही रहे थे कि उसने अप शब्दों की बौछार करते हुए छुरे का वार किया । निशाना गले पर था पर वर्मा जी ने बड़ी बहादुरी से हाथ पर वार रोका तो भी पहुँचे पर एक इञ्च चौड़ा घाव बैठ गया । उसी समय लोगों ने उसे पकड़ लिया । उसने कहा मैं आर्य समाजियों की खोज में हूं और रहूंगा । वर्मा जी की चिकित्सा स्थानीय अस्पताल में हो रही है । और वह गिरफ्तार है ।

—+:o:+—

समाज सुधार

बूढ़े के ब्याह में सिर फुटौअल

हैदराबाद सिंध में एक पचास वर्ष का बूढ़ा चौदह वर्ष की कन्या से ब्याह करने चला । बरात पहुँचने पर कन्या के हितैषी मामा ने ब्याह करने से इन्कार कर दिया । आखिर सिरफुटौअल तक नौबत पहुंची । कहते हैं वर पक्ष के लोग कन्या को छोड़ भागे और सिर में हल्दी चूना लगाना शुरू किया ।

७५ हजार रु॰ का दान

दानवीर घनश्यामदासजी बिरला ने ५० हजार रु० राज यक्ष्मा का सेनेटोरियम बनाने के लिये, २० हजार दलितों के लिए कुएं बनवाने को तथा ५ हजार आबू पहाड़ के सेवाश्रम को दान दिया है ।

सिगरेट पीने का दुष्परिणाम

जिला गुरदासपुर में सुजानपुर के निकट भावल नाम का एक कस्बा है कहते हैं कि किसी ने ला-परवाही के साथ एक जलती हुई सिग्रेट कस्बे के एक झाड़ी में फेंकदी जिस से झाड़ियों में आग लग गई । वह आग गांव तक पहुँची और तमाम गांव का गांव जलकर खाक होगया । लोग बाहर के खेतों में गये हुए थे उन की हालत बड़ी दर्दनाक बतलाई जाती है ।

पौराणिक रीति से विधवाविवाह

गत वैशाख कृ० १० को भिवानी में एक अग्रवाल की १३ वर्ष की लड़की (जो गत वर्ष विवाह के थोड़े ही दिन पश्चात् विधवा होगई थी) का पुनर्विवाह भिवानी के ही एक २१ वर्षीय अग्रवाल युवक से सनातनधर्म की रीति से धूमधाम से हुआ पं० नेकीरामजी शर्मा इस विवाह के आचार्य थे। हर्ष की बात है कि भिवानी की साधारण जनता ने जिन में अधिकांश आर्यसमाजी हैं इस कार्यमें योग दिया।

एक लड़के की आप बीती

दिल्ली में एक लड़के को भगाके ले जाने तथा जबरदस्ती मुसलमान बनाने के अभियोग में दो मुसलमानों पर मुकदमा चलरहा है। १३ मई को जिरह में उसने बतलाया है कि उस को दो मुसलमान भगा ले गये थे। वे जब उसे मस्जिद में लाये वहां पांच, छै आदमी थे जिनको वह नहीं जानता मस्जिद में उस को स्नान कराया गया और कलमा पढ़ाया गया। एक मुहम्मद नामक व्यक्ति के चार्ज से अब्दुलरहमान ने उस लड़के को अपने चार्ज में रक्खा था और इस्लाम को कबूल करने के लिए उस पर जबरदस्ती की थी। बाद में उस को पुलिस ने उस के चाचा के साथ पकड़ा। वह डरता था कि उसे कहीं वह जान से न मार दें। देखें अब क्या फ़ैसला होता है।

डा० मुञ्जे को धमकी

अब्दुलकरीम नामक किसी मुसलमान ने डा० मुञ्जे (जो हिंदू महासभा के सभापति हैं) को एक वर्ष के भीतर जान से मारनेकी लिखित धमकी दी है। पत्र में लिखा है :—

"देहली में केवल एक श्रद्धानन्द मारा गया किंतु तुम तथा तुम्हारी सारी पार्टी को जान से मार दिया जायगा।" बन्द पत्र पुलिस को सूचनार्थ दे दिया है।

ब्राह्मण शुद्धि में भाग लें

अखिल भारतीय काव्य परिषद् खाम गांव में भाषण देते हुए डा० मुञ्जे ने कहा कि जबतक हिंदू विशेष कर ब्राह्मण शुद्धि और संगठन में भाग नहीं लेते तबतक यह नहीं कहा जासकता कि वह स्वामी श्रद्धानन्द का कार्य कर रहे हैं। सभापति मि० देशमुख ने कहा कि समय के अनुसार ब्राह्मणों को भी रुख बदलना चाहिए अब समय है कि ब्राह्मण ब्राह्मण में परस्पर शादी व्याह करें।

सार्व देशिक सभा की अन्तरंगसभा

स्थान—श्रद्धानन्द बलिदान भवन

तिथि—२४-४-२७

समय—२ बजे दिन के

उपस्थिति

[१] श्री नारायण स्वामी जी (प्रधान)

[२] „ डा० केशवदेव जी शास्त्री

[३] „ स्वा० रामानन्द

[४] „ प्रो० इ० जी

[५] „ ला० नारायण दत्त जी

(१) मार्च १९२७ से अन्तिम फरवरी १९२८ तक का बजट निम्न प्रकार से स्वीकृत हुआ।

स्वीकृत बजट आर्य सार्व देशिक सभा देहली।

१ मार्च १६२७ से अन्तिम फरवरी सन १६२८ तक

आय

मद	अनुमानिक	वास्तविक	अनु० विव०
सूदबैङ्क	६०००)	२२३८)	२२५०)
दशमांश	५००)	२३७)	२५०)
पञ्चमाँश	१०००)	१५०)	६६६)
किराया भवन	८४०)	४२१)	१०८०)
श्रद्धानंदभवन		७०)	५२०००)
मद्रास प्रचार		६२५)	३०००)
म० दलितोद्धार			
सभा		४४०)	
शुद्धिफण्ड		९२)	६०)
चंद्रभानु वेदमित्र			
स्मारक निधि		६४७)	२२८०)
विविधदान	२५००)	९१५)	२५००)
पुस्तकालय	१०२०)	११९६)	८००)
सार्वदेशिक पत्र			२०००)
अमानत		३७६)	
योग	११८६०)	७७११)	६५२१६)

व्यय

मद	गतवर्ष अनु०	वास्तविक	अनु०
अफ्रीकाप्रचार	४५००)		१५००)
मद्रासप्रचार	३०००)	२६३५)	४०००)
आसामप्रचार		९)	१२००)
कांग्रेसप्रचार		४३)	२००)
ज्योती पाठशाला	८४०)	८०३)	२३००)
आर्य धर्म कारिणी			
सभा		४०)	१००)
श्र० न० भवन		६१)	५२०००)
दलितोद्धारनिधि		२५)	
अमानत वापिसी		१६८)	
पुस्तकालय	१०२०)	७६४)	८००)
कार्यालय	१५००)	७२०)	१०१६)
सार्वदेशिक		१२५)	२०००)
विविध व्यय	१०००)	३२५)	१०२)
योग	११८६०)	५७६२)	६५२१६)

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा

आय

मद	आनुमानिक	वास्तविक	प्रस्तावित
स्वा० श्रद्धानन्द जी	१२०००)	१४०००)	
चन्दा मासिक	१०७४)	११२३।-)	१५००)
दान	३००)	२४६१।॥≡)॥।	२४००
मेरठ बोर्ड	५७६	३७२८)	२७६
बुलन्दशहर बोर्ड	५१६	४४४)	६६३)
खुर्जा बोर्ड	४८०	४६०)	४८०)
दील्ली कमे टी		६५१॥।)	४६४-)
दिल्ली डि० बोर्ड		२७॥-)	११२॥-)
मथुरा बोर्ड		५०)	१२०)
हाथरस बोर्ड		५०)	३००)
नए बोर्डों में सहायता			३००)
सेठ जुगल किशोर बिड़ला		८४००)	२४००)
हाथरस शाखा सभा			५००)
खुर्जा शाखा			१०००)
रोहतक शाखा			२०००)
गाजियाबाद			५००)
लगान मुदिरामपुर		७)	१४)
दिल्ली			३०००)
रक्षा		५०)	
नई बस्ती		१२०१)	

व्यय

मद	अनुमानिक	प्रस्ता०	प्रस्ता०
वेतन			४९२०
प्रचार	१०९६८	१००६६।)॥।	९१६२
वेतनार्थ कार्य			१८९४
मार्ग व्यय			१ ४०
प्रचार	१६२०	१२३१'≡)।	२४०
शिक्षा कार्य			१२०
स्टेशनरी			३६
प्रचार	१९२	२६३ -)॥।	८४
शिक्षा कार्य			१२०
सामाजिक का०	१४४	५४४-)॥	५००
डा. व्य. प्रचार			२४
डा. व्य. कार्यालय	२८८	३१७। ॥	३६०
रोशनीव			९६
शिक्षा कार्य	१२०	४१॥=)।	१२०
छपाई	१८०	३१३)	२४०
विविध प्रचार	५६४	४४४'=)॥	९६
			३००
रक्षा	१८०	६२४॥≡)	२४०
कौन्फ्रेन्स	६००	६२९॥)।	३००
			४२०
किराया म० का० पा०	८५२	८६१।-)॥	७२०
भोजन	६००	६००।)	६००
पुस्तक		३४।-)	१२०
मरम्मत स्कूल		२८०।)।	१२०

पोस्टर	१०४।)
शुद्धि	२८॥।)॥।
जलबाढ़	३३००)
रामपुर [बिल्डिंग]	१७६॥)'
मद्रास प्रचार	५००)
योग	२१५४६ २७३६३॥-)॥ २२७३४)

छा० वृ० पा०	१९२॥।)॥।	२४०
पुस्तक अध्यापिका	३४२'-)।	१००
शुद्धि	९९॥-)	
पोस्टर	४'॥=)॥	
समेपुर इमारत	१५९॥।)	
जलवाद्	२७०१॥)	
योग	१६३०८ १९७२१॥।-)	२२६१४)

(२) विशेष-रूप से गुलाबचंद् मथुरा के २००) का विषय पेश हुआ और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि उसके १३५) जमा करके शेष ६५) जो उस के नाम रहते हैं वह बहीखातेमें डाल दिये जायं।

(३) विशेष-रूप से शामियाने का विषय उपस्थित होकर सर्व-सम्मति से निश्चय हुआ कि शामियाना जो कि १५०९॥=) की लागत से तैयार कराया गया है यह धन शामियाने के नाम बतौर (Investment, के लगाया जावे और इसका किराया वसूल करके इस धन को पूरा कर दिया जावे।

(४) विशेष-रूप से उपदेशकों के सम्बन्ध में निम्न विषय स्वीकार हुए।

[१] सभा के वैतनिक उपदेशक जब सफर किया करें तो उन्हें भोजनादि का व्यय बिल में शामिल नहीं करना चाहिए।

[२] जो उपदेशक पद पर नियत किए जाया करें उन्हें किसीप्रकार का मार्गव्यय अपने पद का कार्य्य करने के लिये आने का नहीं दिया जाना चाहिए।

[३] मद्रास या आसाम में जो उपदेशक हेड क्वार्टर से भेजे जाया करे उन्हें वर्ष में एक बार कार्यस्थान से हेड क्वार्टर तक आने जाने का मार्गव्यय दिया जाया करे। अन्य किसी उपदेशक को छुट्टी पर जाने या छुट्टी से वापिस आने का मार्गव्यय न दिया जाया करे।

(५) कटरा आर्यसमाज प्रयाग का पत्र पढ़ा गया और निश्चय हुआ कि सभा की पुस्तकों की अंग्रेजी पुस्तकों की २-२ प्रतियां बा० लक्ष्मी प्रसाद् गुप्त M Sc. इन्टर कालिज प्रयाग के (विलायत) प्रचारार्थ भेजदी जावे।

(६) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का पत्र सत्यार्थ-प्रकाश के जर्मन अनुवाद के सम्बन्ध में पढ़ागया और निश्चय हुआ कि श्री स्वामी जी को लिखा जावे कि यह पत्र जो जर्मन से उनके पास आया है सभा में भेजें। तदुपरान्त इस विषय पर कार्य्यवाही की जावेगी।

(७) श्री मंत्री आ० स० बम्बई का पत्रपढ़ागया और निश्चय हुआ कि उन्हें लिखा जावे कि जो प्रस्ताव शताब्दि सभा में पास हुआ है उसका भाव स्पष्ट है। आप के पत्र में अङ्कित एक दल ने जो कुछ शूद्रों के सम्बन्ध में समझा है उसका भाव भी यही है।

(८) श्री प्रो० इन्द्रजी के प्रस्ताव करने पर निश्चय हुआ कि सार्वदेशिक सभा के आधीन तमाम भारतवर्ष में "आर्य वीर दल का" संगठन किया जावे। प्रत्येक दल प्रत्येक स्थान पर स्थानीय आर्यसमाज के आधीन काम करेगा। प्रो० इन्द्रजी इसके नियमादि बनाकर समाचार पत्रों में प्रकाशित करेंगे और सम्मतियों के आने पर अन्तिम स्वीकृति के लिये अन्तरंग सभामें पेश करें।

(९) विशेष-रूप से निश्चय हुआ कि स्नातक-मंडल के सदस्यों से प्रार्थना की जावे कि वे श्रद्धानन्द भवन के लिए धन एकत्र करके सार्वदेशिक सभा में भेजें।

अन्तरंग सभा का अधिवेशन

स्थान—श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली
समय—१२ बजे दिन के
तिथि—१५-५-५-२७

उपस्थिति

(१) श्री नारायण स्वामी जी
(२) „ प्रो० इन्द्र जी
(३) „ ला० ठाकुरदास „
(४) „ ला० ज्ञानचन्द „
(५) „ ला० नारायण दत्त जी

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा

१) नोटिस का विषय् से १ ज्योति उपदेशक विद्यालय का विषय पेश हुआ और उस के सम्बन्ध में निम्न निश्चय हुए:—

१) इस विद्यालय का नाम ज्योति उपदेशक विद्यालय रहे।

२) श्री पं० प्रियरत्न जी की नियुक्ति ५०) मासिक पर की जावे और उन्हें रहने का स्थान सार्वदेशिक भवन में दिया जावे।

(३) १-६-२७ से विद्यालय खोला जावे।

(४) विद्यार्थियों को छात्र वृत्ति १५) मासिक दी जावे।

(५) इस वर्ष ६ तक छात्र वृत्तियां दी जावे।

(६) पाठविधि तथा अन्य नियमों की याददाश्त पेश हुई और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि पढ़ाई का Standard (योग्यता) उतना ही रहनी चाहिये जितना निम्न रिपोर्ट में दी जाती है।

(क) आर्य भाषा में भली भांति लिखना पढ़ना और बोलना आ जाना चाहिये।

(ख) संस्कृत की योग्यता कम से कम इतनी होनी चाहिये कि जितनी लघु कौमुदी पढ़े हुए विद्यार्थियों की हो सकती है।

(ग) सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका और संस्कार विधि का अच्छा ज्ञान होना चाहिये।

(घ) यजुर्वेदके १० अध्याय (प्रारम्भसे या छांटे हुए) अर्थ सहित कण्ठ होने चाहिये। इसी के साथ ऋषि दयानन्द के अर्थ करने की शैली से जानकारी प्राप्त करनी चाहिये।

(ङ) कुछ एक उपनिषद् ईश, केन, कठ, मुण्ड व मांडूक्य की मुख्य २ बातें कण्ठ कर लेनी चाहिये।

[च] लेख लिखने व्याख्यान देने और संस्कार करने का अभ्यास करना चाहिये।

[छ] पाठ विधि तथा अन्य नियमादि बनाने का कार्य श्री प्रो० इन्द्र जी के सुपुर्द किया जावे।

[७] यह भी निश्चय हुआ कि छात्र वृति पाने वाले विद्यार्थियों के अतिरिक्त यदि कोई और भी विद्यार्थी अपने खर्च से विद्यालय में पढ़ना चाहे तो उसे भी प्रविष्ट कर लिया जावे।

[८] प्रबन्ध कर्ता श्री प्रो० इन्द्र जी को नियत किया जावे।

[२] श्रद्धानन्द भवन का विषय [नोटिस के विषयसं २] पेश होकर निश्चय हुआ कि दिसम्बर के अन्त तक १ लाख रुपया एकत्र किया जावे और उस धन को निम्न प्रकार से प्रान्तों में बाँटा जावे।

देहली नगर व पंजाब प्रान्त	१४०००)
सयुक्त प्रान्त	१००००)
मध्य प्रदेश व बरार	२०००)
राजस्थान	५०००)
बम्बई प्रान्त	५०००)
सिन्ध	३०००)
कराची नगर	४०००)
अफ्रीका	२००००)
बरमा	१००००)
बम्बई नगर	१५०००)
कलकत्ता नगर	१२०००)

[३] सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि जो बिल श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के मन्त्री व प्रधान के हस्ताक्षरों से युक्त आया करे, उनका रुपया कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा दे दिया करें। श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के पास ३००) तक इम्प्रेस्ट के रहा करें।

(४) विशेष-रूप से निश्चय हुआ कि प्रचार विभाग खोला जावे जिस में १५०) मासिक तक व्यय किया जासकेगा परन्तु यह कार्य्य तब ही आरम्भ किया जावे जब कम से कम १०००) आ जावे। यह चन्दा प्रान्तिक सभाओं तथा दानियों से विशेष रूप से इसी कार्य्य के लिए इकट्ठा किया जावे।

(५) निश्चय हुआ कि आवश्यकानुसार सभा की ओर से उन आक्षेपों का उत्तर देने के लिए जो आर्यसमाज पर होते हैं तथा आर्य पुरुषों का कर्त्तव्य निर्देश करने के लिए प्रधान की ओर से घोषणा पत्र निकाले जाया करें। इस कार्य में प्रो० रामदेव जी प्रधान जी का सहयोग दें।

(६) निश्चय हुआ कि एक लेखक ३० रु० मासिक तक का रख लिया जावे।

(७) निश्चय हुआ कि दो चपरासियों में से १ चपरासी अलहदा कर दिया जावे।

(८) कुम्भ प्रचार का हिसाब पेश हुआ और स्वीकार हुआ। निश्चय हुआ २००) डेरों का किराया कुम्भ प्रचार से चार्ज किया जावे।

मन्त्री

श्रद्धानंद दलितोद्धार सभा के लिए १ लाख की अपील

स्वर्गवासी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित संस्थाओं में से जो संस्था उन्हें सब से प्यारी थी, और जिसके द्वारा वह अछूतों की विकट समस्या को हल करना चाहते थे, वह दिल्ली की 'दलितोद्धार सभा' है। इस सभा की श्री स्वामीजी ने स्थापना की थी, वह इसके पहले प्रधान थे। जब अन्य कार्यों की अधिकता के कारण उन्होंने प्रधान पद का परित्याग किया, तब भी वह सभा के संरक्षक बने रहे।

उनका विश्वास था कि जब अछूत कहलाने वाली जातियों को उनका उचित अधिकार और स्थान देकर हिन्दू जाति अपने पापं का प्रायश्चित करेगी, तभी वह सादर जीवन व्यतीत कर सकती है या स्वराज्य के योग्य हो सकती है। दलितोद्धार सभा का उद्देश्य यही है कि वह दलित जातियों के सुधार और उद्धार का यत्न करे, ताकि हिन्दूजाति के माथे पर अस्पृश्यता का जो कलङ्क लगा हुआ है, वह धुल जाय।

बलिदान होने से पूर्व स्वामी जी सभा को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के हाथों में दे गये थे। सार्वदेशिक आ० प्र० सभा ने दलितोद्धार सभा का नाम 'श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा' रख दिया है, और उसे पूरे उत्साह से चलाने का निश्चय किया है। इस समय सभा के आधीन निम्न लिखित कार्य चल रहे हैं।

[१] सभा के आधीन ३० से ऊपर वैतनिक तथा अवैतनिक कार्यकर्त्ता प्रचारक हैं। [२] उन भाइयों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए ३० 'पाठशालायें' खोली गई हैं जिन में १३०० के लगभग विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा के साथ वर्तमान प्रणाली के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

[३] देहली नगर के दलित भाइयों को बसाने के लिये नई दिल्ली के निकट एक Model Village 'नमूने का ग्राम' तैयार किया जा रहा है जिसका नाम 'आर्य नगर' निश्चय किया गया है। इस नगर में जहां १७५ घरों की आबादी होगी, वहां उनकी सामाजिक, शारीरिक तथा धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये एक समाज मन्दिर, एक पाठशाला, एक व्यायामशाला तथा एक चिकित्सालय भी होगा। इस सारी स्कीम के ऊपर ३० हजार के लगभग व्यय होगा।

[४] सभा ने दलित जातियों को दस्तकारी सिखाने के लिए खुर्जा, जिला बुलन्दशहर में एक शिल्प विद्यालय, खोलने का निश्चय किया है। प्रान्तीय सरकार तथा जिले के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने धन से सहायता की है। स्थानीय बोर्ड ने शिल्प विद्यालय के लिए भूमि प्रदान करदी है। इस विद्यालय में बढ़ई, लोहार, दर्ज़ी, कातने और बुनने का कार्य सिखलाया जायेगा और इस का प्रारम्भ मार्च में हो जायगा। इस सारी स्कीम के ऊपर भी लगभग १५ हजार रुपया प्रारम्भ में व्यय होगा।

[५] सभा ने मद्रास प्रान्त के 'विणूर' स्थान पर दलित जातियों को कृषि का काम सिखलाने के लिए कई एकड़ जमीन लेकर एक उपनिवेश स्थापित किया है। लगभग आठ हजार रुपया उस के ऊपर व्यय हो चुका है। उस उपनिवेश को उन्नत करने के लिए और भी रुपये की जरूरत है।

श्री स्वामी जी के हृदय को अत्यन्त प्रिय, अछूतोद्धार के कार्य को भली भांति चलाने और उनकी स्मृति को अमिट अक्षरों से लिखने के लिए आवश्यकता है कि हिंदू जनता 'श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा' की जी जान से सहायता करे और शीघ्र ही इस रकम को पूरा करदे। इस के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से केवल एक लाख रुपये की अपील की जाती है आशा है कि आर्य जनता श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की जी जान से सहायता करेगी।

धन भेजने का पताः—

(१) कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा देहली।

(२) सेन्ट्रल बैङ्क आफ इण्डिया देहली।

नारायण स्वामी
(प्रधान सार्वदेशिक सभा)

केशवदेव शास्त्री,
मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली।

❀ श्रद्धानन्द भवन देहली ❀

———:०:———

जैसा कि आर्य्यजनता को सूचित किया जाचुका है। सार्वदेशिक सभा ने स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्दजी की पुण्य स्मृति में देहली नगर में "श्रद्धानन्द भवन" बनवाने का निश्चय किया है तथा इस काम के लिए आर्यजनता से १ लाख रुपये की अपील की गई है। इस भवन में एक वृहत् पुस्तकालय खोला जावेगा जिस में प्रत्येक मत के यथा सम्भव अधिक पुस्तकें जमा की जावेंगी। इसके अतिरिक्त भवन समय २ पर अच्छे २ व्याख्यानों के लिए भी काम में आसकेगा।

यदि कोई धनी सज्जन चाहेंगे कि किसी मत विशेष के पुस्तकों का मूल्य वे देंगे तो पुस्तकालय का वह विभाग उन्हीं के नाम से खोल दिया जावेगा। जो सज्जन पांच सौ या अधिक धन इमारत के लिए देंगे उनके नाम का पत्थर भवन में लगाया जावेगा।

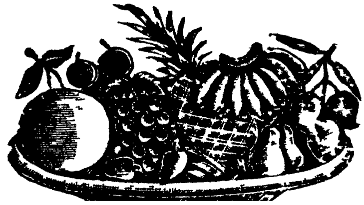
प्रत्येक सहृदय व्यक्ति इस बात का अनुभव करेगा कि देहली नगर में जहां पर स्वर्गीय स्वामी जी के जीवन का अधिक भाग व्यतीत हुआ था और जहां पर उनका बलिदान भी हुआ था, उन की यादगार में इस प्रकार के भवन का न होना कृतघ्नता का कारण होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द के कार्य्यों की प्रशंसा करने वालो! उन के महान बलिदान पर उन के छोड़े कार्य्यों की पूर्ति का उत्साह रखने वालो! अब समय है कि आप अपने उत्साह का परिचय देवें और तन, मन, धन से यत्न करके इस धन को पूरा करके यश के भागी बनें। प्रत्येक प्रकार का धन भेजने के पते :—

(१) कोषाध्यक्ष भारतवर्षीय सार्वदेशिक सभा देहली।

(२) सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड देहली।

नारायण स्वामी प्रधान, सार्वदेशिक सभा
केशवदेव शास्त्री मन्त्री, सार्वदेशिक सभा



विचार दर्पण

ईसाइयत और चमत्कार

— ——:o:——

माडर्न रिव्यू में अमरीका के डा० सुएडरलेएड ने निम्नलिखित आशय का लेख लिखा है :—

जब ईसाइयत का जन्म हुआ और ६० या ७० वर्ष तक या उसके बाद तक वर्तमान विज्ञान का जन्म नहीं हुआ था तब चमत्कारों की खूब भरमार थी क्योंकि इस बात का पता नहीं था कि संसार द्वारा परम्परागत क्रम से शासित होता आता है।

इसके बाद केप्लर के बनास्पति विषय खोज और न्यूटन के नियम एवं और बहुत सी भविष्य-वाणियां हुई जिसने संसार का रूप ही बदल दिया। इसने केवल उनका विस्तार ही नहीं किया वरन् उन सर्वव्यापक और सर्वशासक नियमों को एकत्रित कर दिया जिनके विषय में लोगों को पता नहीं था। आने वाली नूतन आवश्यकताओं के भावनाओं ने आश्चर्यों को और धक्का पहुंचाया यद्यपि पहले बहुत से लोग उनपर सन्देह करते थे।

वास्तव में जब प्रकृति की वैज्ञानिक भावनाएं वर्षों के बाद सामने आई फिर सन्देह का अवकाश ही कहां था। उनके पूर्वज उनपर विश्वास रखते थे और घटनाओं का पुलिन्दा उनके पास था जो कि ऐसे समय में ठीक कहे जा सकते थे जब न तो विज्ञान था और न ही कोई नुकताचीनी करने वाला था। वे समझते थे चमत्कारों की सत्ता परमात्मा के शासन के अन्तर्गत है जो कि सीधे अपनी व्यक्तिगत स्वाधीन इच्छा से शासन कर रहा है। फिर उस जमाने के लोग चमत्कारों में विश्वास नहीं रखते? उनके लिए सभी आश्चर्य है जो कि उसकी शक्ति से बाहर है।

लेकिन प्रचलित विज्ञान और विद्या जो पैदा हुई थी लोगों के उठती हुई नई बासनाओं के साथ बिलकुल बदल गई। जब यह बात स्पष्ट नहीं हुई कि परमात्मा अपने नियमों के अनुसार सर्वत्र काम करता है। चमत्कारों का भी खातमा हो गया और अब उनके लिए कहीं स्थान नहीं। भावी फूट लोगों की शान्ति में बाधा पहुँचाये। जब से ईसाइयत का यह विलक्षण रूप ईसाई देशों में दिखाई पड़ता है; जैसे अत्यन्त धार्मिक गिर्जों में भी बुद्धिमान लोगों का उन पर बिलकुल अविश्वास हो गया है और गिरजों के बाहर विशेषतः वैज्ञानिकों, विद्वानों, पढ़े लिखे लोगों और स्वतन्त्र विचारकों ने अन्ध-विश्वास को अपने दिमाग से बिलकुल निकाल दिया है।

लेकिन जैसे जैसे बुद्धिमान लोग इनको मानने योग्य नहीं समझने वे स्वयं ही सिद्ध कर रहे हैं। धर्म में उनकी आवश्यकता नहीं है।

पहले यह बलपूर्वक दावा किया जाता था कि बाइबिल की आश्चर्यजनक बातें ईसाइत की सचाई को साबित करती है। परन्तु अब वह दावा कमजोर हो गया है, समझदार आदमी अच्छी तरह समझ गये हैं लेकिन इनका आध्यात्मिक सचाई से कोई सम्बन्ध नहीं। अगर यह प्रमाणित किया गया था कि हर एक चमत्कार जिसका जिक्र पुरानी और नई बाईबिल में है, सैकड़ों बार उन घटनाओं ने अपनी सचाई सिद्ध की है और नास्तिकों को झूठा ठहराया है। अतः बाइबिल में आध्यात्मिक शिक्षा है।

अगर ईसा की धार्मिक शिक्षा सच्ची है, वे अवश्य सच्चे हैं। अगर हम स्वीकार करें कि उसने चमत्कार किये तो वे कुछ अधिक सच्चे नहीं कहलायेंगे। अगर हम कल्पना करें कि उसने कोई चमत्कार नहीं किया तो वे कुछ सच्चे कहलायेंगे। कल्पना कीजिये मैं आप को कहता हूं घृणा प्रेम से बढ़कर है और तब आप इसकी परीक्षा कीजिये। सांप के सिर पर पेंसिल घुमाइये तब स्वयं सिद्ध हो जायगा घृणा प्रेम से बढ़कर है या कल्पना कीजिये मैं हजारों पैन्सिल सांप के ऊपर घुमाता हूँ और हजारों दूसरे चमत्कार करता हूँ, यह सब मिल कर देंगे घृणा प्रेम से अच्छी है। ईसा कहता है "देना लेने से अच्छा है" क्या यह ठीक है। क्यों? क्योंकि वह चमत्कार करता था। कल्पना करो उसने कोई चमत्कार नहीं किया तो क्या यह नहीं होगा कि देना लेने से अच्छा है। क्या मुक्ति आश्चर्यों पर निर्भर है या परमात्मा की प्रार्थना पर या अच्छे राज्य पर। उपर्युक्त विवरण यह पता लगाने में हमारी सहायता करेंगे कि आध्यात्मिक तथा धार्मिक शिक्षा बाईबिल में है या उससे बाहर और कल्पित आश्चर्य इस पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते।

अध्यात्म-विद्या के बड़े विद्वाने जानते हैं कि लौकिक आश्चर्य जनक कार्यों का तथा अध्यात्मिक सचाई का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं। फिर भी इस विषय में व्यर्थ की चेष्टा करते हैं। उनका मत है कि जो ऐसे काम करता है उसमें ईश्वरीय शक्ति होती है। लेकिन परमात्मा किसी ऐसे को ऐसी शक्ति नहीं देता जो कि भला और सच्चा नहीं। इसलिये जब बाइबिल हमें कुछ बातें सिखाती है और उसी समय कुछ आश्चर्य पैदा करती है हम उसकी शिक्षा पर सादर विश्वास करते हैं क्योंकि आश्चर्य परमात्मा के विश्वास पात्रता के सूचक चिन्ह हैं।

यह दलाल कुछ हो सकती है क्योंकि यह सच्ची घटना के आधार पर नहीं किन्तु कल्पना पर है। सब से पहली यही कल्पना है कि जो कुछ आश्चर्य करता है उसमें ईश्वरीय शक्ति होती है। हमारे मित्र जो इस में तर्क करते हैं स्वयं पैगम्बर और शैतान पर विश्वास रखते हैं। फिर वे कैसे जानते हैं कि अद्भुत बातें करने की अलौकिक शक्ति पैगम्बर की ओर से आती है या शैतान की ओर से। जब मूसा और ओरन फरोह के आगे गये और उन्हों ने अपना चमत्कार दिखाया, सांप के सिर पर अपनी लकड़ी घुमाई कि राजा प्रभावित होगा और इसराइल के लड़कों को जाने देगा। हम सुनते हैं कि फरोह ने बुद्धिमानों और जादूगरों को बुलाया और उन्होंने चमत्कार दिखाये। हमारे तत्ववेत्ता दोस्त कठिनता से स्वीकार करेंगे ये चमत्कार दिखाने वाले चीनी सच्चे और भले आदमी थे कि परमात्मा ने उन्हें ऐसी धार्मिक शिक्षा और ऐसी शक्ति दी है कि वह चमत्कार दिखा सकें।

बलाम कोई भला और सच्चा आदमी नहीं था जिस पर विश्वास किया जासकता यद्यपि वह जो कहता था बाइबिल की भविष्य वाणियों के आधार पर नई और पुरानी बाइबिल में बहुत से चमत्कारों का वर्णन है जो लोगों ने दिखलाये हैं किंतु चाहे वह कुछ भी हों अच्छे और सच्चे हैं। ईसा ने स्वयं कहा है—"संसार में बहुत से झूठे ईसा और झूठे भविष्यक्ता जन्म लेंगे और बड़े २ चमत्कार दिखलायेंगे और लोगों को धोका देंगे।" आगे चलकर कहते हैं—"बहुत से लोग मुझे परमात्मा कहेंगे जिन के नाम मैं नहीं बतलाता किंतु इतना कहता हूँ उन की गणना शैतानों में है और वह बहुत से आश्चर्यजनक कर्तव दिखलायेंगे तब मैं उन्हें कहूंगा कि मैं तुम को नहीं जानता तुम यहां से चले जाओ, तुम पापी हो एपोकेलिप्स और और भविष्यवाणियों की किताब में बहुतसी ऐसी घटनायें हैं जिन से बड़ी हैरानी होती है, और जिन को परमात्मा के शत्रुओं ने अपना उल्लू सीधा करने के उद्देश्य से तथा दूसरों को झूठ पर विश्वास करा दिखलाया था।

इन बातों से तुम अच्छी तरह समझ सकते हो कि बाइबिल के कथनानुसार चमत्कार दिखलाने वाले सच्चे और अच्छे नहीं होते पर परमात्मा की ओर से आवश्यकतानुसार भेजे जाते हैं। यह बड़े आवश्यक समयों पर दिखलाये जाते थे कि कौन परमात्मा की ओर से भेजा गया और कौन नहीं तथा कौन सच्चा है और कौन झूठा।

ईसा के चमत्कार बड़े उपदेशप्रद है। हम बार बार लोगों का ध्यान उसी चमत्कारों की ओर आकर्षित करते हैं। उसने अच्छे लोगों को अपने धर्म पर विश्वास दिलाने के लिए चमत्कार करने की मुमानियत कर दी। उस ने कह दिया है कि इस में आपत्ति की सम्भावना है क्योंकि लोग कभी २ असली चीज के बजाय नकली की कदर करते हैं क्योंकि हम पढ़ते हैं—"ईसा बड़े मर्मभेदी शब्दों में कहता है कि लोग चमत्कार की खोज क्यों करते हैं। इस प्रकार वह बार बार कहता है कि उस के अनुयाइयों की चमत्कार की इच्छा उस की शिक्षा का सबूत है और इस बात पर जोर देता है कि उसकी शिक्षा ही उस का अपना सबूत है। सचाई सचाई है और झूठ झूठ। तमाम बात वही है चाहे उसे चमत्कार से मिलाओ या नहीं। नई और पुरानी एवं अन्य कई बाइबिलों में कोई विशेषता या सच्चाई नहीं क्योंकि उन में चमत्कारों की भरमार है। इन पुस्तकों में विशेषता तथा आध्यात्मिक शक्ति होगी यदि संसार में कोई मनुष्य चमत्कारों की कल्पना स्वप्न में भी न करे। मौन्टपाल के दानविषयक अनुपम अध्याय में २३ भजन में चमत्कारों क प्रमाण की कोई जरूरत नहीं। उस को सच्चा और युक्तिपूर्ण सिद्ध करने के लिये एक पत्थर को लकड़ी से जीवित करने का यत्न एक अवयवधरिता वाक्य से किया गया है।

— —:*:— —

वेद और सुरापान

'क्या वेद में सुरापान का विधान है' इस स्थापना का सप्रमाण खण्डन करते हुए 'मनोरमा' में श्रीयुत शङ्करराव जोशी ने लिखा है—

पाश्चात्य शिक्षा से दीक्षित लम्बी चोड़ी उपाधिधारी विद्वान अक्सर कहा करते हैं कि वेद में सुरापान की आज्ञा दी गई है और तत्कालीन आर्य लोग शराब पीते थे। सोम-रस-पान को लेकर वे यह बात बड़े जोरों से प्रतिपादित करते हैं। लेखक को भी कई बार वेद और सुरापान होने वाले वाद विवाद सुनने का अवसर मिला है। बड़ी २ उपाधिधारी इंगलेंड जर्मनी अमेरिका आदि २ पाश्चात्य देशों में शिक्षा प्राप्त दिग्गज विद्वानों के मुंह से ऐसी बातें सुनकर लेखक को इस बात पर कुछ

विश्वास होने लगा था कि वेद काल में शराब पीने की मनाई नहीं थी। अपनी शङ्का के समाधान के लिए लेखक ने कई वेदपाठी ब्राह्मणों से इस विषय पर सम्मति पूछी। मगर अधिकांश ब्राह्मण ऐसे ही मिले जो तोता-रटन्त की तरह वेद संहिता ऋचाओं को उगलना जानते हैं उनका अर्थ वे बता नहीं सकते। लेखक को किसी विद्वान वेदपाठी से अपनी शंका का समाधान कराने का अवसर ही नहीं मिला। लेखक समाचार पत्रों में इस प्रश्न को उठाकर अपना समाधान कर लेने का विचार कर ही रहा था कि एक मित्र द्वारा मराठी मासिक पत्रों के पुराने फाइल मिल गए। उन्हीं में लेखक को 'सोमपान' पर लेख पढ़ने को मिला यह लेख उसी के आधार पर लिखा गया है। यह लेख लिखने का मुख्य उद्देश्य यही है कि पाठक इसे पढ़ कर जानलें कि वेद में सुरापान का निषेध किया गया है और सोमरस सुरा नहीं है।

अकसर कहा जाता है कि सोम-रस एक प्रकार की शराब है, मादक पदार्थ है। परन्तु हम यह पूछते हैं कि मादकता किस पदार्थमें नहीं है। अन्न में भीतो वह मौजूद हैं। अफीम, जायफल जावित्री, आदि का सेवन करीब २ सभी भारतवासी करते हैं।

सोम एक लता का नाम है। इस को कूट पीस कर रस निकाला जाता था। याग के बाद ऋत्विज उसे निहित पाकर पान करते थे। सोम-रस का सेवन नशे के लिए नहीं किया जाता था। सोमयोग के सिवाय अन्य समय में सोम-रस पान करने की आज्ञा नहीं है। अन्य शास्त्रों में भी इस बात का प्रमाण नहीं मिलता है कि सोमयोग के अलावा दूसरे समय में भी कभी किसी ने सोम पान किया हो। मन को आनन्द, उत्साह आदि इष्ट फल प्राप्त होते नहीं देखे गये हैं। सोम-रस पचता भी तो नहीं है। वमन होकर निकल जाता है श्रुति में यह लिखा है।

प्रत्यस्मै पिपीषते। विश्वानि विदुषेभर।
अरंगमाय जग्मवे। अपश्चाद्ध्वने नरे॥

पान करने के पहले हुत शेष सोम को अभिमन्त्रित करने का मन्त्र है जिसका अर्थ है, "हे वृद्धि जल मिश्रित सोम भक्ष्य, इन ऋत्विजों को तू अपना स्वरूप प्रदान कर। यह तुझे पान करने की इच्छा कर रहा है। यह सब यज्ञ यागादि कर्म जानता है। कुछ भी त्रुटि न रहने देगा। यह यज्ञ यागादि कर्म करने में प्रवृत्त होगा। पान करने पर तुझ को पचाने की शक्ति इसमें नहीं है।"

'अपश्चाद्ध्वने' का अर्थ विद्यारण्य ने 'भक्षोत्तर कालं दीप्तिर हितोय भक्षतुं जरयितुम समर्थाय' किया है। यह मन्त्र तैतरेय ब्राह्मण, घृतीय काण्ड, सप्तम प्रपाठक, दसवें अनुवादक में है।

यं सोमं वमितियः सोमवामी स्यात्तस्मा एतँ सोमेन्द्रं श्यामाकं चरुं निर्वपेत् (तै संहिता, कांड २ अनुवादक ३)

इस मन्त्र से भी यही मालूम होता है कि सोम रस का पचा लेना सहज नहीं है। सोम-रस ग्लास या लोटा भरकर भी तो नहीं पिया जाता था। आचमनी भर सोमरस पीने का रवाज था। इससे यह साफ जाहिर होता है कि सोमरस शराब की पंक्ति में नहीं बिठाया जा सकता। सोमयाग के ऋत्विजों के अलावा दूसरों को सोमरस पीने की इजाजत नहीं थी। सोम-रस हजम नहीं होता था और उसके पीने से उत्साह, आनन्द आदि की प्राप्ति भी नहीं होती थी।

केवल ब्राह्मण ही सोम पी सकता था। याग कर्ता चाहे क्षत्रिय या वैश्य ही क्यों न हो किन्तु

वह सोमरस नहीं पी सकता था और उसे पीने का अधिकार भी नहीं था।

यदि क्षत्रिय या वैश्य को यज्ञ में आर्त्विज्य करना पड़ा और उसे सोमपान करने की इच्छा हुई तो वटि-कलिका पीस कर दही में मिला कर खिलाने की उसे आज्ञा दी गई है।

तैत्तरेय संहिता कांड २ प्रपाठक १ अनुवादक ५ में लिखा है कि जिस ब्राह्मण की तीन पुश्त तक किसी ने सोमरस न पिया हो उसे प्रायश्चित्त करना चाहिये। और प्रायश्चित्त की विधि भी बतलाई गई है।

यस्य वेदश्च वेदीच विच्छिद्येते त्रिपूरुषम्।
स वै दुर्ब्राह्मणो ज्ञेयः॥

वेदाध्ययन और सोमयाग जिस ब्राह्मण वंश में तीन पुश्त तक किसी ने न किया हो उसे 'दुर्ब्राह्मण्य'दोष प्राप्त होता है। तैत्तिरेय संहिता में जिस ब्राह्मण को सोम पान की इच्छा होती है उस के लिये प्रायश्चित्त भी बतलाया गया है।

'अन्नस्य वा एतच्छमलं यत्सुरा'

'उच्चारावस्करौ शमलं शकृत्। पुरीषं मथवर्चस्कमस्त्री विष्ठा विशोस्त्रियो।' ऐसा अमर कोषकार ने लिखा है। मतलब यह कि सुरा अन्न का शमल या विष्ठा है। कृत्रिम और अकृत्रिम सुरा में भिन्नता तो अवश्य ही होती है, किन्तु फिर भी सुरा का शमलत्व नष्ट नहीं हो सकता।

सोमो राजाऽमृतं सुतः। ऋजिषेणाजहान्मृत्युम्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियम्। विपानँ शुक्रमन्धसः। इन्द्रस्येन्द्रियम्। इदं पयोऽमृत मधु।

अर्थ—यह सोम राजा स्वयं अमृत है। जिस प्रकार अमृत पान करने वाले को मृत्यु का भय नहीं रहता उसी प्रकार सोमपान करने वाले को अपमृत्यु का भय नहीं रहता। इसके योग से यज्ञानुष्ठान होते हैं। यह इन्द्रिय शक्ति को शुद्ध करता है। सोमरस अन्नरस से भी उत्तम और शुद्ध है। यह प्रत्यक्ष अमृत है।

अध्वर्यु निम्न लिखित वेद मन्त्र का उच्चारण करके सोमरस-पान करता था—

यमश्विना नमुचेरा सुरादधि। सरस्वत्यसनोदिन्द्रियाय। इमंतँ शुक्रं मधुमन्तमिन्दुम्। सोमँ राजानमिह भक्षयामि।

अर्थ—नमुचि नामक असुर से अश्वनीकुमार द्वारा हरण किये हुये और बल बुद्धि के लिए सरस्वती द्वारा प्रदत्त, शुद्ध, मधुर और ऐश्वर्यप्रद सोमराज को मैं इस यज्ञ में पान करता हूँ।

सोम, सुरा नहीं है और सोम याग के सिवा अन्य मौकों पर सोम-पान नहीं किया जाता था, इस सम्बन्ध में और भी कई उदाहरण दिए जा सकते हैं; किंतु स्थानाभाव के कारण हमको उपर्युक्त मन्त्र उद्धृत करके ही सन्तोष मान लेना पड़ता है।

स्मृति में लिखा है—

'सुरा वै मलमन्नानाम् पाप्मा शमलमुच्यते।

अर्थात्—सुरा अन्न का मल, पाप और विष्ठा है। और इसी लिए लिखा है कि द्विज को सुरा-पान नहीं करना चाहिए।

यजुर्वेद के विरजा होम प्रकरण में लिखा है—

चोरस्यान्नं नवश्राद्धं ब्रह्महा गुरु तल्पगः।
गोस्तेयꣳ सुरापानं तिलाशांतिꣳ शमयन्तु स्वाहा।

अर्थात—हे परमात्मा, ये तिल, चोर का अन्न एकोद्दिष्टादि श्राद्धान्न भोजन, ब्रह्महत्या, गुरुपत्नीगमन, गोस्तेय, सुरापान, भ्रूणहत्या आदि पातकों का नाश करें।

गणेश अथर्वशीर्ष में लिखा है कि जो अथर्वशीर्ष का पाठ करता है, वह पञ्च महापातकों से

मुक्त हो जाता है। और काठक संहिता में ब्राह्मण को शराब न पीने की आज्ञा दी है।

सामवेदान्तर्गत छान्दोग्य ब्राह्मण में लिखा है–

तदेष श्लोकः स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबᳬंश्च गुरोस्तल्पमावसन् ब्रह्महा चैते पतन्ति चत्वारः पञ्चमश्चाऽचरᳬं स्तैरिति। अथ हय एतानेवं पञ्चाग्निं वेद न स तैरप्याचरन्पाप्मना लिप्यते।"

अर्थ—सोना चुराने वाला शराबी, ब्राह्मण गुरु-पत्नी गमन करने वाला और ब्रह्महत्या ये चार पतित हैं। इनसे संसर्ग रखने वाला भी पतित हो जाता है। इन पांच अग्नियों को जो जानता है, वह इन महापातकियों के संसर्ग से भी पतित नहीं होता।

उक्त उदाहरण में साफ लिखा है कि शराबी के संसर्ग मात्र से आदमी पतित हो जाता है, तो शराब पीने की आज्ञा वेद में कैसे दी जा सकती है।

आशा है इस लेख को पढ़ कर मेरे जैसों का समाधान हो जायगा और उनका यह भ्रम दूर हो जायगा कि सोम शराब नहीं है और शास्त्रों में शराब पीना निषिद्ध माना गया है।

शङ्करराव जोशी

—— :o: —:o:——

हिंदू मुस्लिम समस्या

पूना के मराठा पत्र ने हिंदू मुस्लिम समस्या पर निम्न लिखित प्रकाश डाला है।

यद्यपि भारत वर्ष की ऋतुओं में केवल बर्सात की ही ऋतु में तूफान आता है, परन्तु हमारे देश के राजनैतिक अंतरिक्ष में आज कल हिंदू मुस्लिम विरोध का तूफान हमेशा ही आता रहता है, जिस से स्वराज्य की आशा कोसों दूर चली गई है। जाति विरोध को प्रायः बड़े भयानक रूप में दिखलाया जाता है और कहा जाता है कि हम स्वराज्य योग्य नहीं। यद्यपि हम इस बहस में पड़ना नहीं चाहते कि इस आग को किसने भड़काया परन्तु यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि खिलाफत के प्रश्नों को कांग्रेस का एक भाग बनाने और जातिगत प्रतिनिधित्व ने विरोध को पैदा करने और बढ़ाने में बहुत हिस्सा लिया। यह फिसाद का सोता खोला गया और जब यह जोर शोर से बहने लगा तब इसका रोकना बड़ा कठिन होगया। यदि इस को रोकने के लिए बन्द बांधा जाय तो यही दूसरी ओर ठोंठ मारने लगेगा इस लिए अच्छा यही है कि इसे इस के हाल पर छोड़ दिया जाये। यह बात विचित्र तो मालूम होगी परन्तु समय के अनुसार यही ठीक मालूम होती है। डा० मुंजे ने हिंदू महासभा के प्रधान की हैसियत से कहा है 'कि मुसलमानों को छोड़ दो वह जो चाहे करें, मगर तुम अपने में शक्ति पैदा करो। एक और इलाज भी है जैसा कि टाइम्स ऑफ इण्डिया ने लिखा था कि सरकार का काम है कि फसाद की जांच करे और फसाद के कारणों को रोके। सरकार के हाथ में बड़ी शक्ति है फिर जब वह रोक थाम नहीं करता तब नानाप्रकार की शंकायें पैदा होती हैं। हिंदुओं ने देख लिया है कि सरकार मुसलमानों की ओर झुकी हुई है इस लिए हम अपने अधिकारों की रक्षा स्वयं ही करें। मुस्लिमों ने

यह समझ लिया है कि वह हिंदुओं पर अपना दबाव डाल देंगे। इस कारण वह हिंदुओं के धार्मिक अधिकारों की कोई परवाह नहीं करते मुसलमान समाचार पत्र और मुल्ला भड़काने से बाज़ नहीं आते। परन्तु धार्मिकता के सामने जुल्म ठहर नहीं सकता। जिनके हृदयों में देश का हित है वह कहते हैं कि हिंदु मुस्लिम एकता बिना स्वराज्य नहीं मिलेगी यह ठीक है, परन्तु मुसलमान हिंदुओं के साथ अत्याचार करते हैं कि वह अपने धार्मिक अधिकारों से हाथ उठालें। अब यह कहने का समय आगया कि यदि हिंदू बिना मुसलमानों के स्वराज्य प्राप्त नहीं कर सकते तो मुसलमान भी हिंदुओं से बिगाड़ कर स्वराज्य नहीं पासकते शोक की बात है कि गत ४० वर्षों में कांग्रेस के नेताओं ने अपने जीवन सेवा में लगा दिये परन्तु अब इनकी सब मेहनत अकारथ गई। मुसलमान यह समझ रहे हैं कि उन को स्वराज्य के लिए कोई कुर्बानी नहीं करनी पड़ेगी। धार्मिक घेरे में मुसलमान हिंदुओं को नौकर शाही की सहायता से पछाड़ रहे हैं। हिंदुओं का कर्तव्य है कि हिम्मत न हारें बल्कि अपनी शक्ति और बल बढ़ाना चाहिए। गिन्ती और बुद्धि और धन में हिंदू बढ़े हुए हैं, परन्तु इनमें अभी तक वह जोश नहीं आया जो प्रत्येक जाति के कार्य की सफलता के लिए आवश्यक है। केवल संगठन होने से ही हिंदू संसार में जीवित रहेंगे। इन्हें स्वराज्य प्राप्त करना है इस समय इन्हें अपनी सामाजिक त्रुटियों को दूर करना चाहिए मुसलमानों से झगड़ा निपटानेकी कोई आवश्यकता नहीं। यह खून खराबे होने के बाद आप ही ठीक होजायेंगे। अपनी अवस्था को ठीक करने से पहिले बात चीत करने का मौका नहीं है।

सम्पादकीय विचार-धारा

'सार्वदेशिक' का लक्ष्य

'सार्वदेशिक' आर्य सार्वदेशिक सभा का मुख्य पत्र है। आर्य सार्वदेशिक सभा भूमण्डल भर के आर्यों की प्रधान संस्था है। उसका उद्देश्य संसार मे वैदिक धर्म का प्रचार करना और आर्य समाज की शक्तियों को संगृहीत तथा संगठित करना है। सार्वदेशिक का लक्ष्य भी यही है कि वह आर्य सिद्धान्तों का प्रचार, और आर्यसमाज की शक्तियों का संगठन करे। पीपल के विशाल पेड़ का बीज बहुत छोटा होता है। सार्वदेशिक पत्र का जो वृक्ष रूप है, यह उसका केवल बीजरूप है। लक्ष्य इतना बड़ा और प्रारम्भ इतना छोटा! शायद पाठक आश्चर्यित हों कि अभी तक तो 'सार्वदेशिक' का रंग-ढंग बहुत ही घटिया है, भविष्य में क्या आशा रखें? इसलिए हम कुछ शब्दों में यह बतला देना चाहते हैं कि 'सार्वदेशिक' का आदर्श और लक्ष्य क्या है? सार्वदेशिक को हम आर्यसमाज का बहुत ऊंचे दर्जे का मासिक पत्र बनाना चाहते हैं। पहले तीन अङ्कों से यह अनुमान नहीं लगाना चाहिये कि पत्र का भविष्य क्या

है ? पाठक देखेंगे कि प्रतिमास सार्वदेशिक के आकार प्रकार तथा लेख संग्रह में उन्नति हो ही जायगी। थोड़े ही दिनों में इसे हम हिन्दी के सर्वोत्तम मासिक पत्रों की कोटि तक पहुंचा देना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि इसमें धार्मिक सामाजिक तथा साहित्यिक लेखों के अतिरिक्त मास भर की आलोचना भी हुआ करे। महीने भर में धार्मिक, सामाजिक या राजनीतिक जगत् में जो कुछ हुआ, उसपर दृष्टि डालना भी 'सार्वदेशिक' का कर्तव्य होगा। अगले अङ्क से चित्र देना भी आरम्भ किया जायगा।

आर्यपुरुषों का कर्तव्य

आर्यपुरुषों का 'सार्वदेशिक' के प्रति क्या कर्तव्य है; यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है। सार्वदेशिक सभा आर्यपुरुषों की एक शिरोमणि संस्था है। 'सार्वदेशिक' सार्वदेशिक सभा का है, इस कारण 'सार्वदेशिक' आर्य मात्र का मासिक पत्र है। इसे तरह तरह की सहायता देना आर्यों का कर्त्तव्य है। हम यह तो नहीं कहेंगे कि आर्य पुरुषों अन्य मासिकपत्रों या पत्रिकाओं का खरीदना छोड़ दें, परन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि वह यदि किसी मासिक पत्र के खरीदने की इच्छा और शक्ति रखते हैं तो 'सार्वदेशिक' को अवश्य खरीदें। यह उनका धार्मिक कर्त्तव्य है। पञ्जाब और संयुक्त प्रान्त में परिवारों में प्रायः कोई न कोई मासिक पत्रिका पढ़ी जाती है, हम निवेदन करेंगे कि यह आदर सार्वदेशिक को दिया जाय। दूसरी पत्रिका के साथ साथ सार्वदेशिक को भी घर में प्रवेश दिया जाय। आर्यसमाजों के लिए तो सार्वदेशिक का मंगवाना अत्यन्त आवश्यक है। सार्वदेशिक सभा की ओर से आर्यपुरुषों के प्रति जो भी निर्देश देने होंगे, वह सार्वदेशिक द्वारा ही दिये जायंगे। महीने भर में आर्य जगत् में जो नई नई घटनायें होंगीं, उनपर भी प्रकाश डाला जाया करेगा। यत्न होगा कि पाठकों को प्रतिमास पर्याप्त आत्मिक भोजन मिलता रहे। हमें आशा है कि प्रत्येक आर्यसमाज 'सार्वदेशिक' का ग्राहक बनेगा और जिन आर्य परिवारों में अन्य पत्र पत्रिकाओं का प्रवेश है, वह सार्वदेशिक को अपनाना अपना कर्त्तव्य समझेंगे।

आर्यसमाज पर धक्के

आर्यसमाज के आधी सदी पुराने जीवन में कई बड़े बड़े झोंके आ चुके हैं। उन झोंको से आर्य समाज का कुछ नहीं बिगड़ा। उल्टी पुष्टि ही मिलती रही है। पहला धक्का सनातन धर्म की ओर से लगा था, परन्तु वह देर तक न रह सका क्यों कि आर्यसमाज और सनातन धर्म में देर तक विरोध रह ही नहीं सकता था। एक ही वृक्ष की दो शाखाओं में कितने दिनों तक झगड़ा रह सकता है ? दूसरा धक्का ईसाइयों की ओर से आया। ईसाइयं ने देखा कि हिन्दुओं में जिस आसानी से उन्हें पहले शिकार मिला करते थे. अब नहीं मिलते। आर्यसमाज ने आकर रास्ते में रुकावट डाल दी। ईसाई पादरियों के दिल में बड़ा रञ्ज पैदा हुआ, और उन्होंने आर्यसमाज की शिकायतें सरकार के पास भेजनी आरम्भ कीं। उन शिकायतों में पादरियों ने कोई हथियार चलाने से नहीं छोड़ा। 'आर्यसमाजी बाग़ी हैं' यह शोर पहले पहल ईसाई पादरियों की ओर से मचाया गया। उनसे सरकार कुछ प्रभावित भी हुई पटियाला केस उसी प्रभाव का परिणाम था, परन्तु सरकार ने शीघ्र ही अनुभव किया कि यह सौदा महंगा है। एक धार्मिक सोसायटी को कुचलने का यत्न करना व्यर्थ है। कुछ दिनों तक उधर से शान्ति रही, परन्तु शीघ्र ही एक नई आंधी उठी। ईसाइयों की तरह मुसलमानों ने भी अनुभव किया कि आर्यसमाज के कारण भारत में इस्लाम का प्रचार

रुक सा गया है। मुसलमान भी आर्यसमाज से जलने लगे। जब संगठन या शुद्धि के कार्य से मुसलमान घबड़ाये तो उन्होंने सारा क्रोध आर्यसमाज पर ही निकाला।

मुसलमान और आर्यसमाज

आर्यसमाज एक सुधारक सोसायटी है। जो सोसायटी सुधार का बीड़ा उठाती है, वह दूसरों को थोड़ा बहुत नाराज़ किये बिना चार कदम भी आगे नहीं चल सकती। यद्यपि हम स्वीकार करते हैं कि जहां तक सम्भव हो, सुधारकों को संघर्ष से बचना चाहिये तो भी सुधार का कार्य ही ऐसा है कि थोड़ी बहुत रगड़ पैदा होती ही है। फिर आर्यसमाज तो चौमुखी लड़ाई लड़ रहा है। वह देश और विदेश के सभी धार्मिक विचारों की कड़ी आलोचना करता है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश में न ईसाई को छोड़ा न मुसलमान को, न अवतारों का लिहाज किया और न तीर्थंकरों का। परिणाम यह निकला कि आर्य समाज के विरोधियों की संख्या बहुत अधिक हो गई। आर्यसमाज के संचालकों ने विरोधियों के प्रहारों को बड़े धैर्य से सहन किया, और अपने कार्य को शान्ति से जारी रक्खा। परिणाम यह हुआ कि विरोधी खिझ गये और भले या बुरे किसी भी उपाय से उसे गिराने के लिए तत्पर हो गये। परिस्थिति यह है कि इस्लाम के प्रचारकों और समर्थकों की सारी शक्ति आर्यसमाज को कुचलने में लग रही है। आर्यसमाजियों को सनातनी हिन्दुओं से, सिक्खों से, ईसाइयों से, सरकार से—किं बहुना सभी से झाड़ कर अलग कर देने का यत्न हो रहा है। जो लोग आर्यसमाज के जोरदार कार्यक्रम से तंग आये हुए हैं, वह अपनी शक्तियों को एकत्र करके आर्यसमाज पर वार करने की स्कीमें बना रहे हैं।

सरकार और आर्यसमाज

ब्रिटिश सरकार का आर्य समाज के साथ जो सलूक रहा है उसे हम हथियारबन्द सुलह के नाम से पुकार सकते हैं। सरकार आर्यसमाज से असन्तुष्ट है, इसमें सन्देह नहीं, परन्तु उसने आजतक आर्यसमाज पर सीधा आक्रमण नहीं किया, यह भी असन्दिग्ध है। जहां आर्यसमाज की विरोधी शक्तियां हमेशा सरकार से सहायता की आशा रखती रही हैं, वहां पर स्वीकार करना पड़ेगा कि सरकार ने कोई ऐसा कानून नहीं बनाया जो आर्यसमाज पर सीधा आघात पहुँचाता हो। सरकार आर्यसमाज को कुछ अविश्वास की दृष्टि से देखती रही है परन्तु यह स्वीकार नहीं करती कि उससे छुटकारा पाने का उपाय दबाना है। अंग्रेज जाति खूब जानती है कि दबाकर किसी भी धार्मिक प्रवाह को रोका नही जा सकता। इस कारण सरकार चोट तो पहुंचाती है परन्तु घाव नहीं करना चाहती। गोरे अखबार सरकार की नब्ज़ है। उसपर हाथ रखकर आप जान सकते हैं कि सरकार के हृदय में क्या भाव काम कर रहा है? अभी उस दिन टाइम्स आव इण्डिया ने जो इशारा फेंका है, (जिस के सम्बन्ध में इस पर्चे में बहुत सा लोकमत संगृहीत किया गया है) उससे स्पष्ट विदित होता है कि सरकार आर्यसमाज के सम्बन्ध में व्याकुल है, परन्तु हाथ डालने से कतराती है।

आर्य पुरुषों का कर्तव्य

ऐसी दशामें यह प्रश्न उठता है कि आर्य पुरुषों का क्या कर्तव्य है? क्या आर्य पुरुष विरोधियों की बड़ी संख्या को देख कर दब जायं? या अपने सुधार के कार्य क्रम को शिथिल करदें? यह सोचना भी कठिन है। आर्य पुरुष जिस धैर्य और दृढ़ता से कार्य करते रहे हैं, उसी से करते रहे, जैसे अब तक उनके यत्नों को चार चांद लगते रहे

हैं, वैसे ही आगे भी लगते रहेंगे। जो कार्य कर्तव्य बुद्धि से किया जाता है, वह अवश्य ही सफल होता है। ऋषि दयानन्द का लगाया हुआ धर्म बीज व्यर्थ नहीं जा सकता। हां, निम्न लिखित नियमों पर प्रत्येक आर्य पुरुष को ध्यान रखना चाहिए।

(क) जब तक सरकार स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा न करदे कि वह आर्य समाज को दबाना चाहती है या समाज के कार्य पर सीधा आक्रमण न करे तब आर्य समाज को और आर्य पुरुषों को चाहिये कि सरकार को मित्र कोटि में ही रखें।

(ख) हृदयको शान्त रखें। कार्यको जारी रखें। आन्दोलन को ढीला न होने दें।

(ग) व्यर्थ में संघर्ष पैदा करने से बचें। अन्य मतवादियों के साथ वाद विवाद और शास्त्रार्थ यदि अत्यन्त आवश्यक ही हों तो नर्म और शिष्ट भाषा का प्रयोग करें। दूसरे धर्म वालों के बुजुर्गों के लिए निन्दा के वाक्यों का प्रयोग न किया करें।

(घ) भजनों और व्याख्यानों में कड़वी भाषा के प्रयोग से बचें। अपनी बात पर जमे रहें, परन्तु ठोकर मारने में जल्दी न करें। यदि इन नियमों का पालन करते हुए आर्य पुरुष वैदिक धर्मप्रचार के कार्य को उत्साह से करते जायंगे तो जैसी सफलता उन्हें अब तक प्राप्त होती रही है, उससे भी कई गुना अधिक सफलता का सौभाग्य उन्हें प्राप्त होगा।

पुस्तक समालोचना

सामवेद संहिता-भाषा भाष्य

भाष्यकार श्री पं० जयदेव शर्म्मा विद्यालंकार मीमांसातीर्थ। प्रकाशक आर्य साहित्य मण्डल अजमेर। मू० ४) और स्थिर ग्राहकों से ३)।

आर्य विद्वानों में ऐसे बहुत कम विद्वान् हैं जो अपने को वैदिक साहित्य की वृद्धि में लगाते हैं। सर्वसाधारण में सुगम भाषा में और सस्ते रूप में संदेश को पहुंचाने के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री पण्डित जयदेव शर्म्मा विद्यालंकार मीमांसातीर्थ ने जो यह प्रयास किया है वह बहुत ही सराहनीय है। प्रकाशकों का यह संकल्प कि इसी प्रकार की दस जिल्दों में चारों वेदोंका भाष्य प्रकाशित करेंगे, भी बहुत उत्तम है।

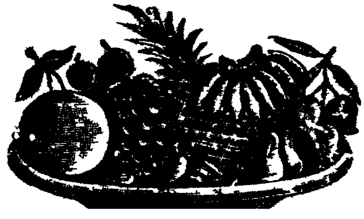
प्रस्तुत भाष्य में मन्त्र संहिता स्वरसहित दिये गये हैं और अन्वयानुसार मन्त्रों के पदच्छेद करते हुए सरल भाषा में ऐसी रीति से अर्थ लिखा गया है

कि मन्त्र का अर्थ शीघ्र ही समझ में आजाता है। स्थान २ पर भावार्थ और तुलनात्मक उपनिषद् वाक्यों को रख कर योग्य विद्वान् भाष्यकार ने सोने में सुगन्ध कर दिखाया है। प्रत्येक मनुष्य के साथ प्रतीक द' गई है कि वह मन्त्र अन्य वेदों में कहां कहां आया है, प्रत्येक मन्त्र के साथ ऋषि देवता दिए हैं और पाद टिप्पणी में पाठ भेद और आवश्यक पदोंपर विवरण दिया है। स्थान २ पर योग्य ग्रन्थकार ने अन्य मूलसंहिता प्रकाशकों के प्रमादों को भी दर्शाया है। प्रारम्भ में ५० पृष्ठों की भूमिका और अन्त में ५० पृष्ठों का परिशिष्ट है जिस में ब्राह्मण ग्रन्थों से वैदिक पदोंपर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। यह सब सामग्री जो इस ग्रन्थ में संग्रह की है उस का उपयोग वेद के स्वाध्याय शील विद्यार्थियों और विशेष गवेषणाशील पाठकों के लिये बहुत उपयोगी है। ग्रन्थकार का परिश्रम देखकर चित्त को बहुत आनन्द होता है। गुरुकुल कांगड़ी से निकले विद्वान् स्नातकों से ऐसे उपयोगी ग्रन्थ के लिखने की आशा थी। ग्रन्थकार का मन्तव्य है कि सामवेद उपासना काण्ड का प्रदर्शक है, इसी विचार से सामवेद का भाष्य किया गया है। भूमिका में भाष्यकार ने अपने मन्तव्यों को दर्शाते हुए वेद के बहुत से उपयोगी विषयों को स्पष्ट किया है, और देखने से भी प्रतीत होता है कि भाष्यकार का यह भाष्य स्वतन्त्र है। लेखक के शब्दों में—"वेदों की सब से उच्चकोटि की व्याख्या ब्राह्मण ग्रन्थों में की गई है उन में यज्ञ की क्रिया का अध्यात्म अर्थ भी किया है।" अब समस्त वैदिक कर्मकाण्ड का अर्थ अध्यात्मपरक है तो कोई कारण नहीं कि उस में विनियुक्त मन्त्रों का अर्थ अध्यात्मपरक न हो। अन्य भाष्यकारों ने ब्राह्मण ग्रन्थों के इस रहस्य को नहीं समझा। इसी से जब वह वेदों का अध्यात्मपरक अर्थ नहीं लगा सके तब वेद को नित्य ईश्वर ज्ञान मान कर भी उन का ऐतिहासिक अर्थ करने एवं भौतिक पक्ष में अर्थ करके उनके गूढ़ ब्रह्मपरक विशेषणों को न सुलझा सके।" भूमिका में भाष्यकार ने अपनी शैली को और अपने भाव को बहुत स्पष्ट रूप में रखने का यत्न किया है। जिस उद्देश्य से भाष्य को स्वतन्त्र रूप से किया है तदनुसार भाष्यकार ने भूमिका में कोई बात उठा भी नहीं रखी।

भाष्यकार के प्रयास को देखकर हम इस पवित्र प्रयत्न की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। यों तो वेदों के रहस्य पर जितना भी अधिक गहराई से विचार किया जाय उतना ही अधिक प्राप्त होता है।

अन्त में प्रकाशक से एक बात अवश्य निवेदन करेंगे कि ऐसे उपयोगी ग्रन्थ को जहां सजाने और सुन्दर बनाने में इतना प्रयास किया है वहां कागज कुछ और उत्तम लगता तो अच्छा था क्योंकि कहीं कहीं अक्षरों की छपाई आर पार होजाने से भद्दा मालूम होता है।

हम हृदय से चाहते हैं कि आर्यजनता इस प्रयास का आदर करे और वेदों के नित्य स्वाध्याय से लाभ उठावे।



दान सूची सार्वदेशिक सभा बाबत मास अप्रैल १९२७

श्रद्धानन्द भवन निधि

धन	दाता
२)	खेमचन्द प्यारेलाल वैश्य पोटाताबा
२७)	मन्त्री आर्य समाज सिकन्दराबाद
७।-)	काली शङ्करलाल श्रीवास्तव्य मोतीपुर
४॥।)	ठाकुर नारायण सिंह पो० फकाना (सिकन्दराबाद)
४६।)	सुरजनसिंह ऊन्दरा
४)	दुर्गादास जी कोटा
१९)	विविध

योग १०६।≈)

श्रद्धानन्द दलितोद्धार [illegible]

धन	दाता
३)	ठा० ज्ञानसिंह मिठिया (हर्दोई)

योग ३)

शुद्धि फण्ड

धन	दाता
३२५)	म० सुगनचन्द जी हैडक्लर्क यू० सी० उदयपुर के उद्योग से सगृहीत
१२५॥≈)	गुप्तदान

योग ४५०॥≈)

[illegible]स प्रचार

धन	[illegible]
९४५)	सेठ जुगल किशोर बिड़ला

योग ९५०)

देश देशांतर प्रचार

२२)	श्री मन्त्री आर्य समाज गोजारा (लायलपुर) के उपयोग से बिक्री नोट शताब्दी

योग २२)

कुलयोग १५३२)

दान दाताओं को धन्यवाद है।

नारायणदत्त कोषाध्यक्ष
आर्यावर्तीय सार्वदेशिक सभा
देहली।

नोट—गत अप्रैल मास के अङ्क में ५०) जो साहू रामस्वरूप जी मुरादाबाद के दिये हुए दिखलाये गये थे, वे वस्तुतः आपके उद्योग से आर्य समाज मण्डी मुरादाबाद की ओर से दिये गये थे। पाठक सुधार लें—

नारायणदत्त
कोषाध्यक्ष,

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रंथ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को, वैदिक प्रेस की अपेक्षा, कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है—इसके मंगाने के लिए शीघ्र आर्डर भेजने चाहियेः—

(१) आर्याभिविनय	।-)
(२) सत्यार्थ प्रकाश	१)
(३) काशी शास्त्रार्थ	-)
(४) सत्यधर्म विचार	-)॥
(५) पञ्च महायज्ञ विधि	-)॥
(६) आर्योद्देश्य रत्नमाला	॥)
(७) संस्कार विधि	॥)
(८) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१॥)
(९) व्यवहार भानु	≈)॥
(१०) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	≈)॥
(११) शिक्षापत्री स्वा० नरायण मत खण्डन	≈)
(१२) भ्रमोच्छेदन	-)
(१३) भ्रान्ति निवारणम्	≡)
(१४) गो करुणानिधि	≈)
(१५) स्वीकार व्ययम्	)॥
(१६) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय ३ रंगीन फोटो महर्षि स्वा० विरजानन्द का फोटो तथा ३ चित्र परोपककारिणी सभा के सभासदों व अधिकारियों के—	।)

पुस्तकाध्यक्ष—
सार्वदेशिक सभा
श्रद्धानन्द बाज़ार देहली

सार्वदेशिक के नियम

१ सार्वदेशिक प्रत्येक [illegible] की २५ ता० को प्रका[illegible]ता है।

२ वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २)। वी पी से २≡) विदेश से ३॥)। वी० पी० से ३॥≡)। नमूने का अङ्क मुफ्त भेजा जाता है।

३ सार्वदेशिक का वर्ष मार्च मास से आरम्भ होता है, किंतु वर्ष के किसी भी मास से ग्राहक बन सकते हैं। यह ग्राहक की इच्छा पर निर्भर है कि चाहे वे वर्ष की आरम्भिक प्रतियों को मंगाकर मार्च से ही ग्राहक हो जावें [illegible] उसी मास से जब कि वह रुपया भेजें।

४ गुप्त नमूना हम अपनी अनुकूलता पर भेजते हैं।

५ पत्र आदि लिखते समय अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट लेख में होनी चाहिए।

६ प्रत्येक ग्राहक के पास, "सार्वदेशिक" बड़ी साव- [illegible] करके भेजा जाता है। यदि इस पर भी ग्राहक महोदय को पत्र न मिले तो पहिले अपने पोस्ट आफिस में लिखा पढ़ी कीजिये और इस पर भी न मिले तो डाकखाने के उत्तर सहित कार्य्यालय में इस की सूचना उस महीने के अन्त तक भेजने पर दूसरी प्रति भेज दी जावेगी।

७ लेख का छापना न छापना न्यूनाधिक करना सम्पादक के आधीन है।

८ [illegible] पुस्तक, परिवर्तन के पत्र [illegible] विषयक सर्व प्रकार के पत्र व्यवहार का पता :—

प्रबन्धकर्त्ता-सार्वदेशिक

सार्वदेशिक भवन देहली।

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाने की दर

स्थान	१ मास के लिये	३ मास के लिये	६ मास के लिये	१ वर्ष के लिए
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा कालम	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई कालम	२)	५)	८)	१५)

नोट—चौथाई कालम से कम विज्ञापन आने पर कालम की एक पंक्ति के =) प्रति मास लिए जायेंगे। विज्ञापन तथा रुपया प्रत्येक दशा में पेशगी ही आना चाहिए।

सम्पादक—प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति के प्रबन्ध से पण्डित रघुनाथप्रसाद पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस से छप कर प्रकाशित हुआ।

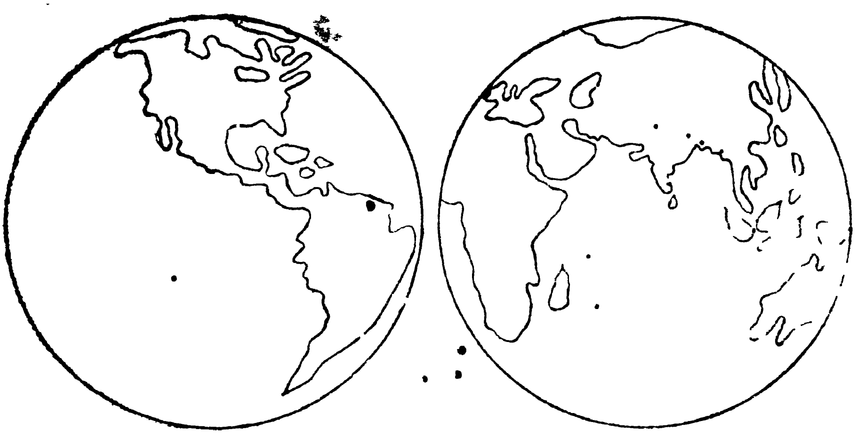
ओ३म्

अषाढ़ शुक्ला १

सार्वदेशिक

दयानन्द-अब्द १०३

भूमण्डल



कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥ वेद ॥

सम्पादक नारायण स्वामी

सहायक सम्पादक— डा० केशवदेव शास्त्री M. D.
प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री M. A.

वार्षिक मूल्य २)

एक प्रति का मूल्य =)

विदेश से ३॥)

विषय सूची ।

* ओ३म् *
आर्यावर्त्तीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

सार्वदेशिक

वर्ष १ | १ आषाढ़ सम्वत १९८४ वि० | अङ्क ४
जून १९२७ ई०] [दयानन्दाब्द १०३

आर्यसमाज का इतिहास

ले०—श्रीयुत गङ्गाप्रसाद एम. ए. उपाध्याय

किसी संस्था की आयु का अनुमान उसके सिद्धान्त साहित्य तथा कार्यों से लगाया जा सकता है, यह तीनों विभाग एक दूसरे से सम्बद्ध हैं क्योंकि सिद्धान्तों का ही प्रभाव साहित्य तथा कार्यों पर पड़ता है। तथापि यह तीनों एक नहीं हैं। इनके प्रभावों की कक्षायें भिन्न भिन्न हैं। कार्यों का प्रभाव सर्व साधारण पर पड़ता है। वह उस संस्था का मूल्य इतना ही जानते हैं कि देश, जाति तथा मनुष्य मात्र के हित के लिए वह संस्था क्या करती है। आर्य समाज के पूज्य संस्थापक ने एक नियम यह भी रक्खा कि 'समस्त संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात्

शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना ।'

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गत ५० वर्षों में आर्यसमाज ने क्या किया? इसका उत्तर प्रत्येक भारतवासी दे सकता है। कट्टर से कट्टर शत्रु भी इसका लोहा मान गये हैं। आर्य-समाज की शक्ति अल्प है। किसी संस्था के जीवन में ५० वर्ष उतने ही होते हैं जितने एक मनुष्य के जीवन में कुछ महीने। बच्चा ५—६ मास में क्या कर सकता है? केवल यही न कि अपने परिवार को अपने जीवन के चिन्ह दिखाता रहे और अपनी मधुर मुसकान से अपने माता पिता के हृदय को उल्लसित करता रहे। आर्यसमाज ने अबतक इतना ही किया है और यद्यपि इसके कार्यों की सीमा अभीतक हिन्दू जाति ही तक रही है परन्तु इस सीमा के भीतर इसने आशातीत सफलता प्राप्त कर ली है। ५० वर्ष में किसी संस्था में इतनी शक्ति नहीं आ सकती कि उसके व्यापार का क्षेत्र अधिक हो जाय। आर्यसमाजका भी यही हाल है। आर्यसमाज ने सार्वजनिक कार्य में इस वीरता के साथ भाग लिया है कि शत्रुओं के छक्के छूट गये हैं और समालोचक मित्र बन गए हैं। पाठशालाओं, गुरुकुलों, स्कूलों, कालिजों, अनाथालयों और विधवा-आश्रमों तथा शुद्धि आदि के कार्यों का ही फल है कि समाज की कीर्ति उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। मैं समझता हूँ कि यदि आर्य समाज इस जोर से काम न करता तो ईसाई लोग भारतीय जनता के हृदय पर स्वामित्व प्राप्त कर लेते। क्योंकि ईसाइयों ने इस शताब्दी या गत शताब्दी में जिन जातियों में प्रचार किया है उनमें इन्हीं सार्वजनिक कार्यों द्वारा किया है। ईसाई प्रचारक जब औषधियों को अफ्रीका के जङ्गली निवासियों में बांटते हैं तो वह लोग बिना ईसाइयों के सिद्धान्तों की जांच किए हुए ही उनके दास हो जाते हैं। कौन पूछता है कि ईसा ईश्वर का बेटा था या यूसुफ बढ़ई का? वहां तो पुकार इस बात की है कि अमुक पुरुषों ने हम को चङ्गा कर दिया, वह अवश्य अच्छा पुरुष है और उसका धर्म भी अवश्य ही ग्राह्य होगा। आज कल के नीतिज्ञ जब आर्यसमाज की संस्थाओं का जाल पञ्जाब या उत्तर प्रान्तों में फैला पाते हैं तो वह आर्यसमाज के गौरव की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते और मुझे आशा है कि आर्य सामाजिक लोग जबतक इन कार्यों को विशेष रूप से करते रहेंगे उस समय तक इनकी विजय भी अवश्यम्भावी है।

परन्तु सार्वजनिक कार्य किसी संस्था का ऊपरी भाग है। वह वृक्ष के फल हैं मूल नहीं। फलों से वृक्ष पहिचाना जाता है। परन्तु उनसे उसकी पुष्टि नहीं होती। मूल को सींचने से ही वृक्ष की पुष्टि हो सकती है। मूल प्रत्येक पुरुष के दृष्टिगोचर नहीं होती। वह मनों मिट्टी के नीचे दबी रहती है। साधारण पुरुष उसके मूल्य को भी नहीं समझते। बच्चे को आम खानेसे मतलब। वह आम की जड़ का क्या करेगा? साधारण कहावत है कि आम खाओ पेड़ क्यों गिनते हो। परन्तु माली को आम खाने की अपेक्षा पेड़ गिनने की अधिक चिन्ता है। वह फलों के मूल्य को भी। इसलिए वह केवल फल खाने में ही समय व्यतीत नहीं करता।

किसी संस्था के कार्य उनके फल हैं। परन्तु उसके सिद्धान्त उसकी जड़ हैं। उन्हीं सिद्धान्तों के आश्रय वह संस्था जीवित रहती है। स्वामी दयानन्द ने इसी नियम पर विश्वास करके अपने जीवन को सार्वजनिक कार्यों से हटाकर केवल सिद्धान्त की पुष्टि में व्यय कर दिया। वह सार्वजनिक कार्यों के गौरव को समझते थे। परन्तु वह यह भी समझते थे। कि मैं अपने छोटे से जीवन में केवल सिद्धान्तों की ही पुष्टि कर सकता हूँ। इसीलिये उन्होंने सार्व-

जनिक कार्यों में हाथ नहीं डाला और वेद भाष्य आदि शुष्क कार्यों में लगे रहे। वृक्ष की मूल बड़ी शुष्क होती है। अंगूर की जड़ को कौन खाएगा? परन्तु इस शुष्क मूल से ही तो रसली फलों को रस पहुंचता है। इतना ज्ञान हर एक को नहीं होता। यदि स्वामी दयानन्द सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका तथा वेद भाष्य में दिए हुये समय को अनाथालय, शुद्धि आदि में व्यय करते तो वह अवश्य हमारी अपेक्षा इन कामों को बहुत अच्छा कर सकते थे। परन्तु जो काम वह कर गये वह रह जाता। या यों कहिये कि आर्य-समाज मूल रहित रह जाता।

स्वामी दयानन्द के पीछे हमने अपना निरन्तर समय सार्वजनिक कार्यों के लिए दिया है। यह अच्छी बात है। परन्तु साहित्य तथा सिद्धान्त दोनों की ओर विशेष क्या साधारण ध्यान भी नहीं दिया गया। साहित्य का तो सर्वथा ही अभाव है। ऋषि के वेदभाष्य को पढ़ने वाला कोई नहीं और न उसके आधार पर ही किसी ने पुस्तकें लिखीं। ऋषि के वेद भाष्य की शैली इतनी क्लिष्ट है कि वह साधारण या असाधारण किसी प्रकार की जनता को रोचक नहीं होती। जो लोग आर्यसमाज के सर्वजनिक कार्यों को देखकर उस की ओर आकर्षित होते हैं। वह स्वभावतः यह जानना चाहते हैं कि वेदों में क्या लिखा है। हम उनके हाथ में कोई ऐसी पुस्तक नहीं दे सकते जिससे उनको सन्तोष हो सके। सिद्धान्तों का भी यही हाल है। हमारे कई सिद्धान्त संसार के अन्य विद्वानों से मेल नहीं खाते। दर्शन सम्बन्धी मतों में बहुत भेद है। उन विद्वानों पर आर्यसमाज के कार्य का प्रभाव तो पड़ता है। परन्तु वह सिद्धान्तों से सहमत न होने के कारण आर्य-सामाजिक नहीं बन सकते। किसी विद्वान से पूछो। वह यही कहेगा कि आर्यसमाज एक जीती जागती संस्था है। उसके कार्य प्रशंशनीय हैं। मेरी आर्य-समाज से सहानुभूति है परन्तु सिद्धान्तों में मतभेद होने के कारण मैं आर्य सामाजिक नहीं हो सकता। यह परिस्थिति क्यों। इसलिए कि हम एक अङ्ग की ओर ध्यान देते हैं और दूसरे अङ्ग को सर्वथा विस्मृत कर दिया। प्रश्न यह है कि यह अवस्था कबतक रहेगी? विद्वानों के न होने से आर्यसमाज सार्वजनिक कार्यों को भी बहुत दिनोंतक कर सकेगा और यदि विद्वान् लोग समाज में एक बार आ भी गये तो उनका रहना दुस्तर हो जायगा।

हम देखते हैं कि श्री शंकर मतानुयायियों ने आदि से लेकर अब तक कभी सार्वजनिक कार्यों से भाग नहीं लिया। जिस समय से शङ्कर के मायावाद का प्रचार हुआ उस समय से आज तक भारतवर्ष ने कोई भौतिक उन्नति नहीं की। इसका मुख्य कारण उनके सिद्धान्त थे, जो जागे हुओं को भी स्वप्न का स्वप्न दिखा देते थे। उनकी उन्नति और अवनति दोनों ही स्वप्न मालूम होती थी। इन सिद्धान्तों ने भारत को उठने नहीं दिया। परन्तु इनके सिद्धान्त और साहित्य का इतना आधिक्य हुआ कि भारत के सभी विद्वान् और पाश्चात्य देशों के प्रायः अनेक विद्वान शांकर मत के रंग से रंगे मिलेंगे। हमने तो आर्य समाज के कई विद्वानों को भी शांकर सिद्धान्तों की शृङ्खलाओं में जकड़ा हुआ पाया है। यह सब उनके उद्योग का फल है। प्रत्येक संस्था का भविष्य केवल सिद्धान्तों और साहित्य पर ही निर्भर है।

हम क्या करते हैं? किताबों को देखो, व्याख्यान सुनो। शास्त्रार्थों पर दृष्टि डालो। और पता चलेगा कि आर्य्यसमाज में कुरान पढ़ने वालों की संख्या वेद, या सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ने वालों से कहीं अधिक मिलेगी। हम को जितनी आयतें याद हैं उतने वेद मन्त्र याद नहीं। जितनी जल्दी हम मुसलमानी सिद्धान्तों को कुरान से निकाल सकते हैं उतनी जल्दी वेदों में से आर्य्यसमाज के

सिद्धान्तों को निकाल नहीं सकते। ईश्वर करे यदि कहीं भारतवर्ष के सब मुसलमान शुद्ध होजाय तो उस समय वह आफत होगी कि लैने के देने पड़ जायंगे। वह हम से पूछेंगे कि वेद में क्या है? हम उन से कहेंगे कि कुरान में अमुक बात बुरी है। वेद हमारी अल्मारियों में रक्खे रहेंगे।

दर्शन शास्त्रों के अनेक सिद्धान्तों के विषय में आर्य्यसमाज ने अभी कोई निश्चय नहीं किया, उदाहरण के लिये कपिल का प्रकृतिवाद हमारा सिद्धान्त है या कणाद का परमाणुवाद। या दोनों। यदि दोनों हैं तो संगति कैसे लगेगी। इसी प्रकार अन्य बीसियों बातें हैं। साधारणतया प्रत्येक आर्य्य-समाजिक समझता है कि हमारे सिद्धान्त अटल हैं और है भी ऐसा ही। परन्तु उस को मालूम नहीं कि वह अटल सिद्धान्त क्या हैं? उस ने उन के जानने के लिये कोई कष्ट नहीं उठाया तो वह उठाने के लिए तैयार है। जिस प्रकार हिन्दू लोग वेदों पर अब तक श्रद्धा करते और उनको ज्ञान का भण्डार समझते आये। परन्तु कभी पढ़ने का कष्ट नहीं उठाया वही हाल आर्यों का होता जाता है।

यह परिस्थिति अच्छी नहीं है। वर्तमान में तो इस से कोई हानि नहीं परन्तु भविष्य में बड़ी हानि होने की सम्भावना है। हमको दो हानियां दृष्टिगोचर हो रही हैं। पहली यह कि जिस प्रकार जड़ सूख जाने से कुछ दिनों में कल्लों का भी अभाव होजाता है उसी प्रकार मूल सिद्धान्तों के भूल जाने से आर्यों का भी उस प्रकार पतन न होगा जैसे हिन्दुओं का हुआ। हिन्दू लोग मूलतः आर्य ही थे। दूसरी हानि यह है कि जब विद्वानों के सन्तोष की सामग्री न होगी तो एक समय उनकी ओर से विरोध होगा। और वह विरोध साधारण जनता तक उसी प्रकार पहुँचेगा जिस प्रकार आधुनिक सिद्धान्तों के प्रति स्वामी दयानन्द का किया हुआ विरोध आज कल सर्व साधारण तक पहुंच रहा है।

बहुत से लोग समझते हैं कि-सत्यमेवजयते नानृतम्। यह बात सर्वथा ठीक नहीं है। सत्य की विजय भी सत्य-मानने वालों के उद्योग और शक्ति पर निर्भर है। आज कल शताब्दियों से पृथ्वीतल के अनेक देशों में अवैदिक सिद्धान्त फैले हुये हैं। अनृत की जयसी होरही है। इस का कारण यह नहीं है कि सत्य है नहीं। किन्तु यही कि सत्य का पक्ष लेने वाले नहीं हैं। सैकड़ों झूठे सिद्धान्त मुद्दत तक अनेक व्यक्तियों और जातियों में प्रचलित रहते हैं और उनसे मानव जाति को हानि हुआ करती है। इन्हीं की बदौलत हज़ारों लड़कियां ज़मीन में जीती गाड़दी गईं। हज़ारों विधवायें जीवित आग में जलादी गईं और प्रत्येक नगर में आज कल भी लाखों प्राणियों के गले पर छुरी फेरी जाती हैं। और 'सत्यमेवजयते" का पाठ उन का छुटकारा नहीं करसकता, तो क्या निराश होजायं? नहीं कदापि नहीं वैदिक-सिद्धान्त कहता है कि अपना चलन सुधारो परन्तु आशा कभी न तजो। आर्यसमाज को एकाङ्गी उन्नति छोड़कर सर्वाङ्ग उन्नतशील होना चाहिए। जिस शरीर में एक भुजा बलिष्ठ और दूसरी क्षीण रहती है उसे सभी रोगी कहते हैं। हमको चाहिए कि सार्वजनिक कार्यों की पुष्टि करने के साथ २ हीं सिद्धान्त और साहित्य पर भी विशेष बल दें। और कम से कम कुछ विद्वान् तो अपना जीवन इसी ओर लगादें।

गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए.
प्रयाग

मौत के बाद की कुछ बातें

ले०—श्री नारायण स्वामी जी महाराज

जो पुरुष निष्कामता प्रिय हैं और निष्काम कर्म करना ही जिन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना रखा है और जो श्रद्धामय और तपस्वी जीवन व्यतीत करते हैं ऐसे पुरुष जीवन काल ही में जीवन मुक्त कहलाते हैं-और जब मरते हैं तब आवागमन (मृत्यु , के बन्धन से छूटकर मुक्त होजाते हैं—वे मर कर किस क्रम से ब्रह्म को प्राप्त करते हैं—उसका विवरण इस प्रकार है—

[१] प्रथम वे आर्चिषी[१] दशा को प्राप्त करते हैं-

[२] आर्चिषी दशा से आन्हिकी (दिन की) दशा को

[३] उससे पाक्षिकी (शुक्लपक्ष की) दशा को

[४] उससे औतरायणी[२] षाण्मसिकी दशाको

[५] उससे सांवत्सरी (पूरे वर्ष की)दशाको

[६] उससे सौरी (सूर्य समान) दशा को

[७] उससे चान्द्रमसी दशा को

[८] उस से वैद्युती (बिजली की समान) दशा को

[९] उससे ब्रह्म लोक को प्राप्त करते हैं जिस अवस्था को प्राप्त कर लेना मनुष्य के जीवनोद्देश्य की चरम सीमा और मनुष्य की अन्तिमगति है-

ये अवस्थायें क्रमशः प्रकाश की वृद्धि को प्रकट करती हैं वैद्युति दशा को प्राप्त करने के बाद मनुष्य उस ज्योती को प्राप्त कर लेता है- जिस ज्योति को अलौकिक और विकार रहित ज्योति[३] कहा जाता है । और जिस ज्योतिमय अवस्था के लिए कहा जाता है कि वहां, अग्नि, विद्युत, चंद्रमा,[४] तारे और सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंच सका-संसार के जितने भी उत्तम से उत्तम प्रकाश हैं उन में से किसी को भी उस दिव्य और अलौकिक ज्योति की उपमा नहीं दी जा सकती—यह तो उन जीवों के मरने के बाद का क्रम है, जो ब्रह्मलोक के प्राप्त करने के अधिकारी हैं परन्तु जो प्राणी पाप और पुण्य दोनों प्रकार का कर्म करके आवागवन में रहते हैं वे तत्काल, एक योनि छोड़ कर दूसरी को प्राप्त कर लेते हैं । बृहदारण्यकोपनिषद् में उन की उपमा एक कीट से दी गई है जो अपने आगे के पाँव जमा कर तब पीछे के पांवों को उठाया करता है अवश्य ऐसे जीवों को एक योनि से दूसरी योनि तक पहुंचने में कुछ न कुछ समय लगकरता है परन्तु वह समय इतना थोड़ा होता है कि मनुष्यों ने जो समय के नापने के साधनरूप घड़ी, पल, महूर्त्तादि नियत किये हैं, उनमें से किसी की सीमा में नहीं आता—इस पर कतिपय सज्जन कहते हैं कि संस्कृत के अनेक ग्रन्थों में, चाहे वे पौराणिक काल के ही क्यों न हों, यह बात विशद रूप से वर्णित है कि जीव मरने के बाद बारह दिन के बाद जन्म

१. अर्चिः=अग्नि की ज्वाला, लपट

२. जिन छः मासों में सूर्य उत्तर की ओर रहता है

३. "ज्योतिरिवाधूमकः" । (कठोपनिषद ४ । १३)

४. (मुण्डकोपनिषद २ । २ । १०)

लिया करता है फिर यह कैसे मान लिया जावे कि जीव मरने के बाद तत्काल दूसरा जन्म ग्रहण कर लेता है-इसका उत्तर स्पष्ट है और वह इस प्रकार कि एक योनि से दूसरी योनि तक पहुंचने के लिये १२ दिन की आवश्यकता नहीं-मृत पुरुष के जीव के साथ सूक्ष्म शरीर मौजूद ही रहता है केवल स्थूल शरीर की अपेक्षा रहती है और इस स्थूल शरीर के बनने का प्रारम्भिक दिवस वह होता है जिस दिन गर्भ की स्थापना होती है--गर्भ की स्थापना का अर्थ यह है कि रज, वीर्य और सूक्ष्म शरीर का, जिसमें जीवात्मा विराजमान रहता है, मेल यहीं से स्थूल शरीर बनना शुरू होजता है। कार्य देखो जिस का प्रारम्भ स्वयं जीव के गर्भ में पहुंचने से होता है--फिर जीव को निष्प्रयोजन १२ दिवस इधर उधर 'मटर गश्त' करने की जरूरत ही क्या हो सकी है ? जीव का एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में पहुँचने का जो क्रम, वायु आदि में होकर जाना, बतलाया जाता है, उस के लिये भी १२ दिन की जरूरत नहीं है--वह क्रम भी उतने ही अत्यन्त अल्पकाल में पूरा हो जाता है जो मनुष्यों की निर्धारित, समय की नाप तोल की सीमा में नहीं आता--इस लिये जीव के एक शरीर से निकल कर दूसरी योनि में बारहवें दिन या

१२ दिन के बाद, पैदा होने का विचार, भ्रम मूलक है-, यह भ्रम एक वेद का मंत्र के ठीक न समझने से कदाचित उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है, मंत्र इस प्रकार है, मंत्र का संबन्ध देवयान से है नि कि आवागवन में आने जाने वाले जीवों से:—

"सविता प्रथमेऽहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीये ।
आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमा पञ्चमऋतुः षष्ठे मरुतः ॥
सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे ।
मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्वे देवा द्वादशे ॥" (यजुर्वेद अध्याय ३९ मंत्र ६)

यह मन्त्र मुक्ति में लाने वाले प्राणियों के मार्ग (देवयान) का क्रम बतलाता है—छान्दोग्योपनिषद् और इस वेद मन्त्र में वर्णित देवयाम का क्रमप्रायः मिलते जुलते हैं, बहुत थोड़ा सा अन्तर है जिस से किसी मौलिक सिद्धान्त में भेद नहीं आता—दोनों कथनों की तुलनार्थ, दोनों स्थानों का मार्ग विवरण, यहां दिया जाता है:—

उपनिषदानुसार	वेदानुसार
(१) आर्चिषीदशा	(१) सविता
(२) आन्हिकी	(२) अहन्नग्निः
(३) पाक्षी	(३) वायु
(४) औतरायणी (षाण्मासिकी)	(४) आदित्य
(५) सांवत्सरी	(५) चन्द्रमा + ऋतु
(६) सौरी	(६) मरुतः + बृहस्पति + मित्रः
(७) चान्द्रमसी	(७) वरुण
(८) वैद्युती	(८) इन्द्र
(९) ब्रह्मलोक	(९) विश्वे देवा

व्याख्या

(१) सविता सूर्य्य और प्रकाश को कहते हैं- यही भाव, आर्चिषी दशा का है—

(२) अहन्नग्निः अर्थात् "अग्निरूप दिन" वा "दिन रूप अग्नि" किसी प्रकार समझ लिया जावे। अग्नि के अर्थ प्रकाश के हैं, भाव अहर्न्नाग्नि का दिन का प्रकाश है, और यह आन्हिकी अवस्था का पर्य्याय वाची ही है ।

(३) वायु—तीसरी पाक्षी दशा का भाव यह है कि जिस में दिन की अपेक्षा प्रकाश अधिक है- वायवीय अवस्था में भी अन्हिको दशा से अधिक प्रकाश होता है। वायु-सखा अग्नि को इसी लिये कहते भी हैं—वायवीय अवस्था में प्रकाश के अधिक होने का कारण यह भी है कि आन्हिकी दशा में केवल सूर्य्य का प्रकाश रहता है परन्तु वायवीय में सूर्य्य और चन्द्र दोनों का क्योंकि वायु का सम्बन्ध दिन और रात दोनों से है—

(४) आदित्य महीने को कहते ही हैं। इस

लिये चौथी षाण्मासिकी दशा की जगह आदित्य का प्रयोग समानार्थक ही समझा जा सकता है—

(५) चन्द्रमा के नाम से चन्द्र वर्ष प्रसिद्ध ही है और प्रयोगमें भी आरहा है, इसलिये चन्द्रमा का साम्वतसरा स्थानी होना ठीक ही है ऋतु वर्ष का भाग होने से वर्षान्तर्गत आजाते हैं। इस लिये चन्द्रमा + ऋतु दोनों ५ वी सांवत्सरी अवस्था के लिये वेद में प्रयुक्त हैं—

(६) मित्र सूर्य्य को कहते हैं, बृहस्पति नाम सूत्रात्मा वायु का है और मरुत भी वायु ही को कहते हैं। इसलिये बृहस्पति और मरुत दोनों, सूर्य्य से सम्बन्धित वायु होने से, सूर्य्य के अन्तर्गत ही हैं। इसीलिये वेद में "मित्र + बृहस्पति + मरुत ये तीनों शब्द छठी सौरी दशा के लिए आये हैं।

(७) वरुण जलवाची होने से चन्द्रमा से सम्बन्धित है इसलिये सातवी चान्द्रमसी दशा के लिये वेद में वरुण शब्द प्रयुक्त है।

(८) इन्द्र बिजुली का नाम प्रसिद्ध ही है। इसलिये आठवी वैद्युती अवस्था के लिये वेद मन्त्र में इन्द्र शब्द का आना उचित ही था।

(९) "विश्वेदेवाः" समस्त दिव्य गुणों को कहते हैं और ये दिव्य (ऐश्वर्य्य) गुण जीवात्मा में शरीरों के समस्त बन्धनों से मुक्त होने पर आते हैं इसलिये ९ वीं और अन्तिम दशा ब्रह्मलोक के लिये वेद में "विश्वे देवाः" शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

इस प्रकार देख लिया गया कि मोक्ष प्राप्त "देव यान" के यात्री, जिन आठ दशाओं में होकर अपने निर्दिष्ट स्थान ब्रह्मलोक में पहुँचते हैं—वेद में उन्हीं आठ अवस्थाओं का वर्णन ग्यारह शब्दों में किया गया है। जैसा कि ऊपर कहा गया है। उपनिषद् का अन्तिम ध्येय ब्रह्मलोक जो ९ संख्या पर आया है वहीं ध्येय वेद में १२ की संख्या पर है—दोनों के भावों में कुछ भी अन्तर नहीं है*।

*उपनिषद् का यह दूसरा विवादास्पद स्थल है—, आर्य विद्वानों को इस पर अपनी २ सम्मति देनी चाहिए—वे सम्मतियां, कृतज्ञता के साथ, सार्वदेशिक में प्रकाशित होंगी।

शिवाजी—भारतवर्षीय सिकन्दर

लेखक—डा० बालकृष्ण एम० ए० पी यच. डी (लण्डन)

बहुत से पाठक इस लेख के शीर्षक को देखकर आश्चर्यान्वित होंगे जैसा कि शिवाजीको भारतवर्षीय सिकन्दर कहने की अतिशयोक्ति में यह कुछ कम नहीं सुनाई पड़ता। बहुत से लोग उसके विषय में कहते हैं कि वह डाकू लुटेरा, पहाड़ी चूहा, पहाड़ी बन्दर झूठा, विश्वासघाती व निर्दयी था जिसने मानविक व ईश्वर प्रदत्त नियमों को भंग किया। उसके शत्रुओं ने, जिसको उसने लूटा उसको शैतान का अवतार कहने तक में संकोच न किया। इतिहास ने इन निर्णयों (दोषारोपणों) को सिद्ध नहीं किया है परन्तु उसको एक महान् व्यक्ति की पदवी से विभूषित किया है।

अद्वितीय सेनापति

निस्सन्देह वह संसार के महारथी सेनापतियों में से एक था—जैसे कि आरमी का सम्मति से सब समझ सकते हैं:—

व्यक्तिगत गुणों के विचार से संसार के महारथियों में जिनका कि अबतक कुछ प्रमाण है वह सब से श्रेष्ठ निकला। क्योंकि किसी भी सेनापति ने कभी भी सेना के अग्रमुख होकर उतनी लड़ाई नहीं की जितनी उसने। उसने प्रत्येक आपत्ति का चाहे वह आकस्मिक हो अथवा पूर्व परिचित, बड़े अमोघ साहस व तात्कालिक बुद्धिमानी से सामना किया। उसके सर्व श्रेष्ठ सेनापति ने उसकी महत्वपूर्ण योग्यता को अङ्गीकार किया। एक सैनिक की हैसियत से वह हाथ में तलवार लिए हुए शेखी का रूप धारण किये हुए दीखता था।

अदम्य विजयी

हमारे इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में शिवाजी के युद्ध की विषिष्टता नहीं दिखाई गई है। अर्थात् जैसे कि कर्नाटक में। यह वह युद्ध था जो शिवाजी महाराज की संसार के प्रमुख विजयियों में स्थापना कराता है, मुगल सम्राट औरङ्गजेब व बीजापुर के सेनापति जैसे दो शक्ति सम्पन्न जानी दुश्मनों के बीच व अस्थिरविश्वासी गोलकुण्डा के राजा जैसे उभयपक्षी मित्र के होने पर भी शिवाजी ने विजय के उत्साह में रूढ़ि को छोड़ते हुये रण-दुन्दुभी बजाई। उसने सयाद्री पर्वत से तञ्जोर पर्य्यन्त जो कि दक्षिण का उपवन कहलाता है सफलता पूर्वक भ्रमण किया और फिर कारो मन्डल होता हुआ मलावार से लौटा जैसा कि Kincaid कैनकैड में भली प्रकार समझाया हुआ है :—

"१८ मास के अन्दर २ इसने अपने प्राचीन राज्य की तरह अपने ही आधार पर ७०० मील लम्बे राज्य को जीत लिया। जब उसे कभी प्राणघातक आपत्ति प्राप्त होती तो वह उसे साधारण बात समझ कर पार करजाता। एक विजय के बाद दूसरी विजय प्राप्त हुई और एक शहर के बाद दूसरे शहर को उसने अपने आधीन किया। जब वह आगे बढ़ता तो विजित प्रान्तों को अपने राज्य में मिलाता और जब वह रायगढ़ को लौटा, जैसा कि उसने अब किया, उसका राज्य समुद्र की एक सीमा से दूसरी सीमा तक सुरक्षितता से विस्तृत था जो दृढ़ किलों में सुसज्जित तथा स्वामीभक्त सेनाओं से रक्षित था।"

[Kincaid Vol. i P. 260]

यह उसकी विजय थी जो उस को प्रति वर्ष ९० लाख होनस (रुपयों की) आमदनी और सैकड़ों किलों की प्राप्ति कराती थी। सारा कार्नाटक वज्राघात की तरह उसके लूट खसोट से सर्वनाश होगया था।

Mr. H. Gary बम्बई के डिपुटी गवर्नर ने इंगलैण्ड में ईष्ट इण्डिया कम्पनी को एक पत्र लिखा जिस में उसने कर्नाटक के युद्ध का वर्णन दिखाया। यह पत्र हमको महानुभावी अंग्रेज महाशय की समकालिक सम्मति को प्रकट करता है। ३१ अक्तूबर १६७७ का पत्र एक अत्यावश्यक घटना को याद दिलाता है जिसने मुसलमान सेना के हृदयों को हिला दिया और उन्होंने भागने ही में रक्षा समझी।

"शिवाजी ने इस साल उत्तर कार्नाटक में पूर्ण सफलता प्राप्त करके विजय वंश के दो घरानों को जो कि वहां के गवर्नर थे, अपने अधिकार में कर लिया है जहां से कि उसने पर्य्याप्त धन भी प्राप्त किया है और भी यहाँ के छोटे २ राजा जो कि उसके आधीन हो चुके हैं वह उनसे कर लेता है, और उनको धमकियाँ देता है जो उसे कर देने से इनकार करते हैं मुसलमान लोग उसके आने की गलत फ़ैमी को सुनकर अपने किले तथा गढ़ों को छोड़ रहे हैं इस प्रकार उसकी सेना पूर्ण फलीभूत हो रही है। सम्भवतः यह विश्वास किया जाता है

कि वह अपने राज्य को सूरत के समीपवर्ती देशों से कामोरिन अन्तरीप तक बिना किसी रुकावट के बढ़ावेगा, आप का एजन्ट तथा कौन्सिल यह सलाह देते हैं कि इनकी सेनायें सेन्ट जोर्ज की तरफ चक्कर लगा रही हैं और तुरन्त ही हम लोगों पर उसका आक्रमण होने वाला है लेकिन आशा करता हूं कि परमात्मा दया की दृष्टि हमारे राज्य के ऊपर रक्खेगा जिसकी रक्षा के लिये हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं" (सूरत चिट्ठी ३१ अक्तूबर १६७७ लण्डन को)

बम्बई २६ । २६ सन् १६७८ का पत्र इस से अधिक महत्व का है जब कि शिवाजी महाराज की तुलना प्रसिद्ध रोमी विजयी सोज़र के साथ की जाती है जिसने अपना विजय का प्रसार फान्स, जर्मनी तथा ब्रिटन तक किया। यह भी कहा जाता है कि शिवाजी महाराज सिकन्दर से कम निपुण नहीं थे और वह अपने मनुष्यों को पक्षी करके संकेत करते थे। मिस्टर गैरी ने मरहट्टों को 'पर वाले मनुष्य' कहा है।

"शिवाजी की सोजर व सिकन्दर के साथ तुलना।"

शिवाजी महाराज ने महान साम्राज्य स्थापित करने की प्रबल इच्छा से घोषित को कन प्रान्त के मजबूत किले रैड़ी को अन्तिम मन्तज़ून के दिनों के बाद त्यागा और अपने २००० हज़ार घोड़ सवार ४० हजार पैदल लेकर के कार्नाटक की ओर चला जहा कि विजयियों के दो बड़े किले जो कि जिन्दी, चिन्दावर कहलाते थे और जहाँ बहुत से व्यौपारिक भी थे. उसने इस प्रकार विजय की जिस प्रकार से सोजरने स्पेनमें उसने देखा और जीता और बहुत सा सोना, हीरा, मणि-माणिक आदि जवाहिरातों को लूटा और केरल प्रान्त को जीतकर बड़ी योग्यतानुसार शारीरिक दशा को देखते हुये अपनी सेना को बढ़ाया ताकि उसकी भविष्य युद्ध की युक्तियां निर्विघ्नता पूर्वक चल सकें। वर्तमान समय में वह वंकाप्पुर में है, दो अन्य दृढ़ किले जो कि उसने इतनी शीघ्रता से ले लिये (यहां पर सिकन्दर से अधिक निपुण था क्यों कि उसकेपक्षीवत मनुष्यों की योग्यतानुसार (अपने को भी उन में सुमार किया) उसने इन को ३ माह के अन्दर ही मुगलों से ले लिया और जो उसने अपने उस समय के सेनापति राजा जैसिंह को दिये) बिजापुर के राजा के विरुद्ध थे जो कि दक्षिण के राजाओं की राजधानी थी, इस प्रकार वहाँ अधिकारी बन कर ये प्रतिज्ञा की कि जब तक दिल्ली न पहुंच जाऊंगा अपनी तलवार को म्यान में न रक्खूंगा और औरंगशाह को इस के (तलवार का केस) भीतर बन्द करूंगा। मोरो पन्त जो कि उस के सेनापतियों से एक है मुगल राज्य को खूब लूट रहा है और राज कोष के धन की वृद्धि की है। (बम्बई। ६।२।६ जनवरी १६७७-८ लण्डन को)

शिवाजी-भारतवर्षीय हनीबाल

दूसरे पत्र में शिवाजी की तुलना ठीक Haniball हेनीबाल से की जो उस की अपूर्व नीति को दर्शाता है जिसे मरहट्टा राज्य स्थापक ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में दिखाया। उसने बीजापुर को मुगलों के विरुद्ध सहायता दी और मुगल राज्य के ऊपर आक्रमण कर के एक प्रकार से कौतुक किया। केवल उसकी सहायता ने ही शिवाजी को सन् १६७८ में मुगलों के आक्रमण से बचाया।

राजपुर से मुझे हाल ही में पत्र मिले हैं जिन से नवत कलेलकूं की मृत्यु पर जो कि एक महल में हुई जबकि वह दक्षिणी लोगों में घेर लिया गया था। उसने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने दो पुत्रों को सिराजकूं की अध्यक्षता में अध्ययन के निमित्त रक्खा जिस को सिराज ने भी स्वीकार किया। अपने पूर्व परिचित भेदों और रहस्यों को भूल कर जो उसमें और उनके पिता में थे ज्योंही वह घर में घुसा यह खबर बीजापुर में पहुँची कि जमसेदकू

ने महल तथा नगर को सिद्दिमुसन्द के हाथ में दे दिया है जिन के सिराजकूं और दलीलकूं मुगल-सेना पति है और ८० हजार घोड़ सवार लेकर शिवाजी को जड़ से मिटाना चाहते हैं। परन्तु यह बात प्रसिद्ध है कि शिवाजी दूसरा सरटोरियश है और हनीवाल से किसी भांति युद्ध कुशलता में कम नहीं है। इस समाचार के थोड़ी देर पश्चात् सेना में यह खबर फैली कि गोलकुण्डा के राजा, शिवाजी और दक्षिणियों ने मुगलों के विरुद्ध राजद्रोह रचा है और दलितकूं को दक्षिण से निकालने की तैयारी में हैं शिवाजी ने १००० घोड़े सवार लेकर उसके ऊपर आक्रमण किया। वही एक ऐसा राजनीतिज्ञ था जिसने की दक्षिणियों व कुतबशाह को अपने विरुद्ध से रोका।

(By मब-गैरी-बम्बई का पत्र लण्डन १४।२४। ता १६६-१४ फरवरी

यह बात स्पष्ट है कि शिवाजी महाराज संसार के महान-सेनापतियों, वीर सिपाहियों में से एक एक थे। अब भी उसे राजनीति, राज-तर्कशास्त्र और राज-प्रभावक गुणों में किसी ने नहीं पाया। छत्रपति शिवाजी केवल मरहट्टा राज्य के स्थापक ही नहीं थे बल्कि हिन्दू-राज्य के पुनः स्थापक थे, स्वराज्य के राजछत्र के देने वाले आर्य सभ्यता के रक्षक थे और महाराष्ट्र और हिन्दू समाज के प्रवर्तक थे। वह उनके महान कार्यों के लिए सिकन्दर, हनिवाल सीजर व नैपोलियन से तुलना के योग्य हैं। इस कारण हम शिवाजी महाराज को महान शिवाजी, भारतवर्षीय सिकन्दर, भारतवर्षीय हनीवाल, भारतवर्षीय सीजर, व भारतवर्षीय नैपोलियन की पदवी देकर विभूषित करते हैं।

मद्रास में आर्य समाज क्यों नहीं फैला?

(ले० केशवदेव ज्ञानी सिद्धान्तालङ्कार गुण्टूर आंध्र)

आज लग भग २५ या ३० वर्षों से मद्रास-प्रान्त में आर्यसमाज का आगमन हुआ है, परन्तु अभी तक इसने जनता के हृदय में कोई स्थान पैदा नहीं किया। इस की असफलता का इस से बढ़कर कर क्या प्रमाण हो सकता है कि गत मनुष्य गणना में इस ४॥ करोड़ की आबादी वाले विशाल मद्रास प्रान्त में केवल ५१ आर्यासमाजी थे।

यही अवस्था 'ब्रह्मसमाज' और 'रामकृष्ण मिशन' की है। पहिला तो गत 'गणना' में ८० प्रति शतक घटा है। और दूसरा, 'श्री रामकृष्ण मिशन' अपने इतने अनुयायी बनाचुका है कि मनुष्यगणना के 'धर्म' के विभाग में उनका पृथक कलाम भी रखने की आवश्यकता नहीं समझी गई।

इसी कारण, गणना-अध्यक्ष भिन्न २ सुधार-समाजों की अवस्था पर समीक्षा करता हुआ लिखता है कि :—

"Generally speaking it is evident that neither of these reformed Hindu societies has any effect on the religious life or thought of the masses of the Madras Presidency." Page 63.

अर्थात्—साधारणतया, यह स्पष्ट है, कि कोई भी हिन्दू-समाज-सुधार-सभा मद्रास- प्रान्त की जनत के धार्मिक-जीवन और विचारों पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकी।

यह ऐसा क्यों है? इसके क्या कारण हैं? मद्रास में आर्यसमाज के प्रचार में क्या २ रुकावटें हैं? इसी पर ही हम प्रस्तुत लेख में विचार करेंगे।

भाषाभेद :—

दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचार में पहली रुकावट 'भाषाभेद' की है। यों तो इधर लग भग २० भाषायें बोली जाती हैं, परन्तु मुख्य भाषायें चार हैं :- तामिल, तिलगू, कर्नाटक और मलयालम। और आश्चर्य यह है कि ये चारों भाषाएं एक दूसरे से इतनी ही भिन्न है, जितनी कि हिन्दी अंग्रेजा से। कई बार जब लेखक यह सोचने लगता है कि श्री स्वामी दयानन्दजी महाराज, काठियावाड़ से बम्बई और पूना आकर फिर उत्तर भारत लौट गये, और मद्रास-प्रान्त की तरफ नहीं बढ़े। इस का भी एक मुख्य कारण मद्रास-केवल मालूम होता है जहां अनेक, भिन्न २ भाषाएं बोली जाती हैं। और यही कारण है कि जब कई प्रचारक उत्तर-भारत से यहां आए भी हैं, वे इस भाषा-वैषम्य के कारण अधिक देर तक यहाँ नहीं टिक सके। निस्सन्देह, अंग्रेजी में कुछ प्रचार किया जासकता है। परन्तु वह भी शहरों के ८ या ६ प्रति शतक शिक्षितों तक ही परिमित रहेगा।

जात पात का कट्टरपन :—

दूसरी रुकावट जातपात का कट्टरपन है। आप कहीं जाइये, आप से पहिला प्रश्न यह होगा—"मीरू एवरू" अर्थात् आप कौन हैं, किस जाति में से हैं? और आप का जाति-निर्णय आप के साथ किए जाने वाले भविष्य के व्यवहार को निश्चय करेगा।

हम पिछले कुछ वर्षों से यहां हैं। आर्यसमाज का थोड़ा प्रचार भी किया है। बहुत से आर्यसमाजी भी बनाए हैं। परन्तु सब से बड़ी कठिनता हमारे मार्ग में यही है लोग सभासद भी बनजाते हैं। समाज के सारे सिद्धान्तों से भी सहमत हैं। परन्तु केवल मात्र अपनी 'जाति' के भय से उन सिद्धान्तों को अपने क्रियात्मिक जीवन में नहीं लासकते।

पिछले दिनों एक घटना हुई। एक ब्राह्मण-सभासद ने हमारे कहने पर यह प्रतिज्ञा की कि आगे से वह कभी 'बुट्ट' या तिलक न लगाएगा। कुछ दिनों बाद उसके एक सम्बन्धी का विवाह था। उसे भी बुलाया गया। जब रेशमी धोती पहिनने के बाद तिलक की प्याली और शीशी उसको दिया गया उसने वापिस लौटा दिया। बड़े बूढ़े नाराज़ होगये। पुरोहित ने लाल पीली आंखें कीं। बेचारे को वहां से उठना पड़ा। और उस दिन से उसका सामाजिक बहिष्कार होगया।

इसी तरह एक दूसरी घटना एक सभासद के अपने पिता जी का 'श्राद्ध न करने पर हुई। वह भी समाज से बहिष्कृत। अभी शीघ्र हो किन्हीं औरों की बारी भी आने वाली है। इस प्रकार आर्यसमाज कुछ गिने चुने बहिष्कृत-व्यक्तियों की सभा ही बन रहा है। फिर और कठिनता यह कि यदि किसी समाज में ब्राह्मण आजाय, तो ब्राह्मणेतर—क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादि नहीं आयेंगे। और यदि नान-ब्राह्मण पहिले आजाय तो ब्राह्मणों का दिवाला निकल जायगा। यह ब्राह्मण और ब्राह्मणेतर की समस्या मद्रास-प्रान्त में इतनी विषम है कि प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में इस के ज़हरीले कांटे बिखरे हुए

हैं, और हिन्दू समाज प्रति दिन पारस्परिक-विरोध की प्रचण्ड अग्नि में झुलसा जा रहा है। यही कारण है कि इधर कोई भी लहर—राजनीतिक, सामाजिक या धार्मिक फलीभूत नहीं हो रही।

साहित्य की कमी :—

श्रीराम कृष्ण मिशन और ब्रह्म समाज का जितना इधर प्रचार हुआ है, उस का कारण इन्हीं बड़े २ व्याख्याताओं के व्याख्यान नहीं, अपितु, दोनों के साहित्य हैं। स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यान और श्री रामकृष्ण परमहंस का जीवन इतनी मनोहर-भाषा में है, कि एक बार हाथ में लेकर छोड़ने को दिल नहीं चाहता है। दूसरी तरफ आर्यसमाज का साहित्य है। एक तो अंग्रेजी में आर्यसमाज का साहित्य है ही बहुत कम। और जितना है भी, वह भी इतनी जटिल और अस्पष्ट भाषा के अन्दर लिखा हुआ है कि पढ़ने वाले को प्रथम पृष्ठ के निचले हिस्से तक पहुँचते २ नींद आनी प्रारम्भ हो जाती है उदाहरणार्थः 'सत्यार्थ प्रकाश' के अंग्रेजी अनुवाद को ले लीजिये। एक तो योंही पुस्तक बहुत दार्शनिक ढंग से लिखी गई है, और फिर उसका अंग्रेजी अनुवाद उसे महाभाष्य की फक्किकाओं से भी अधिक कठिन बना देता है। इस पर भी खूबी यह कि गत दो वर्षों से यह 'अप्राप्य' सा हो रहा है।

हमें आश्चर्य है कि श्री राम तीर्थ गोस्वामी के वेदान्त का प्रचार करने वाला इधर कोई नहीं। तब भी प्रतिवर्ष "गनेश ऐण्ड को" मद्रास से इस के नये संस्करण प्रकाशित होते हैं। स्वयं हमारे पास जो श्री रामतीर्थ के व्याख्यानों की तीन जिल्दें हैं, उन के पढ़ने वाले इतने हैं कि हमें आश्चर्य होता है। और हमारे बार २ कहने पर भी सत्यार्थ-प्रकाश को पढ़ने वाले नहीं मिलते। और यदि कभी कोई ले भी जाता है तो उसी शाम को लौटा लाता है और कहता है :

Sir! I can not reed it. Please give me osme other book. अर्थात् मैं इसे पढ़ नहीं सकता। मुझे कोई और किताब दीजिये।

इस के अतिरिक्त, किसी प्रान्त में प्रचार करने के लिए वहां की स्थानीय भाषा में साहित्य होना चाहिये। बाइबिल के प्रचार का यह बड़ा रहस्य है। संसार की कोई भी भाषा ऐसी नहीं जिसमें बाइबिल का अनुवाद न हो।

सत्यार्थ प्रकाश के लिये संसार की सब भाषाओं का तो न कहिये, परन्तु मद्रास की चारों मुख्य भाषाओं में भी इसका अनुवाद नहीं मिलता। तिलगू में लगभग दस वर्ष हुए एक अपूर्ण अनुवाद पीले कागजों पर निकला था, फिर कुछ पता नहीं। तामिल भाषा में, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के आश्रय पर श्रीमान् जम्बूनाथन (मद्रास) ने गत वर्ष अनुवाद प्रकाशित किया है। जिस की कीमत ५॥) रु० है। शेष कर्नाटक और मलयालम भाषाओं में, जहां तक मुझे ज्ञान है, सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद है ही नहीं। यह अभीतक आर्यसमाज की 'गास्पिल्स' की अवस्था है। बाकी साहित्य का तो कहना ही क्या है। ऐसी उत्साह जनक अवस्थाओं में आर्यसमाज का कहां तक प्रचार सम्भव है, इसे पाठक स्वयं अनुमान कर सकते हैं।

प्रचारकों की कमी:—

ऊपर की सब बातें होते हुए भी समाज के प्रचार में सब से बड़ी रुकावट 'प्रचारकों की कमी' है। यदि मद्रास के हिंदुओं में इस्लाम और ईसायत अपना घर बना सकती हैं, और क्रमशः २८, ६५, ०८१ और १३, ८०, ६७२ अनुयायी बना सकते हैं तब आर्य समाज के लिये अपना प्रचार करना क्या असम्भव है? कभी नहीं। परन्तु प्रचारक चाहिये। इस प्रान्त के प्रत्येक जिले में एक एक आर्यन-मिशनरी अपना स्थान बनाले। निश्चय करले कि वह अपनी सारी आयु वहीं लगाएगा। तब देखिये कि कुछ ही वर्षों के अन्दर आर्य समाज भी मद्रास प्रांत में एक शक्ति बन जाएगा।

पात शाही दशमग्रन्थ की आलोचना

[ले०—स्वर्गवासी श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज]

(यह लेख श्री स्वामीजी महाराज ने बलिदान से कुछ मास पूर्व लिखना आरम्भ किया था यद्यपि यह पूर्ण न हुआ तो भी अनुशीलन के योग्य है। पाठक इसे उपयोगी और मनोरञ्जक पायंगे।

'सार्वदेशिक'—सम्पादक)

——+:o:+——

पात शाही दशमग्रन्थ के विषय

प्रथम्—जापजी जिस में अकाल स्तुति भी शामिल है।

ग्रन्थ का आरम्भ प्रभु के विराट् रूप के वर्णन से किया है। उस में अद्वैत वाद की पूरी छटा दिखाई देती है। कविता में सब प्रकार के छन्दों का प्रयोग है। छप्पय, चाचरी, चरपट, रवाल, बहार, भुजङ्ग प्रपात, भगवती, रसावल, मधुबहार, एकाक्षरी कवित्त, सवय्या, तोमर लघनराज, दोहा, पाधड़ी, तोटक, नराज, श्रीभङ्गी, पाधड़ी - इतने छन्द इस भाग में आए हैं। भाषा की शैली भूषणादिक कवियों कीसी है। गुरमुखी से फारसी अक्षरों में छपवाने वाले भारत धर्म महामण्डल के उपदेशक पण्डित सुखलाल ने लिखा है—"दशमग्रन्थ ······ एक खास किताब है। इस की ज़बान (भाषा) ठेठ पञ्जाबी है।" न जाने पं० सुखलाल ने यह कैसे लिख दिया। श्री गुरु गोविन्द सिंह महाराज न केवल फारसी अरबी के ही प्रत्युत आर्य भाषा के भी बड़े पण्डित थे। उन की भाषा पुर्वीय है। उस में जो पञ्जाबी उच्चारण के कारण पंजाबियत लाई गई है वह लेखकों की कृपा है। नीचे लिखे उच्चारणो में पञ्जाबी का गन्ध कहां है?—

(१) दो०—एक समय श्री आतमा उचरे ओमत स्योंबैन।
सब प्रताप जगदीश को कहो सकल विध तैन॥

(२) 'श्रीभङ्गी छंद—दुर्जन दल दण्डन, असुर बिहंडन, दुष्ट निकन्दन आदि व्रते। छरासुर मारन, पतित उधारन, नरक निरावन गूढ़गते।'

(३) 'सवय्या—तीरथ कोट किये अस्नान, दिये बहुदान महाव्रत धारे। देस फिरयो कर भेस तपोधन के सवरे न मिले हर प्यारे। आसन कोट करे असटाङ्ग (अष्टाङ्ग, धरे बहुन्यास, करे मुखकारे। दीनदयालु अकाल भजे बिन अन्त को अन्त के धाम सिधारे॥

(४) कवित्त—'अतर के चिलइया, छिन छतर के धरइया, छत्तर धारिन के छलइया महा सत्रुन के साल हैं।
दान के दिवइया, महामान के बढ़इया, अवसान के दिवया, हैं कीये जमजाल हैं।
जुद्ध के जितइया औ विरोध के मिटइया, महा बुद्ध के दिवइया, महामानहू के मान हैं।
ज्ञानहू के ग्याता, महा बुद्धता के दाता, देव कालहू के काल महा कालहू के काल हैं॥"

एक खालसा नेता ने मुझ से ठीक कहा था कि

आदि ग्रन्थ जी को समझने के लिए मुझे उन से सहायता लेनी पड़ेगी, परन्तु दशग्रन्थ के समझने में मैं उन्हें मदद देसकूंगा।

द्वितीय-विचित्र नाटक

इस का आरम्भ उस की स्तुति से हुआ है जिस पर दशम गुरु का पूरा भरोसा था।

दोहरा

"नमस्कार श्री खड्क को करो सोहित चितेलाय।
पूरन करवो ग्रन्थ है तुम मोहे करो सहाय॥"

फिर एक ब्रह्म की महिमा का वर्णन करते हुये सब देवल, देव, विविधयोनि, अवतार आदि को उस के शक्ति रूप के अन्तर्गत बतलाये हैं। पुनः सृष्टि उत्पत्ति का आरम्भ करके सोढवंश तक पहुँचाया है।

चौपाई

"प्रथम काल जब करा पसारा।
ओं कारते सृष्टि अपारा।"

इस का पहला भूप (राजा) कालसेन को बतला कर उस के उत्तराधिकारियों का अपने मतानुसार वर्णन किया है। कहाँ तक राजवंशावली को चलाते। अन्त को लिखते हैं—

चौपाई

"कहां लगेते बरन सुनाऊं।
तिन के नामन संख्या पाऊं॥
होत चहूं‡ जुग में जो आये।
तिनके नाम न जात गिनाये॥
जो अब तव किरपा बल पाऊं।
नाम यथा मत भाग सुनाऊं॥
काल केत अरकाल रायमन।
जिनते भये †पवित घर अनगिन॥
काल केत भयो बली अपारा।
कालराय जिन नगर निकारा॥

(अर्थात् कालराय को नगर से निकाल दिया)
भाज सनोढ देस ते गये।
हतीं भूप जा व्याहत भये॥
तेह ते पुत्र भयो जौधामा।
सोढीराय धरा तेह नामा॥
बंश सनोढ ता दिन ते थया।
परम पवित्र पुरुष जो कया॥
ताते पुत्र पौत्र हो आये।
ते सोढी सब जगत कहाये॥
जग में अधिक सो भये प्रसिद्धा।
दिन दिन तिनके धन की बृद्धा॥
राज करत भये विविध प्रकारा।
देश देश के जीत नृपारा॥
जहां तहाँ तेह धर्म चलायो।
अतर पतर कह सीस दुरायो॥
राजसूय बहु बारन किए।
जीत जीत दीसे सुर लिए॥
बाज बेध बहु बारन करे।
सकल कलुख निज कुल के हरे॥
बहुर बंश में बढ़ौ बिखाधा।
मेट न सका कोई साधा॥
बिचरे बीर बने त्रंय खण्डन।
गह २ लगे भिरन रन मंडन॥
मोह बाद अहङ्कार पसारा।
काम क्रोध जीता जग सारा॥

दोहरा

धन धन ताको भाखिये, जाको जगत गुलाम।
सब निरखत ताको फिरैं, सब चल करत सलाम॥

चौपाई

"कालन लें को कारन मारा।
बैर बाद अहङ्कार पसारा॥
लोभ मूल एहि जग को हुआ।
जासो चाहत सभी को मुआ॥"

इतना लिख कर पीछे कालराय के पुत्र सोढ-वंश के निर्माता 'सोढीराय' की सन्तान की 'काल-

‡ सत्युग, त्रेता, द्वापर, कलियुग।
† पवित्र।

केत' की सन्तान पर चढ़ाई का ज़िक्र करके परस्पर के घोर युद्ध का वर्णन है। उस वर्णन में से कुछ वाक्य यहां उद्धृत करता हूं।

नराच छन्द

"विरुद्ध क्रुद्ध राजयम् । न चार पैर भाजयम्
संभार शस्त्र गाज ही । सुनाद मेघ लाज ही ॥
हलङ्क हाक मार ही । सिरगा शस्त्र झार हीं ॥
भरे बयार सोकियम्। सिधार देव लोकियम् ॥
रिसे विरुद्ध बीरयम । सुभार झाल तीरयम् ॥
सबद्द संख बज्जयम्। सुबीर धीर सज्जयम् ॥"

रसवाल छंद

"गजम् बाज जूझे। बली बीर रूझे ॥
निर्भय शस्त्र बाहे। उभय जीत चाहे ॥
गंजे आन गाजी। नचे तुन्दताजी ॥
हकमहाक बज्जो। फिरे सेन भज्जो ॥
मधम मत्त माते। रणम् रुद्र राते ॥'

भुजङ्ग प्रयात छंद

"खुले खगा खूनी महाबीर खेतम्।
नचे बीर बैताल अमभूत प्रेतम् ॥
बजै डङ्क डौरू उठै नाद संखम्।
मुनो मल्ल ओ ये महा हत्थ बक्खम् ॥

छप्पय

"जिन सूरन संग्राम सिबळ सामहि हुय मंड्यो।
सुभटन ते इक काल कू जिए ये तन छड्यो ॥
सब खत्री खग खन खेते भू मण्डप ऊठे।
सार धार धर धूम धर मुलक बन्धन ते छूटे ॥
होय टुक टुक जुझे सभै पांवन प्राछे डारयम्।
जयकार अपार सुधार हो आवासुलोक सिधारयम्॥"

चौपाई

"यहि बिधि मचा घोर संग्रामा।
सिध य सूर सूर्य के धामा ॥
कहाँ लगे वह कथौं लराई।
विघन प्रभान वर वरणी जाई ॥

सोढी सब जीत गए और उनके विरोधी हार गये। जो बचे वे सब प्राण लेकर "काशीपुरी' को भाग गये। वहां उन्होंने क्या किया और किस प्रकार विजई राजा ने वैर भाव को भूल कर उन्हें अपने पास बुलाया और किस प्रकार श्री नानकदेव का जन्म हुआ और गुरुआई की बुनियाद पड़ी—यह आगे के छन्द से ज्ञात होगाः—

भुजङ्ग प्रयात

लवी सर्व जीते कई सर्व हारे।
बचे जे बली प्राण लेके सिधारे ॥
चतुर वेद पठयन कियो काशीबासन्।
कई वर्ष कीना तहां हो निवासन् ॥
जिन वेद पढ़े सोई बैरी कहाये।
तिने धर्म के कर्म नीके चलाये ॥
पढ़े मागद्रम मद्र राजा सुधारम्।
आयो आप सो बैर भावम् बिलारम् ॥
नृपम् मुक्तियम् दूत, सो काशी आयम्।
सभी वेद्यन् भेद भाखे सुनायम् ॥
सभै वेद पाठी चले मद्र देसम्।
प्रणामम् कियो आन कर के नरेसम्।
ध्वनी वेद की भूत ताते कराई।
सभै पास बैठे सभा बीच आई।
पढ़े स रस वेदम् जु (य) जुर वेद कथयम्
रिगम् वेद पठयम्, करे भाव हथयम् ॥
अथर्वेद पठयम्, सुने पाप नठयम्।
रहा रीझ राजा, दिया सर्व साजा।
लियो बन बासम्, महा पाप नासम्।
रिषिम भेस कीयम्, तिन्हैं राज दीयम्।
हरे हार लोगन्, तजे सर्व सोगन्।
धनम् धान त्यागे, प्रभुम प्रेम पागे,

अड्डिल्ल छन्द

बेदी भयो प्रसन्न राज को पाय के।
देत भयो बरदान हिए हुल साय के ॥
जब नानक कलि मैं हम आन कहाइहैं।
हो जगत पूज करि तोहे परम पद पाइ हैं।

दोहरा

'लवी' राज है बन गए, बे दियन कीनो राज।
भांत भांत तिन भोगियम्, भुईं का सकल समाज॥

चौपई

तृतिया वेद सनौ बे तुम क्या।
चतुर वेद सुनरा को दिया।
तीन जन्म हम हू जब धरि हैं।
चौथे जन्म गुरू तोहि करि हैं।
उत राजा कानन हीं सिधायो।
इत इन राज करत सुख पावो।

आगे गुरु नानक देव के जन्म से लेकर गुरु तेग़ बहादुर के बलिदान तक इस प्रकार वर्णन किया है—

दोहरा

तिन वेदियन के कुल बिषय प्रगटे नानक राय।
सब सिक्खन को सुख दिये जेहि तेहि भये सहाय॥

चौपई

तिन इह कलु में धर्म चलायो।
सब साधन को राह बतायो।
जो ता के मारग में आये।
.. ..

नानक अङ्गद को बप धरा।
धर्म प्रचार एह जग तो करा।
अमरदास पुनि नाम कहायो।
जिन दीपक ते दीप जगायो।
जब बरदान समय वह आवा।
रामदास तब गुरु कहावा।
श्री नानक अङ्गद कर माना।
अमर दास अङ्गद पहिचाना।
....

रामदास हरि तो मिल गये।
गुरु तादे त अर्जुन को भये।
जब अर्जुन प्रभु लोक सिधायें।
हरिगोबिन्द तेहि ठांह ठहराये।
हरिगोबिंद प्रभु लोक सिधारे।
हरीराय तेहि ठाँह बिठाये।
हरीकृष्ण तिन के सुत भये।
तिन ते तेग़ बहादुर भये।
तिलक जंजु राखा प्रभु ताका।
किन्यो बड़ो कलू में साका।
साधम हेत अहीजिन करी।
सीस दिया पर सीना उचरी।
धर्म हेत साका जिन किया।
सीस निया पर सिरू न दिया।
....

इसके पश्चात् अपने जन्म का कारण बतलाते हैं—

चौपई

"अब मैं अपनी कथा बखानूं।
तप साधत जेहि विध मोहि आनू।
हेम कुन्ट पर्वत है जहां।
सत स्त्रिङ्ग सो मत है तहां।
सप्त स्त्रिङ्ग तेई नाम कहाया।
पाण्डुराज जहां जोग कमाया।
तै हम अधिक तपस्या साधी।
महा काल कालिका अराधी।
तात मात मर अलख अराधा।
बहु बिध जोग साधना साधा।
तिन जो करी अलख का सेवा।
ताते भये प्रसन्न गुरु देवा।
तिन प्रभु जब आयसु मोह दिया।
तब हम जन्म कलू में लिया।
ज्यों त्यों प्रभु हमको सजवायो।
इस कहि के इह लोक पठायो।"

फिर परमेश्वर की ओर से उन सब की गणना है जिन्हें अकाल पुरुष की भक्ति और पूजा फैलाने के लिए भेजा गया और उन्होंने अपनी पूजा ही जारी करदी—

अपूर्ण

गरीब-की-आह।

(लेखक—देवेन्द्र)

(१)

"अरे भाई ! बड़ी सख्त गर्मी है । कोई एक गिलास पानी तो पिलाओ" !

घर में प्रवेश करते हुए किसी व्यक्ति के सूखे हुए गले से उपरोक्त बात निकली।

शिकारपुर गांव आस पास के देहाती सब गाँवों की अपेक्षा बड़ा समृद्धिशाली समझा जाता है। भारतवर्ष के अन्य गांवों की अपेक्षा यह बड़ा ही उन्नत गांव है पांचसौ के लगभग घर हैं सब पक्के और पुराने ढङ्ग के बने हुए हैं। गांव के बाहर दूरतक खेत ही खेत नज़र आते हैं। हरे २ विस्तृत खेतों के बीच में बसा यह गांव ऐसा मालूम होता है यथा श्याम बादलों से घिरा कोई श्वेत बादल बिराजमान हो। पर शोक ! दैव को इस देवपुरीका वैभव अच्छा न लगा। इस वर्ष हद से अधिक गर्मी होगई, महीनों से वर्षा के न होने से सब खेत सूख गये, गांव में चारों ओर हाहाकार मच गया। गांव के मुखिया चौधरी ध्यानसिंह के सिर पर मानो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा—घर रुपयों से परिपूर्ण था, खाने पीने की कोई कमी न थी पर सब कुछ होते हुए भी अपनी पैतृक सम्पत्ति की दुर्दशा को वह सहन न कर सका। इस बार अफसरों का स्वागत कैसे करूंगा, सर्कारी टैक्स को कैसे अदा करूंगा ? इत्यादि प्रश्न ने उसका अन्तःकरण दहल उठा। दिन भर घोड़े की पीठ पर चढ़ कर गाव में घूम घूम कर विचारा किसी भांति व्यथित मनों को शांत करता है। पर यह सब किस के लिये ? इतनी दौड़ धूप क्यों ? क्या वास्तव में उत्तम भावों से चौधरी दीन दुखियों को सात्वंना दे रहे हैं ? यह तो परमात्मा ही जानता है। पर हा चौधरी बेचारे को खाना, पीना, सोना सब हराम हो गया है। जहां से चौधरी साहब का घोड़ा टपटपाता हुआ निकलता है मानो सारा गांव उसी ओर उमड़ पड़ता है—ध्यान चौधरी ही इन दिनों गांव के उपास्य देव हो रहे हैं। सो वे अब हाल ही में दो पहर की कड़ी धूप में घुड़दौड़ कर के आ रहे हैं लक्षणों से पता चलता है कि चौधरी साहिब को किसी नई चिन्ता ने आघेरा है जिसके नीचे सफलता का चिन्ह दिखाई दे रहा है। अस्तु ! मिट्टी और पसीने से लथपथ चौधरी साहब ने घर के द्वार को धक्का देते हुए अपनी गृहिणी से कहा—"सुरेश की अम्मा ! देखो तो आज कितनी गरमी है ज़रा ठण्डा जल तो पिलाओ।"—इतने दिनों बाद पति देव को स्वस्थ देख कर लक्ष्मी बड़ी हर्षित हुई और चांदी के गिलास में शीतल जल और कुछ मिठाई लाकर पति देव के सन्मुख रख दी और पीढ़ी खिसका कर चरणों में बैठ गई। पति के जल पान करनेके पश्चात् लक्ष्मीने कहा—"स्वामिन् ! आप कई रात से नहीं सोए बिस्तरा बिछा है अच्छा होगा थोड़ा विश्राम ही करलें।" चौधरी भी "अच्छा"—कह कर सोने के कमरे में चले गये, और लक्ष्मी पति देव के चरण दाबने लगी।

(२)

रही सही सड़ी गली उपज काटली गई ! पर हाय ! विपत्ति कभी अकेली नहीं आया करती किसी ने ठीक ही कहा है कि—"छिद्रेष्वनर्थाः बहुलि भवन्ति"—। गांव वासी प्रथम दैविक आपत्ति से ही दुःख भोग रहे थे पर नूतन मानवीय आपत्ति ने, मानो जले पर नमक छिड़क दिया—यह नूतन आपत्ति थी कर। हाल ही में हुए यूरोपीय महा समर के कारण सरकार धन के लिये सब कुछ नीच से नीच कर्म करने के लिये तैयार थी अतः उन दिनों कर ग्रहण बड़ी सख्ती से किया जाता था—अस्तु—समय पर यमदूत रूपी सर्कारी

कर्मचारी धनाभाव के न्यूमोनिये से आक्रान्त रोगी रूपी गांव वासियों के रहे सहे प्राण-रूपी धन को बलात् छीनने के लिये आ पहुंचे। सारे गांव में हाहाकार मच गया, चारों ओर भगदौड़ मच गई। लोग घरों पर ताले लगा कर गांव छोड़ २ कर जाने लगे—अन्त को सिवाय इनेगिने वृद्ध घरों के और सारा गांव सुन-सान होगया। हाय! दुर्दैव तेरी महिमा-जो गांव कल अपने हरे भरे वायु-मण्डल से देश भर में प्रशस्त था-जिसकी चौड़ी सड़कें, ऊंचे २ आलीशान घर महलों को भी मात करने वाले धनधान्य पूर्ण कोठे अब भी अपने पूर्व गौरव को जता रहे हैं। अधिक क्या कहें जो पुरी कल अमरावती की लक्ष्मी को धारण किए थी उस की यह दुर्दशा तुम वास्तव में बड़े प्रतापी हो—ओह! तुम्हारी वाम गति के होते ही बड़े २ देवों के वैभव मिट्टी में मिल जाते हैं—आज तुमने शिकारपुर लक्ष्मी को भट्टी में झोंक दिया ओह! तुम्हें तो सदा से ऐसी भीषण केलियों में ही आनन्द आता है।

दो पहर की कड़ी धूप में पांच सवार सड़क पर सरपट घोड़ा दौड़ाए जा रहे हैं—अभी दूर पास और पास। ध्यान से देखने से पता चलता है कि इन में सबसे आगे २ गांव के चौधरी ध्यानसिंह के सिवाय और कोई नहीं है। गांवके अंदर चौधरी महाशय की ईमानदारी और दयालुता बड़ी प्रसिद्ध थी—लोग उन्हें देवता समझते तथा उनके पसीने के बदले खून बहाने तक के लिए तैयार रहते थे। पर शोक! संसार का यह अटल नियम है कि—"काम बिगड़ जाने पर बड़े २ समझदार आदमी भयङ्कर से भयङ्कर खूंखार प्रानी से भी अधिक भयङ्कर हो जाते हैं"—इसी कहावत के अनुसार अपने गाँव को इस प्रकार खाली देख कर अपनी आशा का विधान समझ कर उनके क्रोध का पारा Centigrade कीसब डिग्रियों को लांघ गया बेचारे मध्यान्ह की कड़ी धूप में कर लेने के लिए निकले, पर जिस घर पर पहुंचते उसी के द्वार पर ताला लगा देख कर अपने कठोर परिश्रम को व्यर्थ होता जान बेचारे को चारों अधिकारियों के सामने दो पहर की कड़ी धूप में जगह २ लज्जित होना पड़ा; मनस्वि पुरुष के लिए अपमान का ज़रा सा इशारा ही जीवन मरण उपस्थित कर देता है पर यहां तो लगातार अपमान और लज्जा की बौछार हो रही थी; बाहर अधिकारी गण के ताने सुनने पड़े—"चौधरी! इस बार तुम्हारा काम बड़ा ही ढीला है"—इस प्रकार जगह २ लाञ्छित होते हुए कुपित सर्प की तरह गरम २ सांस छोड़ते हुए चौधरी साहिब सुखिया नाम की विदुषी ब्राह्मणी के घर पर पहुँचे। घर पहुंचते ही चौधरी जी ने किवाड़ बन्द पाये। क्रुद्ध चौधरी एक दम ज्ञान शून्य होगये और दर्वाज़े पर ज़ोर से लात मार कर बोले-"देखो तो सही! इस राँड को भी शैतानी सूझी है—पति की मृत्यु के बाद से इतनी उच्छृङ्खल होगई है कि बेहया न जाने किस के साथ भाग गई"—इतने में ही अन्दर से किसी स्त्री की आवाज़ आई महाराज! आप इतने क्यों क्रुद्ध हो रहे हैं? मैं तो यहीं हूं कहीं गई तो नहीं"—इतना कहकर सुखिया ने द्वार खोल दिये। और सब के सब घोड़ों की पीठ पर से नीचे उतर कर के अन्दर घुस गये। सबके बैठ जाने पर सुखिया बोली:—कहिए! चौधरी साहब आज आपका शुभागमन कैसे हुआ?

चौधरी—कहिए! आपके पास कितनी भूमि है-शिष्टाचार पीछे देखा जायगा।

सुखिया—(सोचकर) तीन सौ बीघे।

चौधरी—(जेब में से एक नोटबुक को निकाल पत्रे पलटते हुए) तो फिर आपके नाम तीन सौ बीघे धरती के १० वर्ष के ३०००) पड़ते हैं इस सभी को आज ही देदें नहीं तो.....

सुखिया—(बात काट कर आश्चर्य से बीच ही में) तीन हज़ार!

चौधरी--हाँ ! तीन हजार।

सुखिया--आपने तो मेरे कर को माफ कर दिया थां फिर इस वर्ष का कैसा ?

सुखिया का उपरोक्त कथन आग में घी के समान काम कर गया चौधरी बड़े क्रोध से कांपते स्वर में बोलेः पापिका, मुझे बदनाम करना चाहती है. भला तेरे से मेरा क्या सम्बन्ध जो मैं ने तेर कर को माफ किया ? झूठी कहीं की।"

सुखिया—(जेब में से कागज निकाल कर) देखिये यह आपके हस्ताक्षरों से युक्त इकरारनामा है। (इकरारनामा चौधरी को देती है)

चौधरी--(प्रतिज्ञा पत्र को पढ़ कर-इन्पेक्टर से) देखिये साहब ! यह औरत जाल साजिन भी है (चन्द्रावती से) सच बताओ यह जाल तुमने कैसे रचा ?

सुखिया—(रोती हुई) महाराज ! सच कहती हूँ यह आप हीं का लि.........

चौधरी--(खौलते हुए-बीच में ही) चुप रह, मुख झोंसी कहींकी खबरदार एक शब्द भी बोली। सीधी तरह अभी ३०००) दे दे नहीं तो कुशल नहीं होगी।

सुखिया—(रोते २) महाराज ' मेरा बेटा इस समय अन्दर मृत्यु शैया पर पड़ा है परमात्मा के नाम यह दया कीजिए-मरे को न मारिये (पैरों में पड़ती है)

चौधरी—(ठुकरा कर) दूर हो-पापिषा ! चार घंटे का समय देता हूँ तब तक अच्छी प्रकार सोचले। याद रख अगर न देगी तो तेरी सारी सम्पत्ति नीलाम.कर रुपये वसूल कर लूंगा।

सुखिया—(रोती हुई चौधरी के पैरों को पकड कर) महाराज ! ...मेरे...बे..टे...को...न्यू-मो.. नियां .....।

चौधरी—(पुनः सुखिया के सिर पर पाद प्रहार करके) दूर हो गधी ! तेरी तरह खाली आदमी नहीं हूं व्यर्थ बकवाद न कर। देख खूब सोचले ४ घंटे बाद पुनः आऊंगा काफी विचार लो नहीं तो तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हारे पास न रहेगी।

इतना कह कर चारों नर पिशाचों के साथ घर चला गया और सुखिया निराशा से अपने दोनों हाथों से मुख ढांप कर रोने लगी।

(३)

आज शिकारपुर गांव में बड़ा हाहाकार मचा हुआ है आस पास के गांवों के आदमियों के झुंड के झुंड आ आकर सुखिया के घर के सामने इकट्ठे हो रहे हैं। ठीक आठ बजते ही स्नानादि प्रातः कृत्यका के चौधरी जी भी पुलिस के कुछ सिपाहियों के साथ वहां आ धमके और पूर्व से तैयार एक मञ्च पर बैठ गये। ठीक ८॥ बजने पर चौधरी साहब अपने स्थान पर से उठे और जनता को सम्बोधन करके बोले-"भाइयो ! आज (मकान की ओर इशारा करके) यह मकान और इसके साथ की ३०० बीघे जमीन नीलाम होगी। आप को मालूम होगा कि इस ब्राह्मणी पर १० वर्ष का सरकारी कर रहता था जिस की संख्या इस समय २९००) तक पहुँच चुकी है। अतः अब सर्कारी रुपया चुकाने के लिए ब्राह्मणी की सारी सम्पत्ति मय घर के नीलाम होगी, आप यहां जाकर बोली बोलें। इतना कह कर चौधरी साहिब पुनः बैठ गये। १ मिनिट २ ३, १०, २० इस प्रकार आध घन्टा बीत गया पर किसीने भी निरापराध ब्राह्मणी के धन की लालसा न की जो दो एक बेशर्म खड़े हुए वह भी जनता के धिक्कारों के सामने न खड़े रह सके। अन्त में देरी होती देख चौधरी साहिब पुनः खड़े हुए और बोले-"क्यों भाइयो ! आप जल्दी बोली क्यों नहीं बोलते, जल्दी कीजिए सूर्य काफी डूब चुका है।" इस पर सारी जनता एक स्वर में बोली- नहीं ! हम इतने पतित नही हुए हैं कि किसी अबला के पवित्र-धन को हथियाना चाहें। चौधरीजी ! कुछ सोच कर काम कीजिए।

गरीब को सताने का फल अच्छा नहीं होता।" जनता के ऐसे अवज्ञापूर्ण शब्दों को सुन कर चौधरी साहिब के बदन में मानों आग लगगई। वे क्रोध से कम्पते हुए स्वर में कहा–"बदमाशो! मुझे धर्म की बातें सुनाते हो जाओ चले जाओ तुम्हारे इस वृत्य से ब्राह्मणी के हाथ में जमीन न रहजायगी। अच्छा! अगर तुम नहीं लेते तो यह सम्पत्ति आज से सरकारी हुई। इतना कहकर चौधरी मकान के अन्दर गये और और बेटे के मुखड़े पर झुककर आंसू बहाती हुई दुखिया सुखिया से बोल "सुखिया! सोचती क्या है अब यह तुम्हारा घर नहीं सरकारी सम्पत्ति है। यहां अधिक देर तक ठहरना ठीक नहीं तुम अभी चली जाओ। (कुछ सोच कर पुनः) अच्छा! ठहरो तुम्हारा बालक रोगी है अतः मैं तुम्हें २४ घन्टे का टाइम देता हूं, इस के बीच २ ही में इस मकान से निकल जाओ।" इतना कह कर चुप होगये। चौधरी के चुप होते ही सुखिया रोते २ चौधरी के पैरों पर लोट गई और विनती पूर्वक बोली "महाराज। आप मेरे बच्चे की हालत देख ही रहे हो उबलनिमोनिये के प्रवल आक्रमण से बिचारा तड़प रहा है। और अगर जाऊं भी तो कहां जाऊं? आप मुझ अभागिन पर दया करें परमात्मा आपको चिरायु करें आप के बाल बच्चों की रक्षा करें।"

चौधरी—(क्रोध से कांपते हुये कुलटा! बदमाश! भुखभौंसी! बहुत बातें बनाती चली जाती है अच्छा चुड़ैल! तुझे सिर्फ ४ घन्टे का समय देता हूं–ठहर! जाती कहां है अभी मेरे सामने १५ मिनिट के अन्दर चली जा।' इतना कह कर सुखिया की प्रार्थनाओं को अनसुनी कर के एक साथ ५ लातें जमा कर बोले–"निकल जा! चुड़ैल! निकल यहां से।" साथ ही साथ कतिपय चिथड़ों से लिपटे हुये सुखिया के सुदिनों की सम्पत्ति, प्राणनाथ के स्मृति स्वरूप उसके ५ वर्ष के बालक को उसकी गोद में पटक दिया। भयङ्कर निमोनिया रोग से अक्राज, अस्थान शेष, अर्धमृत-सुन्दर, सुकोमल बच्चा सहसा पहुंचे हुए, उस भयङ्कर पैशाचिक आघात को न सहसका और कुछ क्षण तक जननि की प्रेममयी गोद में छटपटाता हुआ, चीख मारकर सदा के लिए सुखिया के रहे सहे टिमटिमाते सुख-प्रदीप को बुझा कर चल दिया। सुखिया के लिए अब चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा होगया..... जिस खूने-जिगर के लिए इतने भयङ्कर २ अपमान सहे उसको सहसा बिछुड़ते देख सुखिया अपने को न सम्भाल सकी। वह अनवरत-अश्रु-धारा से अपने जीवन-प्रदीप, हृदय के टुकड़े, आंखों के तारे, दुलारे के, देर से स्नान करने से, मैले शरीर की मैल को प्रक्षालित करने लगी तथा नानाविध विलापों से उस विस्तृत घर की दीवारों को कम्पाने लगी। बहुत देर होती जान क्रोधान्धनर पिशाच ने पुन एक लात और जमाकर कहा:—"कमोरी चुड़ैल! क्या उठेगी नहीं मक्कारी करती है अच्छा बहाना मिल गया, उठ! भाग यहाँ से जा जल्दी चलीजा नहीं तो अपमानित करके निकाली जायगी।" इतना कह कर पुनः एक लात जमादी। आखिर सुखिया भी मानवीय हृदय रखती थो तिस पर अब उसे अपमान सहने की आवश्यकता भी न थी होती भी क्यों? जिस के लिए इतना अपमान सहा था, जिस के लिए उस ने अब तक पापी-जीवन की रक्षा की थी जब वह रहा ही नहीं तो अब उपरोक्त बातों की आवश्यकता ही क्या? अस्तु! उस बार वह बड़ी उत्तेजित हो उठी स्वभावतः ही स्त्री का क्रोध प्रलयाग्नि से भी अधिक भयंकर होता है जगह २ कवि लोग स्त्री को मनुष्य वेश में क्रोध की उपमा देते हैं।

(अपूर्ण)

श्री पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्दजी का संदेश आर्य जाति के नाम

(स्वा० धर्म देव विद्या वाचस्पति मंगलोर द्वारा)

प्रिय आर्य जाति मेरा, सन्देश मत भुलाना।
शुद्धि के काम में तन, मन और धन लगाना॥ ॥ १ ॥
ज़िन्दा अगर जगत में, रहना तू चाहती है।
तब संगठन बना कर, ताक़त को आज़माना॥ २॥
आपस का जो कलह है, जिस से नहीं सुलह है।
ईर्षा व द्वेष जो है, सब को परे भगाना॥ ३॥
जिन को अछूत समझे, मज़बूत पूत मां के।
उद्धार प्रेम से कर, उनको गले लगाना॥ ४॥
इस जाति डूबती का, गुरु कुल है इक सहारा।
वह वाटिका मनोहर, मेरी सदा बढ़ाना॥ ५॥
पूरा न होने पाया, जीवन का काम मेरा।
सच्ची लगन दिखा कर, पूरा उसे कराना॥ ६॥
स्वाधीन देश अपना, मैं चाहता सदा था।
उस के लिये परस्पर, सब भेद भूल जाना॥ ७॥
दासत्व की जंज़ीरों, से तुम सभी बंधे हो।
पा कर स्वराज्य सारी, वे बेड़ियां कटाना॥ ८॥
ग़फ़लत की नींद में तुम, कब तक पड़े रहोगे।
धन मान खो चुके हो, हस्ती न अब मिटाना॥ ९॥
चूहों व बिल्लियों में, सम्भव न मेल सच्चा।
स्थिर ऐक्य के लिये भी, दृढ़ आप बन दिखाना॥१०॥
यह पावनी मनोहर, शुभ शुद्धि रूप गङ्गा।
सब से गले मिला कर, इस में सदा नहाना॥ ११॥
विद्वेष दूर कर के, व्रत शुद्ध सत्य धर के।
तुम धर्म देशहित में, निज रक्त तक बहाना॥ १२॥

"आदर्श वीर भूमि चित्तौड़ में गुरुकुल की तैयारी"

(ले०—स्वामी वृतानन्द संन्यासी म० कार्य कारिणी सभा गु० चित्तौड़)

प्यारे आर्य (हिन्दू) भाइयो! वैसे तो गुरुकुल का खोलना प्रत्येक स्थान में आवश्यक है, किंतु जिस स्थान में बड़ी २ ऐतिहासिक व धार्मिक विशेष घटनाएं हो चुकी हों, वहां पर गुरुकुल का स्थापित होना देश की उन्नति के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। मेरा पूर्ण विश्वास है कि वर्तमान युग में इस प्रकार के उत्तम स्थानों का शिरोमणि कहलाने योग्य स्थान चित्तौड़ ही है। इसी लिए मैं चित्तौड़ में गुरुकुल स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक कार्य समझता हूं।

भारत के और विदेश के बड़े २ विद्वान् भी चित्तौड़ को 'आदर्श भूमि' कहकर पुकारते हैं। श्रीमान् पण्डित रुद्रनारायणजी एक अच्छे ऐतिहासिक विद्वान हैं। उन्हों ने अपनी एक पुस्तक का नाम ही 'आदर्श भूमि वा चित्तौड़' रक्खा है। वे इस पुस्तक के प्रारम्भ में लिखते है कि 'भारतवर्ष के इतिहास में जो गौरव चित्तौड़ को प्राप्त है वह कदाचित् इस नये युग में अन्य किसी स्थान को नहीं मिल सकता' इसके आगे उन्हों ने चित्तौड़ को 'तीर्थ स्थान भी कहा है और साथ ही यह भी लिखा है कि वह स्थान जिसने बीसियों वार गिर कर सम्भलने में देर नहीं की, राजपूताना है और राजपूताना का सिर ताज चित्तौड़गढ़ है' कर्नल टाड आदि की पुस्तकों को पढ़ने से विदित होता है कि प्रायः सब विदेशी ऐतिहासिक विद्वान भी चित्तौड़ को 'आदर्श भूमि' ही मानते हैं।

वर्तमान युग के नेता योगीश्वर महर्षि दयानन्दजी महाराज ने भी 'चित्तौड़ को इस युग की सर्वोत्तम भूमि माना था, इसी लिए उन्होंने आज से प्रायः ५५ वर्ष पूर्व आपने शिष्य स्वामी आत्मानन्दजी के प्रति कहा था कि 'ऐ आत्मानन्द! चित्तौड़ वह स्थान है जिस को देख कर प्रत्येक मनुष्य धर्म और देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए प्रोत्साहित होता है। निःसन्देह यह एक महान् कल्याण कारक कार्य होगा यदि चित्तौड़ में गुरुकुल स्थापित हो जायगा। हमारे देश के नवयुवक अपने जीवन की उन्नति के लिए सर्वोत्तम शिक्षा इसी स्थान पर प्राप्त कर सकेंगे।'

महर्षि दयानन्दजी की इस इच्छा को क्रियात्मिक रूप में परिणत करना अत्यन्त आवश्यक समझकर मैंने जगत् प्रसिद्ध आदर्श भूमि चित्तौड़ में गुरुकुल स्थापित करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करली है। और इस ही प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए मैंने गुरुकुल कांगड़ी की 'रजत जयन्ती' पर संन्यास धारण किया है। इस कार्य के लिए ७।५।२७ को कार्य कारणी सभा गुरुकुल चित्तौड़ की स्थापना भी हो चुकी है। उस के संरक्षक श्री महाराज शाहपुरा तथा उपसंरक्षक श्री महाराज कुमार शाहपुरा हैं। राजपूताने के बड़े २ प्रतिष्ठित पुरुषों ने सभासद् बनने की कृपा की है।

गुरुकुल का कार्य आरम्भ करने के लिए तीन बातों की आवश्यकता है। (१) उत्तम स्थान (२) उत्तम कार्यकर्त्ता (३) पुष्कल धन। इन में से प्रथम आवश्यकता की पूर्ति इस रूप में हुई है कि जब तक चित्तौड़ में गुरुकुल की पूरी तैयारी न होजाय तब तक के लिए आर्यसमाज मन्दिर उदयपुर मिल चुका है, जो कि गुलाब बाग के समीप एकान्त स्थान में है। परमात्मा की कृपा से उत्तम कार्य कर्ताओं ने भी गुरुकुल की सेवा के लिए बचन दे दिये हैं। अब केवल धन संग्रह का कार्य अव शिष्ट रहा है। उस के लिए सभा ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं ४ मास तक भारत के भिन्न २ स्थानों से पर्याप्त धन सञ्चित करके उदयपुर में गुरुकुल का कार्य प्रारम्भ करदूं।

इस निमित्त कम से कम १०००००) (एक लाख) रुपयों की आवश्यकता है। इस कार्य का भार राजपूताने पर ही नहीं, किंतु समस्त भारत-वासियों का यह कर्तव्य है कि इस कार्य में सह-योग दें। क्योंकि हम सब के पूजनीय सेनापति महर्षि दयानन्दजी ने हमें यह आज्ञा दी है कि 'चित्तौड़ में गुरुकुल खोला जावे।' अभी बहुत देर नहीं हुई जबकि हमने उनकी जन्म-शताब्दी के महोत्सव पर मथुरा नगरी में बड़ी ऊंची आवाज से यह बारम्बार प्रतिज्ञा भी की थी कि 'दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे, दयानन्द का काम पूरा करेंगे।' इस लिए प्रत्येक शिखा-सूत्रधारी का कर्तव्य है कि वह इस गुरुकुल के लिए तन-मन और धन समर्पित करके अपने को दयानन्द का सच्चा वीर सैनिक साबित करें और उन की इच्छा की पूर्त्ति के लिए अपने आप को न्योछावर करें।

(१) नोट—धन भेजने का पता :—

श्रीमान् बाबू सुगनचन्द्रजी
कोषाध्यक्ष कार्य कारिणी सभा गुरुकुल चित्तौड़गढ़
Head clork U. C. Railway
Udayapur
Mewar

(२) नोट—इस गुरुकुल में केवल भोजन का व्यय १०) लिया जायगा। कपड़ा, किताब, बर्तन, और निवास स्थान आदि का व्यय गुरुकुल ही करेगा। इसी लिए हम दानवीरों के सन्मुख भिक्षा की झोली पसारते हैं।

"श्री पूज्यपाद नारायण स्वामीजी महाराज की सम्मति"—स्वामी व्रतानन्द, ऋषि दयानन्द का अनुकरण करते हुए ब्रह्मचर्याश्रम से संन्यासाश्रम में आगये हैं इन्होंने यह त्याग एक व्रत की पूर्ति के लिए किया है। वह व्रत यह है कि ऋषि दया-नन्द ने एक बार चित्तौड़ में गुरुकुल खोलने को संकेत किया था। स्वामी व्रतानन्द जब ब्रह्मचारी युधिष्ठर ही थे तभी से उनके हृदय में यह इच्छा प्रबल रूप से उत्पन्न हुई कि ऋषि की इच्छानुसार किले चित्तौड़गढ़ या उसके आस पास किसी उचित स्थान पर गुरुकुल खोला जावे। इसी व्रत के पालनार्थ अब ये भारत के भिन्न २ प्रान्तों में महानुभावों से मिलेंगे जिन से उपर्युक्त व्रत के पालन करने में सहायता मिलने की आशा होगी।

मैं चिरकाल से इनसे परिचित हूं। ये गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक, संस्कृत के अच्छे विद्वान, प्राचीन ऋषि मुनियों की शिक्षा पद्धति के प्रबल समर्थक, लग्न से काम करने वाले, उत्तम सदाचारी विद्वान् हैं। मुझे आशा और दृढ़ आशा है कि वे अपने व्रत को सफलता के साथ पूरा करेंगे। प्रत्येक सज्जन को जिनसे ये मिलें, गुरुकुल चित्तौड़ की तन, मन और धन से सहायता करनी चाहिये।

सम्पादक की डाक

आर्यवीर दल पर चांदकरण जी का लेख

—————+:o:+—————

आर्य वीर दल का संगठन

ज्येष्ठ के 'सार्वदेशिक' पत्र में श्रीमान् इन्द्र जी विद्यावाचस्पति महोदय ने वीरदल के संगठन का प्रश्न आर्य जनता के सन्मुख रखा है। इसमें सदेह नहीं कि आर्य वीर दल के लिये बहुत से काम हैं आर्य वीर दल या आर्य स्वयं सेवक सेना के अभाव में आर्य समाज को बहुत से कार्यों में दूसरी संस्थाओं के स्वयं सेवकों पर निर्भर रहना पड़ता है। और सब से बड़ी बात यह कि धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये कोई संगठित शक्ति आगे कदम रखने को अपना कर्तव्य नहीं समझती। आर्य वीर दल आवश्यक अवसरों पर आगे कदम बढ़ायेगा।

परन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि उसका सङ्गठन किस प्रकार किया जाय कुछ वर्ष पहले स्वयं सेवा समितियों का सङ्गठन किया गया था। और कार्य भी बड़े उत्साह से किया गया था। परन्तु फिर वह जोश एक दम घट गया। जो भी नाना प्रकार की स्वयं सेवक समितियाँ अब भी विद्यमान हैं, उन से कार्य चल ही रहे हैं इतने पर भी यदि आर्य वीर दल के सङ्गठन की आवश्यकता है तो वह केवल धार्मिक-सामाजिक और नैतिक अधिकारों की रक्षा के प्रश्न पर मैदान में आने वाले दल की है। अर्थात् न्याय के विपरीत जहां आर्य समाज के अधिकारों को कुचला जा रहा हो या कोई अन समाज आर्य समाज और साथ ही हिन्दू समाज की संज्ञा पर प्रहार कर रहा हो उस का डट कर मुकाबला करे। ऐसे दल को तैयार करना समाज क्षेत्र में क्षत्रिय दल को तैयार करना है। क्योंकि श्रीमान्य पं० इन्द्र जी ने आर्य समाज के क्षेत्र में क्षत्रियों के अभाव को अनुभव किया है इस लिए वे इसको पुनर्जन्म देना चाहते है। क्षात्र दल का पुनः सङ्गठन करना चाहते हैं। परन्तु शोक से कहना पड़ता है कि यह अभाव तो समस्त हिन्दू जाति में है क्यों कि आर्य समाज ही समस्त हिन्दू जाति का जगाने वाला, नेता रक्षक है इस लिये वह यदि क्षात्र दल तैयार करे तो केवल आर्य समाज के लिये नहीं प्रत्युत समस्त हिन्दू जाति-आर्य समाज के लिए तैयार करे।

इसके लिये यदि आर्य समाज के नेता इस बात को अनुभव करें कि हमें वैदिक वर्ण व्यवस्था को पुनः जागृत करना है तो सब से अच्छा यह है कि प्रत्येक समाज में सार्वदेशिक द्वारा यह घोषित किया जावे कि क्षात्रवृत्ति निभाने के लिए तैयार हैं। उस क्षत्रिय दल का निमन्त्रण उनके वेश भूषणों, विशेष शिक्षा और योग्यता इत्यादि सब बातों पर विचार भी शास्त्रीय ढंग से कर के निर्णय कर लेना चाहिये। यदि धार्मिक शास्त्र मनु आदि के अनुसार शस्त्रधारणादि क्षत्रिय अधिकारों के प्राप्त करने के लिए भी कोई दृढ़तर प्रयत्न करना आवश्यक हो उसको करना चाहिये। सच बात तो यह है कि यह सब विषय समाचार पत्रों में तय

नहीं हो सकते । इनका निर्णय आर्य संस्था में प्रथम स्वयं पृथक २ करें और जो निर्णय हो उस को स्पष्ट और विस्तार से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में भेज दें । उन सब पर विचार होकर फिर वीर दल या क्षत्रिय दल के संगठन कार्य प्रारम्भ करना चाहिये ।

और सबसे अच्छा तो यह है कि सार्वदेशिक सभा के मुख्य व्यक्ति इस सम्बन्ध में जो मत भी समस्त आर्यसमाजों का संग्रह करना चाहते हैं। वह निजी सरक्यूलर द्वारा प्राप्त करें और आर्य-समाजें भी अपना निर्णय प्रतिनिधियों द्वारा सार्वदेशिक को बतावे ।

जयदेव शर्मा

विवाह-संस्कार विधि ।

समस्त संस्थाओं में विवाह का महत्व अधिक है और आर्य्यसमाज में प्रति वर्ष सैकड़ों विवाह वैदिक रीतिसे हुआ करते हैं परन्तु "संस्कार विधि" के देखने से जितनी उलझनें और दिक्कतें इस संस्कार के विषय में पाई जाती हैं उतनी और संस्कारों के विषय में पाई नहीं जाती ? और संस्कार सरल हैं और छोटे हैं। यह जितना बड़ा है उतना ही जटिल है। मैंने संस्कार विधि को कई बार पढा और कई विद्वानों से परामर्श भी किया परन्तु मुझे बहुत सी बातें स्पष्ट प्रतीत नहीं होतीं। मैं स्वयं याज्ञिक नहीं, और न मैंने यज्ञों का विशेष रीति से अध्ययन ही किया, परन्तु विवाह संस्कार विधि की आवश्यकता होती है कि मेरी राय में मैं इस विवाह पद्धति को इस सरल रीति से लिख दिया जाय कि साधारण पुरुष भी सुगमता से कृत्य करा सकें।

मुझे प्रथम तो यही स्पष्ट नहीं प्रतीत होता कि कै यज्ञशालायें, कै मण्डप और कितने हवनों का विधान है। विवाह कब से आरम्भ हो, समस्त कृत्य कितनी देर में समाप्त हो इत्यादि २ कई प्रश्न हैं जो साफ़ नहीं हैं। यदि घन्टे भर रात गये कार्य्य आरम्भ किया जाय तो सूर्य दर्शन कब हो और अरुन्धती दर्शन कब हो। यदि सूर्य दर्शन दूसरे दर्शन प्रातःकाल हो तो अरुन्धती-दर्शन दूसरे दिन सायंकाल को हो सकते हैं। आसन प्रदान, मधुपर्क आदि क्रियायें द्वाराचार से सम्बन्ध रखती हैं या विवाह के मुख्य क्रम से गृहीसूत्रों में क्या विधान है। आशा है कि इन सब बातों पर विचारशील आर्य्य सामाजिक और विशेष कर याज्ञिक वर्ग संस्कार विधि तथा गृही-सूत्रों का अध्ययन करके एक सुगम प्रणाली निश्चय कर दें।

मेरी राय में दो बातें हो सकती हैं:—

पहली स्कीम

पृष्ठ १४३ पर दिया हुआ कृत्य बारात चलने या आने से पूर्व वर अपने घर और बधू अपने घर करें। जैसा कि आजकल प्रायः मांडवे की रस्म में होता है। यहां एक बात स्पष्ट नहीं है, वह यह कि लड़के को भी हवन करना पड़ेगा या ईश्वर प्रार्थना उपासना आदि (पृष्ठ १४३ पंक्ति २०) और वधू की अग्न्याधान और समिधा धान के पश्चात् किन मंत्रों से हवन करना होगा। (पृष्ठ १४३ पंक्ति १७) पृष्ठ १४४ पंक्ति ७ से लेकर पृष्ठ १४९ पंक्ति १० तक का कृत्य द्वाराचार के समय हों। अर्थात् सायंकाल के समय जिस दिन बारात आती हो और उसी के पश्चात् वह कृत्य भी जो पृष्ठ १४९ पंक्ति १० से लेकर पृष्ठ १५० पंक्ति १७ तक समाप्त होता है। उस दिन इस से अधिक और कोई कार्यवाही न हो। दूसरे दिन प्रातःकाल वह कृत्य हो जो पृष्ठ १५० पंक्ति १८ से आरम्भ हो कर पृष्ठ १७८ पंक्ति १ में समाप्त होता है। यह कृत्य मध्यान्ह से समाप्त हो सकता है। शेष कृत्य जो पृष्ठ १७४ पंक्ति ८ से आरम्भ होता है और जिसे उत्तर विधि कहते हैं, दूसरे दिन सायं को किया जाय। जिसको आजकल बढहार कहते हैं, यह प्रायः

एक घन्टे में समाप्त हो जाय। इस प्रकार समस्त विवाह के पाच भाग हो जाते हैं।

(१) बरात आने से पूर्व

(२, ३) जिस दिन बरात आवे सायंकाल

(४) दूसरे दिन प्रातःकाल

(५) दूसरे दिन सायंकाल

सूर्य्य दर्शन दूसरे दिन प्रातःकाल को होगा और अरुन्धती दूसरे दिन सायंकाल।

दूसरी स्कीम।

इसके अनुसार पहली क्रिया जनवासे में लड़का और घर पर लड़की बरात आने से पूर्व करे। दूसरी और तीसरी क्रिया अर्थात् द्वाराचार और वस्त्र दान दो पहर के पश्चात २ या ३ बजे किया जाय। चौथी क्रिया उसी के पश्चात आरम्भ करदी जाय और सूर्य्य अस्त होने से पहले समाप्त कर दो जिस से सूर्य्य दर्शन हो सके। पांचवीं क्रिया अर्थात विवाह की उत्तर विधि कुछ विश्राम लेकर सायंकाल के पश्चात शुरू कर दी जाय जो घन्टे दो घन्टे रात गये तक समाप्त हो सकती है। उसी समय अरुन्धती दर्शन किया जा सकता है। इस प्रकार दुपहर से लेकर कुछ रात गये तक विवाह के पाँचों भाग समाप्त हो सकते हैं।

यह कहना मुश्किल है कि इन दोनों स्कीमों में से कौनसी गृहसूत्रों तथा स्वामी जी की संस्कार विधि के अनुकूल है।

मैंने संस्कार चन्द्रिका भी देखी है वह भी इतनी ही अस्पष्ट । जितनी कि संस्कार विधि।

गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम. ए.

प्रयाग।

सम्पादकीय विचार धारा

श्रद्धानन्द भवन और आर्य पुरुषों का कर्तव्य

सार्वदेशिक सभा की ओर से स्वर्गत श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी के स्मारक भवन के लिये एक लाख रुपय की अपील की जाचुकी है। भवन की उपयोगिता के सम्बन्ध में कुछ अधिक लिखना व्यर्थ है। दिल्ली भारत की राजधानी है। वह सार्वदेशिक सभा का भी केन्द्र स्थान है। यह भी विधाता का चमत्कार है कि हत्यारे ने भारत की राजनीतिक और धार्मिक राजधानी में ही अपनी घातक पिस्तौल से उस अमर आत्मा को शरीर से अलग करके अमर पदवी को प्राप्त कराया। स्वामीजी के जीवन का अधिक भाग दिल्ली में ही बीता। उधर सार्वदेशिक सभा के साथ उनका बड़ा सम्बन्ध था। वह सभा के जन्मदाताओं में से थे। कई वर्ष तक सभा की बाग डोर को भी सम्भाले रहे। यह उचित ही है कि सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री स्वामीजी का स्मारक बनाया जाय, और वह भी भारतकी राजधानीमें ही बनाया जाय।

स्मारक रूप में एक विशाल भवन और पुस्तकालय बनाने का विचार है। पुस्तकालय अपने

ढंग का अनूठा होगा। धर्म सम्बन्धी पुस्तकों का अपूर्व संग्रह होगा। श्रद्धानन्द-पुस्तकालय श्रद्धानन्द भवन का एक भाग होगा। भवन में पुस्तकालय के अतिरिक्त एक विशाल व्याख्यान भवन और कार्यालय आदि के लिए कमरे होंगे। कुछ रिक्त भूमि खुले व्याख्यानों तथा यज्ञशाला के लिए भी रखी जायगी। भवन की पूर्ति के लिये भी रखी जायगी। भवन की पूर्ति के लिये कई लाख रुपये की आवश्यकता होगी।

परन्तु इस समय केवल एक लाख की अपील की गई हुई है। इसका कारण यह है कि प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जितनी इमारत की जरूरत है, उसका अनुमानिक व्यय एक लाख है। चाहिये तो यह था कि अबतक भवन के लिए आवश्यक धन एकत्र होजाता, और निर्माण का कार्य आरम्भ होजाता, परन्तु खेद की बात है कि अभी आर्य जनता का ध्यान ही उधर नहीं गया। मानों उन्हों ने भवन की बात सुनी ही नहीं। यदि सुनलेते तो इतना विलम्ब न होता। अभी तक तो धन संग्रह का कार्य आरम्भ भी नहीं हुआ है। समाजों या सभाओं ने इस प्रस्ताव को हाथ नहीं लगाया है। सभा ने निश्चय किया है कि दिसम्बर १९२८ की समाप्ति से पूर्व एक लाख रुपया एकत्र किया जाय ताकि नया वर्ष आरम्भ होने के साथ ही ईमारत का कार्य आरम्भ होसके। सभा ने निम्नलिखित रूप से चन्दे की राशि को प्रान्तों में बांटा है :—

नाम प्रान्त	धन जो लेना है	प्राप्त	शेष
पञ्जाब	१००००	×	१००००
संयुक्तप्रान्त	१००००	×	१००००
मध्यदेश व बरार	२०००	×	२०००
राजस्थान	५०००	×	५०००
मुम्बई प्रान्त	५०००	×	५०००
सिन्ध	३०००	×	३०००
अफ्रीका	२००००	×	२००००
बरमा	१००००	×	१००००
	६५०००		६५०००
देहली नगर	४०००	×	४०००
बम्बई नगर	१५०००	×	१५०००
कलकत्तानगर	१००००	×	१००००
कराची	४०००	...	४०००
	१०००००		१०००००

प्रान्तों की सभाओं को लिखा गया है कि यह अपने २ हिस्से की राशि को पूर्ण करने का यत्न करें। आशा है कि आर्य पुरुष अपने कर्तव्य को समझेंगे और नियत समय से पूर्व उस राशि को पूरा करने का यत्न करेंगे।

ख्वाजा हसन निज़ामी का नीचतापूर्ण आक्रमण

२५ मई के 'मुनादी' अख़बार में ख़्वाजा हसन निज़ामी ने निम्नलिखित नोट प्रकाशित कराया :—

ग्वालियर से ख़बर आई थी कि वहां कई सुन्दर युवती गाड़ी में बिठाई गईं और सारे शहर में इसका चक्कर लगाया गया इस पर यह लिखा था 'शुद्ध होजाओ और पसन्द करलो'

मैंने इस समाचार को प्रकाशित तो करदिया परन्तु मेरा दिल नहीं मानता कि आर्यसमाजी ऐसी बेहयाई और बेशर्मी का काम कर सकते हैं और मैं ख़्याल करता हूँ कि यह किसी ग़ैर जिम्मेवार आर्यों की हरकत होगी। पः कल ८ मई १९२७ को दिल्ली में इस प्रकार की एक मोटर लारी शहर में फिराई गई। जिस के अन्दर दस बारह सुन्दर लड़कियां बनाव शृङ्गार किये हुए बैठी थीं। और मोटर पर लिखा था "शुद्ध होजाओ और पसन्द करो"

मैं नहीं जानता कि यह हयासोज कार्रवाही जुम्मेवार लीडरों की है या मजहब पेशावर चन्दा मांगने वाले लोगों ने ऐसा कहा है।

यह लोग तो मुझपर अभियोग लगाते थे कि मैं रंडियों के द्वारा तबलीग इसलाम करता हूं। हालांकि इनका यह इलजाम बिलकुल झूंठ और बोहतान था। न मैंने कभी किया न मैं इस को उचित समझता हूँ मगर अब मैंने समझा कि आर्य लीडर इसी वास्ते मुझ पर इलजाम लगाते थे कि इस प्रकार का काम करना था।

दिल्ली जैसे शहर में जो तमाम हिंदुस्तान का मध्य है। पसन्द की घोषणा करने वाली मोटर हर शरीफ ख़्याल इंसान के शरम की बात है। मैं जानता हूं कि मुसलमान कौम के नौजवान इस आश्चर्यजनक कमन्द के बहुत जल्द शिकार होजायंगे। परन्तु मैं यह भी जानता हूँ कि मुसलमानों का शिकार होना आर्यसमाज को मुफीद नहीं होगा। क्योंकि गैर मुसलिम औरतें मुसलमानों के पास आने के बाद फिर बाहिर जाना पसन्द नहीं करेंगी और मुसलमान मर्द औरतों को हासिल करने के बाद फिर मुसलमान होजायंगे और इन औरतों को भी मुसलमान करलेंगे। क्या दिल्ली में जिम्मेवार आर्या बाकी नहीं रहे हैं। जो ऐसी शरमनाक हरकतें हो रही हैं।

आंदोलन और क्षमाप्रार्थना

इस नोट के प्रकाशित होते ही आर्य समाज के समुद्र में विक्षोभ सा पैदा हो गया। आर्य समाज चावड़ी बाजार दिल्ली ने जनता का ध्यान विषैले और झूठे आक्रमण की ओर खींचा। एक दम क्रोध का समुद्र उमड़ पड़ा। आर्य पुरुष इस पर अभिमान करते हैं कि वैदिक धर्म स्त्री जाति का आदर करना सिखलाता है। आर्य समाज के किसी सभासद का विचार स्वप्न में भी इतना नीच नहीं हो सकता कि वह स्त्रियों की परेट करवाये, या उनकी नुमायश करे। देशके हरएक ऐसे विक्षोभ का शब्द सुनाई देने लगा। तब तो दिल्ली की वह सरकार, जिसके हृदय के कोने में ख़्वाजा हसन-निज़ामी के लिए एक प्रेम पूर्ण जगत विद्यमान है, कुछ न कुछ करने के लिए लाचार हो गई और ख्वाजा को बुलाकर धमकाया गया कि या तो क्षमा मांगो, अथवा तुम पर मामला चलाया जायगा। ख्वाजा ने समझा था कि झूठ आसानी से पच जायगी, मुसलमान खुश हो जायगे, और हिन्दुओं को पता भी न चलेगा। पर ऐसा न हुआ। असन्तोष और क्रोध की ज्वाला केवल आर्य समाज तक केन्द्रित नहीं थी। हिन्दू मात्र के हृदय में ज्वाला सी जल रही थी, झूठ न पचा। ख़्वाजा ने देखा कि चालाकी पकड़ी गई, खेल खतम हो गई। सिर झुका लिया और निम्न लिखित क्षमा मांगली।

क्षमा मांगली

२५ मई के मुनादी के पर्चे में जो नोट 'शुद्ध हो जाओ और पसन्द करलो' के शीर्षक से प्रकाशित हुआ था उसकी बाबत मुझे २७ मई को सूचना मिली कि यह खबर सच नहीं है और और आर्य समाज ने स्त्रियों से भरी कोई लारी देहली के बाजार में नहीं निकाली।

यह मालूम होते ही मैं स्वयं देहली गया और जिन मनुष्यों से मुझे यह खबर मिली थी उन से पूछा तो मालूम हुआ कि सूचना देने वालों को तम्बाकू कम्पनी की किसी इश्तहारी गाड़ी से गलत फहमी हुई थी जिसको विज्ञापन के रूप में शहर में घुमाया जा रहा था। जिस समय यह सिद्ध हो गया कि खबर गलत थी तो मैं ने शीघ्र ही उसका प्रतिवाद करना चाहा और इस भूल पर क्षमा मांगने का विचार किया परन्तु पहली जून का पर्चा मुनादी तैयार हो चुका था और उसमें विस्तृत प्रतिवाद की गुञ्जाइश न थी इस कारण क़ेवल एक पंक्ति हाशिये पर प्रतिवाद लिखवा कर मैं एक आवश्यक कार्य के लिए सूरत चला गया। और फिर रात के ९ बजे वापिस आया

क्योंकि उस रोज का पर्चा प्रकाशित हो चुका था इस लिए आज २ जून के मुनादी के इस विशेष शीर्षक के जरिए मैं देहली की आर्य समाज के कार्य कर्ताओं और उन सब आर्य भाइयों से जिन को इस गलत खबर के प्रकाशित होने से दुःख पहुँचा है, क्षमा माँगता हूं।)

अब जब कि मुझे निश्चय हो चुका है कि यह खबर बिलकुल निराधार है और सचाई से खाली है इस लिए मुझे इस कार्य के लिए अत्यन्त शोक है और मैं सब से विषय पूर्वक क्षमा माँगता हूँ।

हसन निजामी

झूठे और नीच समाचार के प्रकाशित होने का इतिहास ख्वाजा ने अपने माफीनामे में दिया, वह अपूर्ण और कल्पित है। क्षमा प्रार्थना भी पर्याप्त नहीं तो भी आर्य पुरुषों ने अपनी स्वभावाविक उदारता से सन्तोष कर लिया और मामले को आगे नहीं बढ़ने दिया। इस घटना ने सिद्ध कर दिया है कि जहां सरकार का कर्तव्य है कि ऐसे शरारती लोगों की पीठ पर हाथ रखना छोड़ दे ताकि जातियों का परस्पर वैमनस्य बढ़ने न पाये, वहां साथ ही हम मुसलमान नेताओं से भी कहना चाहते हैं कि ऐसे उत्तरदायित्वहीन कमीने व्यक्तियों की इज्जत को बढ़ने न दें। जिस जाति या धर्म में ऐसे लोग इज्जत पाते हैं वह कभी फूलता फलता नहीं।

सभा का प्रकाशन विभाग

आर्य समाज के विरोधियों और समालोचकों की संख्या बहुत अधिक है परन्तु दुःख की बात है कि रक्षा के साधन बहुत कम हैं। आधे दिन आर्यसमाज के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा किया जाता है। ईसाई और मुसलमान समाचार पत्रों तथा प्रचारकों को छोड़ दीजिए, उनका तो पेशा ही आर्यसमाज को कोसना और भला बुरा कहना है। सरकार के समर्थक और गोरे अखबार भी तो आर्यसमाज पर पत्थर फेंकने में कमी नहीं करते। इतने आक्षेपों और प्रहारों का सामना करने के लिये जिस उद्योग एवं की आवश्यकता है वह अभी आरम्भ भी नहीं हुआ। हर्ष की बात है कि सार्वदेशिक सभा ने रक्षा के उपाय करने का निश्चय किया है। उन उपयोग में से पहिला और अत्यावश्यक, उपाय प्रकाशन विभाग का उद्घाटन है। प्रकाशन विभाग का उद्देश्य उन आक्षेपों का उत्तर देना, और उन आपत्तियों का समाधान करना होगा जो विरोधियों द्वारा आर्यसमाज पर किये जाते हैं। इस विभाग में योग्य लेखकों को रखा जायगा, जो फैलाये हुए जहर का तत्काल इलाज किया करेंगे। यह विभाग १ अगस्त १९२७ से आरम्भ हो जायगा। सार्वदेशिक सभा ने इस कार्य के लिए आर्य मात्र से आर्थिक सहायता की प्रार्थना की है। बहुत सा धन आ रहा है। आशा है, आर्य जनता १ महीने के अन्दर अन्दर सभा के कार्यालय में इतना धन भेज देगी कि १ अगस्त से पूरे उत्साह के साथ प्रकाशन के कार्य का प्रारम्भ किया जा सके।

आर्यवीर दल का संगठन

हर्ष की बात है कि आर्य वीर दल के संगठन का प्रस्ताव आर्य जगत में आदर के साथ सुना गया है। यद्यपि खेद की बात है कि आर्य समाचार पत्रों ने इस आवश्यक आन्दोलन की ओर ध्यान नहीं दिया, तो भी आर्यसमाज के विचारकों ने प्रस्ताव का समर्थन किया है। नियमों के सम्बन्ध में विचार हो रहा है। नियमों का खाका कुछ समय पीछे समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जायगा। आशा है, दो तीन मास में स्थान स्थान पर दलों के संगठन का कार्य प्रारम्भ हो जायगा। जबतक नियमादि का निश्चय होता है तब तक भी यदि आर्यसमाजें स्थानीय आवश्यकताओं के अनु-

सार आर्यदलों का संगठन का कार्य जारी रखे तो उत्तम है।

पञ्जाब प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन

मई मास के अन्त में पञ्जाब का आर्य-प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन हुआ। भारत भर में दोही प्रान्तिक प्रतिनिधि सभायें हैं, जिनका कार्य सन्तोष जनक कहा जा सकता है—एक पञ्जाब की, दूसरी सयुक्त प्रान्त की। उन में से भी पञ्जाब के प्रतिनिधि सभा के वार्षिक कार्य का परिमाण अन्य सब से अधिक है। इतना बड़ा बजट किसी दूसरी सभा का नहीं है। मई के अन्त में उस सभा का जो वार्षिक अधिवेशन हुआ उस में वेद प्रचार तथा गुरुकुल की रिपोर्ट सुनाई गई। रिपोर्टों के पढ़ने से विदित होताहै कि सभा के दोनों विभाग उन्नति कर रहे हैं। गुरुकुल को गतवर्ष जितना चन्दा प्राप्त हुआ, इतना पहिले कभी नहीं हुआ। रजत जयन्ती के उपलक्ष में आर्य जनता ने जी खोलकर दान किया। वेद प्रचार के कार्य में भी उन्नति हुई उपदेशक विद्यालय भली प्रकार चल रहा है। नये वर्ष के लिये अधिकारियों का चुनाव हुआ। रा० ब० ला० बद्रीदास और म० कृष्ण को सर्वसम्मति से सभा के प्रधान और मन्त्री चुना गया सूचित करता है कि सभा की वर्तमान कार्य नीति से प्रान्तिक के आर्य पुरुष सन्तुष्ट हैं। आगामी वर्षों के बजट स्वीकार किये गये जो प्रान्त पर दो लाख के लगभग राशि का बोझ डालते हैं। कर्मवीर पञ्जाब का धार्मिक उत्साह अन्य प्रान्तों के लिये आदर्शरूप है।

सामाजिक—जगत

सार्वदेशिक सभा और आसाम प्रचार

सार्वदेशिक सभा ने वैदिक धर्म के प्रचारार्थ जैसा कि सार्वदेशिक के पाठकों को ज्ञात है आसाम के एक योग्य प्रचारक को नियुक्त करके यह कार्य आरम्भ कर दिया है। पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि आसाम प्रान्त में हमारे उपदेशक महाशय को बड़ी सफलता हो रही है। वहाँ की जनता में बड़ी जागृति उत्पन्न हो गई है और साथ ही लोग आर्य समाज और उसके सिद्धान्तों के प्रति सहानुभूति प्रकट करने लग गए हैं।

आर्यसमाज महिम का नगरकीर्तन

महिम जिला रोहतक में वह स्थान है जहां गत वर्ष आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के नगरकीर्तन पर इस प्रकार की पाबन्दी लगाई गई थी जिसे आर्य्य समाज ही क्या कोई भी धार्मिक सोसाइटी स्वीकार नहीं कर सकती थी इस लिये उपर्युक्त आर्य समाज ने बतौर प्रोटेस्ट नगर कीर्तन बन्द कर दिया था—इस वर्ष फिर जब उत्सव का समय आया तो गत वर्षकी नाई नगर कीर्तन पर अधिकारीयों की ओर से पाबन्दी लगाई गई जिन के कारण आर्य समाज ने उत्सव ही बन्द कर दिया और

उस समय तक उत्सव नहीं किया जब तक कि उन्हें नगर कीर्ति का लाइसेन्स न मिल गया।

२२-२३ ५४ को वहां का उत्सव बड़े समारोह के साथ हुआ था। नगर कीर्तिन का जलूस बड़े उत्साह से निकाला गया-

विचित्र जीवन के लेखक पं० कालीचरन जी जेल से छूट गये

श्री पं० कालीचरनजी आगरा निवासीको विचित्र जीवन नामक पुस्तक के लेखक होने के उपाय में जिला मेजिस्ट्रेट आगरा की अदालत से एक साल की कैद और एक हजार रुपया जुर्माने का दण्ड हुआ था पाठकों को ज्ञात होगा कि जब अभियोग चल रहा था यू० पी की सरकार ने इस पर १५३ धारा लगाई थी इस के बिरुद्ध हाई कोर्ट में अपील होने पर जुरमाना को स्थिर रखते हुये हाईकोर्ट ने कैद की अवधि कम करके केवल २ मास रहनेदीथी चूंकि उन के जमानत स्वीकार न हुई थीं और वे जेल में थे इस लिये उन को पूरी अवधि समाप्त होगई वे होने पर २७ वा २८ मई को मुक्त होगये— बधाई—

„रंगीला रसूल और विचित्र जीवन के अभियोगों में सादृश्य

इन दोनों अभियोगों में यह समानता थी कि पञ्जाब हाईकोर्ट के इस निर्णय के बाद कि "रङ्गीला रसूल" पर १५३ धारा लागू नहीं हो सकती थी कोई कारण नहीं था कि इलाहाबाद हाईकोर्ट पं० कालीचरण जी को बरी न करदेती—परन्तु यदि एक हाईकोर्ट के निर्णय की विद्यमानता में यदि दूसरी हाईकोर्ट इस धारा के और अर्थ निकाल कर इस के विरुद्ध फ़ैसला करती है तो निश्चय ही ब्रिटिश न्याय हास्यास्पद होजाता है।

आर्यवीर के सम्पादक

'आर्यवीर' रावलपिण्डी के सम्पादक श्री मेहर चन्द पर १५३ अ. धारा के अनुसार मुकदमा चलाया था, फ़ैसले में उन पर ३ सौ रुपये जुर्माना की सजा दीगई जुर्माना देकर आप छुटगये हैं। इसी मामले में गिरफ़्तार मास्टर लक्ष्मण, आर्योप-देशक आगरा को छोड़ दिया गया है।

प्रवासियों की शिक्षा-समस्या

"उपर्युक्त शीर्षक" का एक लेख सहयोगी "आर्यमित्र" के सम्पादकीय लेख में २ जून के अङ्क में प्रकाशित हुआ है। उस में फिजी की शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए योग्य सम्पादक ने सार्वदेशिक सभा के इस दिशा में प्रयत्न के जानने का यत्न किया है।

इस सम्बन्ध में हम आर्य जनता को सूचित कर देना चाहते हैं कि सभा फिजी से इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार कररही है। वहां से उत्तर आजाने पर आवश्यकतानुसार कार्य किया जावेगा।

हिंदू धर्म आज्ञा नहीं देता

"मुसलमानी धर्म आरम्भ से दूसरों को अपने अन्दर आने का बुलावा देता है। और अव्वल दिन से आज तक बड़े उत्साह से इस में शरीक होते हैं। आर्या मजहब ने बिल्कुल नया काम दूसरों को अपने धर्म में सम्मिलित करने का आरम्भ किया है। हालांकि हिन्दू मजहब इस की इजाज़त नहीं देता है।" (हिसार इसलाम)

मुसलमान ज़िमीदार अछूतों में प्रचार करें

मुसलमानों को चाहिये कि वे अछूतों को बतायें कि वे हिंदू नहीं हैं बल्कि इस मुल्क के असला बाशिन्दों का औलाद हैं, जिन पर आर्य हिंदुओं ने हमला किया था और इन पर फ़तह हासिल करके उन्हें गुलाम बनालिया था। दूसरा काम मुसलमानों का यह है कि कि वह इन अछूत जातियों के अन्दर तबलीग़ का काम जोश व सरगर्मी से शुरू करें मुसलमान ज़मीदारान को खसूसियत से इस तरफ तवज्जह करनी चाहिये।

(पैग़ामसुलह २० अप्रैल)

शुद्धि आन्दोलन बन्द नहीं होसकता

टाइम्स आफ इण्डिया के लेख के सम्बन्ध में मुम्बई की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए लाला लाजपतरायजी ने शुद्धि और संगठन के सम्बन्ध में निम्न विचार प्रगट किये धर्म्म में प्रविष्ट करने का काम भारत वर्ष में किस ने प्रचलित किया ? क्या हमने आरम्भ किया था ? क्या हमने ज्ञान प्राप्त का प्रोत्साहन दिया था कि यह प्रथा हमारे देश में बनी रहे ? क्या वे कानून बनाकर हिन्दुओं को ईसाई बनाने का काम रोकने के लिए तैयार हैं ? क्या वे यह कानून बनाने के लिए तैयार हैं कि कोई ईसाई किसी दूसरे धर्म वाले को अपने धर्म में न मिलाये-क्या वे यह कानून बनाने के लिए तैयार हैं कि कोई किसी दूसरे धर्म वाले को मुसलमान मुसलमान न बनाने पाये—यदि ऐसा हो तो शुद्धि आन्दोलन तुरन्त बन्द हो जावेगा-निस्सन्देह आर्य समाजी अपना काम बन्द न करेंगे क्योंकि वे संसार भर को शुद्ध करने के लिए निकले हैं परन्तु व्यक्ति गत रूप से मैं इस काम को बन्द कर देने के कानून का पूरा समर्थन करूंगा—परन्तु जब तक ईसाई और मुसलमान हिंदुओं को विधर्मी बनाते रहेंगे तब तक शुद्धि आंदोलन बंद नहीं हो सक्ता।

बगदाद में वैदिक धर्म का प्रचार

आर्य्य-समाज बगदाद का आठवां वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ १५ मई को मनाया गया। पण्डाल बड़े सजधज के साथ ध्वजा, पताका, तोरणादि तथा वर्तमान और भूतकालिक जातीय नेताओं के विविध चित्रों तथा उनके उद्देश्यों से विभूषित था। प्रत्येक सजधज तथा सजावटादि के स्थान २ पर विद्युत प्रकाश का कार्य्य पूर्ण निपुणता के साथ काट छांट कर बनाया हुआ था, जब कि संध्या समय बिजली का प्रकाश किया गया तो 'ओ३म्' शब्द के आकार के स्थान पर आश्चर्य जनक शोभा हुई। समाज भवन की सुविधादायक स्थान की शोभा एक विचित्र ही थी। भारतवर्ष के विपरीत—बगदाद में एक जाति के धार्मिक तथा सामाजिक सम्मेलन दूसरी जाति के दर्शकों से अवश्य उपस्थित किये जाते हैं। उस परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद हैं—जिसकी अनुपम दया से यहां धार्मिक निर्दयता का भूत अपनी स्थिति को धारण न हो सका इसलिये भिन्न २ समुदाय के दर्शक होने पर भी एक जाति वालो ने दूसरी जाति वालों के साथ पूर्ण सहानुभूति के साथ पारस्परिक प्रेम व मित्रता का भाव दर्शाया।

आजकल यहां सामयिक मौसम का पारा १११ डिग्री पर होने पर भी प्रायः सभी स्थानों से इस असुविधाजनक समय में बारह बजे के करीब दर्शक गण आये। १ बजे से लेकर ९ बजे तक ८ घंटे का विशेष प्रोग्राम था जिस बीच में, हवन, वेदपाठ, भजन, पद्य तथा भाषणादि हुये। भाषण देने वालों में पं० गंगाप्रसाद शास्त्री विद्यालङ्कार, मि० अब्दुल्ला रहमान बी. ए. एम. आर. एस., महाशय जे. डी. शर्मा—की इनेरज्यटिक जोइन्ट सेक्रेटरी और मेसर्स ए. के दास, आर. वी. वर्मा, जगन्नाथ घुलाटी आदि के भाषण उल्लेखनीय हैं। पं० प्रकाशचन्द जी के भजन पर श्रोतागणों ने बड़े आनन्द से उनका स्वागत किया और पुनः उनको भजन सुनाने का आग्रह किया। आठवां वार्षिकोत्सव की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ने के पूर्व मन्त्री महोदय यम. सी. गुलशनराय ने लालचन्द जी के पुत्र की अकालिक मृत्यु जो कि उत्सव के एक दिन पूर्व हुई थी सहानुभूति का प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव का रायसाहब मंगलराम जी ने समर्थन किया और सर्व सम्मति से पास किया गया।

तत्पश्चात् मन्त्री महोदय ने स्पष्ट तथा उच्च स्वर से वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी जो श्रोतागणों की ओर से वाह २ और हर्ष ध्वनि से समाप्त हुई। प्राचीन आर्य्य सभ्यता तथा उन्नति के वैदिक धर्म

का इतिहास दुहराते हुये रिपोर्ट में स्वामी दयानन्द के पूर्व हिन्दू समाज की दशा और उसके पश्चात् उनके उपदेश, तथा आर्य्य समाज आन्दोलन का वर्णन और चारों ओर के प्रत्यक्ष तथा आश्चर्यजनक फल को दर्शाया। बगदाद आर्य्यसमाज के विषय पर रिपोर्ट में पढ़ा गया कि यूरोपियन महायुद्ध के पश्चात् भारत के भिन्न २ प्रान्तों से आई हुई सेनायें जो कि युद्ध की आशंका से वहां रक्खी गई भिन्न २ मतावलम्बी थी। जब कि-मुसलमान अपने पूर्वजों के धर्म प्रान्त में ईश्वरोपासना करते, ईसाई भी अपने भ्रातृवर्गों से मिल गये और जूस लोगों को भी अपने धर्म्मान्वित क्षेत्र का विस्तार अधिक बड़ा मिला तो शेष ये हिन्दू थे जिन्होंने अपने हीं--विश्वासानुकूल ईश्वर-भक्ति के निमित्त हाथ पैर हिलाये और यही कारण था कि १९१६ में बगदाद में आर्य्यसमाज की स्थापना हुई।

समाज के सहायकों तथा सभासदों में, एक धनपात्र व्यापारी से व उच्च श्रेणी के ओफीसर से लेकर नीच भङ्गी तक सब समानाधिकारी हैं बङ्गाली, मद्रासी, गुजराती, पञ्जाबी आदि का इस भवन में तुल्य भाग है। यह एक हर्ष का विषय है कि धर्मयुद्ध तथा विचारयुद्धों के इस महा अंधकार युग में कुछ ऐसे उदारभावी मुसलमान भाई हैं जो बगदाद आर्य समाज के सहायक हैं। रिपोर्ट में यह भी पढ़ा गया कि बगदाद में २४० आ० स० के सभासद हैं, ३५ हिन्दू कुटम्ब हैं जिनमें १२ की मृत्यु हुई और ९ का जन्म हुआ और बहुत से संस्कार व उत्सव त्योहारादि का वर्णन सुनाया गया उन-त्योहारों के मनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया और यह भी बताया गया कि बहुत कम ऐसे अवसर हैं जब कि हम दूर दूर से आकर मिलें इस प्रकार के सम्मेलन विशेष कर हिन्दू स्त्रियों को ऐसा अवसर देते हैं कि वे दूर २ से आकर एक स्थान पर बैठ अपने सुख दुख की कहानी सुना सकें। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की मृत्यु पर शोक तथा श्री स्वामी मङ्गलानन्द जी की बगदाद निमन्त्रण की स्वीकृति व इराक भ्रमण पर हर्ष प्रकट किया गया।

बगदाद समाज की आर्थिक दशा का हिसाब जो रिपोर्ट के साथ था सब को सुनाया गया। आमदनी २०५०) और व्यय ३७२६=) था और जो अधिक व्यय था वह जमा फण्ड से था कमी के कारण वे थे कि या तो सभासद जगह जगह पर विभाजित थे या अपने दफतरों के बदलाव से पिछला चन्दा अदा न कर सके थे और स्वयं ही ऋणी थे।

रिपोर्ट कोष के विषय में स्पष्ट शब्दों में अपील और यह कहते हुए समाप्त हुई कि "तुम भी हिन्दू हो सकते हो न कि आर्य समाजी, तुम भी सर्व-दाता हो सकते हो न कि जातीय-दाता—लेकिन याद रखिये हम अपने देश प्रेम व कर्त्तव्य में किसी को भी नहीं त्यागते जैसे कि हम एक ही मातृभूमि की सन्तानें हैं-परन्तु एक हिन्दू संस्था अपने पवित्र धार्मिक व सामाजिक कार्यों को विदेश में चला रही है इस लिए आपकी सहायता चाहती है।

"धन अच्छा है और उनको अच्छा है
जब कि मनुष्यों की भलाइयाँ करता है।"

बड़ा उत्साह सब लोगों में था। उसी स्थान पर कुछ धन संग्रह भी हुआ जिस में मुसलमान महाशय ने भी चन्दा दिया। सभासदों तथा सहायकों ने भी पिछला चन्दा देने की प्रतिज्ञा की। यहाँ पर इतना कह देना पर्य्याप्त है कि आर्य्यसमाज ही हिन्दुओं की एक मात्र संस्था इराक में है जिस का आठवाँ वार्षिकोत्सव पूर्ण फलीभूत हुआ।

एक आ

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली

(मास अप्रैल का कार्य विवरण)

इस मास सभा द्वारा निम्न कार्य हुआ है:—

प्रचार विभाग

दिल्ली खास व प्रान्त—

पं० मनीषीदेव शास्त्री ने निम्न स्थानों पर प्रचार किया—मछलीवालां—सदरनाला, सीधीपुरा बस्ती ग्वालियर वाले मोची, बस्ती रैगड़ तेलीवाड़ा सब्जीमण्डी—रायसीना- नयाबांस कलां महल मीरजुमला - पहाड़ी धीरज मुल्तानी ठांडा —पहाड़ गंज शाहगंज - फराशखाना सराय रुहल्लाखां- भागलपुर तुर्कमान गेट - गुरुकुल रामताल - महरौली मोतिया खाना सलीम पुर कैथवाड़ा - इत्यादि इत्यादि।

२. प० कर्म चंद जी देहलवीने होजकाजी अजमेरी गेट सराय फूस- पचकुइय्या रोड- करौल बाग मोरी गेट पहाड़ गंज मुल्तानी ठांडा, मण्डी कसेरु वाला, लाल दरवाजा, श्रद्धानन्द बाजार कलां मसजिद, चौक शाह मुबारिक सराय भूर, मजकागंज -नक्कार खाना नई देहली कश्मीरी गेट कलां महल देहली कमेटी आदि २ स्थानों में प्रचार किया।

देहली कमेटी : —

म० नानक चंद जी व म० कर्म चंद जी उपदेशक २ तारीख को श्रीमान सेक्रेटेरी साहिब म्यूनिसिपल कमेटी देहली से अपने भाईयों की रिश्वत सम्बंधी बात चीत करने गये थे। चूंकि जमादार सफाई व सरकिल इंसेपक्टर इस बात को गवारा नहीं कर सके और दोनों को पीट डाला। म० नानक चंद को लात घूंसों आदि से खूब पीटा। सेक्रेटेरी हेल्थ आफिसर को बाकायदा रिपोर्ट की गई।

पचकुईयां:—

माता बराहयों के मेले में तीन मुसलमान मंदिर में घुस आये थे उन को निकाला गया।

करौल बाग:—

में अञ्जुमन इस्लामिया की ओर से वहाँ के केसल्लना, रमजानी आदि को मुसलमान बनाये जानेका प्रयत्न था परन्तु प्रचारसे कार्य ठीक होगया।

३. पं० प्रकाश मुनि जी द्वारा कटरा दीना बेग फराशखाना तिमारपुर, करौल बाग, क्लाथ मील, नरेला सराय रुहल्ला महरौली, महपालपुर, रामताल, चिराग दिल्ली, बस्ती पुनिक, नजफ़ गढ़ खेड़ा ठिवाइँ, घवेरा थांकनेर नदई आदि में प्रचार हुआ।

४. पं० छेदीलाल जी व मि० भोलासिंह जी भजनीक द्वारा देहली स्टेशन, मेला कालिका, मानिकपुरा रायसीना शाहादरा, नूनी, पहाड़गंज सीताराम का बाजार, सीदीपुरा, सब्जी, मण्डी, झराल- कडकड़ी सलीमपुर खुरजा आदि में प्रचार हुआ।

आगरा प्रान्तः—

१. पं० छेदी लाल जी व भोळा सिंह जी भजनीक ने आगरा सिहों का नगला में लगभग एक सप्ताह प्रचार किया।

२. विशन नाथ जी कपूर ने कोटला में प्रचार किया लाला नगला के एक जाटव भाई की बरात उन स्थानों में गई थी विवाह वैदिक रीतिसे हुआ।

मेरठ प्रान्तः—

पं० छेदी लाल व भोला सिंह जी ने गुलठहर भीकमपुर. गोठरा बागपत खेखड़ा आदि में प्रचार किया।

एटा प्रांतः—

पं० छेदीलाल जी व भोलासिंह जी प्रचारार्थ आवागढ़ और जलेसर में गए।

अवागढ़ में श्री विश्वनाथ कपूर प्रचारक भी गये।

रोहतक प्रांतः—

१ श्रीयुत छेटीलाल जी व म० भोलासिंह जी नें रोहतक व जाखौली नगर में प्रचार किया।

२ म० मौजीराम जी ने रोहतक, बछेड़ा बुढ़ाना जागसी खेदरादि आदि में प्रचार किया।

मनाना के जाटवां ने यज्ञोपवीत लिया तथा शुद्ध रहने और मांसादि त्यागने का व्रत किया।

माहराः—

माहरा के जाटव भाई हरिसिंह व चन्दगीराम का नाम उनके बेगार के विरुद्ध आन्दोलन करने पर वहां की पुलिस ने ११० दफा में उनके नाम लिख लिए, इसके सम्बन्ध में डिसट्रिक्ट सुपरिंटेन्डेन्ट से पत्र व्यवहार किया गया। अभी इसके सम्बन्ध में प्रयत्न जारी है। उसका नाम इस दफा से काटा नहीं गया।

सेलानाः—

सेलाना के एक चमार भाई की लड़कीकी जिस को जाटों ने जलाने से रोका था, बाबत डिप्टी कमिश्नर व पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट को लिखा गया था। डिप्टी कमिश्नर ने उनपर मुकदमा चलाने की आज्ञा दे दी है। अभी इस सम्बन्ध में कार्यवाही हो रही है।

हिसार प्रांतः—

म० नानकचन्द्जी ने भिवानी, नवागांव, रिताथल, फनाना हाँसी, ग्रामनाळ, सिवाड़ा कौसली, ठारंगा, तिमार, ब नी छपार आदि में प्रचार किया।

अलीगढ़ प्रांतः—

अलीगढ़ प्रांत में विश्वनाथ जी कपूर ने नाई नगला नबीपुर कलां, तन्दुला नगला, लाला नगला, धहियापुर, किला बहरोई, रमनपुर, खंदारीगढ़ी, खेड़ा, भोजपुरा, मुरसान दरवाज़ा आदि में प्रचार किया।

नाई नगलाः—

नाईनगला के दुर्गासिंह जाटव ने सभा को २२॥ वर्ग फीट ज़मीन दान दी है।

श्रीमति लीलादेवी कपूर ने लाला नगला, नाई नगला रमनपुर, नबीपुर कलां, मुरसान दरवाज़ा, सादाबाद दरवाजा व किला में प्रचार किया आठ बच्चों की चोटियें रखवाई।

बुलन्दशहर प्रांतः—

बलगाँव यहां पर मुसलमान जमीदार ने जाटव भाइयों को मुसलमान बनाने के लिए अनेक षड्यंत्र रच रक्खे थे। जिस से जाटवों में कुछ असन्तोष उत्पन्न हो गया था। इस असन्तोष को दूर करने के लिए वहां कान्फ्रेंस की गई और सारा कार्य ठीक होगया।

सिकन्दराबाद:—

सिकन्दराबाद में वहां के महतरों की आम शिकायत वहां के पुलिस जमादार की रिश्वत खोरी तथा उनसे बेगार लेने व तंग करने की है। सभा की ओर से पं० बलवन्तसिंह जी व स्वामी योगानन्दजी प्रयत्न कर रहे हैं कि उनकी शिकायतें रफा हो जावें। अधिकारियों से भी पत्र व्यवहार किया गया। परन्तु कुछ ध्यान नहीं दिया गया है। प्रयत्न जारी है।

खुर्जा शिल्प विद्यालय:—

खुर्जा में शीघ्र खुलने वाला है सरकार ने ६६०) मासिक सहायता स्वीकार करली है विद्यालय में बढ़ई गीरी, लोहार गीरी, दर्जी गीरी और बुनने आदि कला का कार्य खोला जायगा।

कुंभ प्रचार:—

सभा की ओर से कुंभ प्रचार के लिये पर्याप्त प्रबन्ध किया गया था। सभा के उपदेशक बराबर प्रातः से सायं तक प्रचार करते थे। काफी साहित्य वितरण किया गया। लोगों में व्यायाम के प्रति प्रोत्साहन के लिये एक वृहत दंगल की योजना की गई थी। श्री स्वामी विद्वानन्द जी की अध्यक्षता में गुरुकुल कांगड़ी, बंगाल बिहार, पञ्जाब, यू० पी० आदि के अखाड़ों के खेलों का प्रदर्शन हुआ। जनता ने इसमें बहुत दिल चस्पी से भाग लिया। गदका, पटेबाजी, धनुष बाणादि के खेलों ने लोगों को चमत्कारित कर दिया। सभाने विजयी पार्टियों को बल्लम, पगड़ी, बादाम आदि यथोचित पारितोषिक वितरण किया।

रक्षा कार्य।

१. म० छेलासिंह जी उपदेशक सभा ने मथुराप्रसाद नाम के लड़के को जिस को कि एक मुसलमान लिये जा रहा था छुड़ा कर वैदिक अनाथ सुधार आश्रम में प्रवेश कराया।

२. लीलावती नाम की एक जाटव लड़की अनाथालय दरियागञ्ज में भेजी गई, पीछे उसको उसके वारिस ले गये।

३. जाति सेवक अनाथ आश्रम देहली से भागे हुए तीन लड़के बादली से लाकर आर्य अनाथालय दरियागञ्ज में भेजे गये।

४. कंचनिया नाम की एक विवाहिता गड़रिन उसके मकान सराय बैरम खां में भेजी गई।

५. एक एक मास की लड़की जिसको कोई ठेले में एस० एच० ओबरा कम्पनी के सामने छोड़गया था दरियागञ्ज अनाथालय में भेजी गई।

६. रुक्मणि नाम की स्त्री जो कि पीलीभीत की रहने वाली बतलाती थी वनिता विश्राम आश्रम में भेजी गई।

७. अर्जुन नामका लडका पं० मनीषीदेव जी ने छुड़ाकर दरियागञ्ज अनाथालय में भेजा गया।

८. हाथरस में म० कपूर जी ने एक जाट का लड़का विधर्मियों के हाथसे छुड़ाकर उसके वारिसों के हवाले किया।

विविध।

श्री महात्मा गांधी जी की ओर से श्री भाई विट्ठल लक्ष्मण फड़के जी सभा का कार्य देखने तथा दलित भाइयों की स्थिति का अध्ययन करने आये थे। सभाने उनको पनिहारी गली, सराय फूस बाल्मीकि, स्कूल पाठशाला पहाड़ी धीरज, पहाड़ गञ्ज स्कूल फराश खाना, कलां मसजिद आदि स्थान दिखलाये।

देहली में ट्राम पर चढ़ने और नल से पानी न लेने देने की देहली के बाल्मीकि भाइयों को आम शिकायत है। अधिकारियों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

दान सूची सार्वदेशिक सभा बाबत मास मई १९२७

श्रद्धानन्द भवन निधि

धन	दाता
३२)	श्री० गयाप्रसाद मन्त्री आर्य समाज कैसरगञ्ज बहराइच
२७५)	„ पं० केशव देव ज्ञानी उपदेशक सभा के उद्योग से गण्टूर नगर से संगृहीत धन
११७)	म० बद्रीप्रसाद जी के उद्योग से अहीर क्षत्री स्कूल शिकोहाबाद के अध्यापकों व विद्यार्थियों से संगृहीत धन
१००)	श्री० सेक्रेटरी स्पिनिङ्ग एण्ड वीवीङ्ग मिल्स कम्पनी, मुरादाबाद द्वारा
५)	„ म० बद्रीप्रसाद जी द्वारा बंशीधर जी के पुत्र के विवाहोपलक्ष में

५२९)

श्रद्धानंद दलितोद्धार निधि

धन	दाता
१६५)	श्री० मन्त्री आर्य समाज हलद्वानी के उद्योग से संगृहीत

१६५)

शुद्धि फंड

धन	दाता
१०)	श्री० म० गौरीशङ्कर जी मन्त्री आर्य हैदराबाद पोगोला जि० (खीरी)
१६५)	" मन्त्री आर्य समाज हलद्वानी के उद्योग से संगृहीत

१७५)

देश देशान्तर प्रचार

धन	दाता
२५)	श्री० ला० ईश्वरीप्रसाद जी रईस फलावदा (मेरठ)

२५)

मद्रास प्रचारार्थ व दलितोद्धार

धन	दाता
९५०)	श्री० सेठ जुगलकिशोर बिड़ला

९५०)

विविध दान

धन	दाता
५)	श्री० दीनानाथ जी हापुड द्वारा चि० त्रिलोकचन्द्र जी के विवाहोपलक्ष में

५)

श्रद्धानन्द भवन निधि	५२९)
„ दलितोद्धार निधि	१६५)
शुद्धि फण्ड	१७५)
देश देशान्तर प्रचार निधि	२५)
मद्रास प्रचार व दलितोद्धार	९५०)
विविध दान	५)
सर्वयोग	१८४९)

दान दाताओं को अनेक धन्यवाद हैं:—

नारायणदत्त

कोषाध्यक्ष

भा० भारत वर्षीय आर्य सार्वदेशिक सभा

देहली।

महिला—जगत्

एक राजा की मूर्खता:—

एक नव युवक राजा जिन्हों ने बनारस के कालेज में अंग्रेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। अपनी स्त्री और माता के सहित भ्रमण करते हुये श्री अयोध्या जी में यात्रार्थ पधारे। सरयू नदी पर स्नानादि से निवृत होकर पण्डों के दरबार में हाजिर हुये। राजा की माता ने जो पुराने खयालात की देवी थी, अपने पुत्रसे कहा—'बेटा! जबमें तुम्हारे पिता के साथ यहां आई थी तो उन्हों ने मुझे पण्डे को दान देकर फिर खरीद लिया था, तुमभी ऐसा करो, बड़ा पुण्य होगा। राजा शिक्षित था, इस बेहूदापन से बड़ा घबराया और अपनी माता को बहुतेरा समझाया माता ने ठण्ढी साँस भरी, राजा अपनी माता को चिंता युक्त देखकर घबराया और माता की नाराजगी से बचने के लिये यह दान देने का ढकोसला स्वीकार कियो।

बस फिर क्या था एक पण्डा सण्ड मुसण्ड था बुलाया गया, रानी साहिबा को १६ शृङ्गार कराने के बाद पालकी में बिठाया गया। पुरोहित जी ने संकल्प पढ़ना प्रारम्भ किया।

संकल्प विधि होते ही मुसाहिबों ने उस पण्डा महाशय से कहा कि इस डोले का मूल्य बताने की कृपा किजिये। 'रुपया नहीं लूंगा, कह कर पण्डाजी ने मौन धारण करलिया।

माता ने कहा कि तुम्हारे पिता ने मेरी कीमत एकहजार रुपया दी थी, तुम भी इस से क्या कम दोगे! मुसाहिबों ने फौरन एक हजार का नोट पण्डा जी के सामने रख दिया।

पण्डा जी ने कहा कि "रुपया नहीं लूंगा,, राजा साहिब ने कहा एक सौ और देदो। पण्डाजी बोले " यजमान यह तो आप की इच्छा है कि पालकी वैसेही उठा लेजाओ, परन्तु दानमें मिली हुई चीज को मैं बेचना नहीं चाहता,, अब तो राजा के होश हवास उड़ गये, आज्ञा दी की बदमाश के जूते लगाओ इसे कुछ भी न दो और पालकी उठा कर ले चलो यह सुन राजा साहिब की माता गरज कर बोली—"खबरदार! हरगिज बिना पण्डा जी की इच्छा के पालकी न उठाना, उठाते ही नर्क के भागी होजाओगे। माता के वाक्य सुनतेही राजा साहिब के मुख पर उदासी छागई। माता जी की आज्ञा से घबराए हुए पण्डा जी की खुशामद करने लगे दोहजार लेलो, चार हजार पांच हजार, छः हजार, परन्तु पण्डा जी काहे को सुनने लगे आखिर कार राजा साहिब ने यहा तक कह दिया कि जो आभूषण रानी साहिबा पहने हुई हैं वह सब तथा दशहजार रुपया लेलो पण्डा जी तो सब बातों में गरदन ही हिलाते रहे इन के दिल में तो रानी बसी थी।

अन्त में राजा साहिब ने फ़ैजाबाद के डिप्टी कमिश्नर की शरण ली, उनसे सब हाल कहा। साहिब बहादुर बहुत हंसे और फर्माया कि अगर पण्डा नहीं मानता है और तुम से अधिक शक्तिमान है, ता हम पुलिस की मदद देते हैं,

फौरन जाकर पालकी उठा लाओ। राजा साहब ने शर्मिन्दा होकर कहा—"यों तो यह बेचारा जबरदस्ती क्या कर सकता है, आदमी हमारे पास बहुत हैं, परन्तु हमारा छुटकारा तभी हो सकता है जब कि पण्डा खुशी खुशी डोले के बदले कुछ रुपये ले ले, अन्यथा मेरी वृद्ध माता सारी आयु तानेबाजी करेगी। साहिब बहादुर ने राजा साहिब को सन्तोषजनक उत्तर देकर बिदा किया और पण्डा महाशय को गिरफ्तार करा के हवालात में डाल दिया।

एक रात हवालात में रह कर पण्डा जी को होश आया तब कहला भेजा कि कुल आभूषण और दस हजार रुपया स्वीकार है। साहिब बहादुर ने कहा कि इतनी अधिक रकम नहीं मिल सकती। सौदे का रुख ही तो है, अब पलड़ा दूसरी तरफ को झुक गया। पण्डा जी के उतरने की बारी आई, पहिले आभूषणों का पीछा छोड़ा, फिर सात छः पांच हजार मांगने लगे। साहब बहादुर ने एक न सुनी, तीन दिन तक और हवालात में रक्खा, तब पण्डा जी के दिमाग ठीक हुए और राजा ने एक हजार रुपया देकर छुटकारा पाया।

(महावीर)

सास के ऊपर बहू जल मरी

खबर है कि, हैदराबाद में एक हिंदू लड़की ने अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगाली और तड़प कर जल मरी। मरने से पहले उसने पुलिस में बयान लिखाया है। कहते हैं कि, उसने अपने बयान में कहा था कि, मैं अपनी सास की दी हुई यन्त्रणाओं से तङ्ग आ गई थी, इसी लिए मैंने आग लगा कर अपने जीवन को नष्ट करने की ठानी। बयान देने के कुछ समय बाद ही वह इस संसार से चल बसी।

गोरे ने मेम को

पेरिस (फ्रांस)
स्त्री ने यह नालिश क.
मारा, अतएव उससे
दिया जाय। अदाल
यदि स्त्री ऐसी बद.
देख कर स्वामी गुस्से के
जाय तो, उसे अपनी स्त्री को म.
है। और ऐसी हालत में स्त्री यह नहीं कह
कि स्वामी ने मेरे प्रति क्रूरता की अतएव उस से मेरा सम्बन्ध तोड़ दिया जाय।

गहनों ने जान ले ली

जिला अनन्तपुर (मद्रास) से एक धनी कोमट्टी की ११ वर्ष की लड़की की अमानुषिक हत्या की खबर मिली है। कहा जाता है कि लड़की अपने घर के किसी उत्सव में सम्मिलित होने का निमन्त्रण गांव के चौधरी को देने गई थी। जब वह बड़ी देर तक न लौटी तब पुलिस में रिपोर्ट की गई। पुलिस ने लड़की की लाश एक घर में अनाज के खत्ते से ढूंढ कर निकाली है। कहा जाता है कि लड़की के शरीर पर १०००) रुपये के आभूषण थे। जो उसपर से उतार लिए गये थे। इस सम्बन्ध में पुलिस ने मकान के मालिक और उसकी स्त्री को गिरफ्तार किया है।

बहिनों का प्यारा भाई शशिमोहन।

सिलहट में भी एक खड्ग बहादुर पैदा हो गया। इसका नाम है शशिमोहन दे और उसकी उम्र है कुल १८ वर्ष की इस जिले में फ़ैयाज अली नाम का एक ज़मींदार रहता था। जो स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया करता था। पुलिस का कहना है कि, चन्देरचन्द और राधारचक नामक गांवों में शायद कोई स्त्री इससे अछूती बची हो। कुछ दिनों से फ़ैयाज की नज़र पवित्र पत्नी नाम की एक विवाहिता लड़की पर पड़ी थी। फैयाज और उसके

चाहते थे। पर इसने भी वे इसका पीछा ...मोहन को यह मालूम ...ली को भरोसा दिया ...था तो मैं उसका काम ...ही किया। जब फ़ैयाज ...। तब शशिमोहन ने अपने ...सहित वहा पहुँच उसे यमपुर ...था। शशिमोहन और उसके तीनों साथियों पर मामला चला और एकज़्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर श्री अब्दुल हई चौधरी ने उन्हें दौरा सुपुर्द कर दिया। दस दिन के विचार के बाद जूरी ने उन्हें निर्दोष बताया और जज ने छोड़ दिया। हम जज जूरी और अभियुक्तों को इस अवसर पर बधाई देते हैं। शशिमोहन जैसे युवकों से हिन्दू जाति का सिर ऊंचा होता है परमात्मा इस जाति में खड्गबहादुर और शशिमोहन जैसे स्वार्थत्यागी वीरों को पैदा करे।

(स्वतन्त्र)

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ।

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रंथ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को, वैदिक प्रेस की अपेक्षा कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है--इसके मंगाने के लिए शीघ्र आर्डर भेजने चाहियेः----

(१)	आर्याभिविनय	।-)
(२)	सत्यार्थ प्रकाश	१)
(३)	काशी शास्त्रार्थ	-)
(४)	सत्यधर्म विचार	-)॥
(५)	पञ्च महायज्ञ विधि	-)॥
(६)	आर्योद्देश्य रत्नमाला	॥)
(७)	संस्कार विधि	॥)
(८)	ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१॥)
(९)	व्यवहार भानु	=)॥
(१०)	वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)॥
(११)	शिक्षापत्री स्वा० नरायण मत खण्डन	=)
(१२)	भ्रमोच्छेदन	-)
(१३)	भ्रान्ति निवारणम्	≡)
(१४)	गो करुणानिधि	=)
(१५)	स्वीकार पत्रम्	॥)
(१६)	महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय ३ रंगीन फोटो महर्षि स्वा० विरजानन्द का फोटो तथा ३ चित्र परोपकारिणी सभा के सभासदों व अधिकारियों के--	।)

पुस्तकालय की अन्य पुस्तकें

१. संस्कृत सत्यार्थप्रकाश

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन [मथुरा] के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पं० शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रकट किया गया है। मूल्य २) सजिल्द २॥)

२. प्राणायाम विधि

यह पुस्तक जिस में प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इस के द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य केवल -) प्रति

३ दयानन्द लहरी

इस में भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरिणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री पं० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मू० -)॥ प्रति।

४ आर्य पर्व पद्धति

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा उन त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक का प्रत्येक आर्य परिवार में रखना आवश्यक है। मूल्य ॥।)

आर्यसमाज क्या है।

यह पुस्तक प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रयाग द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में आर्य्यसमाज का संक्षिप्त इतिहास मौजूद है। आर्य संस्थाओं और आर्य विद्वानों आदि के १९ चित्र हैं। मूल्य ॥।)

पुस्तक मिलने का पता :---

आर्य सार्वदेशिक सभा, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।

सार्वदेशिक के नियम

१ सार्वदेशिक प्रत्येक अंग्रेजी मास की १५ ता० को प्रकाशित होता है।

२ वार्षिक मूल्य मनीआर्डर से २)। वी पी से २≡) विदेश से ३॥)। वी० पी० से ३॥=)। नमूने का अङ्क मुफ़्त भेजा जाता है।

३ सार्वदेशिक का वर्ष मार्च मास से आरम्भ होता है, किंतु वर्ष के किसी भी मास से ग्राहक बन सकते हैं। यह ग्राहक की इच्छा पर निर्भर है कि चाहे वे वर्ष की आरम्भिक प्रतियों को मंगाकर मार्च से ही ग्राहक हो जावें अथवा उसी मास से जब कि वह रुपया भेजें।

४ मुफ़्त नमूना हम अपनी अनुकूलता पर भेजते हैं।

५ पत्र आदि लिखते समय अपना पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट लेख में होनी चाहिए।

६ प्रत्येक ग्राहक के पास, "सार्वदेशिक" बड़ी सावधानी से कई बार जांच करके भेजा जाता है। यदि इस पर भी ग्राहक महोदय को पत्र न मिले तो पहिले अपने पोस्ट आफिस में लिखा पढ़ी कीजिये और इस पर भी न मिले तो डाकखाने के उत्तर सहित कार्य्यालय में इस की सूचना उस महीने के अन्त तक भेजने पर दूसरी प्रति भेज दी जावेगी।

७ लेख का छापना न छापना न्यूनाधिक करना सम्पादक के आधीन है।

८ लेख, समालोचनार्थ पुस्तकें, परिवर्तन के पत्र भेजने तथा प्रबन्ध विषयक सर्व प्रकार के पत्र व्यवहार का पता :—

प्रबन्धकर्त्ता—सार्वदेशिक

सार्वदेशिक भवन देहली।

सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाने की दर

स्थान	१ मास के लिये	३ मास के लिये	६ मास के लिये	१ वर्ष के लिए
पूरा पृष्ठ	१०)	२५)	४०)	७५)
एक कालम	६)	१५)	२५)	४०)
आधा कालम	३॥)	८)	१५)	२५)
चौथाई कालम	२)	५)	८)	१५)

नोट—चौथाई कालम से कम विज्ञापन आने पर कालम की एक पंक्ति के =) प्रति मास लिए जायेंगे।

विज्ञापन तथा रुपया प्रत्येक दशा में पेशगी ही आना चाहिए।

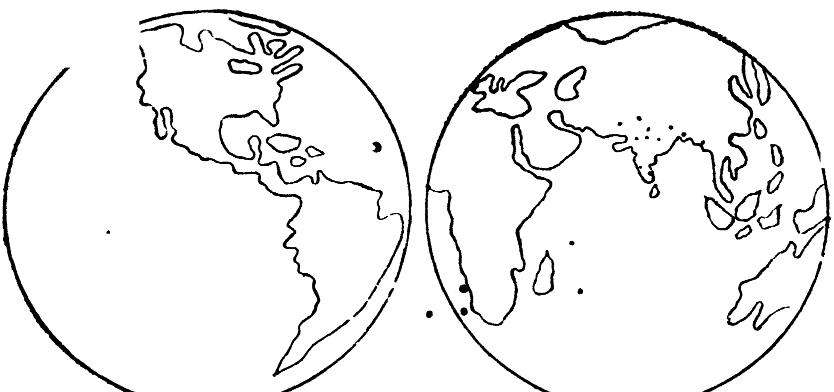
सम्पादक—प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति के प्रबन्ध से पण्डित रघुनाथप्रसाद पाठक पब्लिशर के लिये अर्जुन प्रेस से छप कर प्रकाशित हुआ।

श्रावण शुक्ला १

सार्वदेशिक

दयानन्द-अब्द १०३

भूमण्डल



कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥ वेद ॥

वार्षिक मूल्य २)

सम्पादक प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति

एक प्रति का मूल्य ≡)

विदेश से ५ शिलिङ्ग

विषय सूची ।

* ओ३म् *

आर्यावर्त्तीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

सार्वदेशिक

वर्ष १ | १ सावन सम्वत १९८४ वि॰ | अङ्क ५

जौलाई १९२७ ई०] [दयानन्दाब्द १०३

"आगे बढ़ने के साहसी बनो"

श्री नारायण स्वामी जी महाराज

उन्नत शील मनुष्य अपनी उन्नत शीलता की तहमें दो गुण रक्खा करते हैं एक मौलिकता दूसरा निर्भीकता। इन्हीं दो गुणों की बदौलत वे कुछ इस प्रकार का परिवर्तन कर दिया करते हैं जिस से संसार में कुछ न कुछ हर्ष की मात्रा बढ़ जाया करती है सृष्टि नियम क्रियात्मक रूप से हमें उन्नत शीलता का ही पथ प्रदर्शन कराते हैं—ऋगवेद में एक जगह आया है "ऋध्यांते वरुण धामृतस्य" अर्थात "हे वरुण! हम तेरे सृष्टि नियमके प्रवाह को बढ़ायें" पश्चिमी विद्वानों ने इसी वेद की शिक्षा का "Grow or die is the nature's motto" कह कर, समर्थन किया है अर्थात् उन का कथन है की सृष्टि नियम का आदेश यह है कि बढ़ो या मरो —आलस्य और निकम्मेपन का जगत के कार्य

क्रम में समावेश नहीं है—बैरन रौथ शील्ड (Baron rath scheild) जो अमरीका के उद्धारकों में से एक था उस ने अपनी जीवन का आदर्श यह बना रक्खा था " Dare to go forward." अर्थात् आगे बढ़ने का साहस करो-परिणाम यह हुआ कि वह बड़े से बड़े काम करने के योग्य हो सका था—

मौलिकता का भाव यहहै कि मनुष्य किन्हीं कार्यों को अपनी बुद्धि से उन के करनेके विचार का आविष्कार कर के कार्य में परिणत करे-मौलिकता स्वाभाविक हैं मनुष्य दुनियामें अन्यों के किये कार्यों को नकल करने के लिए पैदा नहीं हुआ है बल्कि इस लिए उत्पन्न हुआ है कि कुछ स्वयंमेव कुछ करे—सफलता की, कोई व्यक्ति सफलता के साथ नकल नहीं कर सकता—सफलता में मौलिकता है—मौलिकता लाने के लिए मनुष्यमें तीन गुणोंके आनेकी जरूरत हुआ करती है, उसको आत्मविश्वासी, खोज प्रिय और आविष्कार प्रिय होना चाहिये दूसरा गुण उसमें निर्भीकता का होना चाहिये-जिस व्यक्ति में आत्म विश्वास (Self Reliance) हुआ करता है उसमें बड़ेसे बड़े काम करने का साहस आजाया करता है और वह अगर (किन्तु परन्तु) के फेर से निकल जाया करता है—जूलियसकैसर ने जब इंगलैंड पर आक्रमण किया तो उस के हृदय में यह विश्वास हिलोरे ले रहा था कि वह अवश्य बिजय प्राप्त करेगा। उस ने इंगलेन्ड के किनारे पर फौज़ों को उतार कर फौजों के सामने ही समस्त जहाजों में जिन में वे आये थे। आग लगवादी—जहाजोंके नष्ट होजानेपर फौज के सिपाहियों को सम्बोधन कर के उसने वीरता पूर्ण शब्दों में कहा कि तुम यहां इस लिये नहीं आये कि हार का इन जहाजों में सवार होकर भाग जाते बल्कि इस लिये आये हो कि इंगलेड को बिजय करके यहां रहो और हमको राज्य करनेमें सहायता-दो परिणाम यही हुआ कि इंगलेड बिजय हो गया,, और सैंकड़ों वर्ष तक रोमन लोगों का वहां राज्य रहा खोज रखने से सदैव नई २ बातें जानी जाया करतीहैं और मनुष्य नये २ आविष्कार किया करता है। जिसमें उपर्युक्त तीन गुण आजाते हैं फिर उन का अवश्यक परिणाम यह निकलता है कि वह मनुष्य निर्भीक होजाता है और कभी किसी प्रकार का भी भय उस को अपने निश्चित इरादों के पूरा करने से नहीं रोक सकता—इसके विपरीत जो पुरुष उन्नत शील नहीं होते वे आंखें बन्द करके रिवाज की गुलामी किया करते हैं-कोई बेहूदा से बेहूदा काम हो, कोई अधिक से अधिक हानि कारक प्रथाहो,, कोई निकम्मी से निकम्मी रस्म हो परन्तु उसे काम में लाना चाहिये और उसी के अनुसार व्यवहार करना चाहिये क्यों? इसलिये कि यह पुराना रिवाज है पुरानी प्रथा है उस पर अब सोच ने विचार ने की जरूरत ही नहीं है-इसी रिवाज की गुलामी ने हिन्दूजातिसे उन्नत शीलता खोदी—इसी रिवाज की गुलामी ने हिन्दू जाति के भुवनको वोसीदा और जर्जर बना रक्खा है। क्या पं० मदनमोहन मालवीय के लिये यह लज्जा की बात नहीं है कि उन्हीं ने एक ऐसी ही सड़ी गली रस्म के आधार पर अपने निकट संबन्धी पं० लक्ष्मीदत्त मालवीय को अपनी मालवी बिरादरी से खारिज किया है क्या इन्हीं सड़ी गली रस्मो को कायम रखकर वे हिन्दू जाति का संगठन करना चाहते हैं? यह बात सभी लोगों को अच्छी तरह कान खोल कर सुन लेनी चाहिये कि इन्ही निकम्मी रस्म और रिवाजों के बदोलत हिन्दू जाति का ह्रास और अपमान हो रहा है—जब तक ये कुप्रथायें बाकी रहेंगी — हिन्दू जाति का सुधार असंभव है-न विधवाओं की अवस्था सुधर सकी है - नहिन्दू देवियों की ही मान बृद्धि हो सकी है- न अछूतों की ही अवस्था ऊंची हो सकी है-निदान जिन रोगोंमें हिंदू जाति ग्रस्त है उन में से एक की भी निवृत्ति नहीं हो

सकी—इस लिये आवश्यक है कि इन रोगों को दूर करके हिन्दू जातिको स्वस्थ बनाये जाने के लिये प्रचलित कुप्रथाओं को दूर किया जावे—जब तक हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में कुप्रथाओं का राज्य रहा वह एक साधारण यूनि टेरियन (Unitarian) कौलिज रही जिस में कभी ४०० से अधिक विद्यार्थी नहीं हुए परन्तु जब से उस के सभापति इलियट (President Eliot) ने उन समस्त कुप्रथाओं को दूर कर दिया तब से वह अमरीका की यूनिवर्सिटी बन गई जिस में इस समय ६००० से अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं—

वे समस्त साधन जिन से मनुष्यों में मौलिकता और निर्भीकता आया करती हैं— मनुष्य के भीतर निहित होते हैं उन्हें कहीं बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं उन्हें अपने भीतर हीं खोजने और खोज कर जागृत कर ने की चेष्टा करनी चाहिये—आत्मशक्ति आत्मविश्वास और इसी प्रकार के अन्य गुण जिन के प्राप्त होने से मनुष्य शक्ति मान बना करता है और जिस में शक्तिमान बनने से मौलिकता आदि गुण आया करते है, सब के सब आत्मासे सम्बन्धित हैं—आत्माओं को स्वच्छ बना निष्पाप बनाओ निस्पृह बनाओ ईश्वर विश्वासी बनाओ तभी तुम ऐसे बन सको गे कि तुम्हारे भीतर आगे बढ़ने का साहस उत्पन्न हो और तभी तुम सचमुच आगे बढ़ सकोगे-

---

ज़ात पात अथवा क्षय रोग

(लेखक -श्री लाला ज्ञानचन्द्र आर्य्य, देहली)

संयोग जीवन और वियोग मृत्यु है। यह एक नैसर्गिक सत्य है जिस से कोई बुद्धिमान इन्कार नहीं कर सक्ता। क्योंकि सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ से इन का प्रमाण मिलता है। दूर जाने की ज़रूरत नहीं है अपने शरीर को ही लेलीजिये।

भूतात्मक परिमाणुओं के संयोग से इन का निर्माण हुआ है। जब तक शरीरके परिमाणु नियम पूर्वक परस्पर संगठित हैं और शरीर और आत्मा का संयोग है तब तक शरीर चलता फिरता देखता सुनता और खाता पीता अर्थात् जीवित है जब आत्मा और शरीर के परिमाणुओं का वियोग हुआ, चलना फिरना देखना सुनना और बोलना आदि सारी क्रियाएं बन्द हो गई। इसी का नाम मृत्यु है।

आज कौनसा सभ्य है जो कि इस संगठन रूप जीवनदाता शक्ति का उपासक नहीं है। प्रत्येक सभ्य समाज अपनी संगठित शक्ति से ही निर्भय होता और उन्नति के शिखर पर पहुंचता। जिस व्यक्ति समूह का संगठन दृढ़ नहीं होता न केवल यह कि उस में बलहीं नहीं होता प्रत्युत यह निश्चित है कि वह जाति रूप से जीवित ही नहीं होता—यही कारण है कि असंगठित जन समुदाय रात दिन शक्ति शाली संगठित जातियों के पांव की ठोकरों के फुटबाल बने रहते हैं। सच पूछो तो संगठन ही मृत्युञ्जय मन्त्र है।

पाठकवृन्द ? क्या कभी आपने विचारा है कि संगठन कला की जन्मदात्री आपकी प्यारी आर्य जाति इसी संगठन शक्ति से शून्य होकर सदियों से विदेशियों की पादाक्रान्त हो रही है। इस समय २२ करोड़ होते हुये भी भारत में जन्मे भारतीय अन्न जल से परवरिश पाने वह जीवित रहने वाले कुछ करोड़ स्वदेशियों कहो अथवा विदेशियोंके अत्याचारोंसे पीड़ित होकर कराह रही है अगर नहीं विचारा तो क्या आप जातीय विध्वंस के दोषी नहीं हैं ? और अगर यदि विचारा ही हैतो उसके संगठित करनेके लिये आपने क्या यत्न किया है। हां याद आगया। आप कह सक्ते हैं कि हमने हिंदू महासभा के जन्म से हिन्दू संगठन का निर्माण किया है। निस्संदेह यह नाम बड़ा सुहावना है और जीं भी यही चाहता है कि आपका यह संगठन वास्तविक हो।

परन्तु अभाग्य वश कहो अथवा मन्द बुद्धि के कारण कहो हिन्दू जाति के अन्दर इसी प्रकार के अवैदिक विचार और आचार अथवा रस्मो रिवाज उत्पन्न हो गये हैं कि जिन्हों ने हिन्दुओं की संघ शक्ति को घुन की नाई खा कर उसे इस कद्र बोदा बना दिया है कि जिस से यह मानना पडता है कि उनकी मौजूदगी में किसी दृढ़ जातीय संगठन की संभावना ही नहीं हो सक्ती—भला जिस शरीर के हाथ टांगे और पैर पृथक् २ हों तो क्या वह कभी संगठित कहलासक्ती हैं—अथवा जिस शरीर के फेफड़ों में क्षय रोग ने अनन्त छिद्र करदिये हों औरवह मृत्युका आवाहन कर रहा हो क्या आप उसे संगठित कहेंगे-मानना पड़ेगा कि प्रत्यक्ष में मिला हुआ दीखने पर भी वह शरीर से संगठित नहीं है-हिन्दू संगठन की भी यही अवस्था है-क्योंकि इसको वंशीय वर्ण और और जात पात का क्षय रोग लगा हुआ है जो कि छूत की एक प्रबल बीमारी है-इसने हिन्दू जाति के अङ्ग अङ्ग को जुदा कर दिया है-यह कहना बिलकुल यथार्थ होगा कि यदि वंशीय वर्ण क्षय रोग ने हिंदू जाति के ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र रूप मुख्य अङ्गों को एक दूसरे से पृथक किया हैं तो उसकी सन्तति जात पात की छूत ने उसके ब्राह्मण आदि एक एक मुख्य अङ्ग में अनेकों ऐसे छिद्र कर दिये हैं कि जिनके कारण यह एक एक भी बेशुमार उप जाति रूप भागों में विभक्त हो गया है-इस वंशीय वर्ण और मिथ्या जात्याभिमान के घमंड से न केवल यह कि ब्राह्मण आदि वर्णों का ही परस्पर सामाजिक सम्बन्ध नहीं रहा प्रत्युत इससे एक एक वर्ण की एक उपजातियों में भी परस्पर में इतना भेद उत्पन्न हो गया है कि न तो परस्पर का विवाह सम्बन्ध रहा है और न खान पान का-इससे भी बढ़कर अनर्थ यह है कि जन्म सिद्ध वंशीय वर्ण और जांत पात की ऊंच और नीच रूप मिथ्या कल्पना के कारण एक दूसरे का अन्न खाना तथा अपने एक बड़े भाग को छूना भी वैसा ही भयंकर समझा जाता है कि जैसा कि प्लेग आदि छूत के बीमारों का छुआ हुआ खाना खाना और छूना-हिन्दू समाज की मौजूदा सखरी नखरी और छुआ छूत के पागलपन को देख कर अवश्य ही कहना पड़ता है कि इनका मूल कारण वंशीय वर्ण तथा जाति पाति भी एक ऐसी ही छूत की भयङ्कर बीमारी है जो कि प्लेग आदि की तरह पिता को पुत्रसे, माता को पुत्री से और भाई को बहिन तथा भाई को भाई आदि २ से पृथक कर देती है और विवाह परस्पर के गुण कर्मानुकूल शास्त्रोक्त खान पान और स्पर्श व्यवहार को भी भयङ्कर कर देती है-इतना ही नहीं बल्कि यह कहना भी बिलकुल ठीक होगा कि यह जात पात का भयङ्कर रोग मनुष्यों में मनुष्यत्व के नातें से भी भेद और विरोध रूपी विकार उत्पन्न कर देता है-भला जिन व्यक्तियों में परस्पर का विवाह सम्बन्ध खान, पान और एक दूसरे को छूने से भी घृणा हो उन व्यक्तियों का एक दृढ़

संगठन कभी हो सकता है ? यदि कोई ऐसा मानता है तो यह उसकी भूल है क्योंकि सर्वतन्त्र सिद्धान्त है कि संसार में संगठन का आरम्भ एक परिवार से होता है इस लिए जो विचार और आचार जाति को एक कुटुम्ब का रूप देने में बाधक हों वे संगठन के घातक हैं—क्योंकि विचारों की समानता तथा परस्पर के सामाजिक सम्बन्धों के पाबन्द अथवा सोशल ताल्लुकात ही हैं-जो कि भिन्न भिन्न व्यक्तियों और परिवारों को एक दूसरे के साथ यथार्थ रूपसे दृढ़ताके साथ जोड़ते हैं-अतः वर्तमान हिंदू संगठनउन लोगों के संगठनसे बढ़ कर नहीं है जो कि तूफान में आई हुई नौका में बैठे हुए भिन्न२ कौमोंके लोग उस विशेष आपत्तिके निवारणार्थ संगठित होते हैं-परन्तु जिस तरह नौका के किनारे लगने पर उनका संगठन भी समाप्त हो जाता है उसी प्रकार हिंदू समाज की उपस्थित आपत्ति की समाप्ति पर हिंदू संगठन भी समाप्त हो जावेगा—यदि हिंदू समाज के कल्याण के लिये हिंदू संगठन को सदा के लिये दृढ़ बनाना है तो हिंदू संगठन के नाश करने वाले वंशीय वर्ण और जात पात को जड़ से उखाड़ना होगा और सारे हिंदू संसार को परस्पर के गुण कर्मानुसार विवाह आदि सामाजिक सम्बन्धों से सङ्गठित करना होगा-अर्थात् इस समय जो भारत के दक्षिणी बंगाल संयुक्त और पञ्जाब आदि प्रान्तों तथा एक प्रान्त में रहने वाले हिंदुओं का परस्पर का सामाजिक संबन्ध टूटा हुआ है और जिसके कारण वह एक दूसरे के लिए बिलकुल गैर हिंदुओं के ही सदृश हैं उस सम्बन्ध को जोड़ना होगा और वह सम्बन्ध उस वक्त तक जोड़ा नहीं जा सकता जिस वक्त तक जन्म सिद्ध वंशीय वर्ण और जात पात के ऊंच और नीच रूप अथवा घमंड के छूत रोग को दूर नहीं किया जाता।

सज्जनो ! वर्ण जब तक गुण कर्म से निश्चित होने वाले अपने असली वैदिक रूप में रहेगा तब तक न केवल यह कि वह भिन्न २ देशों प्रान्तों और परिवारों को एक दूसरे से जुदाही नहीं करेगा बल्कि उस से जहां भिन्न गुण कर्म के कारण भिन्न २ वर्ण रखने वाले आदमियों का एक ही परिवार में रहने से वर्णों में परस्पर घृणा द्वेष और ऊंच नीच इत्यादि के भाव ही उत्पन्न नहीं होंगे वहां भिन्न देशों में और प्रान्तों में रहने वाले वंशों में पैदा हुई अनुकूल गुण कर्म वाली सवर्णी व्यक्तियोंका विवाह होकर भिन्न भिन्न देशों प्रान्तों और वंशोंका परस्पर जोड़ मेल भी होगा और यदि आप वर्णको जन्मशुदा और खानदानी बनाये रक्खेंगे तो जरूरही वह जाति के नाश का कारण होगा क्यों कि वंशीय वर्ण व्यवस्था अपने जात पात रूपी परिवार के साथ घृणाद्वेष और ऊंच नीच के भाव पैदा कर के हिन्दू समाज को विभक्त करती चली आवेगी-वैदिक धर्मियो याद रक्खो कि यदि आपकौमी हैसियत से जिन्दा रहना चाहते हैं तो मृत्यु के साधन पैदा कर के आप कदापि जीवित नहीं रह सकते। इस लिये जो लोग वंशीय वर्ण और जात पात के पक्षपाती और रक्षक हैं चाहे वह समाजिक हिन्दू संगठन के प्राणाधार हैं चाहे वर्णाश्रम धर्म्म के ठेकेदार हैं वास्तव में वे हिन्दू संगठन और वैदिक वर्ण व्यवस्था के मूल से काटने वाले आर्य जाति के परम शत्रु हैं अथवा उस के दोस्तनुमा दुश्मन है। अन्त में मैं यह भी स्पष्ट रूप में कहे देता हूं कि यदि आप अपने जन्म शुदा वंशीय वर्ण और जात पात के मिथ्या घमंड और पक्षपातको नहीं छोड़ेंगे तो भी समयकी आवश्यक्ता की प्रबल प्रवाह आपके इस घमंड और पक्षपात को आप से जबर दस्ती छुड़ावेगा क्यों कि जाति की देश की और धर्म की रक्षा के लिये परम आवश्यक है कि देश और जातिमें संघ शक्ति को पैदा किया जावे और उस की सारी विभाजक शक्तियों का नाश कर दिया जावे।

आर्य्य साहित्य का विश्व पर प्रभाव

(ले० श्री रामगोपाल शास्त्री रिसर्च स्कालर डी. ए. वी. कालेज लाहोर)

पाठक वृन्द ! सार्वदेशिक पत्र के प्रथमाङ्क पृष्ठ २२ पर "आर्य्य साहित्य का विश्व-व्यापी प्रभाव" इस विषय पर लेख निकल चुका है उस में वेदों का प्रभाव अञ्जील तथा कुरान पर कैसे पड़ा इस पर कुछ प्रकाश डाला है। इस लेख में पाठकों को और उदाहरण उपस्थित किये जाते हैं, जिन से स्पष्ट होगा कि आर्य्य साहित्य का कहां २ प्रभाव पड़ाः—

प्राचीन ईरान में प्रभाव

जिस फारस देश में आज कल मुसलमान धर्म के मानने वाले रहते हैं कुछ सौ वर्ष पहले यहाँ पर ज़रथुष्ट्र के अनुयायी रहते थे। ये लोग "ज़न्द अवस्थ" नामकी धार्मिक पुस्तक को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। उनका विचार था कि अहुर मज़दा (ईश्वर) ने ज़रथुष्ट्र को ज्ञान दिया है यही पूर्ण है। यह पुस्तक पहलवी भाषा में है। मुसलमानों के अत्याचारों से ही कुछ ज़रथुष्ट्र धर्म्मानुयायी मुसलमान बन गए और कुछ भाग कर भारत में गुजरात आदि देश में आगए। इन्हें भारत में पारसी कहते हैं।

ज़न्द अवस्त के अंग्रेज़ी अनुवाद कर्त्ता डा० माई स्टीटर ने अपनी भूमिका में लिखा है कि ज़न्द में एक सौ में से अस्सी शब्द संस्कृत के हैं। मिस्टर होग ने ईरानी धर्म पर एक ग्रन्थ में बिलकुल साफ कर दिया है कि प्राचीन ईरानी धर्म का वैदिक धर्म्म से कितना घना सम्बन्ध है।

ज़न्द में एक मंत्र लिखा है।"अपाम् अविष्टिश" "Apom aiwishtish"। अनुसन्धान कर्त्ताओं का कथन है कि ज़न्द का यह मंत्र भी 'शन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु का अभिष्टये आपो' से लिया गया है।

ज़न्द के कुछ पदों को हम आप के सामने उपस्थित करते हैं जिन में उच्चारण और अर्थ की समानता है—

वैदिक पद	ज़न्द पद	अर्थ
यज्ञ	यस्न	यज्ञ
होतर्	जोतर्	यज्ञ करने वाला
अथर्वण	अथ्रावण	यज्ञ कर्त्ता
सोम	होम	लता विशेष
मित्र	मिथ्र	सूर्य्य
आपः	आपो	जल
वायु	वयुः	वायु
अपां नपात	अपां नपाट्	जलोंकी संतान
गन्धर्व	गन्दर्व	गन्धर्व
वृत्रहन्	वेरेथ्रघ्न	वृत्रका मारनेवाला
यम	यीम	मृत्यु का देवता
विवस्वना	विवह्वना	सूर्य्य

ये ऊपर के पद हमने बहुत ही थोड़े से दिए हैं। इन से ही पाठक जान लेंगे कि वैदिक साहित्य की छाया किस प्रकार से ज़न्द धर्म पर है।

मिस्री साहित्य पर प्रभाव

संक्षेप से ईरानी साहित्य का प्रभाव हमने दिखाया है। अब मिस्र जिस की सभ्यता भी बहुत पुरानी मानी जाती है उस के भी प्राचीन

लेख कुछ मिले हैं। उस में हम सृष्टि की उत्पत्ति में जो भारतीय साहित्य का प्रभाव पहुंचा है उद्धृत करते हैं:—

शतपथ ब्राह्मण में जो सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन किया है प्राचीन मिस्री धर्म पुस्तक में भी वैसी ही उत्पत्ति लिखी है। ऐसा प्रतीत होता है जैसा कि किसी ने सामने रख कर अनुवाद किया है। पाठकों को यह मिलान अत्यन्त ध्यान से पढ़ना चाहिए—

(1) There was a time when niether heaven or earth existed, and when nothing had eing except the boundless primeval water, hich was, however, shrouded with thick arkness.

(2) At length the Spirit of the primeval ater felt the desire for creative activity.

(3) The next act of creation was the for- ation of a germ, or egg, from which Spreng a, the sun God whithin whose shining form as embodied the Almighty Power of the ivine Spirit.

C. Egypt and Chaldara by
E. A. WALLES BRIDGE,
PP. 22, 23.

"आपो ह वा इदमग्रे सलिलमेवास। ता अकामयन्त कथं नु प्रजायेमहीति ता अश्राम्यंस्तास्तपोऽतप्यत। शत ब्राह्मण ११। १। ६। १।

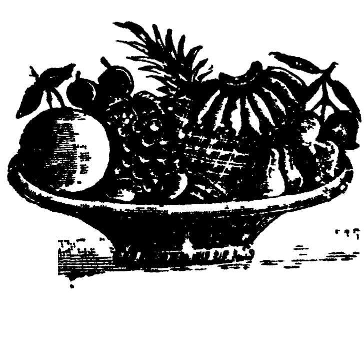
तासु तपस्तप्यमानासु हिरण्यमाण्डं सम्बभूव जातो ह नहिं संवत्सरं आस तदिदं हिरण्यम् यावत् संवत्सरस्य वेला पर्य्यप्लवत्। ततः संवत्सरे पुरुषः स मभवत् स प्रजापतिः। शतपथ ब्राह्मण १। ६। ४। १

मिस्री और संस्कृत दोनों लेखों का आशय यह है कि सृष्टि के आरम्भ में जल ही जल था। तब जलों ने उत्पत्ति की इच्छा की। उत्पत्ति की दूसरी अवस्था में एक चमकीला अण्डा बना उस ज्योतिर्मय अण्डे से एक सूर्य्य का देवता उत्पन्न हुआ उसका मिस्री नाम रा और ब्राह्मणिक नाम प्रजापति था।

दोनों का मिलान—

मिस्री धर्म में जलों ने एक चमकीला अण्डा बनाया और उस से सूर्य का रा देवता उत्पन्न हुआ माना है। शत पथ में भी यही भाव है। मिस्री पुस्तकोंमे Ra रा को सूर्यको देवता माना है' इधर प्रजापति सूर्यका देवता है एक बात और अचम्भेमें डालती है वह यह है कि मिस्री पुस्तको में Ra का दूसरा नाम Ka आता है " That which is sent by ka." ब्राह्मण ग्रन्थों में भी प्रजापत्ति का दूसरा नाम 'क' आता है प्रजा पतिर्वैकः तैत्तिरीय ब्राह्मण २।३ ८।६।१ इन दोनो लेखों को सामने रख कर पढ़ने से पता लगता है कि किस प्रकार आर्य साहित्य का प्रभाव कभी सारे संसार के साहित्य प' पड़ा था।

क्रमशः



पात शाही दशमग्रन्थ की आलोचना

(ले०—स्वर्गवासी श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज)

(गताङ्क से आगे)

चौपाई

जब पहले हम सृष्टि बनाई ।
दैत्य रचे दुष्ट दुखदाई ॥
ते भुज बल बौरे हो गये ।
पूजत परम पुरुष रह गये ॥
ते हम तमक तनिक मों खाये ।
तिनकी ठौर देवता थाये ॥
ते भी बल पूजा उरझाये ।
अपने ही परमेसर कहाये ॥

....

तब सखी प्रभु इष्ट बनाये ।
साक निमित्त देव ठहराये ॥
ते कह करो हमारी पूजा ।
हम बिन और न ठाकुर दूजा ॥

....

जे प्रभु साक निमित ठहराये ।
पतिया आय प्रभु कहवाये ॥
जब प्रभु को न तिनै पहिचाना ।
तब हरि इन मनुष्य न ठहराना ॥
ते भी बस समता होगये ।
पर सर पीहन ठहराये ॥
तब हरि सिद्ध साध ठहराये ।
तिन भी परम पुरुष नहीं पाये ॥
जे कोई होत भयो जग स्यान: ॥
तिन तिन अपनो पन्थ चलाना ।
जिन जिन तनिक सिद्ध को पयो ।
तिन तिन अपनो राह चलायो ॥
परमेसर न किनहु पहिचाना ।
मम उचारते भयो दिवाना ।
तब जय जय रिषराज बनाये ।
तिन आपने पुन स्मृत चलाये ॥
जे स्मृत न के भये अनुरागी ।
तिन तिन क्रिया ब्रह्म की त्यागी ॥
जिन मन हरि चरणन ठहरायो ।
सो स्मृतिन के राह न आयो ॥
ब्रह्मा चार ही वेद बताये ।
सर्व लोक ते कर्म चलाये ॥
जिनकी लिव हरि चरणन लागी ।
ते वेदन ते भये तियागी ॥

....

तब हरि बी हर दल अपनायो ।
तिन भी अपना पन्थ चलायो ॥
करमों नख सिर जटा संवारी ।
प्रभु की कृपा कछु न विचारी ॥
पुनि हरि गोरख को उपराजा ।
सिक्ख करे तिनहू बह राजा ॥
श्रवन फार मुद्रा दो डारी ।
हर की प्रीति रीति न विचारी ॥
पुन हरि रामानन्द को करा ।
भेख विरागी को निज धरा ॥
कण्ठी कण्ठ काठ की डारी ।
प्रभु की कृपा न कछु बिचारी ॥
जे प्रभु परम पुर्व उपजाए ।

तिन तिन अपने राह चलाए ॥
महादीन तब प्रभु उपराजा।
अरब देस को कीनों राजा ॥
तिन भी एक पन्थ उपराजा।
लिङ्ग बिना कीने सब राजा ॥
सब से अपना नाम जपायो।
सत्त नाम काहू न धरावो ॥
सब अपनी अपनी उरझाना।
पार ब्रह्म काहू न पिछाना ॥
तप साधत हरि मोहि बुलायो।
इम कह के इह लोक पठायो ॥

अकाल पुरुषो वाच

चौपाई

मैं अपना सुत तोहे निवाजा।
पन्थ प्रचर करबे को साजा ॥
जहां तहां तें धर्म चलाइये।
कुबुद्ध करन ते लोक हटाइये ॥

कवि (अर्थात् गुरु गोविंद जी) वाच

दोहरा

ठाढ़ भयो मैं जोर कर बचन कहा सिर नाय।
पन्थ चले तब जगत में जब तुम करो सहाय ॥

चौपाई

एहिं कारण प्रभु मोहि पठावो।
तब मैं जगत जन्म धर आयो ॥
जिम तिन कही इन्हैं तिम कहिहों।
और केऊ ते बैर न गहिहों ॥
जे हमको परमेस उचरिहैं।
ते सब नरक कुण्ड में परिहैं ॥
मो को दास तवन को जानो।
या में भेद बरञ्च पिछानो ॥
मैं हूं परम पुरुष को दासा।
देखन आयो जगत तमासा ॥
जो प्रभु जगत कहा सो कहिहों।
मर्त लोग ते मौन न रहिहों ॥

इसके पश्चात सब आडम्बरों का खण्डन कर के कहते हैं:—

चौपाई

जिन जिन नाम तिहारो ध्याया।
दुःख पाप तिन निकट न आया ॥
जे जे और ध्यान को धरहीं।
बह सब हस बाबन रोमरहीं ॥
हम एहि काज जगत मो आए।
धर्म हेत गुरु देव पठाए ॥
जहां तहां तुम धर्म बिथारो।
दुष्ट देखि यम पकर पछारो ॥
वाही काज धरा हम जन्मम्।
समझ लेहु साधू सब मर्मम् ॥
धर्म चलावन सन्त उबारन।
जे जे भये पहज अवतारा ॥
आप आपनि तिन जाय उचारा ॥
प्रभु दोषी को कउन बिदारा।
धर्म करन को राहु न डारा ॥
जे जे गौस अम्बिया भये।
मैं मैं करत जगत ते गये ॥
महा पुरुष कहू न पिछाना।
कर मध्यम को कछु न जाना ॥
औरन की आशा कुछ नाहीं।
एकै आस धरो मन मांहीं ॥

सब आडम्बर तथा दम्भ युक्त सम्प्रदायों का खण्डन करके श्री गोबिन्द सिंह जी अपनी कथा कहते हैं:—

दोहरा

जब आयुस प्रभु को भयो जन्म धरा जग आय।
अब मैं कथा संक्षेप से सबहुन कहत सुनाय ॥

चौपाई

मोर पित पूरब कीन्ह पयाना,
भाँति भाँति के तीरथ नाना ॥
जब ही जात त्रिवेनी भये।
पुन्नदान दिन करत बितये ॥

तब ही प्रकाश हमारो भयों।
पितहि सहर बिषे औलयो।
मद्र देस हमको ले आये।
भाँति भाँति दान दुलराये॥
कीन्ही अनेक भांति तिन रक्षा।
दीनी भांति भांति की सिक्षा॥
जब हम धर्म कर्म मो आये।
देव लोक तब पिता सिधाये॥

गुरु तेग बहादुर ने आत्म बल का प्रमाण देते हुए किस वीरता से धर्म पर शीश दिया और दीन भारत की भुजा पकड़ कर उसे न छोड़ा, इसका वर्णन करने की यहां आवश्यकता नहीं। उसी धर्म की रक्षा के लिए श्रद्धालु वीर युवक 'गोविन्दराम' ने तैयारी शुरू की।

दोहरा

राज साज हम पै जब आयो।
यथा शक्ति तब धर्म चलायो॥
भाँति भांति बन खेल शिकारा।
मारे रीछ रोझ झङ्कारा॥
देश चाल हमते पुन भई।
शहर पाउंटा की सुध लई॥

कालिन्द्री तट करै निवासा।
अनेक भांति के पेख तमासा॥
इत के सिंह घने चुन मारे।
रोझ रीछ बहु भांति बिदारे॥

राय गोविन्द जी के हजूर में सिक्ख घोड़ों की भेंट लाने तथा अन्य जङ्गी सामान भी पहुंचाने लगे। गुरू जी इसी प्रकार की भेंटों से प्रसन्न होते थे। आखेट (शिकार) के समय बाजा भी बजने लगा। आलम का राजा रतनराय हाथी भेंट लाया। उसका नाम "प्रसादी" था। आखेट में नकारा उसी पर जाने लगा। पहाड़ी राजे भीमचन्द्र ने प्रसादी हाथी मांगा। गुरुने देने से इनकार किया। पहाड़ी राजों ने नकारा बन्द करने को भी गुरू जी की माता से कहलाया। परन्तु 'राजर्षि' कहां मानने के थे। भीमचन्द्र भड़का हुआ तो था ही। जब उसके बेटे के विवाह को बारात राजा 'फतेहशाह' श्रीनगर (गढ़वाल) वाले के यहां गई तो गुरूजी ने अपने दीवान द्वारा तम्बोल में कुछ वस्तुयें भेजीं। सम्बन्धी के आग्रह पर वह तम्बोल भीमशाह ने लौटा दिया।

अपूर्ण

गरीब-की-आह

(लेखक देवेन्द्र)

(गताङ्क से आगे)

यह बात ठीक है कि अगर स्कूलों के लड़कों से संसार का सब से क्रोधी आदमी पूछा जाय तो वह स्वभावतः अपने गणित मास्टर की ओर उंगली उठा देंगे पर यदि अच्छी प्रकार देखा जाय तो उसको भी पढ़ाने वाली मिसेस दुर्वासा अर्थात् उनकी घरवाली होती है इस प्रकार अन्त में स्त्री पक्ष की ही क्रोध में विजय होती है। इन सब स्त्री जाति के सद्गुणों का समावेश सुखिया में भी था। पर अपमान रूपी राख ने उसके अभिमान रूपी धधकते कोयलों को ढक रखा था पर आखिर राख कोयलों के प्रबल प्रताप को कहाँ तक रोके रखती? चौधरी का अन्तिम पाद प्रहार हवा के झोंके का काम कर गया। सुखिया का आत्म सम्मान जाग उठा—बहुत अत्याचार सहते २ भी आदमी अपने स्वरूप को कभी न कभी जान ही जाता है—सो पाद प्रहार होते ही बच्चे के शोक को एक दम भूल

कर सुखिया जहां की तहाँ खड़ी हो गई और एक हाथ से चौधरी के गले को पकड़ती हुई कड़क कर बोली—"अरे ओ नारकी कुत्ते! खबरदार अब जरा भी मेरे शरीर को छुआ तो याद रखना अभी गला दबा कर मार डालूंगी"—इस समय बड़ा ही भयङ्कर दृश्य था सुखिया की दोनों आखों से क्रोध की दो ज्वालाएं निकल कर चौधरी के धैर्य और साहस को भस्म कर रही थी। इसी समय अच'नक देवी की दृष्टि कोने में बेतरह पड़े हुए उसके जीवन के आधार के निश्चेष्ट देह पर गई—बच्चे की स्नेह मयी निर्जीव देह को देखते ही उसके मुख से एक दर्द भरी चीख निकली—जो नेत्र कुछ देर पूर्व आग बरसा रहे थे वे एक दम नेत्र वारि-कणों से उसके मुरझाये हुए कपोलस्थल पर मौक्तिक श्रीधारण करवाने लगे-सुखिया चौधरी के अपराधों को एकदम भूल गई और दौड़ कर अपने मृत-लाल के ठण्डे शरीर से अपनी गर्म छाती ठंडी करने लगी। इसी प्रकार आंसू बहाती हुई सुखिया चौधरी से दुःख भरी आह भर कर बोली "नर पिशाच! लो सम्भाल लो अपना घर। मैंने तो तुम्हें छोड़ा पर याद रखो पर-मात्मा कभी तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेंगे। (उद्दीपा होकर गहरी सांस छोड़ कर) हाय! तू ने मेरा सब कुछ नष्ट किया धन, मान, ऐश्वर्य सब कुछ हर लिया—अधिक क्या मेरे जीवन के आधार मेरे हृदय के टुकड़े-आँखों के तारे को भी मुझ से छीन लिया—हा पर-मात्मा! जिस अपमान और पुत्र शोक से मैं मर रही हूं हे ईश्वर उससे दसगुणा अपमा-नित और दुखी हो कर यह नारकी कुत्तों की मौत से मरे।" इतना कह कर सुखिया अपने मृत बच्चे को छाती से चिपटा कर हाय हाय करती हुई एक दम घर से बाहर हो गई और नदी की ओर चल पड़ी। चौधरी भी होश में आकर कांपते हुए हाथों से घर पर ताला लगा कर अपने घर की ओर दौड़ चला। उस के पापी अतःकरण में बार बार ध्वनि हो रही थी—"ऐ पापी! गरीब-की-आह कभी विफल नहीं होगी।"

(४)

उपरोक्त घटना को हुए १० मास बीत गये। सुखिया के बारे में लोग नई नई कल्पनाएं करते थे-उतने लघुकाल में ही उसके लिए नई नई विचित्र २ कथाएं प्रचलित हो गई। कुछ भी हो-सरकारी रिपोर्ट के अनुसार उस घटना के ५ दिन पश्चात् नदी में से एक स्त्री की लाश १०० मील नीचे जाकर एक मांझी को मिली उसके हाथ एक बच्चे के अस्थि पिञ्जर से बेतरह चिपटे हुए थे-सम्भवतः वही अभागिनी सुखिया की लाश हो। अस्तु—सुखिया को घर से बाहर निकलने के कुछ दिन बाद से ही चौधरी साहब की अवस्था बहुत खराब हो गई। रातों नींद आनी हराम हो गई-बुरे बुरे स्वप्नों ने उनकी अन्तरात्मा को कम्पा दिया बैठे २ वे "हाय! मुझे मारने आ रही है-बचाओ बचाओ। हाय! उस डायन से मेरी कोई रक्षा न कर सकेगा" इसी प्रकार दिन भर बकने लगे। धीरे धीरे उनके उन्माद ने पागल पन का रूप धारण करना शुरू किया। पौन गांव खाली हो गया कृषि का बिलकुल नाश हो गया थोड़ेसे चौधरी महाशय के निजू खेतों को छोड़कर सभी नष्ट हो गये। सारे गांव में तहलका मच गया। पतिव्रता पत्नी लक्ष्मी भी डर के भय से कुछ न कहती बस केवल एक रोने ही से अपने मनोद्वेग को शांत करने की चेष्टा करने लगी। पर अन्त को कहांतक पति की निन्दा सहती। एक दिन वह पति देव के पास गई और रो रो कर उसने अपनी सारी मनोकथा निवेदन करदी। पर चौधरी तो अपनी महत्त्वाकाँक्षा के

अन्दर कोई सानी न रखते थे भला कबतक गृह लक्ष्मी लक्ष्मी के वृथा प्रलाप को सुनते। लक्ष्मी के वचन घाव पर लाल मिर्च का काम कर गये। क्रुद्ध चौधरी ने देवी स्वरूपा देवी को अपने मधुर पाद प्रहार से वञ्चित रखना उचित न समझ कर एक अच्छी सी दुलत्तीं रसीद करते हुआ कहाः— "गधी तू क्या जानतीं है? कैसी चौधरानी बनी फिरतीं है-हमें उपदेश देने चली है। सती साध्वी के लिये इतना अपमान काफी था लक्ष्मी रोती हुई एक दम उलटे पांव अपने कमरे में चली गई और अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाने लगी। चौधरी भी लाठी खाये सर्प की तरह फुङ्कारते हुए बाहर चले गये।

(५)

धीरे २ वर्ष हो गया। सरकारी कर्मचारीगण कर-ग्रहणार्थ निकले कमिश्नर शिकारपुर का निरीक्षण करने तथा वसूली के निमित्त आ धमका। गाँव के प्रबन्ध का हाल सरकारी आफिस में भीं पहुंच चुका था अतः निरीक्षणपि साहब स्वयं शिकारपुर आये। गांव के कुप्रबन्ध को देख कर उन्हें बड़ा गुस्सा आया। जिन खेतों को पिछले दौरे में उन्होंने लहलहाते हुए पाया था उनको इस प्रकार से बुरी दशा में देख कर साहब चौधरी को कठोर दण्ड देने का सोचने लगा इसी प्रकार जलता भुनता हुआ वह चौधरी के मकान पर पहुंचा। पर वहां पहुँच कर चौधरी को न देख कर उसके गुस्से का पारा बहुत ऊंचा चढ़ गया। इतने ही में हाथ बांधे हुए चौधरी ने बड़ी दीनता से आकर साहब का सम्मान किया और फर्श पर बैठ गया। चौधरी को देखते ही साहब ने कहा—

साहब—"ए टुम हिन्डुश्टानी लोग का बडा शरारत होता! अम जब पिल्ले शाल आया गाव वहोत अच्छा पाया--और अब टुमने क्या कर रक्खा है।"

चौधरी—(कांपते हुए) "महाराज! क्षमा करें— गर्मी बहुत होने के कारण लोग इस गांव को छोड़ गए हैं, सर्दी में पुनः आजावेंगे।

साहब—(क्रोधसे) चौडरी टुम बिल्कुल Indian charactar का आदमी है। हमारे समने झूठ बोलता। पर देखो हम सब जानटा है। अच्छा वशूली कितना किया?

चौधरी—महाराज! ५०)।

साहब—(जल्दी से) "ओः! ५०)" "तुम बड़े मक्कार हो अम इस बार टुमको न चोड़ेगा।" इतना कह कर उसने सिपाहियों से चौधरी के हथकड़ी लगाने को कहा। सिपाहियों ने हिचकिचाते हुए चौधरी के हथकड़ी पहना दी। घर में हा हाकार मच गया। तीन दिन तक उस पर मुकदमा चला-अन्त में वह अपराधी सिद्ध हुआ और उसे ४ वर्ष के सपरिश्रम कारावास की आज्ञा हुई।

उधर घर में उसकी पतिव्रता पत्नी की बड़ी बुरी अवस्था हुई। एक इकलौता बेटा था वह भी काशी में पढ़ने के लिये गया हुआ था-बिचारी घर घर ताला ठोक कर माय के चली गई और अपने दुःखमय दिन रोते रोते काटने लगी।

आज चौधरी जो की कैदके दिन पूरे होगये और ४ वर्षके बाद उन्होंने गांवमें पैर रखा। बिचारे सबकी आंख बचाते हुए किसी न किसी प्रकार से अपने घर के द्वार पर पहुंचे इस समय न जाने क्या २ संकल्प विकल्प उनके मन में उठ रहे थे-सारा शरीर पसीने से तर हो रहा था। अपमान के आक्रमण से चिन्ता ने अल्प काल में ही उनके बाल बिल्कुल श्वेत कर दिए। सारांश अब चौधरी पहले के हट्टे कट्टे चौधरी ध्यानसिंह नहीं रहे। कमर बिल्कुल टेढ़ी हो गई थी। एवं सारा शरीर एक दम विकृत हो गया हुआ था। किसी न किसी प्रकार चौधरी ताला तोड़ कर अन्दर प्रविष्ट हुए---

और सीधे अपनी बैठक में पहुँचे। जो चीजे जैसी वह ४ वर्ष पूर्व छोड़ गए थे वह उन्हें जहां की तहां वैसी ही दीख पड़ी भेद केवल इतना ही कि उन पर अों मिट्टी शोभायमान हो रही थी। यह सब देख चौधरी के हृदय पर अतीत नाटक चित्रित होने लगा—सुखिया का माल लूटना—उसका बच्चा मारना, जेल में जाना—नाना प्रकार के अपमान उसके सामने नाचने लगे—वह बैठा २ रोने लगा। २ घंटे इसी प्रकार बीत गये, इतने ही में डाकिया कमरे के अन्दर आया और चौधरी के हाथ में एक तार और २ कार्ड देकर लौट गया। चौधरी ने काँपते हाथों से तार खोला और और बड़ी घबराहट से पढ़ने लगा तार काशी से आई थी—उसका विषय निम्न था:—.

Beneras.

Dear Sir,

"Your son died yesterday night at 12 p.m., suffered severly by double pnemonia."

नीचे प्रिंसिपल के हस्ताक्षर थे। चौधरी के दुःखित मन पर उपरोक तार ने बड़ा ज़बरदस्त धक्का पहुँचाया—और मूर्छित होते २ बच गये। पुनः उन्होंने एक कार्ड उठाया उस में केवल इतना ही लिखा था कि—"गत रात शकरगढ़ में तुम्हारी स्त्री जलकर मर गई" "तुम्हारा एक मित्र"। इस पत्र ने चौधरी के मन पर बहुत गहरा धक्का पहुँचाया—पर कुछ सम्हल कर उसने तीसरा पत्र भी पढ़ने के लिये उठाया पत्र लेखक उसका एक विश्वम्भरनाथ नौकर था। उस में लिखा था "हजूर के २४ परगने में रात को आग लग गई जिससे सारी उपज एवं सब घर नष्ट होगये—अनुमानतः ५० हजार का नुकसान हुआ है।" बस चोट पर चोट लगने से जर्जरित चौधरी के लिये इतना ही काफी था—धन, मान, पुत्र, कलत्र सब पर पानी फिर जाने से उसका धैर्य एक दम नष्ट होगया—और बैठक के चारों दर्वाजे मजबूती से बन्द कर एक आरामकुर्सी पर बैठ हाथों से मुख को ढांप अश्रु-वर्षा करने लगा। उसी प्रकार रोते २ वह संज्ञाहीन होगया।

(७)

उपरोक्त घटना को ५ मास होगये चौधरी का घर दर्शनीय घर होगया लोगों के अन्दर बड़े जोरसे अफ़वाह उड़ी कि चौधरी साहब की बैठक भूतों का निवासस्थान है—तरह २ की गप्पें लोगों में प्रचलित होगई। एक बार दस आदमियों ने मिल कर चौधरी की बैठक में घुसने का निश्चय किया। दसों के साहस के फल को देखने की इच्छा से नियत तिथि को सारे आस पास के गांव उमड़ आये पर हां रहे सब चौधरी के घर के बाहर ही। अस्तु दसों आदमी मकान में प्रविष्ट हुए और चलते २ बैठक तक पहुंचे। चारों ओर के दर्वाजे बिल्कुल बन्द थे अतः उन्हें दर्वाजे तोड़ने पड़े दर्वाजों के टूटते ही दुर्गन्ध की एक प्रबल प्रवाह बाहर निकली सारी जनता ने अपनी आंखों से देखा कि आराम कुर्सी पर लेटे हुए दुर्भागे चौधरीके अस्थ्य वशिष्ट कलेवर की हड्डियों को धूल में हुए थोड़े बहुत सूखे माँस को चूहों के झुण्ड के झुण्ड नोच २ कर खा रहे हैं। इस भयङ्कर दृश्य को देख कर ही सब की आंखों में आंसू आगए सब जहाँ के तहां खड़े होकर अश्रु मोचन करने लगे। सब को ५॥ वर्ष के पहले की घटना याद आगई और उच्च स्वर में चौधरी के लिए शोक प्रकट करते हुए बोले "वास्तव में ईश्वर के न्यायालय में सब की सुनाई होती है" एवं "गरीब की आह" कभी व्यर्थ नहीं जाती सब लोग आंसुओं से ग्राम्य पथ पर छिड़काव करते हुए अपने २ घरों को लौटे पर ज्योंही वे सुखिया के सुनसान घर के सामने पहुंचे उन्हें स्पष्ट तौर से किसी की आवाज सुनाई दी—"अरे नारकी य द रख! "गरीब की आह" कभी व्यर्थ नहीं जाती।

उपरोक्त घटना को हुए आज १० वर्ष होगए हैं। पर अब भी हवा के चलने का उस गांव के एक सुनसान कोने में स्थित सुखिया के मकान के खण्डहरों में से दर्शकों तथा यात्रियों को कम्पा देने वाली किसी देवी की शोक पूर्ण, शिक्षाप्रद आवाज सुनाई देती है—

"ऐ संसार में विचरण करने वालो मनुष्यो! संसार में "गरीब की आह" कभी व्यर्थ नहीं जाती बड़े बड़े अत्याचारियों का नाश कर के ही रहती है।

सभ्य पुरुष के लक्षण

(अंग्रेजी के एकलेख के आधार पर)

आज कल साधारण तथा सभ्य पुरुष उसे कहते हैं जो किस को दुःख नहीं देता—यह परिभाषा उत्तम और ठीक है। सभ्य पुरुष उन विघ्न और बाधाओं के दूर करने में लगा रहता है जो उस के मित्रों के स्वतन्त्र कार्य्य सम्पादन में बाधा डालते हैं—

अपने व्यक्तिगत विचारों के द्वारा वह कभी ऐसी किसी बात को ठीक सिद्ध करने की चेष्टा नहीं करता जो मानवीं स्वभाव के अनुकूल और बुद्धि संगत सिद्ध हो चुकी हो—और उन के किसी काम में अगुवा बनने के अभिप्राय को सिद्ध करने के स्थान में वह उन के कार्यों और आन्दोलनों के प्रति सहानुभूति प्रगट करता है। सज्जन पुरुष के उपकार आरामकुर्सी और प्रचण्ड अग्नि के सदृश मानव चरित्रमें स्थित सुखों और सुविधाओं के समानान्तर होते हैं जो ठंडक और श्रम के दूर करने में अपना काम करते हैं। यद्यपि इन की अविधमानता में प्रकृति देवी उष्णता और आराम के साधन समुपस्थित करता है तथापि भौतिक जगत में उपरोक्त वस्तुए वाञ्छनीय होती हैं—

सच्चा सभ्य पुरुष अपने साथियों के हृदय को आघात न पहुंचाने में बड़ा सावधान रहता है। सब प्रकार के मत भेदों, भावों के संघर्षों, सन्देह और क्रोध के दुष्ट भावों को उपेक्षा की दृष्टि से देखना अपना परम कर्त्तव्य मानता है—सब को सुख और शान्ति पहुँचाना उस का मुख्य काम रहता है—

वह अपनी मित्रमंडली की चौकसी करता है। लजीलों के प्रति मृदुलता का, दुरवाजों के प्रति सहृदयता का, और असभ्यों के प्रति दयालुता का परिचय देता रहता है—किसी के साथ बात करते हुए वह उस के पद और योग्यता का विशेष ध्यान रखता हैं और उन बातों की ओर जो दूसरों को उत्तेजित करतीं हों, संकेत न करने से हाथ खींचता है। सम्भाषण में न तो वह अपनी डींग ही मारता है और न इतनी देर तक बोतही करता है जिस से सुननेवाला उकता जावे।

किसी के साथ परोपकार करता हुआ वह उसे महत्त्व की दृष्टि से नहीं देखता वरन दूसरों को दया की भिक्षा प्रदान करते हुए उसे प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है—विवश किये जाने पर ही वह अपने सम्बन्ध में कोई बात कहता है और केवल शीघ्र प्रत्युत्तर द्वारा अपनी रक्षा भी नहीं करता दोषारोपणों और गप्प शप्प की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देता दूसरों के साथ वाद विवाद करते हुए वह कभी नीचता का परिचय नहीं देता और न कभी नाजायज फ़ायदा उठाता है और विवाद के कारण किसी बड़े आदमी का अपमान और कटु वचनों का आश्रय न लेने में अपना गौरव समझता है—

बड़ी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता के साथ वह प्राचीन काल के महर्षियों की इस कहावत को कि हमें अपने शत्रु के प्रति सर्वथा ऐसा व्यवहार करना चाहिए मानो उसे किसी दिन हमारा मित्र बनना है, अपने जीवन में चरितार्थ करता रहता है— अपमानों से बचने के लिये उसमें अधिक विवेक शक्ति होती है। दुःखों के याद रखने और दुर्भावनाओं के सहन करने के लिए उस में पर्याप्त क्षमता होती है—

वह संतोषी और सहनशील, रहने के साथ २ दार्शनिक सिद्धान्तों पर छिद्रान्वेषण नहीं करता। वह मानसिक तथा शारीरिक पीड़ा को सहता है क्योंकि यह अटल होती है, किसी के मृत्यु वियोग की क्षति को सहता है क्योंकि यह क्षति ऐसी होती है जिसका प्रतिकार नहीं किया जा सकता वह मृत्यु का आह्वाहन करता है क्योंकि मरना उसके भाग्य में लिखा होता है—यदि वह किसी प्रकार के वाद-विवाद में लगता है तो उसकी सुव्यवस्थित बुद्धि उसे उससे कम शिक्षित व्यक्तियों के प्रति असद् व्यवहार करने से रोक देती है।

भले ही उसकी सम्मति ठीक हो वा ग़लत, वह पाप और अन्याय को छोडने में निष्पक्षता से काम लेता है—वह उतना ही सीधा सादा होता है जितना कि प्रभावशाली और उसकी बातें उतनी ही संक्षिप्त होती है जितनी कि वे यथार्थ और सही होती हैं—वह अपने विरोधियों की ग़लतियों पर वास्तविक टीका टिप्पणी करने के कारण उनके हृदयों में खटकता रहता है-उसे मानव बुद्धि की कमज़ोरी उसकी शक्ति, उसके अधिकार और उसकी सीमा का परिज्ञान रहता है।

यदि वह नास्तिक हो तो भी धर्म की हंसी उड़ाते और उसके विरुद्ध कार्यवाही आरम्भ करते हुए उसका हृदय विशाल और गम्भीर रहता है अपनी नास्तिकता के कारण वह पागलपन से काम नहीं लेता।

वह पवित्रता और भक्ति का आदर करता है। वह उन संस्थाओं को जिन की स्थापना से वह सहमत नहीं होता, आदरणीय, सुन्दर और उपयोगी मानकर सहायता देता रहता है—

वह धर्म के स्तम्भों का मान करता है और बिना आक्रमण और खण्डन किये धर्म की बुद्धि असङ्गत बातों के न मानने में सन्तुष्ट रहता है।

वह धार्मिक सहिष्णुता का हामी होता है [illegible] शास्त्र से यह शिक्षा मिली है कि वह निष्पक्ष दृष्टि से सब धर्मों को देखे वरन् वह भावों की कोमलता के कारण ही जो सभ्यता की अनुवर्ती होती है, धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपात लेता है।

"वेद में स्वर व्यत्यय"

स्वाध्यायिवृन्द कुछ दिन हुए विद्वानों में एक चर्चा उठी थी कि वेद में स्वर-व्यत्यय होता है या नहीं तथा कई एक स्वर प्रक्रिया ज्ञानाभिमानी महानुभाव ऋषि दयानन्द कृत वेदार्थ पर एक आक्षेप किया करते हैं वह यह कि स्वा० दयानन्द ने कहीं कहीं पर सौवर व्याकरण (स्वर प्रक्रिया से विरुद्ध वेदार्थ किया है । अर्थात् यदि वैदिक शब्दों में बहुव्रीहि समास का स्वर हो तो अर्थ करते हैं तत्पुरुष समास का, किंवा श्रुतिपदों में स्वर है तत्पुरुष समास का तो अर्थ करते हैं बहुव्रीहि समास का इत्यादि । इस प्रकार विद्वच्चर्चा तथा आक्षेप के उत्तर में निवेदन है कि वेद में स्वर व्यत्य है यद्यपि वैदिक शब्दों का अर्थ सौवर व्याकरण के अनुसार करना उचित है किंतु जैसे व्याकरण के नियम वेद में भिन्न भिन्न दृष्टि में परिवर्तित होजाते हैं एवं स्वर प्रक्रिया भी परिवर्तित हो जाने से ऋषिकृत वेदार्थ स्वर नियम से विरुद्ध नहीं हो सक्ता क्योंकि स्वरव्यत्यय होना भी वैदिक स्वर प्रक्रिया का नियम है। अष्टाध्यायी व्याकरण में एक सूत्र है "परादिश्छन्दसि बहुलम्" (अ०६।२।१६६) इस पर महाभाष्यकार लिखता है "परादिश्चपरान्तश्च पूर्वान्तश्चापि दृश्यते । पूर्वादयश्चदृश्यन्ते व्यत्ययो बहुलं स्मृतः तथा व्यत्ययो बहुलम्" अष्टा०३।१।८५)इस सूत्र का व्याख्यान करते हुए महाभाष्य कार ने वैदिक व्यत्ययों का परिगणन किया है उन व्यत्ययों में एक स्वर व्यत्यय भी है। परिगणन निम्न प्रकार है ——————

सुप्तिङुपग्रहलिङ्ग नराणां कालहलच्स्वरकर्तृ यङांच। व्यत्ययमिच्छति शास्त्रकृदेषा सोऽपिचसिध्यति बाहुलकेन ॥

प्रातिशाख्य ग्रन्थों में भी स्वरव्यत्यय माना है जैसे वर्णलिङ्गस्वरविभक्तिवाक्य व्यत्ययश्छन्दसि" (अथर्व प्रातिशाख्य।प्र३।पाद ४।सू०६) प्राचीन ग्रन्थों तथा मध्यकालीन ऋषियों के अतिरिक्त वर्तमान के ऋषि दयानन्द और सायणाचार्य भी वेद में स्वरव्यत्यय मानते हैं। इन दोनों व्यक्तियों के क्रमशः दो दो उदाहरण निम्न देखिये "जानम्" अत्र जन् धातो घञ् स्वर व्यत्ययेनाद्युदात्तत्वम् । (ऋ० १। ३७। ९। पर दयानन्द भाष्य)

[ले० कर्षात्वतो घञो अन्त उदात्तः" सूत्र से अन्तोदात्त प्राप्त है किन्तु स्वर व्यत्यय से वेद में आद्युदात्त है]

२—"स्तवानः"स्तोतुं शीलः । अत्र स्वर व्यत्ययेनाद्युदात्तत्वम् । (ऋ० १ । ११३ । १७०) पर दयानन्द भाष्य)

[ले० "ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश् इस सूत्र से चानश् प्रत्यय होकरचितः,सूत्र से स्तवानः अन्तोदात्त होना चाहिये किन्तुवेद में स्वर व्यत्यय होजाने से "स्तवानः" आद्युदात्त हो गया है] अब सायण का मत देखिये

१ २

१—"आश्विनाः"(आश्विनीः) अश्व्यासौ स्वा० आ० तस्मादौणादिको विनिः, ततोऽण् व्यत्ययेनाद्युदात्तः। (साम। ३०५ । ३ । १। १।) पर सायण भाष्य)

[ले० यह उदाहरण सामवेद का है इस में १ अङ्क उदात्त और २ स्वरित तथा ३ अनुदात्त

काचिन्ह है । २ अङ्क से आगे रिक्त सब एक श्रुति स्वर होता है । अतः "आश्विनीः=आश्विनीः" यहां अन्तोदात्त प्राप्त है किन्तु स्वर व्यत्यय से आद्युदात्त है]

२—"निहः" उदात्त निवृत्तिस्वरो व्यत्ययेन प्रवर्तते । (अथ०।का०२।६।२। पर सायण भाष्य)

[ले० नि,हा +किस् पुनः शस् विभक्ति= नेहा + शस् =निह + अस् =निहः "अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः,, सूत्र से निहः अन्तगन्तोदात्त होना चाहिए किन्तु वेदमें स्वर व्यत्यय होने से 'निहः' आद्युदात्त है]

इत्यादि वेद में स्वर व्यत्य के अनेक प्रमाण हैं किन्तु विद्वानों को निदर्शन ही पर्याप्त है, अतः वेदार्थ दर्शक को वेद में स्वरव्यत्यय का स्वीकार अत्युचित है । इति

प्रिय रत्न

सार्वदेशिक सभा देहली

सामाजिक जगत्

पटियाला में अनिवार्य शिक्षा

पटियाला नगर में पहली जुलाई से प्रारम्भिक शिक्षा विधान के अनुसार अनिवार्य शिक्षा का कार्य आरम्भ किया जायगा । ६ वर्ष से ११ वर्ष तक के बालक को किसी न किसी प्राइमरी स्कूल में पढ़ना होगा—स्कूल निःशुल्क शिक्षा देंगे । प्रारम्भिक प्रयोग होने के कारण अभी अवज्ञा का दण्ड केवल ५) जुर्माना रक्खा गया है । पढ़ने के दिनों में विद्यार्थियों को नौकरी करने की आज्ञा न रहेगी आज्ञा अमान्य करने पर २५) जुर्माने का दण्ड दिया जायगा—

आर्यसमाज नैनीताल के उत्सव पर सरकार का अनुचित हस्तक्षेप

आर्यसमाज नैनीतालका वार्षिकोत्सव गत २५, २६ -७ जूनको मनाया गया—२७ की सायंकाल को स्थानीय अधिकारियों की ओर से १ नोटिस कार्यकर्त्ताओं को मिला जिस में १४४ धारा के अनुसार उन्हें किसी जाति और विशेषकर इस्लाम और कुरान के सम्बन्ध में चर्चा करने के लिये मना किया गया था इस पर नोटिस के विरोध में समाज के कार्यकर्त्ताओं ने एक प्रस्ताव पास किया जिस में सभा करके एक स्थानीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा इस धार्मिक उत्सव में हस्तक्षेप करने का घोर विरोध किया गया और सरकार से अनुरोध किया गया कि वह स्थानीय अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देदेवें जिस से वे भविष्यत में आर्यसमाज के धार्मिक उत्सवों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न कर सकें।

मैंने वैदिक धर्म्म कैसे ग्रहण किया

आर्यसमाज रेलबाजार कानपुर में सिलिया पानी नामी एक ईसाई लड़की को शुद्ध कर के इस का नाम सावित्री देवी रक्खा गया—इस देवी ने जो बयान अपनी शुद्धि के सम्बन्ध में समाचार पत्रों में प्रकाशित कराया है उस में वह लिखती हैं

कि "मैं ईसाई थी परन्तु कई मास से ईसाई धर्म्म पर मेरा प्रेम और विश्वास नहीं रहा था मुझे वैदिक धर्म के सिद्धान्त अच्छे लगे और मैंने आर्य बनने की इच्छा अपने ईसाई पति पर प्रगट की इस पर मुझे तंग किया गया जिस से मैं घर से चला आई और आर्य धर्म्म ग्रहण कर लिया —

ख्वाजा हसन निजामी का मुसल्मानों को परामर्श

ख्वाजा साहब अपने पत्र मुनादी में लिखते हैं कि पहले मेरी यही राय थी कि गुस्ताख आर्य्य समाचार पत्रों पर मुकद्दमा चलाया जावे पर अब मेरी यह राय नहीं है मैं चाहता हूं कि अंग्रेजी पढ़े लिखे मुसलमान ज्यादह तादाद में इस बात पर तैयार होवें कि आर्य अखबारों की गुस्ताखियों का अंग्रेजी अनुवाद करके वायसराय के होम मेम्बर तनहा सूबेके गवर्नर के पास भेज दिया करें जिस से गवर्नमेंट का ध्यान उधर खिंच जाये— यह कोम शुरू हो जाना चाहिये गुस्ताखी से भरे हुए आर्य्य अखबारों के लेख मुनादी के हरेक अंक में दर्ज कर दिये जाया करेंगे —

पागल मौलाना आर्य समाजियों को धमकी

गत ३ जौलाई के "जमींदार' में मौलाना जफरअली खां ने एक लेख लिखते हुए लिखा है कि, जो शख्स या जो जाति मुहम्मद साहब की दुश्मन होगी, वह जलील व बदनाम हो कर इस तरह तबाह व बरबाद होगी और उस का नामोनिशान दुनिया से मिटा दिया जायगा कि, गोया उस की कभी हस्ती ही न थी। जिस के कान हैं वह सुने कि वह बेअदब जिसने हजरत के साथ गुस्ताखी की है कुत्ते की मौत मारा गया और उसको नस्ल तक दुनिया से मिटा दी गई। यह कौम जो अपने २३ करोड़ आदमियों के बल पर इतराती है उस की भी यही गति होगी। आर्य्य समाज ने हजरत पैगम्बर के अपमान करने का जो तरीका अख्तयार किया है उस का सिर्फ एक यही नतीजा होगा कि उन को नस्ल मिटादी जायगी और उन की श्मशान भूमि पर इस लम्बे चौड़े भारत में कोई दो आंसू बहाने वाला न रह जायगा।

'प्रताप सम्पादक का सिर काट लेंगे' मुसलमानो का मसजिद में निर्णय।

उस दिन रात को १० बजे से मौलवी दाऊद गजनवी की अध्यक्षता में मुसलमानों की एक बड़ी सभा मसजिद में हुई। समय से बहुत पहले से लोग जमा होने लग गये थे मानों मेला हो। लगभग ५०० लोगों के पास लाठियां थीं और चाकू होने का भी सन्देह किया जाता है सभा में उत्तेजना फैलाने वाले भाषण हुए और जोशीली कविताएं पढ़ी गयीं। दफा १४४ को तोड़ने के लिए कहा गया! लाहौर के मजिस्ट्रेट के समान्दा के कार्य की निन्दा की गई। यह भी निश्चय हुआ कि लाहौर में जत्थे भेजे जायं और अगर जरूरत हो तो अमृतसर में भी भद्र अवज्ञा की जाय। खिलाफत आफिस में जाकर लोगों से वालंटियर होने को भी कहा गया। 'प्रताप' अखबार में तीसरी तारीख के अङ्क के विषय में जो लेख था उसे पढ़ कर सुनाया गया जिस पर कुछ मतवाले गुस्से में पागल होकर खड़े हो गए और प्रताप के सम्पादक का शिर आगामी संख्या प्रकाशित होने के पहले उतार लेने की इच्छा प्रकट की। रात के १२ बजे सभा समाप्त हुई।

आर्य समाज के सेक्रेटरी निर्दोष ठहरे

लहेरिया सराय, १२ जून—एक मुसलमान लड़की की शुद्धि के अभियोग पर दरभङ्गा के डिप्टी मजिस्ट्रेट मि० अमानत हुसैन ने आर्य समाज के सेक्रेटरी श्रीयुक्त आनन्द बिहारी प्रसाद और शिव शङ्कर नाथ को क्रमशः दो और एक

वर्ष की कड़ी सज़ा दी थी। इस फैसले के विरुद्ध दौरः जज की अदालत में अभियुक्तों ने अपील की। दौरः जज ने दोनों को निरपराध बनाकर छोड़ दिया और फ़ैसले में लिखा है कि अभियुक्तों के विरुद्ध जो गवाहियाँ दी गई हैं उन पर मैं विश्वास नहीं कर सकता। अभियुक्त आनन्द बिहारी आर्य समाज का प्रधान कार्य कर्त्ता है इस लिए मुसलमान से हिन्दू बनाने और शुद्ध करने के लिये इसे ही दोषी बताता रहा है।

ईरान महिला हिन्दू होने को तैयार

खबर है, झालरापाटन में साधू लक्ष्मणानन्द जी शास्त्रार्थ के लिए गये थे। आपने वैदिक धर्म के सम्बन्ध में कई एक महत्वपूर्ण भाषण दिये। कहते हैं कि उन भाषणों को सुन कर एक शाही खान्दान की किसी मुस्लिम महिला पर व्याख्यानों का जादू सा फिर गया। उसने हिंदू धर्म पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने की घोषणा की है। उसका नाम 'परवी' है। हिन्दू-धर्म पर उसने कुछ कवितायें भी लिखी हैं।

(वर्मा समाचार)

अस्पृश्यता पर पदाघात

द्विजों और अस्पृश्यों का सहभोज

बढ़ई नमः शूद्र अस्पृश्य नहीं है।

कुस्टिया २७ जून। संध्या को तीन मील पर जगिया गाँव में ४०० बढ़इयों की एक सभा हुई जिसमें अपनी अस्पृश्यता तथा अपने साथ होने वाले द्विजों के घृणित और निन्दनीय व्यवहार का निवारण करने के सम्बन्ध में विचार किया गया और प्रारम्भिक पाठशालाएँ अपने बालकों के वास्ते खोलने और धन संग्रह करके आन्दोलन करने का विचार हुआ। कुछ नमः शूद्र नेता भी सभा में आये थे, बाबू प्रफुल्लचन्द्र राय अध्यक्ष थे। सर्व सम्मति से कई प्रस्ताव पास हुए जिसमें बढ़ई जाति को स्पर्श के योग्य बताया गया। कई बढ़ई ग्रेजुएटों तथा अन्य लोगों के भाषण हुए और भाषणों से लोग इतने प्रभावित हुए कि वहां उपस्थित सैकड़ों उच्चकुल के ब्राह्मणों व द्विजों ने बढ़इयों और नमः शूद्रों के साथ बैठकर उनके हाथ का पानी पिया और मिठाई वगैरह खाई। अपूर्व उत्साह था बढ़ई और नमः शूद्र बड़े प्रसन्न हुए। तुरन्तु ऐसा ही कार्य अन्यत्र भी होगा।

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के कतिपय प्रस्ताव

सूचना सं० २

(१) परिषद् की अन्तरङ्ग ११-६-२७ ने निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किए हैं। मैं आशा करता हूं कि भारत वर्ष की समस्त आर्य कुमार सभायें उत्साह से आर्य कुमार सप्ताह मनायेंगी। परिषद् के निमित्त एकत्रित धन म० कृष्णलालजी उ० मन्त्री परिषद् देहरादून या मेरे पास आना चाहिए।

(२) परिषद् के सम्बन्ध में तथा "आर्यकुमार" के सम्बन्ध में आप जो प्रस्ताव करना चाहें वे भी भेजने की कृपा करें। जिससे कि परिषद् तथा आर्य कुमार को विशेष उपयोगी तथा रुचिकर बनाया जा सके।

(३) लेख तथा कविता कार्यालय में पहली अगस्त तक पहुँच जानी चाहिये।

(४) प्रान्तिक परिषदें अपना दशांश आदि शीघ्र भेजने की कृपा करें।

(५) जिन कुमार सभाओं ने अभी तक परिषद् से सम्बन्ध नहीं कराया है वे अपना सम्बन्ध प्रान्त की परिषदों से करलें तथा जिस प्रांत में प्रान्तिक परिषद् नहीं हैं वे सीधा भारत वर्षीय परिषद् से सम्बन्ध करा सकते हैं।

(६) आर्य कुमार सभाओं के उपयोगी रजिस्टर आदि उपमन्त्री परिषद देहरादून अथवा कार्यालय से प्राप्त हो सकते हैं।

(७) अधिक से अधिक आर्य कुमार के ग्राहक बनाइये। इसके प्रकाशन में अनियमता का कारण है, ग्राहकों की कमी है। यदि आप इस को हर प्रकार से रुचिकर तथा नियम पूर्वक प्रकाशित चाहते हैं तो आप इस को ग्राहक और धन से एक दफा प्रचुर सहायता कर दीजिये। फिर कभी आप निराश न होंगे।

(८) श्रीमान् पं० ज्वाला प्रसाद जी वानप्रस्थी से प्रार्थना की गई थी कि वे जब आर्य समाजों का निरीक्षण करने जावें तब वे कृपा कर आर्य कुमार सभाओं का भी निरीक्षण कर लिया करें। हर्ष की बात है कि उन्होंने हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया है। अतः यू० पी० आर्य कुमार सभाओं को चाहिए कि जहां वानप्रस्थी पधारें वहां की कुमार सभा अपनी सभा का निरीक्षण करालें।

स्वीकृत प्रस्ताव

(१) जो आर्यकुमार निम्नविषयों पर सर्वोत्तम लेख भेजेगा उसे पुरस्कार रूप में पुस्तकें भेजी जावेंगी। बड़ों के लियेः—
लड़के और लड़कियों का एक साथ पढ़ना।
छोटों के लियेः— व्यायाम

(२) १४ अगस्त से २१ अगस्त तक एक आर्य कुमार सप्ताह मनाना। समय विभाग निम्न प्रकार होगा।

१४ अगस्त

प्रातः—कीर्तन, हवन, आर्य कुमार सम्मेलन तथा प्रीति भोज।

रात्रिः—वाद विवाद-अंग्रेजी राज्य अच्छा है या मुगल राज्य अच्छा था। जो कुमार सभायें अपना वार्षिकोत्सव तथा वार्षिक चुनाव करना चाहें करें।

१५ अगस्त

रात्री—व्याख्यान

१६ अगस्त

रात्री—कवि सम्मेलन समस्या वीर हैं, आर्यकुमार हों, बलि वेदी पर। विषय—देश, दयानन्द श्रद्धानन्द, वैदिक धर्म।

१७ अगस्त

व्यायाम प्रदर्शनी (वीर दर्शन) तथा Tournaments

१८ अगस्त

रात्रीः—व्याख्यान। विषय, वैदिक धर्म ही सर्व धर्मों का स्रोत है।

१९ अगस्त

प्रातः—कीर्तन हवन, गीता का पाठ [दूसरा ४ था अध्याय]

२० अगस्त

रात्रीः—व्याख्यान [योगीराज कृष्ण की जीवनी पर]

२१ अगस्त

प्रातः—कीर्तन, हवन।

रात्रिः—आर्य कुमार आन्दोलन पर व्याख्यान।

नोट—(१) सभासदों का ।) चन्दा इकट्ठा करके प्रान्तीय परिषद् को भेजना।

(२) भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् के सहायतार्थ चन्दा इकट्ठा करना।

(३) आर्य कुमार के ग्राहक बनाना।

(४) परिषद का अपना पुस्तकालय है। जो सभायें पुस्तकें अथवा तसवीरें मंगाना चाहें वे आर्य कुमार कार्यालय कलकत्ता से पेशगी धन भेज कर या वी० पी० द्वारा मंगा सकती हैं।

(५) नई वर्ष की डायरी अगस्त के आखीर तक तैयार हो जावेगी। जिस को जितनी डायरियाँ

की आवश्यकता हो उससे हमें पहिले सूचित कर दें। जिससे डायरी प्रकाशित करने में सुविधा हो। डायरी को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने की चेष्टा की जा रही है।

कृपाभिलाषी
काशीराम
मन्त्री परिषद

गुरुकुल रायकोट

(जि० लुधियाना पञ्जाब)

यह संस्था पञ्जाब के इस प्रान्त में जहां आर्य समाज का बहुत कम प्रचार है। लगभग ६ वर्ष से खुली हुई है। इस संस्था के कारण इस प्रदेश में भी आर्य समाज का प्रचार और ऋषि दयानन्द की गूंज पहुंच जाती है।

इस गुरुकुल को आर्यसमाजके प्रसिद्ध सन्यासी जी स्वामी गंगागिरिजी ने खोला था। वे ही इस समय इस के आचार्य हैं। इस समय इस गुरुकुल में ११ श्रेणियें हैं। १ म की चार श्रेणियों में गुरुकुल कांगड़ी की पढ़ाई होती है। पश्चात की पढ़ाई की पाठविधि इस प्रकार की रक्खी गई है, जिस से विद्यार्थी संस्कृत के वैदिकादि समस्त विषयों में प्रवीणता प्राप्त करने और उसे आँगल भाषा में प्रचुर अभ्यास होजाय तथा अन्य आधुनिक विद्याओं की भी आवश्यक बोध हो जाए। ब्रह्मचारी दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर की उपदेशक परीक्षा के लिए भी तैयार किए जाते हैं इसी वर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सिद्धान्त शिरोमणि तथा सिद्धान्त भूषण परीक्षाएं पास की हैं। यहां सब नियम गुरुकुल काङ्गड़ी के अनुसार ही हैं। गुरुकुलीय शैली के अनुसार सदाचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ६ वर्ष से ९ वर्ष तक के ब्रह्मचारी प्रविष्ठ किए जाते हैं। शिक्षा के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता। केवल भरण पोषण के व्यय का लगभग आधा लिया जाता है। इस संस्था ने थोड़े ही समय में पर्याप्त उन्नति करली है। यदि आर्य जनता इसकी ओर कुछ ध्यान दें तो इस से अधिक उपयोगी तथा उन्नत बनाया जा सकता है।

सन्तोषानन्द संन्यासी
मुख्याधिष्ठाता

४ सौ मुसलमान परिवार-शुद्ध
मौलवियों की एक न चली

बरवा जिला स्यालकोट में, जून के अन्तिम सप्ताह में होशियार पुर के दयानन्द दलित-उद्धार मण्डल ने चारसौ जटवालों को परिवार सहित शुद्ध किया। शुद्ध होने वाले भाईयों के हाथों से उपस्थित आर्य जनता ने जलादि ग्रहण किया। आस पास के, दूर दूर के गाँवों से लोग इस अपूर्व अवसर का दृश्य देखने आए थे। विद्वान उपदेशकों का और व्याख्यानदाताओं का, जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। दो दिन यह उत्सव रहा' यज्ञ-हवन और वेद-मन्त्रों के गान से ऐसा जान पड़ता था कि भारत का प्राचीन वैदिक युग दो दिन के लिए लौट आया है। मण्डप के निकट ही अहमदी तबलीगियों ने भी डेरा डाला था। नमाजें पढ़ी जाती थीं और मौलवियों के लम्बे चौड़े व्याख्यान होते थे किन्तु यह सब कुछ कर के भी वे शुद्धि के काम में विघ्न न डाल सके। ("तेज")

स्वामी भवानी दयालु जी का स्वागत

श्री स्वामी भवानी दयालु जी देहली से चलकर २८ जून के प्रातःकाल जालन्धर पहुंचे। वहां के कन्या महाविद्यालय में उनका यथायोग्य स्वागत हुआ। सायंकाल को आचार्या जी की अध्यक्षता में महाविद्यालय की अध्यापिकाओं और छात्राओं के समक्ष उनका एक प्रभावशाली व्याख्यान भी हुआ।

वहां से ३० जून को ससराम लौटे। उसी दिन सायङ्काल को आर्यसमाज की ओर से एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें उन्हें एक सुन्दर अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया। पहली जुलाई को ससराम के किले पर हिन्दू सभा की ओर से दूसरी सार्वजनिक सभा हुई और इस सभा ने स्वामी जी को अभिनन्दन पत्र प्रदान किया। तीसरा जुलाई को प्रवासी भवन लौटे। वहां से ११ ता० को बम्बई पहुँच कर २० जुलाई को "खएडाला" जहाज से सार्वदेशिक सभा की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए दक्षिणी अफ्रीका के लिए प्रस्थान करेंगे।

शुद्धि की धूम

मौजा नैनपुर इलाका महमुदाबाद रियासत बड़ौदा में ५ ईसाइयों को शुद्ध किया गया।

कसवा भावरना रियासत बड़ौदा में दस ईसाई सपरिवार शुद्ध हुए।

अलवर के मौजा बगहरी में सात बिछुड़े हुए भाइयों को शुद्ध किया गया।

सिलांग में स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा कई ईसाइयों को शुद्ध किया गया।

पूना की हिन्दू सभा ने ६ विधर्मियों को शुद्ध किया।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा देहली के भजनोपदेशक शेरसिंह जी ने बिहार प्रान्त में एक सौ मुसलिमों को फिर से हिन्दू धर्म में मिलाया।

चिलौली, मझना, कुआंखेड़ा (जि० फर्रुखाबाद) में १२ शुद्धियां हुई।

भारतीय शुद्धि सभा की शाखा आगरा द्वारा पचरा (ग्वालियर में ११० नव मुसलिमों को शुद्ध किया गया।

मौकामा (पटना) आर्यसमाज द्वारा दो नव मुसलिमों को शुद्ध किया गया।

आर्यसमाज मन्दिर सैन्द्वार (बिजनौर) में एक मुसलिम को शुद्ध किया गया।

हरजू नगला (शाहजहांपुर) में श्री दीवान बहादुर वकील के प्रयत्न से ३१ नव मुसलिमों को शुद्ध किया गया।

छपरा आर्य समाज ने एक वैश्य को जो एक मास से मुसलमान हो गया था, शुद्ध किया गया।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अवैतनिक कार्यकर्त्ताओं ने ग्राम ढकनगला जिला अलीगढ़ में लाल खां नामक व्यक्ति को उसके परिवार सहित जिसमें ६ स्त्री पुरुष थे, शुद्ध किया और उसका नाम लाल सिंह रक्खा गया। इसके उपलक्ष में भोज दिया गया जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि सब जातियों के मनुष्य सम्मिलित थे। चौहान राजपूतों ने उनको अपनी बिरादरी में सहर्ष मिला लिया। इस शुभ कार्य में श्री आत्माराम, ठाकुर अमानसिंह, ठाकुर खूबसिंह और पण्डित गोपालदत्त का उद्योग प्रशंसनीय है।

—मन्त्री शुद्धि सभा दिल्ली।

नडीआद (मुम्बई) १९ जून सन्तराम महाराज मन्दिर में मुम्बई प्रादेशिक हिन्दू सभा के कार्यकर्ता आनन्द प्रिय जी बी० ए० एल० एल० बी० ने ५० शेख मुसलमान कुटुम्बों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी। इस अवसर पर बड़ौदा के सनातनी ब्राह्मणों ने ईश्वर प्रार्थना हवन इत्यादि किए और ५० शेख कुटुम्ब का हिन्दू धर्म में मिलाये गये। देशाई दादू भाई साहेब पं० हरिशङ्कर जी और अन्य वक्ताओं ने ओजस्वी व्याख्यान दिए।

डालटनगञ्ज में बकरीद वाले दिन दो हलवाई जो दो वर्ष पहले बीमारी की हालत में मुसलमानों के हाथ का सागूदाना खा लेने से वेधर्म हो गये थे शुद्ध कर लिए गए।

पण्डित धुरेन्द्र शास्त्री के उद्योग से नन्दनपुर (आसनसोल) में ६७ नौ मुसलिम शुद्ध किये गए।

पं० वाचस्पति मिश्र के प्रयत्न से चन्डौस (अलीगढ़) में ५ सौ मुसलिम शुद्ध किए गए

तरवाला (अलवर राज्य) में पंचायत के अवसर पर १० घर तरवाले के बिछुड़े भाई शुद्ध किये गए। खुदा बक्स नामक मुसल मान भी शुद्ध किया गया।

भा० हि० सभा के अवैतनिक कार्य कर्ता श्रों ने ग्राम ढकनगला जि० अलीगढ़ में लालखां नाम के व्यक्तिको उस के परिवार सहित जिस में छः स्त्री पुरुष थे, शुद्ध किया और उस का नाम लालसिंह रक्खा गया।

राजस्थान में दूसरा धार्मिक बलिदान

राजस्थान की वीरभूमि में आदर्श कर्मवीर महर्षि दयानन्द जी सरस्वती आज से ४४ वर्ष पूर्व वीरगति को प्राप्त हुये थे। एक अधर्मी कायर ने उस सर्वपूज्य परोपकारी महात्मा की हत्या का पाप अपने सिर पर लिया था। वह एक उच्चतम बलि थी जो वैदिकधर्म्म इस सभ्यता के युग में विचार स्वातन्त्र्य की वेदी पर दे सकता था, आज एक दूसरे बलिदान की सूचना आई है जिसे महर्षि के बलिदान के साथ तो नहीं रक्खा जा सकता है। हां एक अनुयायी अपने आचार्य के अनुकरण में अपने प्यारे धर्म्म के वास्ते कितना उत्सर्ग दिखला सकता है इसका उदाहरण आबू-रोड़ निवासी स्वर्गीय म० भैरोंसिंह ने उपस्थित कर दिया है। आर्यजाति के शुद्धि यज्ञ में प० लेखराम जी व स्वामी श्रद्धानन्द जी के पीछे इसे तीसरी आहुति समझनी चाहिये। उनका अपराध क्या था जिसके बदले में उनके रक्त से हत्यारे ने अपनी पिपासा बुझाई ? सम्बाददाता का कहना है कि शुद्धि सम्बन्धी चर्चा करना ही उनका एक मात्र अपराध था। मामला अभी अदालत में है अतः उसके कानूनी पक्ष पर विचार न करते हुए हम स्वर्गीय भैरोंसिंह जी आर्य के परिवार को बधाई देते हैं कि दिवङ्गत आत्मा ने उनका मस्तक ऊंचा किया है। वह परिवार अब भरोंसिंह का नहीं किन्तु (संवाददाता के शब्दों में) "धर्मवीर" भैरोंसिंह का परिवार है। सारे राजस्थान को मृत्यु पर फख होना चाहिये। आर्यजाति भारतमाता के मस्तक पर तिलक लगाती है। किस सामग्री से ? शहीदों के रक्त से, हमारे मुसलमान भाई ईद मनाया करते हैं। आर्यजाति भी ईद मनाती है, परन्तु इसके ईद मनाने का ढंग दूसरा है। कोई इतर प्राणियों की जान देकर ईद मनाना सिखाया है। आर्यजाति ! तुम धन्य हो इस कथित विचार स्वातन्त्र्य के युग में तुम अभी तक विचारों की वेदी पर बराबर बलिदान दिये चली जा रही हो। तुम जियोगी और जुग जुग जियोगी। तुम्हें कोई शक्ति मार नहीं सकती। भैरोंसिंह ! तुम अमर हो गये, सहस्रों मनुष्य किसी समय तुम्हारे सौभाग्य पर ईर्षा करेंगे। भारतमाता ! तू कैसे २ नर-रत्न अपनी गोद में छिपाये हुए है। तुझे कोटिशः प्रणाम है, आर्य पुरुषो ! सोचो, भैरोंसिंह क्यों मारे गये ? वह इसलिये मारे गये कि हम सब भैरोंसिंह नहीं है। आओ, हम में से एक एक पुरुष भैरोंसिंह बन जायं फिर भैरोंसिंह मरा नहीं रहेगा वह सहस्र गुणशक्ति से जीवित हो जायगा। क्या राजस्थान का यह दूसरा बलिदान खाली जायगा ? आकाशवाणी कहती है "नहीं"।

(आर्य मार्तण्ड)

हिन्दू संगठन का अपूर्व दिग्दर्शन

गत १७ जौलाई को आर्य समाज अजमेर की तरफ से अजमेर नगर में हिन्दू मात्र का एक विशाल सह भोज हुआ। टिकिट खरीद कर जो लोग सहभोज में सम्मिलित हुए उन की संख्या दस हज़ार से भी ऊपर थी। शायद भारत वर्ष के इतिहास में यह पहला ही अवसर है जबकि मेहतरों से ले कर ब्राह्मणों तक सब ने इकट्ठे बैठ कर इतनी बड़ी संख्या में भोजन

किया हो। इस अभूतपूर्व यज्ञ में किसी प्रकार का ऊंच नीच या छूत छात का कुविचार नहीं था। अजमेर की हिन्दू जनता में इस भोज के कारण बहुत उत्साह है। इसी अवसर पर आर्य समाज अजमेर के प्रधान राय साहब मिट्ठन लाल जी एडवोकेट को अजमेर की तमाम हिन्दू जनता की तरफ से एक अभिनंदन पत्र भी दिया गया। अजमेर के इस विशाल सहभोज में सम्मिलित होने के लिए कुछ महानुभाव ब्यावर, नसीराबाद, उदयपुर, किशन गढ़ आदि दूर दूर के स्थानों से भी पधारे थे। हिन्दूसंगठन, दलितोद्धार, और वैदिक धर्म के इस क्रियात्मक प्रचार का श्रेय अजमेर आर्य समाज को ही है।

जीयालाल मन्त्री आर्य समाज अजमेर

मद्रास में वैदिक संस्कारों की लोक प्रियता

परमेश्वर की कृपा से अब कर्णाटक मालावार इत्यादि की हिन्दू जनता वैदिक धर्म के महत्त्व को क्रमशः समझने लग गई। जनता के अन्धविश्वास पूर्ण रीति रिवाज अब शनैः २ दूर हो रहे हैं और उनके स्थान पर आर्यसमाज के प्रयत्न से वैदिक संस्कार लोकप्रिय (Popular) बन रहे हैं। केवल आर्यसमाज के सदस्य ही नहीं बल्कि दूसरे सज्जन भी वैदिक संस्कारों को अब प्रेम पूर्वक अपनाने लगे हैं। वैदिक संस्कारों की लोक प्रियता का सब से नया और ज्वलन्त उदाहरण मद्रास प्रांत के सुप्रसिद्ध समाज सुधारक, मंगलौर ब्रह्मसमाज के प्रधान श्रीयुत रंगराव जी का वैदिक रीति से संस्कार विधि के अनुसार गत एप्रिल मास में स्ना० धर्मदेव विद्यावाचस्पति को पुरोहित कार्यकर्ता तथा श्री पूज्यपाद स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य स्वामी सुविचारानन्द जी को गुरु बना कर सन्यासाश्रम में प्रवेश है जिस पर अभी तक ब्रह्मसमाजी सज्जनों में बड़ी खलबली मची हुई है क्योंकि आजतक ब्रह्मसमाज में किसी ने इस प्रकार सन्यास न लिया था और अभी तक ऐसे सज्जन बहुत हैं जो संस्कार मात्र को ब्रह्म समाज के सिद्धान्त के विरुद्ध और अनावश्यक समझते हैं। ऐसे सज्जन आन्दोलन मचाकर श्रीयुत रंगराव (वर्तमान में स्वा० ईश्वरानन्द जी) को ब्रह्मसमाज के प्रधान पद से हटाने का भी प्रयत्न कर रहे हैं।

गत २१ मई को एक सज्जन ने जो आर्यसमाज के सदस्य नहीं हैं अपने यहां वैदिक रीति से गृह प्रवेशसंस्कार कराया और सायंकाल स्ना० धर्मदेव जी द्वारा सत्यनारायण की वास्तविक कथा १०० के करीब उपस्थिति में कराई जिस में पौराणिक कथा के दोष दिखा कर उपनिषद् की ब्रह्मज्ञान विषयक कई कथाएं सुनाई गई साथ ही देवी विद्यावती जी के 'गजब हैरान हूं भगवन्' इत्यादि भजन हुए जिन्हें जनताने बहुत ही पसन्द किया। इस संस्कार के लिये अब कई सज्जनों के निमन्त्रण आ रहे हैं।

कर्णाटक प्रांत में उडुपी पौराणिकों का केन्द्र है जहां माध्व सम्प्रदाय के ८ मठ हैं। इसके समीपवर्ती हिड़ियक नाम ग्राम से वैदिक रीति से कुछ बालकों का उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार कराने के लिये स्ना० धर्मदेव जी को निमन्त्रण आया। क्योंकि इस मौके पर उडुपी के बहुत से सुशिक्षित प्रतिष्ठित सज्जनों को भी सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया गया था इस लिये प्रचार का अच्छा अवसर समझ कर उन्होंने निमन्त्रण स्वीकार किया तथा गत १२ जून रविवार को बड़ी धूम धाम से १०० के लगभग सज्जनों और देवियों की उपस्थिति में संस्कार कराते हुए यज्ञोपवीत गायत्री मन्त्र ब्रह्मचर्य इत्यादि की विस्तृत व्याख्या की। आज तक जनता ने कभी इसी प्रकार का संस्कार न देखा था अतः इस का बहुत ही उत्तम प्रभाव पड़ा संस्कार के अन्त में स्ना० जी ने वेद के महत्त्व' पर कर्णाटक भाषा में व्याख्यान दिया जिस

में बताया कि वेदों के अज्ञान के कारण हमारी इतनी शोचनीय दशा हो रही है उनके अनुसार चलने से ही हम सब तरह की उन्नति कर सकते हैं वेद पढ़ने का अधिकार मनुष्य मात्र को है इत्यादि। उस स्थान से भी अब संस्कारार्थ फिर निमन्त्रण आ रहे हैं।

जनता की इस उत्तम प्रवृत्ति को देख कर अब आर्य समाज की ओर से संस्कार विषयक ग्रन्थ प्रकाशित होने वाले हैं। वैदिक विवाह संस्कार पद्धति कर्णाटक भाषा में सम्पूर्ण लिखी जा चुकी है कुछ ही दिनों में प्रेस में देदी जाएगी इसी प्रकार अन्य संस्कारों पर पुस्तकें तैयार कराई जा रही हैं।

वैदिक धर्म के मौखिक तथा लिखित तौर पर प्रचार का भी पूरा यत्न हो रहा है। गत मास मालाबारी कई आर्य सज्जनों के निमन्त्रण पर स्ना० धर्मदेव जी अलेपे (कोचीन रियासत) में एक बड़ी कान्फ्रेन्स के मौके पर गए जहां १ हजार के करीब उपस्थिति में उन्हों ने अंग्रेजी में (वैदिक धर्म के सन्देश) पर व्याख्यान दिया जाति के आध्यात्मिक गुरु श्री नारायण गुरु स्वामी जी के उत्तराधिकारी मुख्य शिष्य स्वामी बोधानन्द जी के सभापतित्व में दिया जिस का साधु शिव प्रशाद जी आर्य मिशनरी ने अक्षरशः मलयालम में अनुवाद कर के जनता को सुनाया। जनता ने इन विचारों को बड़े ध्यान से सुना और पसन्द किया। उधर जाने का मुख्य उद्देश्य थिया जाति को समूह रूपेण हिन्दू धर्म छोड़ कर बौद्ध मत ग्रहण करने की प्रवृति के विषय में समझा कर उन्हें वैदिक धर्म में प्रवेश के लिये प्रेरणा करना था जिस में इतने अंश में काफी सफलता हुई कि उन्हों ने समूह रुप से बौद्ध मत को ग्रहण करने की घोषणा नहीं की बल्कि एक देव, एक जाति, एक धर्म इन लक्षणों वाले 'सनातन धर्म के अनुयायी होने की घोषणा की जो वस्तुतः वैदिक धर्म ही है।

इधर कई मेलों में 'मारी' देवता के नाम पर पशु बलि चढाये जाते हैं ऐसे अवसरों पर उर्वा, सूरत कल इत्यादि में आर्य समाज की ओर से विशेष प्रचार किया गया और पशु बलि निषेध पर पुस्तकें छपवा कर बांटी गई।

स्ना० धर्मदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती जी अध्यापन प्रार्थना भजन इत्यादि द्वारा देवियों के अन्दर वैदिक धर्म के लिये विशेष प्रेम पैदा करके प्रचार के काम में विशेष सहायता दे रही हैं। देवियों को हिन्दी तथा संगीत इत्यादि सिखाने के लिये देवी विद्यावती जी ने आर्यसमाज मन्दिर में कक्षा खोल रक्खा है जिस से लाभ उठाने के लिये कई बालिकाएं तथा देवियाँ प्रतिदिन तीन चार मील की दूरी से चल कर आती हैं अब शीघ्र ही आर्य स्त्री समाज की भी स्थापना होने वाली है।

(अपूर्ण) भवदीय—

माधवराव बी. ए. बी. एल,
मन्त्री-आर्यसमाज मंगलौर



रानियों का बाग

(लेखक— रस्किन)

किसी राजा का राज्य, राज्य की स्थिरता अपरिवर्तनशील परमपिता परमात्मा के शाश्वत नियम रूपी शिलाधार पर अवलम्बित होता है।

हमें इस बात का पता लगाना है कि उस अधिकार पर जो वास्तविक शिक्षा से स्त्री जाति को प्राप्त होते हैं उनका किस सीमा तक आधिपत्य रहता है तथा उनको किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए ?

इस प्रकार के अनुसन्धान पर पहुँचने के लिए अवश्य ही हमें ज्ञात करना चाहिये कि उनके अधिकार किस सीमा तक परिमित हैं, उनके क्या क्या कर्त्तव्य और अधिकार हैं ? स्त्रियों के स्वत्वों को मनुष्य के स्वत्वों से पृथक् मानना और उन में विभिन्नता प्रगट करना नितान्त अनुचित हैं साथ ही स्त्री को पुरुष की दासी मानना ग़लत है।

यद्यपि भारत वर्ष के कुछेक अदूर दर्शी एवं स्त्री जाति के स्वत्वों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाले लेखकों ने स्त्री को समाज में अथवा समाज से बाहर काम करने के लिए वे अधिकार नहीं है जो कि वास्तविक रूपसे उन्हें दिये जाने चाहिए थे तथापि पाश्चात्य देशों के प्रसिद्ध एवं प्रमाणिक लेखकों ने अपने लेखों को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने के हितार्थ उन्हें वे २ अधिकार प्रदान किए हैं जिन पर मनन करने और गम्भीर दृष्टि से विचार करने से सहसही किसी भी पक्षपाती व्यक्ति के हृदय पटल पर स्त्री जाति के मान और मर्यादा सम्बन्धी विचार और भावनाएं अङ्कित हुए बिना नहीं रह सकते।

शेक्सपीयर, वाल्टर स्कॉट, डान्टे, चाउसर और स्पेन्सर आदि प्रसिद्ध लेखकों ने एक मत से जैसा कि हमारे पूर्वकालीन लेखकों तथा जाति और देश के पथ प्रदर्शकों ने भी अपने लेखों और पुस्तकों में वर्णन किया है स्त्री को मनुष्य का त्राण कर्ता मानते हुए उसे विवेक, पवित्रता, शक्ति, स्नेह, आत्म बलिदान, मान-मर्यादा और न्याय आदि सद् गुणों से अलङ्कृत हुआ स्वीकृत किया है।

आज कल स्त्री और वैवाहिक सम्बन्ध के विषय में जो हम लोगों की धारणा है उससे तो ये सब लेखक सहमत हुए नहीं प्रतीत होते हैं। हमारा कथन है कि स्त्रियाँ अगुआ बनने के लिए नहीं हैं। पुरुष सदा स्त्री की अपेक्षा चतुर रहा है। वही विचार शील है शासक है और बल की नाईं ज्ञान में भी स्त्री से बढ़ कर है।

यदि आप का यह विचार हो कि बड़े बड़े लेखकों ने हमारे सामने स्त्रियों का वह चित्र रक्खा है जो न केवल वास्तविक ही नहीं वरन ऐसा है जिस की हमें जरूरत नहीं थी तो आप मानव

हृदय की साक्षी लो और अपने हृदय से पूछो कि उस युग में जो पवित्रता और उन्नति के लिए प्रख्यात हैं, प्रेमी जनों का अपनी प्रेयसीयों के प्रति कैसा व्यवहार रहा है, तब आप जानेंगे कि प्रेमी जन अपनी प्राणवल्लभाओं के केवल आज्ञाकारी ही नहीं रहे, प्रत्युत उनकी आज्ञा, प्रोत्साहन, मन्त्रणा और आदेशों के लिए बाट जोहते रहते थे तथा एक उच्चकुल-सम्भूत सुशिक्षित नव युवक के लिए किसी ऐसी स्त्री के साथ प्रेम करना जिसकी मृदुल-मन्त्रणा पर वह विश्वास न करे तथा जिस के विनीत आदेश के पालन करने में आनाकानी कर सके असम्भव सा ही है।

मानव हृदय की यह विशेषता है और यह निर्भ्रान्त, सच्चाई भी है स्त्री का पुनीत प्रेम मानव हृदय को बल प्रदान करने के अतिरिक्त उस में नैतिक साहस का भी सञ्चार करता है स्त्री के प्रेम के सदृश अन्य कोई वस्तु मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों को नियन्त्रण के बहुमूल्य आभूषण से अलंकृत करने में समर्थ नहीं हो सकी।

पुरुष का इस प्रकार का वीरोचित स्नेह मानो उसे रक्षण शस्त्र प्रदान करता हुआ उसकी सब प्रकार के प्रलोभनों से रक्षा करता है जिस समय इस प्रेम में पवित्रता और वास्तविकता का अभाव होने लगता है तब ही मनुष्य उन विशिष्ट गुणों के प्रगट करने में जो साधारण तथा शौर्य यथा वीर्य के द्वारा उस के हृदय में विकसित हुआ करते हैं चूक जाता है।

स्त्रियाँ पुरुष की आँखों में जितना उन का मूल्य होता है उस से अभिज्ञ हुआ करती है। वे पूर्णतया जानती तथा समझती है कि पुरुष उन के बिना कुछ नहीं कर सकते, तिस पर भी कभी कभी ज्ञात होता है कि पुरुष के लिए अपने आप को क्रय करने में सस्ती वस्तु की नाईं बनाकर उन्हों ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया है। इस का परिणाम यह होता है कि उन की मनुष्यों के ऊपर उस शक्ति का जिस के द्वारा वे उन का उपकार कर सकी है शनैः २ ह्रास होने लगता है और इसी लिए उन के प्रभाव से न तो छोटे २ बच्चे युवावस्था में प्रवेश ही कर सके हैं और न मनुष्य ही देवता बन जाते हैं।

मुझे विश्वास है कि आप लोग प्रेमी जनों के सम्बन्ध में इतना अवश्य स्वीकार करेंगे। हम बहुधा सन्देह किया करते हैं कि इस प्रकार का सम्बन्ध जीवन पर्यन्त स्थिर नहीं रह सका और इस प्रकार का सन्देह भी प्रेमी तथा प्रेयसी के सम्बन्ध में उत्पन्न होता है न कि दाम्पत्य प्रेम में सम्बन्ध में। दूसरे शब्दों में यों कहिये कि हमारी यह धारणा होती है कि मनुष्य स्त्री का जीवन की उस अवस्था में जब वे दोनों प्रेमी तथा प्रेयसी के रूप में होते हैं वीरोचित सत्कार करते हैं और उस समय इस प्रकार का सत्कार करना छोड़ देते हैं जब वे दोनों पति और पत्नी के पद को प्राप्त हो जाते हैं। परन्तु मनुष्य के प्रति इस प्रकार का भाव परिवर्तन अस्वाभाविक तथा नीच है। यह भी अस्वाभाविक ही है कि मनुष्य उस व्यक्ति के प्रति जिस का प्रेम अनिश्चित और जिसका आचरण जाना तथा आजमाया नहीं गया है श्रद्धा एवं मृदुलता के भाव प्रदर्शित करे और और विवाह के समय जिसके स्नेह और आचरण से वह पूर्णतया सन्तुष्ट होगया हो उसके प्रति उदासीनता प्रगट करे। विवाह एक पवित्र अटूट सम्बन्ध है जो दो व्यक्तियों के जीवनों तथा हृदयों को एक ही प्रेम रज्जु में बांधता है। इस भाव से देखने से मनुष्य को उचित है कि वह स्त्री के प्रति अपने मनोगत भावों को परिवर्तन करता हुआ,

उन्हें दृढ़ करे। विवाह के समय वे कोमल सेवायें जो प्रेमी तथा प्रेयसी के आजमायशी समय में अस्थायी और क्षणिक समझी जाती थीं स्थायी होनी चाहिये जो प्रेम उस समय अनिश्चित समझा जाता था, अब विवाह के उपरान्त शाश्वत प्रेम समझा जाना चाहिये। या यों कहिये कि विवाह से मनुष्य को वीर बनना तथा आदर और मृदुलता के भावों को अधिक सुदृढ़ करना चाहिये।

अब आप प्रश्न करेंगे कि पत्नी पद को प्राप्त हुई तथा अपने पति के वशीभूत हुई स्त्री किस प्रकार अपने पति के लिए पथ-प्रदर्शक बन सकी है?

यह कहना कि मनुष्य का सर्वतोभावेन स्त्री के ऊपर आधिपत्य होता है मूर्खता प्रगट करना है। उन दोनों के आचरण भिन्न २ होते हैं। प्रत्येक एक दूसरे की कमी को पूरा करता है। एक दूसरे के लिए काम करने से वे खुशी होने के अतिरिक्त एक दूसरे का विकास भी कर सके हैं। जिस बात की कमी स्त्री में हो उसे पुरुष पूरा करे और जिसकी कमी पुरुष में हो, उसे स्त्री पूरा करे। इस प्रकार के व्यवहार से ही गृहस्थ सुखमय हो सका है। उन दोनों के भिन्न २ आचरण इस प्रकार से हैं:—

मनुष्य की शक्ति उत्साह से भरी हुई, उन्नत शील तथा रक्षा सम्बन्धी कामों में प्रवृत्त हुई होती है। मनुष्य मुख्यतया, कर्त्ता, सृष्टा, आविष्कारक, और रक्षक होता है। उसकी बुद्धि असाधारण कठिनाइयों से युक्त किसी बड़े लाभप्रद व्यापार और आविष्कार करने के लिए, उसका उत्साह कठिनाइयों का सामना करने के लिए होते हैं। परमात्मा ने मनुष्य को शक्ति इसलिए प्रदान की है कि वह सत्य की स्थापना और रक्षा के लिए युद्ध करे और युद्ध में शत्रु को पराजित करने के लिए उस का सदपयोग करे।

स्त्री को शक्ति, शासन करने के लिए दी गई है न कि युद्ध करने के लिए। उसकी बुद्धि आविष्कार करने तथा किसी नई सृष्टि के रचने के लिए नहीं, प्रत्युत सुव्यवस्था निर्णय करने के लिए ही परमात्मा ने उसे प्रदान की है। वह वस्तुओं के भिन्न २ गुणों और विशेषताओं का निर्णय करती, उन्हें वास्तविक अधिकार और स्थान प्रदान करती है। स्त्री का सब से बड़ा काम प्रशंसा करने का है।

मनुष्यों का यह स्वभाव होता है कि वह उस स्त्री का जिसको वह प्रेम करता है प्रशंसा पात्र बनने और उसके द्वारा सम्मानित बनने की बलवती इच्छासे प्रेरित हो अपने कृत्यों का पारितोषिक पाने की चेष्टा करता है। अतएव प्रशंसा करने के बल पर मनुष्य को प्रोत्साहन प्रदान करती हुई स्त्री मानव जाति का अधिक उपकार कर सकी है और स्त्री का समाज में यही मुख्य कर्तव्य होता है। उसे वास जगतके निकृष्ट धन्धोंमें और जीवन संग्राम में न तो पड़ने की जरूरत ही है और न उसे पड़ना ही चाहिये, क्योंकि स्वभावतः वह इनके योग्य नहीं होती। तिस पर भी यह अपने प्रशंसा रूप पारितोषिक प्रदान कर मनुष्य को जीवन संग्राम के लिए बल प्रदान कर सकती है और इस कार्य के सम्पादनार्थ एक उन्नतमना तथा विचारशील स्त्री में वह शक्ति होती है जिसके द्वारा वह निरन्तर पारितोषिक देती रहती है। स्त्रीका पद और स्थान दोनों सब प्रकारसे भय और प्रलोभनों से उसकी रक्षा किया करते हैं। वाह्य जगत में, अपने काम में व्यस्त हुए मनुष्य को सब प्रकार दुःख और परीक्षणों का सामना करना चाहिये। इसीलिए उसे असफलता भी होगी, वह अपराध भी करेगा, गलतियां भी करेगा, कभी २ घायल भी होगा, और बहकाया भी जावेगा और सदैव सहितयां भी सहनी पड़ेंगी। परन्तु इन सब से मनुष्य स्त्री की रक्षा करता है।

स्त्री द्वारा शासित हुए घर के भीतर सिवाय उस दशा के जबकि उससे घर का शासन करने के लिए उसकी स्त्री प्रेरणा करे, उसे किसी प्रकार के भय, प्रलोभन, गलती, और अपराध के कारणों में पड़ने की जरूरत नहीं पड़ती। इसी को सच्चा गृहस्थ कहते हैं। यही शान्ति निकेतन कहलाता है। यही रक्षा स्थान है। यह स्थान हमारी केवल समस्त दुःखों से ही रक्षा नहीं करता वरन समस्त प्रकार के भय, सन्देह और भेद भाव से भी हमें बचाता है। जिस घर में उपर्युक्त बातें न पाई जावें, वह गृहस्थ नहीं कहलाया जा सकता। जब जब बाह्य जगत की चिन्ताएं घर में प्रवेश करने लगती हैं और पति वा पत्नी दोनों में से कोई, किसी अपरिचित अथवा बाह्य जगत् के आने से विमुख हुए व्यक्ति को घर की ड्योढ़ी पार करने की आज्ञा देता है तब ही वह गृहस्थ नहीं रहता। उस समय वह बाह्य जगत के उस भाग में परिवर्तित हो जाता है जिसमें अपने रहने के लिए आप अग्नि प्रदीप्त करते रहते हैं।

गृहस्थ एक पवित्र देवालय है। इस देवालय में गार्हस्थ देवता निवास करते हैं। जिस प्रकार किसी पवित्र देवालय में, पवित्र हृदय, भक्त को प्रवेश करने का अधिकार होता है उसी प्रकार गृहस्थ रूपी देवालय में उन्हीं व्यक्तियों को प्रवेश करना उचित है, जो गृहस्वामिनी के प्रेमरस का आस्वादन करते हैं।

किसी विपरीत भाव को बलपूर्वक स्थान देते हुए, सुखमय गृहस्थ के शान्त वातावरण को भङ्ग करना नितान्त अनुचित है।

जिस सीमा तक गृहस्थ इस प्रकार की पवित्रता का उपभोग करता हुआ, सांसारिक भयों और श्रम से मनुष्य की रक्षा करने में समर्थ रहता है, उसी सीमा तक यह गृहस्थ कहलाता है। गृहस्थ सुख और शान्ति का शरण स्थान है अन्यथा इसका नाम लेना भी अनुचित है।

जहां पर सच्ची स्त्री निवास करती है वही गृहस्थ कहलाता है।

भले ही पत्नी आकाश के चन्दोवे के नीचे बिना छत वाले मकान में रहती हो और भले ही जुगनू के प्रकाश के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का प्रकाश उस तक न पहुँचता हो, इन हालतों में भी केवल उसकी उपस्थिति गृहस्थ निर्माण करने में समर्थ होती है।

इस समय तक हमारा विश्वास है कि आप को स्त्री के पद और स्थान का बोध हो गया होगा। अपने पद और स्थान की जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए उसे गलतियां नहीं करनी चाहियें। उसके शासन में सब कार्य ठीक २ पूर्ण किया जाना चाहिये अन्यथा सब बातों में गड़बड़ हो जायेगी। वह स्थिर रूप से सदाचारिणी होनी चाहिए और न्याय प्रियता के भाव उसके हृदय-पटल पर अङ्कित रहने चाहियें। पत्नी को चतुर होना चाहिये। वह चतुर इस लिए न हो कि आत्म सुधार करे, बल्कि आत्म त्याग करने में ही उसकी चतुरता है। वह चतुर इसलिये न हो कि अपने पतिदेव के ऊपर अपना प्रभुत्व जमा बैठे; वरन् उसकी चतुरता इसमें है कि वह अपने पक्ष को निर्बल न होने दे। वह चतुर इसलिए भी न हो कि जिससे मन की उस अनुदार दशा को प्राप्त कर लेवे जो कि अहङ्कार के वशीभूत होकर, न किसी का सत्कार करने न किसी से प्रेम करने दे। विपरीत इसके पत्नी को इतना अधिक नम्र होना चाहिये, जिससे कि वह अन्य व्यक्तियों को लाभ पहुंचा सके। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए, उसे चाहिये कि वह हार्दिक नम्रता के भाव भी प्रदर्शित करे। निःसंदेह स्त्रियां परिवर्तन शील होती हैं। स्त्रियां हवा में उड़ते हुए पर के सदृश हलकी होती है।

इस समय तक स्त्रियों के वास्तविक स्थान और पद पर भली भाँति विचार किया है। अब हम प्रश्न करते हैं कि कौन सी शिक्षा उन्हें इन दोनों के योग्य बनाने में समर्थ हो सकती है।

क्रमशः

(अनुवादक) रघुनाथ प्रसाद
पाठक
सार्वदेशिक सभा देहली

(इस का शेष अनुवाद सार्वदेशिक में समय २ पर प्रकाशित किया जावेगा।)

अछूतों को अपनाओ

चांद के एक लेख का सारांश

यद्यपि भूमण्डल में प्रत्येक राष्ट्र उन्नति कर रहा है और अपनी राष्ट्रीयताको विस्तृत करनेका उद्योग कर रहा है परन्तु अभागे भारतवर्ष के पुत्रों ने अपनी एक बहुत बड़ी संख्या को अछूत कह कर अलग कर दिया। जब इस मूर्खता पर दृष्टि पड़ती है तो दुखी हृदय से ध्वनि उठती है।

यदि ऐसा ही रहा तो हिन्दू जाति का जीवन सचमुच ही नष्ट हो जायेगा भारत वासियों में अधिक संख्या स्त्रियों की है जिनकी उन्नति जिन की शिक्षा और जिनके विकास के लिये कोई -बंध नहीं वेह आज पर्दे में पड़ी सड़ रही हैं। अछूतों का उद्धार न करके हिंदू जाति अपनी शक्तियों की जड़ें खोखली कर रही है परमात्मा ने एक ही रक्त, माँस और आत्मा से हमें और उनको बनाया है। धर्म के पथ पर चलते हुए ७ करोड़ अभागे प्राणी इस लिए पद दलित होते हैं।

यदि हम उन दुधमुहे बालकों की ओर देखें जो अभागे पतित और कलुषित हिन्दू समाज के आगे घुटने टेक २ कर टुकड़े मांगते हैं और फिर झिड़कियां खाकर अन्त में विधर्म की शरण लेते हैं।

धर्म के उन सच्चे भक्तों का करुण दृश्य देखें और धर्म परिवर्तन के बाद ईसाई बन कर और अछूतों को ईसाई बनाने का दृश्य देख कर कलेजा मुंह को आता है।

यदि हम आज हिन्दू अछूतों की दशा पर विचार करें और फिर उनकी नवीन शिष्टता सुन्दर आचरण और आश्चर्य जनक परिवर्तन पर विचार करें तो हमें प्रतीत हो जावेगा कि यह तिरस्कार का परिणाम है जो उच्च हिन्दू जाति के यहां उनका होता है।

उनका हिन्दुओं के अत्याचार से लाचार हो कर ईसाई धर्म को आलिङ्गन करने की भयानक उत्सुकता में हमें हिन्दू जाति की मृत्यु दिखाई देती है यह हिन्दू जाति के प्राण हैं प्राण खोकर या धर्म के नाम पर अन्याय करके भली भांति पता लगेगा कि हिन्दू जाति के नाश करने वाले ईसाई या मुसलमान नहीं किन्तु हिन्दू ही हैं। यद्यपि यह कोई नवीन बात नहीं है कि इस समय ही

जाति में दोष है किन्तु सदा से ही बिगाड़ और सुधार चला आता है हमारे देश में बड़े २ सुधारक भी हुए है जिन्होंने काया पलट दी है। भगवान बुद्ध शङ्कराचार्य आदि।

पतन उत्थान का कारण बनता है परन्तु इस पतन का दूसरा एक स्वरूप भी है वह अन्धकार से अधिक काला है हिन्दू धर्म विश्व धर्म कहलाता है।

हिन्दुओं को घृणा और द्वेष से बहुत दूर माना जाता है फिर शक की बात है कि यह क्या अत्याचार हो रहा है हमारे भोजन में से कुत्ते कव्वे तो भाग पाते हैं किन्तु कौन नहीं पाते ? भारत माता के सच्चे लाल जिनके शरीर हमारी तरह हो हैं और जिनका अर्थ हिन्दू धर्म है क्या हमें मरती हुई हिन्दू जाति को इस उपहास से बचाना होगा ? अवश्य बचाना होगा यही हमारा कर्त्तव्य है।

समालोचना

संध्या-प्रदीपिका—श्रीयुत मास्टर नत्थन लाल अध्यापक गवर्नमेन्ट हाईस्कूल शिमला प्रणीत मूल्य सजिल्द १) लेखक से प्राप्य—

संध्या के मन्त्रों के अर्थ विस्तृत व्याख्या के साथ किये गये हैं—मन्त्रों के अर्थ करते हुए उन के आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधि-भौतिक, तीनों प्रकारके अर्थ दरशाये गये हैं--

व्याख्या उपयोगी और सन्ध्या के अनुष्ठान करने वालों के लिये काम की चीज है-विस्तृत भूमिका से पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है-पुस्तक प्रत्येक प्रकार से अच्छी हैं बस एक ही बात है जो पुस्तक के देखने से देखने वाले को कष्ट देती है और वह है ६ पृष्ठ का शुद्धि पत्र प्रूफ़ देखने में सावधानी होनी चाहिये थी।

आर्यसमाजके नियमोंकी विस्तृत व्याख्या-अंग्रेजीमें (The Ten Commandments of Dayananda) श्रीयुत पं० चमूपति जी एम० ए० कृत-मूल्य १) आर्य पुस्तकालय अनार कली लाहौर से प्राप्य—

पुस्तक की छपाई, कागज और जिल्द सभी अच्छी हैं--नियमों की व्याख्या बड़े विद्वत्ता से की गई है—प्रत्येक नियम के साथ वेद मन्त्र दिये गये हैं जिस से उनकी वेद मूलकता प्रकट होती है पुस्तक इस योग्य है कि उसका देश और विदेश में अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिये।

भारतवर्ष का इतिहास (द्वितीय खण्ड) आचार्य रामदेव जी लिखित मूल्य १॥) गुरुकुल कांगड़ी बिजनौर से प्राप्त।

लेखक ने यह इतिहास लिखकर आर्य जाति के साहित्य की एक बड़ी कमी को पूरा करने का यत्न किया है। यह इतिहास महाभारत काल से आरम्भ होकर प्राग्बौद्ध काल तक का है।

पहले भाग में महाभारत कालीन सभ्यता का वर्णन ५ अध्यायों में विस्तार के साथ किया गया है।

दूसरे भाग में भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों के राजाओं की नामावली उनके राज्य काल सहित दी गई है।

तृतीय भाग में शुक्रनीतिसार कालीन भारत का वर्णन भी विस्तार से किया गया है।

चौथे भाग में भारतीय सभ्यता के विदेशों में फैलने का वर्णन प्रमाण सहित किया गया है। कागज और छपाई अच्छी और पुस्तक संग्रह करने के योग्य है।

पुस्तक के सम्बन्ध में दो बातें हैं जो पुस्तक पढ़ने से अखरती हैं उनका जिक्र कर देना भी उचित प्रतीत होता है।

(१) लेखक ने पश्चिमी ऐतिहासिकों से मत-भेद प्रकट करते हुये महाभारत का काल ईसा से ३१०० वर्ष पूर्व माना है और इसके लिए उसने

भूमिका में केवल इतना लिख देना पर्याप्त समझा है कि "मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि महाभारत का महायुद्ध ईसवी सन् से ३१०० वर्ष पूर्व हुआ था" इस विषय में हम लेखक से सहमत होते हुए भी यह कह देना आवश्यक समझते हैं कि हमारी सम्मति में इतना लिखना काफी नहीं हो सकता इस विषय में भूमिका में बिस्तार के साथ दिखलाना चाहिए था कि क्यों पश्चिमी लेखकों का निर्णित काल ठीक नहीं है।

(२) दूसरी बात महा भारत कालीन सभ्यता से संबंधित है—इस सभ्यता का वर्णन करते हुए लेखक ने ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त ग्रन्थ को प्रमाणिक या कम से कम व्यास काल का मान लिया है— लेखक ने महाभारत कालीन सभ्यता का वर्णन करते हुए मंत्री बशी करण (व्रत तप मन्त्र औषधि, विद्या, जादू होम या उपचार से पति का बशी करण) नरबलि अशकुन, दासी दान, छाती पीट कर रोना, यज्ञ में पशु हिंसा, ७ और १० बर्ष तक की कन्याओं के विवाह आदि आदि अनेक विषयों का उस में समावेस किया है। जिस का अभिप्राय यही हो सक्ता है कि ये और इस प्रकार की अनेक प्रथायें महाभारत काल में देश में प्रचलित थीं-परन्तु असली बात यह हैं कि यह कहा नहीं जा सक्ता कि इन बातों का समावेश महाभारत में कब हुआ-पूना की विख्यात गणेश बिष्णु चिपलूणकर गपाखि कम्पनी ने महाभारत को १० जिल्दों में मराठी भाषा में प्रकाशित किया है। दसवीं जिल्द में महाभारत की समालोचना करते हुए, अनेक उपयोगी विषयों का उस में समावेश किया गया है-उसी जिल्द में पुस्कर प्रमाणोंसे यह साबित किया गया है कि महाभारत मुख्य रीति से तीन भिन्न भिन्न समयों में बना और ३ ही इसके मुख्य लेखक थे—महा भारत का आदि नाम जय काव्य था और उसके लेखक महर्षि व्यास थे और उसमें केवल ८८०० श्लोक थे—व्यास के शिष्य वैशम्पायन ने उस ग्रन्थ को बढ़ा कर २४००० श्लोकों में करके उसका नाम भारत रक्खा—उसके बाद सौति ने बढ़ाकर उसे एक लाख श्लोकों में किया और उसका नाम महाभारत रक्खा—महाभारत ग्रन्थ अपने प्रचलित रूप में, ईसा से २५० वर्ष पहले आया यह बात भली भांति सिद्ध की गई है यह स्थान नहीं है कि जहां मराठी ग्रन्थ के दिए हुए प्रमाणों और युक्तियों का उल्लेख किया जावे-जब ग्रन्थ इस प्रकार तीन भिन्न २ समयों में निर्मित हुआ है तो फिर यह कैसे कहा जा सक्ता है कि उपर्युक्त पृथायें महाभारत काल में (तात्पर्य व्यास काल से है) प्रचलित थी।

इस प्रकार का मतभेद प्रकट करते हुए भी हम लेखक को उसके प्रशंसनीय यत्न की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते और विश्वास है कि आगे के संस्करणों में यह ग्रन्थ और भी उपयोगी बनेगा।

हमारे सहयोगी

महावीर—यह भारतीय स्वाधीनता का उपासकहिन्दू संगठनका समर्थक, अत्याचार पीड़ितोंका बन्धु, देश धर्म व समाज का सेवक सचित्र साप्ताहिक पत्र पटना से निकलता है वार्षिक मूल्य ३)

शुद्धि समाचार—यह भारतीय शुद्धि सभा देहली का मासिक मुख पत्र है--जुलाई का अङ्क हमारे सामने है-शुद्धि से सम्बन्धित लेखों तथा समाचारों का संग्रह है—पत्र के सम्पादक श्री स्वा० चिदानन्द जी महाराज हैं-वार्षिक मू० १) मात्र।

आर्य—आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब का साप्ताहिक मुख पत्र है--इस में वैदिक सिद्धान्तों पर अच्छे २ लेख निकलते तथा उनकी विस्तृत गवेषणा की जाती है, अन्य प्रचलित समाजों पर भी काफी प्रकाश डाला जाता है, पत्र का मूल्य ४) वार्षिक पत्र गुरुदत्त भवन लाहौर से प्राप्त होता है।

सम्पादकीय विचार-धारा

घटनाचक्र

गत मास आर्य समाज के इतिहास में विशेष महत्वपूर्ण समझे जायेंगे। सम्प्रदायों या धार्मिक संस्थाओं के जीवन में जिस प्रकार के भयङ्कर समय आया करते है, आर्यसमाज के जीवन में वैसा समय आने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। इन महीनो में कई घटनायें ऐसी हुई हैं, जिनसे यह परिणाम निकालना कठिन नहीं है कि आर्य पुरुषों की विकट परीक्षा का समय निकट आ गया है। तीन घटनायें एक दूसरे के पीछे संगठित हुई हैं। बहरायचके पं० बद्रीशाह और अजमेर के श्रीयुत भरौसिंह को मुसलमानों ने निर्दयता से मार डाला और बरेली में आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के गौरव को गहरा धक्का पहुँचाया गया। घटनाओं का विस्तृत विवरण पाठक दूसरी जगह पढ़ेंगे। इन समाचारों ने आर्यजगत् में खलबली पैदा करदी है। केवल आर्य जगत् में ही नहीं समस्त हिन्दू संसार मे इनसे उत्तेजना फैल गई है। यह तीनों घटनायें देखने में दो प्रकार की हैं, परन्तु वस्तुतः यह एक हो ढंग की हैं। दो तो व्यक्तियों के बध हैं, और तीसरा सोसायटी तथा समाज मन्दिर का अपमान है, परन्तु तीनों घटनाओंकी तहमें दो समानभाव काम करते हैं। वह दो भाव यह हैं। मुसलमानों के हृदय में आर्य समाज और आर्य समाजियों के प्रति इतनी घृणा और क्रोध का भाव पैदा कर दिया गया है कि वह इस्लाम की रक्षाका केवल एक उपाय समझते हैं और वह उपाय है आर्यसमाज तथा आर्यसमाजियों का सर्वनाश; सरकार के हृदय में मुसलमानों को प्रसन्न करने की लालसा के साथ साथ आर्य समाजियों से छुपा हुआ रोष का भाव उत्पन्न हो गया है। मुसलमानों का क्रोध और सरकार की मुसलिम-पक्षपातिनी नीति मिलकर आर्य समाज की स्थिति को भयङ्कर बना रहे हैं।

हत्यायें

धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा आर्य पुरुषों की हत्या का प्रारम्भ आज नहीं हुआ। वह चिर काल से हो चुका है। उसका श्री गणेश लाहौर में धर्मवीर पं० लेखराम की हत्या के साथ हुआ था। बीच में कुछ समय के लिए मुसलमानों की क्रौधाग्नि शान्त हुई परन्तु शुद्धि का आन्दोलन आरम्भ होने पर वह और भड़क उठी। मुसलमान नेताओं और मुल्लाओं के उत्तरदायित्व हीन और विषैले आन्दोलनों ने सर्व साधारण मुसलमानों के अन्धे जोश को इतनी दूर तक पहुंचा दिया कि उसका किसी न किसी रूप में फूटना अनिवार्य हो गया। अन्त को वह श्री स्वामी श्रद्धानन्द जो की शहादत के रूप में फूट पड़ा। केवल भारतवर्ष ही नहीं, सारा सभ्य संसार उस कायरतापूर्ण हत्या के समाचार से प्रकम्पित हो उठा। हत्या सचमुच अमानुषिक नृशंसता और कायरता से भरी हुई थी। यह भी स्पष्ट था कि इतने बड़े व्यक्ति की दिन दहाड़े हत्या किसी एक आदमी के विचार का परिणाम नहीं हो सकती। भारत के शासन का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर है। अंग्रेज जाति मतभेद या नीतिभेद के

कारण जो हत्यायें होती हैं, उन्हें कभी सहन नहीं कर सकती। क्या विलायत में और क्या भारत वर्ष में ब्रिटिश शासकों का यह व्यवहार रहा है कि जहां कोई इस प्रकार की हत्या हुई कि सरकार की सम्पूर्ण मशीनरी को लगा कर पाप की बुनियाद को उखाड़ने का यत्न किया जाता है। बङ्गाल ही में लीजिये। एक मि० दे० की मृत्यु पर फांसियों कैदों और नजरबन्दियों का ऐसा तांता लगा कि आज तक बङ्गाल का विक्षत शरीर छटपटा रहा है। एक जाति और सोसायटी के प्रतिष्ठित नेता की दिन दहाड़े हत्या की जाती है, और देश भर से आवाज उठती है कि अपराधियों को सजा दी जाय, परन्तु ब्रिटिश सरकार क्या करती है? केवल उस आदमी को गिरफ्तार करती है जिसने गोली चलाई थी, और सन्तुष्ट हो जाती है। जिन लोगों ने उसे भड़काया, ढङ्ग बतलाया, समझा दिया, और पीछे से उसे छुड़ाने का यत्न किया, वह सब बेदाग़ बच गये। यदि कहीं किसी थानेदार या तहसील के चपरासी का बध हुआ होता तो अपराधियों और षड़यन्त्रकारियों के अतिरिक्त दस बीस निरापराध धर दिये जाते. परन्तु यहां तो केवल एक आर्य समाजी का बध था। एक आदमी को सजा दिलाना काफी से अधिक समझा गया। सरकार की उस उपेक्षा का ही परिणाम है कि शरारती लोग अपनी शरारतों और चालबाजियों में निडर होकर लगे हुए हैं और आर्यसमाजियों की हत्या एक खिलवाड़ हो गई है। इस प्रकार मुसलमानों का धार्मिक दीवानापन और सरकार की मुस्लिम पक्षपातिनी नीति दोनों ही इन हत्याओं का कारण हैं।

आर्यसमाज का अपमान

बरेली में आर्यसमाज और आर्य समाजियों पर जो बीती या बीत रही है, वह भी मुसलमानों के धार्मिक दीवानापन और सरकार की नीति का ही फल है। आर्यसमाज का साप्ताहिक अधिवेशन हो रहा है। बाजे के साथ भजन गाना साप्ताहिक सत्संग का एक भाग है। ताज़ियों के साथ छाती कूटने वाली भीड़ को साथ लेकर मुसलमान कोतवाल और तहसीलदार मन्दिर में घुस जाते हैं—और जूतों समेत वेदी पर चढ़कर आर्य पुरुषों के हृदयों पर आघात पहुंचाते हैं। अधिकारियों के इस पाशविक व्यवहार से उत्साहित होकर मुसलमान शहर भर के हिन्दुओं पर टूट पड़ते हैं और बहुतों को जख़्मी करते हैं। मार खाने के अपराध में बेचारे आर्यसमाजी समाज मन्दिर में गिरिफ़्तार किये जाते हैं, और दो दिन तक तालों में बन्द रखे जाते हैं; उन्हें जमानत पर नहीं छोड़ा जाता। गिरिफ़्तार किये गए कई आर्य पुरुषोंके गलेमें से बलात्कार द्वारा जनेऊ उतारा जाता है। सार्वदेशिक सभा की ओर से स्वामी रामानन्द जी बरेली जाकर कलेक्टर से मिलते हैं तो वह उन्हें बेइज्जत करता है और जबर्दस्ती बरेली से दिल्ली भेज देने की धमकी देता है। यह सब कुछ क्या है? मुसलमानों ने आर्यसमाज को कुचलने का निश्चय कर लिया है, और सरकार मुसलमानोंको नाखुश करना नहीं चाहती। बरेली में जो हुआ, सब इसी का परिणाम है। यदि यह मान भी लें कि आर्यसमाज में ताजिये निकलने के समय बाजा नहीं बजना चाहिये था तो क्या हम पूछ सकते हैं कि मन्दिर में कोतवाल या तहसीलदार का अकेले न जाकर भीड़ को साथ लेजाना और वेदी पर जूतों सहित चढ़ जाना कहां तक उचित था? फिर जब आर्य पुरुषों ने बाजा बन्द कर दिया था तो उन्हें गिरिफ़्तार करने का क्या अभिप्राय था और उन में से कुछेक के जनेऊ उतरवाने का कार्य किस कानून के अनुसार हुआ? यदि सरकार आर्यसमाज के अधिकारों की ओर से इतनी उदासीन न होती तो बरेली की दुर्घटना कभी घटित न होती।

सरकार का कर्तव्य

उस दशामें अंग्रेजी सरकार का क्या कर्तव्य है? यदि वह अपनी मुस्लिम पक्षपातिनी नीति को जारी रखने में अपना भला समझती है तो हमे कुछ वक्तव्य नहीं है। स्वाभाविक ही है कि सरकार वह कार्य करे जिस से उस का राज्य भारत में स्थायी रूप से कायम रहे। हमे तो सम्भव दिखाई नहीं देता है कि अंग्रेज ३० करोड़ की आबादी में से केवल सात करोड़ को अपना कर स्थायी रूप से भारत में शासन कर सकेंगे। परन्तु फिर भी अपने भले बुरे का निर्णय सरकार स्वयं कर सकती है। परन्तु यदि हमारी आशा निर्मूल है और अंग्रेजी सरकार प्रजा के एक बड़े भाग को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखना चाहती, और न्याय का कुछ आदर करना चाहती है तो उसे सार्वदेशिक आर्य सभा के प्रस्तावके अनुसार उन अधिकारियों को उचित दण्ड देना चाहिए जिन्हों ने धर्म की मर्यादा का उल्लङ्घन करके आर्य पुरुषों के धार्मिक भावों को आघात पहुंचाया है। यदि इस समय सरकार झूठे गौरव की रक्षा के विचार से मौन रही, और केवल लीपा पोती पर ही बस की तो असम्भव नहीं कि भारत में अनेक स्थानों पर बरेली जैसी दुघटनायें हों। माना कि आर्य समाजी थोड़े हैं और यह भी माना कि उन को नाराज करने से सरकार अपनी कोई विशेष हानि नहीं समझती परन्तु भारत का शासन करने वाले महानुभावों को स्मरण रखना चाहिए कि छोटी से छोटी सोसाइटी को भी यदि सीमा से अधिक दबाया जाय तो वह विरोधी यत्नों के होते हुए भी भयानक रूप धारण कर सकती है। जिस धार्मिक समुदाय को अत्याधिक दबाया जाय, उसकी दो में से एक गति होनी चाहिये। या तो वह मर जाय और या अवस्थाओं से बाधित होकर जवाब देने पर उतारू हो जाय। सरकार और मुसलमान स्मरण रखें कि अब आर्य समाज का मरना असम्भव है। यदि उसे मरना होता तो अब से बहुत पहले मर चुका होता क्योंकि उस समय मुसलमानों और ईसाइयों की तरह पुराने विचार के हिन्दू भी उसके जानी दुश्मन थे। अब स्थिति बदल गई है। २३ करोड़ हिन्दू आर्य समाज की पीठ पर हैं। अब उसके मरने की सम्भावना नहीं है। दूसरी सम्भावना यह है कि अधिक अत्याचारों की चोटें खाकर उसका शान्त जाता रहे। कोई भी आर्य समाज का हितैषी पसन्द न करेगा कि यह सुधारक संस्था अपने शान्तिमय मिशन को छोड़ कर अशांतरूप धारण करे, परन्तु यदि सरकार ने धर्म का व्यतिक्रम करने वाले अफसरों या आततायियों को संयम में लाने का यत्न न किया तो अनिष्ट परिणाम उत्पन्न होने की पूरी सम्भावना है। हमें आशा है कि भारत के शासक अपनी उत्तरदायिता को भली प्रकार समझते हुए झूठे गौरव की पर्वा न करके अपराधियों को सजा देंगे जिससे आर्य पुरुषों के घायल हृदयों का घाव भर जाय।

बरेली दिवस और कान्फ्रेन्स

हम सब आर्य पुरुषों का ध्यान सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा के उन प्रस्तावों की ओर खेंचते हैं, जो उसने २४ जुलाई के अधिवेशन में स्वीकार किये हैं। ७ अगस्त को भारत भर में बरेली दिवस मनाया जायगा जिसमें आर्य जनता के असली हार्दिक भाव प्रकाशित किये जायंगे। सितम्बर के अन्त में या अक्टूबर में दिल्ली में एक विशाल कान्फ्रेंस होगी जिसमें भूमण्डल भर के आर्य प्रतिनिधि इकट्ठे होकर वर्तमान परिस्थिति पर विचार करेंगे। यह दोनों निश्चय महत्वपूर्ण हैं। इन कार्यों का महत्व समझते हुए आर्य पुरुष सफ-

लता पूर्वक सम्पादन में कोई कसर न छोड़ेंगे, इसकी हमें आशा ।

पं० धर्मेन्द्रनाथ जी की धर्मपत्नी की अकाल मृत्यु

यह समाचार सुनकर प्रत्येक आर्य को हार्दिक दुःख होगा कि सार्वदेशिक सभा के गत वर्ष के उप मन्त्री, सार्वदेशिक के सम्पादकों में से अन्यतम गुरुकुल बृन्दावन के सुयोग्य स्नातक पं० धर्मेन्द्र नाथ तर्क शिरोमणि एम० ए० शास्त्री की सुयोग्य धर्मपत्नी श्रीमती ज्योत्स्नादेवी का क्षयरोग से अकाल में ही स्वर्गवास होगया। वह एक सुपठित सुशील और उत्साह पूर्ण महिला थी। पं० धर्मेन्द्र नाथ जी उनकी योग्यता को और अधिक बढ़ाने का यत्न कर रहे थे। इसी बीच में यह आपत्ति आगई। इस कष्ट में आर्यसमाज की पण्डित जी से सहानुभूति है। परमात्मा उनके हृदय को शांति प्रदान करे।

सार्वदेशिक के सम्बन्ध में दो शब्द

यह सार्वदेशिक का पाँचवाँ अङ्क है। पिछले चार अङ्कों तथा इस अङ्क के देखने से आर्य जनता को पता लग गया होगा कि सार्वदेशिक किस सीमा तक उन्नति कर रहा है। इसके लेखादिकों में किस प्रकार उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इस बात का अन्दाजा भी निष्पक्ष महानुभाव लगा चुके होंगे, ऐसी हमें पूर्णाशा है।

हम इस बात को जानते हैं कि "सार्वदेशिक" में अभी तक यथा नाम तथा गुण की कहावत चरितार्थ नहीं हो सकी है। इसका मुख्य कारण यह है कि अभी यह पत्र अपनी शैशवावस्था में है और उसे आर्यजनता की ओर से वह प्रोत्साहन नहीं मिल रहा है जो इसकी वृद्धि के लिए अत्यावश्यक समझा जा सकता है, तिस पर भी यह अपने कर्त्तव्य के पालन करने में सावधान है और यह हमबलपूर्वक कह सकते हैं कि भविष्यत् में रहेगा भी। आर्यजनता को भी अवश्य ही सार्वदेशिक के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। आर्य जनता के इसके प्रति अन्य कर्त्तव्यों में से हमदो कर्त्तव्यों को मुख्य समझते हुए उन्हीं का उल्लेख करना उचित समझते हैं।

ये दो कर्त्तव्य ये हैं:—

(१) प्रत्येक आर्यसमाज, प्रत्येक आर्य संस्था जिसमें आर्य पुस्तकालय, पाठशाला, वाचनालय, स्कूल, हाई स्कूल, कालेज, इत्यादि सम्मिलित हुई समझी जा सकतीं है, उसको वही सम्मान दे जो वह अन्य पत्र वा पत्रिका को इस समय दे रहे हैं अथवा भविष्यत् में देने का विचार रखती हो। प्रत्येक आर्य परिवार में सार्वदेशिक का यथोचित स्वागत किया जाना चाहिये। यह क्यों? इसका उत्तर इस समय यही दिया जा सकता है कि सार्वदेशिक भूमण्डल के आर्यसमाजों की सर्वशिरोमणि सभा का मुख्यपत्र है। आर्यजगत् में जो भी कोई क्रान्ति होगी भले ही वह सामाजिक वा धार्मिक हो उसपर जो भी लोकमत एकत्रित किया जावेगा उसकी सूचना सार्वदेशिक के स्तम्भों द्वारा दी जावेगी। सार्वदेशिक विषयों की सूचना आदि समस्त बातें सार्वदेशिक के द्वारा ही आर्य जनता तक पहुँचाई जाया करेंगी और इसी के द्वारा उनके सम्बन्ध में समय समय पर आवश्यक और दी जाने योग्य सूचनायें भी दी जाया करेंगीं।

(२) सार्वदेशिक के प्रति दूसरा कर्त्तव्य आर्य विद्वानों, नेताओं आर्य संस्कृतिके रक्षकों और विदुषियों का पालन करना होगा। इनके लेखों, उनकी अमूल्य सम्मतियों, और सार्व-देशिक उपयोगिता से सम्बन्धित उनकी अनुमतियों आदिकों का स्वागत करने के लिए सार्वदेशिक बाधित रहेगा।

इसी सम्बन्ध में हम आर्य जनता को यह हर्ष समाचार भी सुना देना उचित समझते हैं कि "सार्वदेशिक" का विदेशों में भी सम्मान होना आरम्भ हो गया है और इसी भाव को लेकर "सार्वदेशिक अपने बड़े भाग के साथ प्रत्येक मास विदेशों के आर्य समाचारों के साथ आप के पास पहुंचा करेगा। श्री स्वामी भवानी दयालु प्रवासी जो सभा की ओर से दक्षिणी और पूर्वीय अफ्रीका में प्रचारार्थ जा रहे है और जो नैटाल से निकलने वाले "हिन्दी" नामक पत्र के वर्षों तक सम्पादक भी रह चुके हैं, सार्वदेशिक के लिए प्रतिमास वहां के विस्तृत सामाजिक समाचार भेजते रहा करेंगे। उस समय सार्वदेशिक में यथा नाम तथा गुण की कहावत अवश्य चरितार्थ होगी।

सार्वदेशिक सभा और देशान्तर प्रचार

जहाँ तक देशान्तर प्रचार से सम्बन्ध है, सार्वदेशिक सभा आर्य जनता के एक बड़े भाग की आलोचनाओं और प्रत्यालोचनाओं का विषय कुछ काल तक बनी रही है—"सार्वदेशिक" सभा पर यह दोषारोपण किया जाता रहा है कि उस ने शताब्दी महोत्सव के बाद, देशान्तर प्रचार की अवहेलना की है। आर्य जनता ने देश देशान्तर प्रचार के लिये शताब्दी महोत्सव पर, काफी धन दिया तो भी शताब्दी सभा की उत्तराधिकारिणी सार्वदेशिक सभा ने देश देशान्तर प्रचार की ओर कदम नहीं बढ़ाया—आदि २ बातें सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध में सुनने में आती रही हैं।

आर्य जनता ने शताब्दी महोत्सव पर ५ लाख की अपील के पूरा करने में जो उत्साह प्रगट किया और जो भी धन शताब्दी सभा के कोष में आया था उसकी सूचना समय पर आर्य जनता को दी जा चुकी है। जो धन इस अपील के उत्तर में प्राप्त हुआ था वह इतना अपर्याप्त था कि उस से भारतवर्ष के बाहर विदेशों में वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कराना एक बड़े पैमाने पर इस सभा के लिये दुष्कर प्रतीत होता था। तो भी विदेशों के २० लाख प्रवासी भारतीयों तक वैदिक धर्म का पुनीत सन्देश न पहुंचा कर उनके प्रति धार्मिक अत्याचार करना था।

इस प्रकार की आर्थिक तथा अन्य प्रकार की कठिनाइयों के समुपस्थित रहते हुए भी, प्रशंसित सभा ने प्रवासी भाइयों में वैदिक धर्म का प्रचार करना अन्त में निश्चय ही कर लिया। तदनुकूल प्रसिद्ध प्रवासी नेता श्री पं० भवानी दयालु जी ने जो नेटाल से हबीबुला डेपुटेशन के एक सदस्य होकर भारत में पधारे थे और जिन्होंने गत रामनवमी पर संन्यास ग्रहण किया है और जो इस समय स्वामी भवानीदयालु संन्यासी के नाम से प्रख्यात हैं और जो अपने चिरसेवितराजनैतिक क्षेत्रसे हटकर सामाजिक क्षेत्र में आना चाहते थे, सभा के सम्मुख अपने विचार को रक्खा। सभाने उनके विचार और उत्साह का जिसके साथ वे अपने उन प्रवासी भाईयों के अन्य वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते थे जिनके मध्य में रहकर उन्होंने वर्षों पर्य्यन्त उनकी दशा का अनुशीलन किया था भली भाति स्वागत किया और उन्होंने दक्षिण व पूर्वी और अफ्रिका में वैदिक धर्म प्रचारार्थ भेजना निश्चय किया। प्रशंसित स्वामी जी २० ता० को खण्डाला नामक जहाज पर सवार हो मातृभूमि को प्रणाम कर वैदिक धर्म के पुनीत सन्देश के साथ अफ्रीका को प्रस्थान कर गये।

आर्य वीर दलों की जरूरत

लेखक—श्री मा० आत्माराम जी अमृतसरी

कुछ दिन हुए कि पं० इन्द्र विद्या वाचस्पति जी ने एक उत्तम लेख सार्वदेशिक में लिखा था जिस में आ० वीर दलों के लाभ दर्शाते हुए उन की स्थापना पर जोर दिया था। इनकी जरूरत निसंदेह है ऐसा मेरा भी विचार हैं मेरी सम्मत्ति में आर्य अनाथालयों से हम उक्त वीर दल अभी बन सकते हैं। आर्य अनाथालयों के सुधारकी भी इस समय हमें जरुरत है। यथा

(१) अनाथालय का नाम जाति बन्धु आश्रम होना चाहिए। अनाथ शब्द का प्रभाव बालक के मन पर अच्छा नहीं पड़ता। जाति बालक जाति बालिका, जाति बन्धु, जाति भगिनी यह शब्द अनाथों के लिए भविष्य में काम लाने अधिक उत्तम होंगे।

(२) वैदिक द्विज यज्ञ करते थे और यज्ञ के अर्थ होम के अतिरिक्त नाना प्रकार के शिल्प, धन्दे तथा श्रम के भी हैं। इस लिए प्रत्येक वैदिक द्विज को शिल्प वा यन्त्र का काम भी यज्ञ के रूप में सीखना होगा। आर्य अनाथालयों में चारों वर्णों के जो बालक आते हैं-उनको हम वैदिक द्विज तबही बना सकते हैं जब वह शिल्प आदि सीखें। इस लिए रोटी पकाना, घर बनाना, खेती करना, कपड़े धोना, कपड़े सीना, प्रेस चलाना कपड़े बुनना, सूत कातना. मिठाई बनाना, सुनार, लोहार बढ़ई, को काम, गो सेवा, गो रक्षा.दुधालय खोलना, दूधबेचना इत्यादि अनेक धन्दे तथा शिल्प हम उन को सिखा सकते हैं। इस से वह अपना खर्च भी आप निकाल सकेंगे।

(३) जो लड़के रुचि से तीर चलाना, कुश्ती लड़ना, लाठी चलाना, गतका फेरना आदि वीर काम कर सकें उनको आर्य वीर दलों में भरती करना चाहिये। वह रात दिन तो जातिबन्धु-आश्रम में रहें पर सप्ताह में दो बार पुरुष तथा स्त्री समाज की रक्षा के लिए तीन वा ४ घण्टों के लिए नियुक्त किये जा सकते हैं। जो बालक पढ़ाने पर उत्तम मेधावी प्रतीत हों उनको उपदेशक वा पुरोहित आदि बना सकते हैं। धंधे वा शिल्प ब्राह्मण बनने वाले बालकों को भी जरूर यज्ञ का अङ्ग समझ कर सीखने चाहियें। विदित हो कि आयुर्वेद में लिखा है कि जो वैद्य परोपकार दृष्टि से अपना धन्दा करता है वह ब्राह्मण है। जो वैद्य राज्य सेवा वा यश के लिए अपना धन्दा करे उसको क्षत्रिय कहना चाहिये। जो वैद्य धन कमाने के मुख्य उद्देश्य से अपना धंदा करे उसको वैश्य मानो। इस लिए एक ही धंदा करते हुए भाव वा उद्देश्य के तीन वर्ण पृथक् हो सकते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के सम्मु० ४ में ब्राह्मण के लिए जो यज्ञ करना महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है उसमें उन्होंने होम के अतिरिक्त शिल्प आदि का भी उत्तम समावेश किया है, इसलिए जिस प्रकार मनुजी के काल में विमान रचने वाले उच्च इञ्जिनियर उच्चकोटि के सात्विक पुरुष वा ब्राह्मण बनते थे उसी प्रकार अब भी जब तक न होंगे तब तक स्वदेश नहीं सुधरेगा।

सार्वदेशिक अंतरंग सभा

समय १ बजे दिन
स्थान—श्रद्धानन्द बलिदान भवन
तिथि—२४--७--२७

उपस्थिति—[१] श्री नारायण स्वामी जी प्रधान
[२] प्रो० इन्द्र स० मन्त्री
[३] ला० ठाकुरदास जी
[४] ला० ज्ञानचन्द जी
[५] ला० नारायणदत्त जी
[६] बा० श्रीराम जी
[७] श्री स्वामी रामानन्द जी

(१) आर्यसमाज बरेली का विषय पेश हुआ बरेली आर्यसमाज और आर्यसमाजियों पर गत मुहर्रम के दिनों में मुसलमानों और सरकार के कुछ कर्मचारियों की ओर से जो दुर्व्यवहार हुआ है तथा उसके पीछे जो परिस्थति पैदा हुई है उस की रिपोर्ट श्री नारायण स्वामी जी प्रधान सार्वदेशिक सभा और स्वामी रामानन्द जी ने पेश की और निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार हुए:—

(१) बरेली की दुर्घटना के समाचार पढ़कर सभा को महान् दुःख हुआ—सभा की सम्मति में शहर कोतवाल और तहसील दार का जूते पहने वेदी पर चढ़ जाना साप्ताहिक अधिवेशन में विघ्न डालना फिर निरपराध आर्य पुरुषों को गिरफ़्तार करना, बारहदरी के पुलिस इन्सपेक्टर का आर्य पुरुषों के जनेऊ उतरवाना अन्याययुक्त बलात्कार पूर्ण कार्य था और साथ ही धार्मिक कार्य में हस्तक्षेप और धर्म का अपमान था इससे आर्य जगत में गहरा असन्तोष फ़ैला हुआ है, अतः सभा गवर्नमेंट से आशा करती है वह इन सब अन्याय पूर्ण कार्यों के उत्तरदाता अधिकारियों तथा अन्य अपराधियों को उचित दण्ड देकर आर्य पुरुषों के घायल हृदयों को आश्वासन देगी और भविष्य के लिये भी ऐसे आदेश देगी कि ऐसे अनियम कार्य असम्भव हो जाय।

(२) सब नगरों और ग्रामों में ७ अगस्त १९२७ रविवार के दिन सार्वजनिक सभायें की जायं जिनमें हिन्दू, सिक्ख, जैनी, पारसी आदि समस्त आर्य लोग निमन्त्रित किये जायं सभाओं में बरेली सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार करके भारत सरकार प्रान्तीय सरकार तथा पत्रों को भेजी जायं।

(३) आर्य समाज की वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने और आर्य जनता की सम्मति को प्रकाशित करने के लिए सितम्बर या अक्टूबर में दिल्ली में आर्य पुरुषों की एक कान्फ्रेंस की जावे जिसके प्रबन्ध के लिए एक स्वागत कारिणी सभा संगठित की जावे-स्वागत कारिणी के संगठन के लिए एक सबकमेटी निम्न महानुभावों की बनाई जाय--

(क) स्वा० रामानन्द
(ख) प्रो० इन्द्र

(४) पंजाब की पार्टियों के विषय में श्री प्रधान जी की रिपोर्ट पेश हुई।

(५) नोटिस का विषय नं० २ पेश हुआ और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि चूंकि पं० इन्द्र जी इस समय सार्वदेशिक का सम्पादन कर रहे हैं इस लिए भविष्य में पत्र पर सम्पादक का उन्हीं का नाम छपा करे—

(६) म० आर० नटेशन का पत्र पेश हुआ और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि उन्हें लिखा जावे कि सभा उन्हें केशरी पत्र के सम्बन्ध में अधिक आर्थिक सहायता के देने में तो असमर्थ है-पत्र के निकलने पर उसे देख कर सभा २००) तक वार्षिक सहायता दे सकेगी।

(अपूर्ण)

बरेली में आर्यसमाज पर आक्रमण

मुहर्रम के अवसर पर १० तारीख को बरेलीमें जो हिंदू मुसलमानों में झगड़ा होगया था उसकी विस्तृत रिपोर्ट श्री स्वामी रामानन्दजी ने समाचार पत्रोंकोभेजी है। रिपोर्टका सराँश निम्नलिखित है-

बरेली में मुहर्रम के अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर में १२ आर्य भाइयों को स्थानोय सरकार ने गिरफ्तार किया था।

बरेली में हिन्दू मुसलमानों का जो झगड़ा हुआ वह एक हिन्दू विवाह के बाजे के सम्बन्ध में था। वे इन दिनों आर्य समाजियों से विशेष चिढ़े हुए प्रतीत होते थे क्योंकि वहां के प्रत्येक विवाह के जुलूस के साथ आर्य अनाथालय का बैंड प्रातः होता था। स्थानीय मुसलमा। कोतवाल भी आर्य समाजियों के और विशेषतः डा० श्यामस्वरूप जी के बहुत विरुद्ध हैं क्योंकि डा० जी ही हिन्दुओं में एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर स्थानोय हिंदू जनता को यह विश्वास है कि ये हमारी मान रक्षा कर सकेंगे। इन्हीं दिनों स्थानीय पुलिस ने यहां के दलित जातियों के मामलों में भी आर्यसमाज के कार्य कर्त्ताओं पर एक मुकदमा चलाया हुआ है।

यहां आर्यसमाजका अधिवेशन प्रत्येक रविवार को हुआ करता है। और कार्यवाही होने से पूर्व भजन आदि हुआ करते हैं। १० को रविवार होने से इस दिन भी सब कार्यवाही वैसेही हुई। लगभग ८॥ बजे नायब तहसीलदार समाज मन्दिर में आये और कहने लगे कि ५ मिनट के लिए बाजा बन्द कर दो ताकि मुसलमानों का जुलूस गुजर जाय।

इस पर कई सदस्यों को बहुत बुरा मालूम हुआ फिर भी उनके विरोध को दबाकर बाजा बन्द करदिया गया। मन्दिर में उस समय ३० आदमी होंगे इन में बच्चे भी थे। मेम्बरों ने अपने नाम बतला कर २-४ बातें ही की होंगी कि कोतवाल साहब मन्दिर में घुस आए और जूते सहित वेदी पर जा खड़े हुए। इनके साथ ही लगभग दो सौ मुसलमान और अन्दर घुस आए और समाज के सभ्यों को चारों ओर से घेर लिया। कोतवाल ने आकार बड़ी गुण्डेशाही की और चिढ़ाने वाली आवाज में बकना शुरू किया। उन के इस रुख से मुसलमानों के हौसले भी बढ़ गए। गोपेश्वर बाबू वकील ने जब देखा कि मामला बढ़ता जा रहा है तो उन्होंने कोतवाल से कहा कि यहां बाजा बन्द है पर आप समाज मन्दिर से इन मुसलमानों को बाहर कीजिए। इस पर कोतवाल साहब ने कहा कि जो जो इस वक्त समाज मन्दिर में हैं वे अपना २ पूरा पता लिखायें।

गोपेश्वर बाबू ने कहा कि हां आपको इन सब की सूची मिल जायगी। पर आप नहीं माने और आप ने नायब तहसीलदार को वहां नियुक्त कर के कहा कि एक एक का नाम पता दर्ज करो। वहा पर एक सज्जन ने कहा कि मैं अपना नहीं दूंगा। इस पर नायब तहसीलदार एक कॉंस्टेबिल जो कि मन्दिर में रहा था तहसीलदार के पास रवाना कर दिया और आप भी वहां से चला गया जब मुसलमानों ने देखा कि अब यहाँ कोई सरकारी आदमी नहीं है तो उन्होंने ईंटें बरसानी शुरू कीं। कई गुण्डों ने चिल्ला कर कहा कि मन्दिर को फूंक दो और अन्दर वालों का कत्ल कर डालो। अन्दर के आदमियों ने दरवाजा बन्द करना चाहा परन्तु मुसलमानों की भीड़ अन्दर धंस पड़ी इतने में एक कांस्टेबिल वहां दौड़ा हुआ आया और उसने मुसलमानों को आगे शरारत करने से रोक दिया। कुछ देर बाद कोतवाल भी आया और उसने समाज के १२ मुख्य मुख्य सभ्यों को गिरफ्तार

कर लिया। थोड़ी देर में पु
पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट भी
गिरफ्तार सज्जनों को बा
पर ले जाकर सब को वैं
मालूम हुआ है कि तीन सज
पवीत उतार देने के लिए
श्री गोपेश्वर बाबू ने सब
की कि आप लोग इस बात
और यदि ऐसा आवश्यक
सब से पहले कलक्टर सा
पर पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट नह
जबरदस्ती उनके जनेऊ उतार ड
सज्जनों में २ आदमी सिंध के

दान-सूची स

श्रद्धानन्द भवन नि

दान	दाता
२॥)	म० दीवानचन्द्र एजेन्ट, ड
६३)	श्री रामगैन जी के उद्या की हिन्दु प्रजा से संग्रह
२००)	विविध दान
४६=)	श्री० ला० रामचन्द्र सहाय क उद्योग से सगृहीत

योग ३११।=)

मद्रास प्रचार व दलित

धन	दाता
९५०)	श्री० सेठ जुगलकिशो

योग ९६०)

ांच करके भजा जाता है।

ाहक महोदय को पत्र न मिले
ोस्ट आफिस में लिखा पढ़ी
पर भी न मिले तो डाक-
हेत कार्य्यालय में इस की
के अन्त तक भेजने पर दूसरी
गी।

छापना न्यूनाधिक करना
ेन है।

ार्थ पुस्तकें, परिवर्तन के पत्र
न्थ विषयक सर्व प्रकार के पत्र
पता :—

व्यवस्थाकर्त्ता-सार्वदेशिक
श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली।

ो की दर

स के लिये	१ वर्ष के लिए
४०)	७५)
२५)	४०)
१५)	२५)
८)	१५)

े =) प्रति मास लिए जायेंगे।

द्धानन्द बाज़ार, देहली से

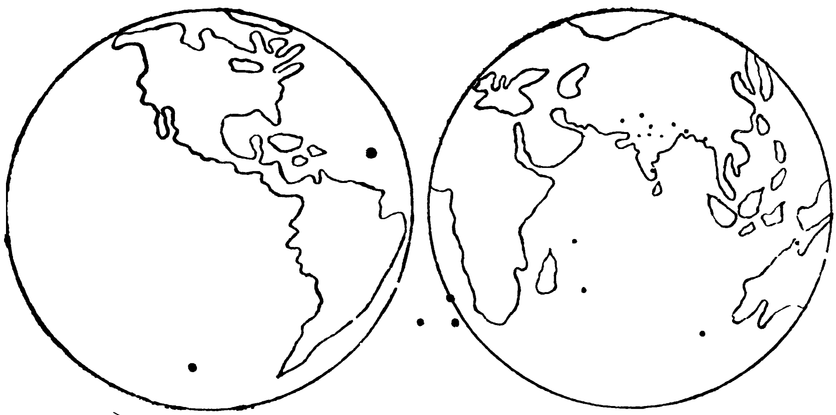
ओ३म्

भाद्रपद शुक्ला १

सार्वदेशिक

दयानन्द-अब्द १०३

भूमण्डल



कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥ वेद ॥

वार्षिक मूल्य २)

सम्पादक—प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति

एक प्रति का मूल्य =)

विदेश से ५ शिलिङ्ग

॥ विषय सूची ॥

—·—:+:——

——— :o: ———

* ओ३म् *

आर्यावर्त्तीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

सार्वदेशिक

वर्ष १ | १ भाद्रपद सम्बत् १९८४ वि० | अङ्क ६

अगस्त १९२७ ई०] [दयानन्दाब्द १०३

सम्पादकीय विचार-धारा

७ अगस्त

सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार देश भर में ७ अगस्त का दिन उत्साह से मनाया गया। गाँव गांव और शहर शहर में सनातनधर्मी, आर्यसमाजी सिख, जैन आदि सभी विचारों के आर्य नर-नारियों ने मिलकर उन अत्याचारों के विरुद्ध आवाज़ उठाई, जो आर्य समाज पर किये जा रहे हैं। शायद ही कोई बड़ा शहर ऐसा रहा हो जहां प्रतिवाद सभा न हुई हो। संयुक्त प्रांत और पञ्जाब में तो आन्दोलन सार्वजनिक रूप से हुआ है। कई स्थानों पर असाधारण भीड़ थी। बनारस की और दिल्ली की सभा स्मरणीय रहेगी। बनारस की सभा में सब से अधिक स्मरणीय बात यह थी कि सनातन धर्म के धुरन्धर विद्वानों ने आर्यसमाज के साथ सहानुभूति प्रकट की, और यह विश्वास दिलाया कि यदि आर्यसमाज किसी परीक्षा में

पड़ेगा, तो समस्त हिन्दू जनता की सहानुभूति उसके साथ होगी। दिल्ली की सभा अपने विराट् स्वरूप के कारण स्मरणीय रहेगी। केवल हिन्दुओं की ऐसी विशाल सभा दिल्ली में भी पहले कभी देखने में नहीं आई। आम तौर पर सभी नगरों में भरी हुई सभायें हुई हैं, और सभी सम्प्रदायों के हिन्दुओं ने सहयोग दिया है। यदि सरकार हिन्दू हृदय का थोड़ा सा भी आदर करती है तो उसे निम्नलिखित मांगों को एक दम पूरा करना चाहिये।

पहली माँग

७ अगस्त के आन्दोलन में से जो ध्वनि उठती है–वह सब से प्रथम बरेली के अत्याचार के सम्बन्ध में न्याय चाहती है। बरेली में आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारों का दलन किया गया है। आर्यसमाज की वेदी का अपमान किया गया है। यह ठीक है कि जो आर्य सभासद् अपराध के बिना गिरफ्तार किये गये थे, वह छोड़ दिए गए हैं, परन्तु उन्हें छोड़ने में सरकार ने आर्यसमाज के अधिकारों पर कोई दया नहीं दिखाई है। वह बे कसूर अदालत में जाकर भी छूट जाते, सरकार ने अच्छा किया कि उन्हें पहले से ही छोड़ दिया परन्तु इसके लिये आर्यसमाज सरकार का कृतज्ञ नहीं हो सकता। बरेली की दुर्घटना के सम्बन्ध में आर्यसमाज और हिन्दू जगत् की मांग यह है कि जिन सरकारी अधिकारियों या कर्मचारियों ने आर्यसमाजियों के धार्मिक अधिकारों का दलन किया, उन्हें सज़ा दी जाय ताकि ऐसा अन्याय पूर्ण कार्य करने का साहस फिर किसी को न हो। दण्ड देना तो एक ओर रहा, अभी तक सरकार ने ऐसी सूचना निकालना तक आवश्यक नहीं समझा, जिस से आर्य पुरुषों की कुछ दिल जमई हो जाय। आश्चर्य है कि जहां सरकार मुसलमानों के आन्दोलन का इतना आदर करती है कि उनकी प्रसन्नता के लिए हाईकोर्ट से लेकर छोटी अदालत तक हिला सकती है, वहां हिन्दुओं की उसे इतनी भी पर्वा नहीं कि वह एक सूचना तक प्रकाशित करे। सरकार को स्मरण रखना चाहिए कि गौ भी तंग आकर सींग दिखा सकती है। हिन्दुओं के हार्दिक भावों का निरन्तर अपमान होता रहेगा तो किसी दिन अप्रिय परिणाम भी पैदा हो सकते हैं।

दूसरी मांग

सात अगस्त की सभाओं की दूसरी मांग यह थी कि आर्यपुरुषों की हत्याओं की तह में जो साजिश है, उसका पता लगाया जाय और अपराधियों को सज़ा दी जाय। ज्यों २ समय बीतता जाता है कि श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की तह में एक षड्यन्त्र के होने की कल्पना अधिक मजबूत होती जाती है। कहा जाता है कि सारे मुस्लिम जगत् ने स्वामी जी हत्या पर दुःख प्रकट किया है। हम पूछते हैं कि यदि सारी मुसलमान दुनिया उस हत्या को बुरा समझती है—तो वह कौन लोग हैं जो हत्यारे की प्राण रक्षा के लिए रुपए को पानी की तरह बहा रहे हैं। हाईकोर्ट में मुकदमा लड़कर प्रिवी कौन्सिल तक पहुंचने की हैसियत क्या रशीद के बाप की है? शुरू से लेकर अन्त तक इस मुकदमे में कम से कम १ लाख रुपया खर्च होगा। यह रुपया कहां से आया? क्या अब भी इसमें सन्देह है कि अब्दुल रशीद की मदद में बड़े २ मजबूत हाथ हैं—जिन्होंने उसे पहले ही से आश्वासन दिला दिया था कि यदि तुम पकड़े जाओगे तो हम तुम्हारे लिए आखिर तक लड़ेंगे? यदि इन सब बातों को देखते हुए भी सरकार के अधिकारी समझते हैं कि अब्दुलरशीद अकेला था तो हम दो में से एक ही परिणाम निकाल सकते हैं। या तो सरकार मूढ़ है या जान बूझकर अपराधियों को नहीं छोड़ना चाहती।

सरकार को मूढ़ मानने को जी नहीं चाहता। यदि सरकार मूढ़ होती तो मुस्लिम पक्षपातिनी नीति को इस सुन्दरता से न निभाती। अस्तु सरकार की जो इच्छा हो सो करे, परन्तु हिन्दू जगत् ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि उसका विश्वास है कि स्वामी जी की तथा अन्य आर्य-पुरुषों की हत्या की तह में एक भारी षड्यन्त्र है, जिसको पकड़े बिना हत्याकाण्ड बन्द नहीं होगा।

तीसरी मांग

७ अगस्त की सभाओं में प्रायः एक तीसरी मांग भी पेश की गई है, जिस का केवल आर्य समाज के साथ उतना सम्बन्ध नहीं है जितना पहली दो मांगों का। वह मांग है, सरकार की समाचार पत्र तथा अन्य साहित्यको काबू में करने की नीति के सम्बन्ध में। रंगीला रसूल का लेखक लाहौर के हाई कोर्ट से छूट गया। वर्तमान का सम्पादक और लेखक दण्डित हुआ। जिन लेखों के जवाब में यह लेख लिखे गए थे, उन्हे कोई सजा नहीं दी गई यह घोर अन्याय नहीं तो क्या है? जहां मुसलमानों के धार्मिक भावों का सीमा से अधिक आदर किया जाय, वहां हिन्दुओं के धार्मिक भावों की रत्ती भर भी पर्वा न की जाय। यदि इसी का नाम इन्साफ है तो हमे बे-इन्साफ के राज्य में ही रहने दो। यदि सरकार हिन्दुओं और हिंदू लेखों का दमन आवश्यक समझती है तो वह न्याय और सचाई के नाम पर अन्य धर्म वालों के जहरीले लेखों का भी दमन करें।

सीमाप्रान्त की समस्या

इन तीनों मांगों के अतिरिक्त कई स्थानों पर ७ अगस्त की सभाओं में सीमा प्रान्त के हिंदुओं पर जो अत्याचार हुए हैं उन के विरुद्ध भी शब्द उठाया गया। सीमा प्रान्त की समस्या ने भीषण रूप पकड़ लिया है। समाचार पत्रों में जो समाचार छपे थे, एसम्बली में सरकारी मेम्बर के मुंह से उनका समर्थन हो गया है। रंगीला रसूल के आन्दोलन के परिणाम रूप में सीमा प्रान्त की बर्बर जातियों में जोश पैदा किया गया, जिनसे उन हिंदुओं को, जो पुश्तों से वहां रहते थे घरबार से निकाल कर बाहिर कर दिया गया। वह हिंदु अंग्रेजी सल्तनत की प्रजायें हैं। अंग्रेजी सल्तनत एशिया अफ्रीका तथा दुनिया भरमें हैं। योरप अमेरिका आदिमें उसकी धाक हैं, परन्तु वह धाक सीमा प्रान्त के हिंदुओं की घोर विपता में सहायता न कर सकी। जहां मुसलमानों के अपराध अपराध ही नहीं समझे जाते, वहां हिन्दुओं के अनपराध भी अपराध समझे जाते हैं। यदि संसार में केवल शक्ति के पुजारियों की संख्या ही अधिक न हो और गरीब की बात भी सुनी जाय तो सीमा प्रान्त के हिंदुओ पर अत्याचार होने की काली घटना इस्लाम और अंग्रेजी सलतनत के इतिहास के माथे पर कलंक के टीके की तरह स्थिर हो कर रहेगी

रिसाला वर्तमान का फैसला

वर्तमान के अभियोग का फैसला सुना दिया गया लेखक को १ वर्ष की कड़ी कैद और १ हजार रुपया जुर्माना, और सम्पादक को उस से आधी सजा दी गई है। शायद यही इंसाफ होगा। हम हाई कोर्ट के प्रतिष्ठित जजों के फ़ैसले पर राय देने वाले कौन होते हैं। वह कानून स्वरूप हैं हम कानून से अनभिज्ञ हैं इस लिए कानून क्या है, यह हम क्या जाने, परतु हाँ इतना सोचना तो हमारे लिए भी सम्भव है कि जब दो या तीन न्यायमूर्ति एक दूसरे से बिलकुल उलटा फ़ैसला करे, और वह भी दो तीन महीने के भीतर ही भीतर तो साधारण बुद्धिवाले व्यक्ति के हृदय में यह भाव पैदा हो जाने स्वाभाविक हैं कि शायद न्याय मूर्तियों को भी यह मालूम नहीं कि पूरा न्याय क्या है? न्यायमूर्ति दिलीपसिंह रंगीला-

रसूल के लेखक को रिहा कर देते हैं और जस्टिस ब्राडवे रिसाला वर्तमान के लेखक को कठोर दण्ड देते हैं । दोनों योग्य हैं, दोनों ईसाई हैं, दोनों न्याय मूर्ति हैं । कहिये-न्याय इधर है या उधर ? यदि रंगीला रसूल के आन्दोलन और सर मालकम हेली की वक्तृता से पहिले जस्टिस ब्राडवे फ़ैसला सुना चुके होते तो हमें आश्चर्य अधिक होता, और दुःख कम, परन्तु अब तो आश्चर्य कम हो रहा है और दुःख अधिक ? आश्चर्य की कमी का कारण स्पष्ट है। रंगीला रसूल के फैसले से मुसलमान बहुत नाराज हो रहे थे। मुसलमानों की नाराजगी अंग्रेजो सरकार नहीं सहना चाहती। कारण कुछ भी हो, परन्तु कानून से अनभिज्ञ लोगों का दो न्यायमूर्तियों के एक दूसरे से विपरीत फ़ैसले को पढ़कर यदि कानून पर से श्रद्धा उठ जाय तो क्या आश्चर्य है । यह असंदिग्ध है कि रिसाला वर्तमान का फैसला ब्रिटिश न्याय की ख्याति को बढ़ाने का कारण नहीं है ।

आर्य सम्मेलन का स्वागत

आर्य समाजिक जगत् ने आर्य सम्मेलन के विचार का हृदय से स्वागत किया है । चारों ओर से उत्साह वर्धक पत्र आ रहे हैं। पूर्ण आशा है कि सम्मेलन में सफलता प्राप्त होगी । इधर दिल्ली में अस्थाई स्वागत कारिणी का संगठन हो गया है और स्थाई स्वागत कारिणी सभा की भर्ती हो रही है। अस्थाई सभा ने कार्य आरम्भ कर दिया है। प्रकाशन विभाग ने समाचार पत्रों को जगा दिया है, सितम्बर मास में चारों ओर डेपुटेशन भेजने का विचार हो रहा है । आर्य समाचार पत्र अपने कालमों में सम्मेलन की चर्चा कर रहे हैं। आशा है कि आर्य जगत् में सम्मेलन के भाव का हृदय से स्वागत होगा और पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

सम्मेलन में क्या २ होगा ?

प्रायः यह प्रश्न पूछा जाता है कि आर्य सम्मेलन में क्या क्या होगा ? इसका असली उद्देश्य क्या है ? सम्मेलन क्या करेगा, यह अभी से कहना कठिन है। इस समय स्थूल रूप में तो यही कहा जा सकता है कि आर्य समाज पर जो संकट आया है, उसके निवारण के उपायों पर विचार करने के लिए आर्य समाज के प्रतिनिधियों को एकत्र कर देना ही सम्मेलन का सर्व प्रधान उद्देश्य है । प्रतिनिधि गण एक होकर किस निर्णय पर पहुँचेगे, यह कौन कह सकता है। आर्य समाज का बल संघ शक्ति में है । संघ को एकत्र कर देना ही सम्मेलन का उद्देश्य है। एकत्रित प्रतिनिधि आर्य समाज के लिए किस मार्ग का निर्णय करेंगे यह अभी से कौन कह सकता है। हां, सम्मेलन के सन्मुख कौन कौन से प्रश्न विचारार्थ पेश होंगे, यह निर्देश किया जा सकता है। विचारार्थ आने वाले प्रश्नों में से कुछेक निम्न लिखित होंगे—

(१) सरकार की मुसलिम पक्षपातिनी नीति को दृष्टि में रखते हुए आर्यसमाज को किस नीति का अवलम्बन करना चाहिए ?

(२) क्या यह आवश्यक नहीं कि आर्यसमाज के धार्मिक अधिकारों तथा सेवा कार्य की पूर्ति के लिए देश भर में आर्य वीर दलों का संगठन किया जाय ?

(३) जिन प्रान्तों में अबतक वैदिक धर्म का सन्देश नहीं पहुंचा, उनमें प्रचारकों के भेजने का क्या उपाय किया जाय ?

(४] आर्य जाति के अन्य सम्प्रदायों के साथ आर्यसमाज को किस प्रकार का सम्बन्ध रखना चाहिये ?

यह और इसी प्रकार के अन्य आवश्यक विषयों पर सम्मेलन में एकत्र हुए प्रतिनिधि विचार

करेंगे। यत्न करना चाहिए कि जो आक्षेप अन्य कान्फ्रेन्सों पर किया जाता है वही आर्य सम्मेलन पर भी लागू न हो कि उनमें केवल प्रस्तावों और शब्दों की प्रधानता रहती है और कोई उपयोगी कार्य नहीं होता ?

गुजरात पर आपत्ति

अति वृष्टि के कारण गुजरात उड़ीसा, सिंध आदि में प्रजापर जो आपत्ति आई है उसे याद करने से भी रोमाञ्च हो आता है। गुजरात की दशा तो अन्य सब स्थानों की अपेक्षा अधिक चिन्ताजनक है। वहां तो खण्ड प्रलय सा हो गया है। बड़ौदा और अहमदाबाद के आसपास सर्वनाश के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। इस आपत्ति में गुजरात के निवासियों ने जो उदारता और सहानुभूति दिखलाई है वह अनुकरणीय है। भारत के अन्य प्रान्तों से भी थोड़ी बहुत सहायता पहुंची है, परन्तु सहायता के कार्य में अधिक भाग गुजराती लोगों का ही है। श्रीयुत वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में गुजरात कांग्रेस कमेटी ने अद्भुत कार्य किया है। क्या ही उत्तम होता यदि इस समय आर्य सेवक दल का संगठन हो चुका होता और आर्य युवक हजारों की संख्या में घटनास्थल पर पहुंच कर जल पीड़ितों की सहायता कर सकते ? दुःख होता है जब हम अपनी अशक्ति को देखते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि आगामी वर्ष भर में आर्य वीर दलों के संगठन का कार्य इस तीव्रता से होगा, कि आर्य समाज सेवा के कार्य में किसी से पीछे न रहा करेगा।

सार्वदेशिक की लोकप्रियता

हमें फिजी से निम्नलिखित पत्र मिला है—

स्वागत

श्रीमान् सम्पादक जी 'सार्व-देशिक' नमस्ते

ईश्वर की महती कृपा तथा आप पूज्य महानुभावों के अनथक परिश्रम तथा भागीरथ उद्योग से यह सार्वदेशिक पत्रिका का दर्शन हो रहा है। इस में कोई सन्देह नहीं कि ऐसी पत्रिका की बहुत आवश्यकता थी, अभी तक शिरोमणि सभा का, इतना विस्तृत कार्य होने पर भी कुछ हाल नहीं मिलता था। पर आज पत्रिका द्वारा हमें आर्य समाज की विशालता का पता चल सकता है।

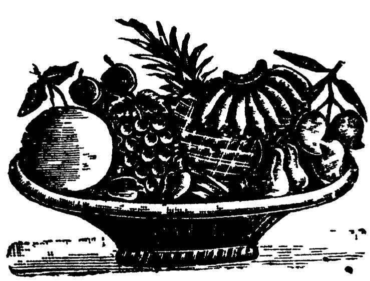
हमारी प्रतिनिधि सभा आप के इस कार्य के लिए बधाई देती हुई पत्रिका का हृदय से स्वागत करती है और आशा करती है कि इसके द्वारा हमारी सारी शक्ति सङ्गठित हो जायगी।

आपका सेवक—

रामनारायण

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

फिजी



बेधड़क होकर काम करो

ले०—श्री नारायण स्वामी जी महाराज

रामदत्त हिमालय की एक ऊंची शिखर पर वेग से चढ़ा हुआ जा रहा था और कुछ क्षण ही में उस शिखर पर पहुँच जाने वाला था परन्तु इसी बीच में उसके साथी चारुदत्त ने कहा कि ऊपरी शिखर को तो देखो कि अभी वह हम से कितना ऊंचा है-रामदत्त शिखर को देख कर कांपने लगा और ज्योंही उसने यह देखा कि हम कितने ऊंचे पहुंच चुके हैं तो पृथ्वीतल से अपने को बहुत ऊंचा पाया और इस ऊंचाई के विचार से उस के पांव लड़खड़ाने लगे परिणाम यह निकला कि अब उसको चोटी तक पहुंचना या नीचे उतर आना दोनों कठिन प्रतीत हो रहे हैं। वह इस धर्म सङ्कट में न पड़ता यदि ऊपर नीचे देखे बिना बेधड़क, जैसे चला जा रहा था, चला जाता। इसी लिए मनुष्य को कहा जाता है कि काम शुरू करके "अगर मगर" "किन्तु परन्तु" किए बिना, बेधड़क होकर आगे बढ़े हुए चले जाना चाहिए-अगर मगर करने वाले, दीर्घ सूत्रता से काम लेने वाले, तत्काल काम न करके कलके लिए उसे टालने वाले सदैव असफल मनोर्थ हुआ करते हैं-अमरीका के निकटवर्ती समुद्र में एक चटान से टकरा कर एक जहाज टूट जाता है यात्री जहाज को डूबता हुआ देख कर छोटी २ डोंगियों, तोंबे आदि जो जहाज के साथ ऐसी आपत्ति के समय यात्रियों की रक्षा के लिए रक्खे जाते हैं जो जिसके हाथ पड़ता है लेकर अपनी रक्षार्थ किनारे पर पहुँचने का यत्न करते हैं—एक यात्री जिसके हाथ और कुछ न पड़ा टूटे हुए जहाज के एक टुकड़े पर ही बैठा हुआ किनारे की ओर बहा चला जा रहा है, यदि वह इसी प्रकार बहा चला जाता तो अवश्य किनारे पर पहुंचता परन्तु यह सोच कर कि बहता हुआ कहीं और न पहुंच जाऊं, अपने बहाव का रुख एक चट्टान की ओर फेर कर चट्टान पर चढ़ जाता है और अब अपने को सुरक्षित समझता है—इसी बीच में वह टुकड़ा पानी के बहावमें पड़कर उसके हाथसे जाता रहता है—वह अभागा पुरुष उस चट्टान पर बैठा हुआ प्रतीक्षा कर रहा है कि कोई जहाज आवे और उस पर चढ़ कर किनारे पहुँच जावे परन्तु वह चट्टान जहाजी मार्ग से पृथक थी, इसलिए कोई जहाज नहीं आया परिणाम कई दिन की भूख प्यास और शीत की अधिकता के कारण उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं और किनारे पहुंचने की लालसा भी अपने साथ ले जाते हैं—यदि यह अगर मगर किए बिना उस तख़ते पर वह चला जाता तो किनारे पहुंच ही जाता परन्तु उसकी अगर मगर ने उसे कहीं का भी न रक्खा—यही हालत उन की होती है जो सुस्ती का शिकार बन कर समय पर काम नहीं करते—नैपोलियन का आस्टरिया के राजा से युद्ध हुआ—आस्टरिया की फौज सहायताके लिए समय पर नहीं कुछ मिनटों कीही देर हुई थी फल यह हुआ कि राजाको हारना पड़ा और आस्टरिया नेपोलियन के अधिकार में आ गया। नेपोलियन कहा करता था कि आस्टरिया के लोगों ने ५ मिनट का मूल्य नहीं समझा और पराजित हुए-जगत् प्रसिद्ध कहावत है कि "लोह में चोट उसी समय लगानी चाहिए जब तक वह गर्म है"-लोहे के ठण्डा हो जाने पर उस पर हथौड़े बजाना व्यर्थ है-अमरीका

के प्रसिद्ध सभापति वाशिंगटन ने एक बार अपनी प्रतिनिधि सभा ।(Huose of Representative) के कुछ नव निर्वाचित सभासदों को भोज दिया— समय ४ बजे सायङ्काल का नियत था—नये सभासद् कुछ देर से पहुंचे वहां पहुँच कर वे देखते हैं कि वाशिंगटन भोजन कर रहा था वाशिंगटन ने देर से आने वाले सभासदों को सम्बोधित कर के कहा कि मेरा बावरची यह नहीं देखता कि मेहमान आ थे या नहीं वह सिर्फ यह देखता है कि समय आगया या नहीं यदि आ गया तो वह अपना काम आरम्भ कर देता है—ये और अनेक घटनायें हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि आलसी और समय पर काम न करने वाले आदमी सदैव बाजी हारते हैं—अवश्य कार्य प्रारंभ करने से पूर्व अच्छी तरह से सोच विचार कर मत स्थिर कर लेना चाहिए परन्तु मत स्थिर करके काम शुरू कर देने पर फिर चूनोचरा करने की गुञ्जाइश बाकी नहीं रहतो फिरतो एक ही काम बाकी रह जाता है और वह यह कि बेधड़क हो कर काम किये चले जाओ जब तक उसे पूरा न करले और यही श्रेष्ठ कर्तव्य है।

—— :o: ——

क्या आर्यसमाज दंगों का उत्तरदाता है?

(लेखक—ला० ज्ञानचन्द जी आर्य, देहली)

आज यह बात किसी भी बुद्धिमान हिन्दुस्तानी से छिपी हुई नहीं है कि चिरकाल से अहमदी सम्प्रदाय, निजामी का संघ, खिलाफत कमेटी मुसिलिम समाचार पत्र, इस्लाम के प्रचारक, और मुसलिम नेता कोई प्रगट और कोई गुप्त रीति से मुख्य रूपेण आर्य समाज और साधारणतया हिंदू नेताओंकोवद् नाम करने और हानि पहुंचाने का यत्न कर रहे हैं—जिस की जिस क्षेत्र में पहुंच है वह वहां पर ही आर्य समाज की धार्मिक और सामाजिक सर गरमियों को रोक ने के लिए लेख, वाणी, समाजिकबल और वैयक्तिकप्रभावों का बराबर प्रयोग करते रहते हैं—अखबारों इश्तहारों और अपने प्रगट व गुप्त जलसों में उन पर निर्मूल आक्षेप कर के साधारण मुसलमानों को उन के विरुद्ध भड़काते हैं भोले भाले हिंदूओं और उनकी बिछुड़ी हुई श्रेणियों [अछूतों] को उन से प्रथक रहने और लड़ने का पाठ पढ़ाते हैं। सरकार को बहका कर के उस से आर्य समाज के नगरकीर्तनों तथा दूसरे धार्मिक और आर्य समाजिक उत्सवों और हिंदू त्योहारों और जलसों को बन्द करते हैं मेल नाम पर और स्वराज्य के फन्दे से अपने साथी राजनैतिक नेताओं को भी उसके विरुद्ध उकसाते और उन से उसकी निन्दा कराने का प्रयत्न करते

हैं—इस्लाम की रक्षा की आड़ में आर्यसमाज और हिंदुओं पर आक्रमण करने और फिसाद कराने के लिए बाजा, नमाज और आरती आदि की हुज्जत पैदा करली गई है—यहांतक कि धर्मदेश और जाति के लिए काम करने वाले आर्यसमाजी तथा हिंदू नेताओं और कर्मचारियों को धमकाने, क़त्ल करने और फिसाद कराकर हिंदू संसार को डराने के साधन को भी उन्होंने तबलीग़ इस्लाम (इस्लाम के प्रचार) का एक अङ्ग बना लिया है, जिसका परिणाम भी पूज्य स्वर्गीय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी म० बद्रीशाह (बहराइच) और म० भैरोंसिंह (आबूरोड़) का क़त्ल और अन्य आर्यसमाजी व हिंदू नेताओं को कत्ल किए जाने की धमकियों के रूप में निकल चुका है-पाठक पूछेंगे कि मुसलमानोंके इस कुटिलता और उद्दण्डता पर उतर आने का कारण क्या है ? इसके उत्तर में ख्वाजा हसन निजामी की बनाई "दाइए इस्लाम" नामी उस पुस्तक की नीचे लिखी पंक्तियों से ही देता हूँ जो कि उन्होंने इस्लाम के मुख्य विद्वानों से परामर्श करने के पश्चात छपवाई है—

"हिन्दुस्तानी अक़्वाम में इस्लाम की अशाअत या हिफाजत महज वग़त और गैर मुस्लिम मजाहिब की बुराइयाँ बयान करने या मनाज़रात करने से नहीं हो सकती इसके लिए दूसरी तदवीर है जिनमें से एक बिरादरी है। जिनमें से एक बिरादरी की कुवत है" और (पृष्ठ ७) पस "जरूरत है और हर घड़ी जरूरत है कि हिफाजत इस्लाम के मसले में बिरादरी की कूवत और मआशरत की ताकत को सब से ज्यादह काम में लाया जावे। इस्लामी अंजुमनें दाइया इस्लाम और जमीयत उल्मा के महकमे तबलीग व दावत को इसी खास मस्ले पर अच्छी तरह गौर करना चाहिए-यह बहुत गहरी बात है-और इसमें तजार उल्मा के वग़त व मनाज़रे से भी ज्यादह असर व कुवत है [पृष्ठ ६] किस्सा मुख्तसर यह है कि हिफाजत व अशाअत इस्लाम के हर मैदान में दाइय इस्लाम को बिरादरी की कूवत को पेशेनज़र रखना चाहिए कि यह सब से बड़ी कूवत है और इसी से इशाअत इस्लाम को बड़ी तौफीक हासिल होगी-और आर्य समाज के हमले का आसानी के साथ जवाब अदा हो जावेगा-[पृष्ठ ११] आर्य समाज के पास उम्मेद व खौफ की कूवत नहीं है-उसके यहां अच्छे तकरीर करने वाले हैं-अच्छे मनाजरा करने वाले हैं और बड़े २ आकिल व जी इल्म है-मगर ऐसा रूहानी आदमी एक भी नहीं जो लोगो की कूवत उम्मेद व खौफ का मरकज हो सके। (पृष्ठ १२) अंग्रेजों की सयासी तर्ज नक़्द से सबक़त हासिल करना यानि जिस तरीके से वह मुल्को पर कब्जा करते हैं-इस तरीके को गौर से देख के इस्लाम में इस्तैमाल करना (पृष्ट १०) मनाजरा उसी वक्त करना जब कि बगैर उसके चारा न रहे वर्ना मुनाजरा को टाल देना और अपना काम पूरा करना।"

अपूर्ण

स्वामी श्रद्धानन्द का वध और गवर्नमेंट

गवर्नमेन्ट! प्राचीन काल में यह प्रथा थी कि जब राजा अन्याय पर तुल जाता या भ्रान्त हो जाता था तो संन्यासिवृन्द और उच्च कोटि के ब्राह्मण राजा को उपदेश कर के सीधे मार्ग पर लाते थे। राजा लोगों को भी उनकी उपदिष्ट धर्म-पद्धति पर चलना पड़ता था क्योंकि उन्हों ने धर्म युक्त नीति का अनुष्ठान करना अपना कर्तव्य समझा हुआ था, तथा उन सन्यासी और ब्राह्मणों से भय भी करते थे इस लिए कि यह निष्पक्ष और निर्लोभ साधु हम से प्रजा को विमुख कर सकते हैं, ब्राह्म बल के सामने अपने क्षात्र बल को अल्प समझते थे। अत एव इस प्राचीन प्रथानुसार आर्य संन्यासी और ब्राह्मण तेरी वर्तमान अन्याय पद्धति को विस्पष्ट और अति वृद्ध देख कर तेरे समझाने और असतुष्ट हिन्दू प्रजा को यथोचित कर्तव्य का आदेश करने के लिये उठ खड़े हुए हैं। यद्यपि मैं एक वैदिक विद्यार्थी हूं तथापि उक्त मार्ग का पथिक होने से कुछ कहना कर्तव्य समझता हूं:—

गवर्नमेन्ट! क्या तुझे ज्ञात है कि तेरे शासन काल में एक बड़ी भारी व्यक्ति हिन्दू धर्म के सम्राट तथा परिव्राट् स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज हिन्दू जाति के लिए प्रतिष्ठा में भारत मन्त्री (वायसराय) के तुल्य थे। उन का वध तुच्छ व्यक्ति अब्दुल रसीद के हाथ से हो जावे और हत्या के प्रचुर प्रमाण (पूरा सबूत) होते हुए भी बधक को दण्ड नहीं दिया जाता टालते टालते छः मास बिता दिए। क्या यह तेरी पक्षपात युक्त और अन्याय पूर्ण तथा अन्धी नीति का प्रमाण नहीं? क्या तुझे अभी तक बधक का दोष नहीं सूझा, शोक कि बधक स्वयं स्वीकार भी करता है कि हाँ मैं बधक हूं पर तेरा अनिष्ट दयाछत्र उस के ऊपर है:

क्यों राजशक्ते देवी! क्या तू स्वामी श्रद्धानन्द से अपना असहयोग समय का बदला लेना चाहती है, कि इस व्यक्ति ने प्रजा को भड़काया था और गवर्नमेन्ट के विरुद्ध पक्ष लिया था। अतः इस के वधक को टालमटोल कर के छोड़ दिया जावे? यदि ऐसा ही है तो तेरी कायरता है। अरे! जीवित काल में तो तेरा साहस न हुआ कि क्षेत्र में सन्नद्ध परिव्राट् पर अपना वार करे किंतु उसके मरण पश्चात् बधक का पक्ष कर के अपनी पिछली बीती का बदला ले। तुझे तो उचित था कि बधक को हा फांसी नहीं बल्कि अपने न्याय का प्रकाश करती हुई हत्या कि साजिश का पता लगाती। मगर कहां तूने तो उचित न्याय न कर के हिंदू जाति किंवा आर्यों पर आक्रमण करने के लिये मुसलमानों को उत्साहित कर दिया यही कारण है कि स्वा० श्रद्धानन्द की हत्या के पीछे अन्य आर्य जनों की हत्या करने को मौहमुदी जन कमर कसे। क्या तू ने ३ जोलाई के "जमीदार" को नहीं पढ़ा? क्या आबू रोड़ स्टेशन की हत्या घटना को नहीं सुना? क्या

बरेली के भयानक दृश्य का कारण तेरी उक्त हमदर्दी नहीं है ? ।

आर्य मन्दिर में मुसलमान आक्रमण करें, कोतवाल सरकारी नौकर होता हुआ भी मुसलमानी जोश में आकर राजनीति से बाहर हो जूते पहिने हुए सीधा बेदी पर चढ़ कर आर्य धर्म का अपमान करे, तेरे कर्मचारी यज्ञोपवीत तोड़े, क्या औरङ्गजेबी ज़माना बनाने की इच्छा है । क्यों ? कहां गई वह शेर और बकरी को एक घाट पर पानी पिलाने की प्रतिज्ञा ? गवर्नमेंट ! क्या उन दिनों को भूल गई जबकि श्री० मान्या० महारानी विक्टोरिया के समय बनारस में ऋषि दयानन्द का व्याख्यान बन्द करने पर कलक्टर को दण्ड दिया गया ? क्या आज वह धर्मराज नहीं रहा जो आर्यों को अपने धर्ममन्दिर में ईश्वर पूजन, देवार्चन और प्रभु भजन धर्मकृत्य से पापिष्ठ नीति द्वारा वियुक्त किया जावे, और धर्म-सूत्र को शरीर से जबरन् उतार लिया जावे ? यदि यही बात है कि मुनासिब मुसलमानों के कहने पर हसन हुसेन के मरण दिवस रोने धोने से धर्म मन्दिरों में ईश्वर पूजन और भजन में बिघ्न किया जावे तो कोई दूर नहीं है तेरे शासनकाल में आर्यों और हिन्दुओं को भी यह शुभ अवसर मिल गया । श्री० स्वा० श्रद्धानन्द परिव्रिट् के मृत्यु दिवस प्रति वर्ष शोक संकीर्तन प्रत्येक नगर और ग्राम में निकलेंगे और मस्जिदों में अज़ान देते हुए मुल्लाओं की आवाज़ आपको बन्द करनी पड़ेगी । गवर्नमेंट ! क्या तेरे मन में यह ख्याल बैठ गया कि आर्य एक जीती जागती जाति है, इसको दबाना चाहिये ऐसा न हो कि राजशासन कार्य अपने हाथ में ले लेवे । क्योंकि असहयोग दिवसों में इस जातिने बड़ा काम किया था । तो सुन हे देवि ! इस में कुछ सन्देह नहीं कि आर्य जाति चाहती है कि आर्यों का राज्य हो तथा ऐसे समय की आशाभी करती है जबकि आर्य राज्य हो, बल्कि भारत में ही नहीं किन्तु पृथिवी भर में आर्यों का राज्य हो जावे यह इच्छा है । क्योंकि जब तक राजा आर्य अर्थात् श्रेष्ठ धार्मिक पक्षपात रहित न होगा तब तक प्रजा में सुख और शांति नहीं हो सकती । यदि आप आर्य हो जावें तो हम प्रसन्न हैं क्योंकि फिर आर्यों का राज्य होगा और प्रजा सुखी रहेगी किंतु क्या तू अन्याय से आर्यों को दबाना चाहती है ? क्या कभी कोई अन्याय से दबा है ? क्या इतिहास बताता है कि अन्याय करने से कोई जाति दबी ? हजरत ईसा को फांसी दी क्या ईसाइयत का प्रचार कम हो गया ? नहीं, नहीं । इस प्रकार अन्याय से तो अग्नि को भड़काना है । अतः आपको अब उचित है कि स्वामी श्रद्धानन्द के घातक को फांसी ही नहीं अपितु इस साज़िश का पता लगा कर साज़िश कर्ताओं को उचित दण्ड दिया जावे । केवल घातक को फांसी देना तो धर्म न्याय है क्योंकि कहां स्वा० श्रद्धानंद सम्राट् व परिव्राट् और कहां नाचीज़ अब्दुलरशीद । स्वा० श्रद्धानन्द के स्थान पर यदि अब्दुलरशीद जैसे सैकड़ों को भी फाँसी दी जावे तो भी समता नहीं हो सक्ती । बस अब अधिक कहने का अवसर नहीं है किंतु आपका कर्तव्य है कि स्वा० श्रद्धानन्द के घातक को फांसी दी जावे और अन्य साज़िश कुनिन्दाओं को उचित दण्ड । बरेली का मामला बिल्कुल साफ हो जाना चाहिये । अत्याचारी राजभृत्यों पर दण्ड निर्यातन किया जावे, वरना सब आर्य मिल कर आल इण्डिया कानफ्रेंस करके निश्चय करेंगे कि भारत (हिन्दुस्थान) में या तो आर्य नहीं या अन्याय पद्धति नहीं । अब अपनी बुराई और भलाई को सोचले । क्या करें आर्यों का दोष नहीं । मरता क्या नहीं करता ।

आर्यों तथा हिन्दुओं को चेतावनी:—

इस समय गवर्नमेंट राज्य में आर्यों तथा हिंदुओं को अपनी सत्ता का स्थिर रखना अति

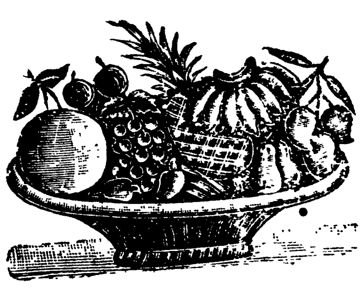
कठिन हो गया क्योंकि एक ओर तो मुसलमानी अत्याचार यानी आर्य जाति रूपी द्रुम की जड़ों को उखाड़ें अनेक आर्य जाति के बच्चों को बहकावें जबरदस्ती हिंदू स्त्रियों को पकड ले जावें और मुसलमान बनावें कई एक गुप्त व प्रकट उपायों से हिंदुओं को मुसलमान बनावें। लूट मार करें, छुरियां बन्दूक चलाकर प्राण लेते जावें और दूसरी ओर गवर्नमेंट के प्रहार से धर्म को पीड़ा प्राप्त हो। इस प्रकार इन दोनों से अपने आपको बचा सकोगे? क्या इस समय बचने का उपाय दृष्टि गोचर होता है। मेरे दृष्टि पथ दो ही उपाय हैं। सब आर्य और हिंदूजन या तो मुसलमान बन जावें या ईसाई हो जावें। क्योंकि मुसलमान हो जाने से मुसलमानों के अत्याचारों और गवर्नमेंट के भी अन्याय प्रहारों से बच सकोगे। और ईसाई बन जाने से भी आपके शरीरों का हरण हो जावेगा क्योंकि ईसाई मजहब सामयिक राजधर्म है अतः गवर्नमेंट का अन्याय प्रहार तो क्षमा हो ही जावेगा। साथ में ईसाईयत राजधर्म होने से मुसलमान भी अत्याचार करने का साहस न कर सकेंगे। यद्यपि ऐसा करने से आपकी प्राण रक्षा तो हो जावेगी आपकी जाति और मान मर्यादा का ध्वंस हो जावेगा। आप जिसको सर्व श्रेष्ठ पवित्र और आचरणीय धर्म समझते हैं। वह नष्ट हो जावेगा। आप सोचें कि प्रथम पक्ष उचित है या उत्तर। किंतु मैं तो यह कहूँगा कि:—

"अस्तित्व नाशे मरणं श्रेयः"

अपने जातित्व और सत्ताके नाश की अपेक्षा मरना अच्छा है। इस लिए गवर्नमेंट की इस अन्याय पद्धतिका तन, मन, धन और बल से पूरा मुकाबला करो धर्मक्षेत्र में वीरता दिखला कर आक्रमण कारियों की तोपों के शहीद बनो यही अच्छा है। अगर विजय हो गई तो भी अच्छा है अगर मर गए तब भी अच्छा है। आत्मा अमर है अधर्म से दबना नहीं चाहिए। इस लिए आर्यों को पीछे पग हटाने की आवश्यकता नहीं। मरना भी है तो धर्म पर सचाई पर मरो या भारत वर्ष को सब आर्य और हिंदुओ खाली करदो किसी दूसरे राज्य में जाबसो किंतु अपने सम्पत्तिरूप देश में भी होती हुई कमजोर जाति दूसरे देश में पादाक्रांत ही होगी। अतः सब मिल कर अन्याय नीति का मुकाबला करो असहयोग और हड़ताल करते हुए शहीद बनो या वीरता से विजय पाओ यही कल्याण का मार्ग है।

भवदीय--

प्रियरत्न शास्त्री



मुसलमानों के दौरात्म्य के दमन का उपाय।

देखते हैं मुसलमानों का दौरात्म्य दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। कभी मालाबार से, कभी कोहाट से, कभी मुलतान से, और कभी बरेली से इन के द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों के समाचार मिलते हैं। हिन्दू दिन दहाड़े पिटते और लूटे जाते हैं। मुसलमानों का आक्रमण होने वाला है, यह जानते हुए भी वे उसकी रोक थाम नहीं कर सकते, उसका कारण क्या है? संख्या में अधिक होने पर भी वे क्यों पिट जाते हैं?

सम्भव है इस के और भी अनेक कारण हों परन्तु हमारी समझ में इसका प्रधान कारण हिंदू समाज में उस तत्व का अभाव है जो ईंट का जवाब पत्थर से दे सकता है, या जिनके बिचार को कर्म में परिणत होते बहुत देर नहीं लगती। हिन्दू क्या व्यक्ति रूप से और क्या समष्टि रूप से, किसी प्रकार भी मुसलमानों से निर्बल नहीं। दफ्तर के बाबू चाहे हिन्दू हों चाहे मुसलमान सब एक से हैं। मुसलमान बजाज और हिन्दू बजाज में, कृति और शारीरिक बल की दृष्टि से, बड़ा अन्तर नहीं। मौलवी साहिब पण्डितजी से अधिक रक्त पिपासु नहीं। इतने उपद्रव हुए, इतनी लूट-खसोट हुई, क्या कभी किसी ने सुना कि मुसलमान अध्यापक ने हिन्दू हलवाई की दूकान लूट लीं या मौलवी सनाउल्ला ने पण्डित चमूपति के पेट में छुरा घोंप दिया। मार-पीट और हत्या करने वाले प्रायः माशकी, कुंजड़े, कसाई, रंगरेज़, लोहार आदि "म्हन्ने-म्हाजे' ही होते हैं। कम से कम लाहौर के गत उपद्रव में तो अधिकांश ऐसे ही श्रम-जीवी और शिल्पी लोग पकड़े गए थे।

इस से एक बात स्पष्ट है। किसी भी समाज में प्रत्येक मनुष्य उपद्रवी नहीं होता। मार-काट और नर-हत्या करने वाले प्रायः एक विशेष श्रेणी के ही लोग होते हैं। एक वकील, चाहे कुछ भी क्यों न हो, एक निरपराध निहत्थे मनुष्य पर कभी घातक आक्रमण नहीं करेगा। एक हिन्दू बनियां चाहे कितना ही उत्तेजक व्याख्यान क्यों न सुने वह कभी भी भड़क कर किसी निरीह बालक पर आघात नहीं करेगा। प्रातः स्मरणीय स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या से हिन्दू समाज के मर्म पर कैसी भारी चोट लगी। लाखों का जुलूस निकला। पर क्या किसी ने उत्तेजित या आपे से बाहर होकर किसी मुसलमान पर आक्रमण किया? उसका कारण केवल यही है कि हिन्दू समाज में उन लोगों का सर्वथा अभाव है जो किसी बिस्फोटक पदार्थ की तरह भक से भड़क उठते हैं और पाप पुण्य का लंबा विचार न कर के विपक्षियों पर लाठी छुरी या पिस्तौल चलाने में नहीं हिचकचाते। हिन्दुओं में इस तत्व का अभाव कोई प्रशंसा की बात नहीं। मनुष्य शरीर पांच तत्वों का बना है। उन में प्रत्येक अपनी जगह अच्छा है। इन में से किसी एक के सर्वथा अभाव से शरीर का अस्तित्व असम्भव हो जाता है। क्रोध बुरी चीज है। परन्तु क्या कुछ क्रोध किए बिना

दुष्टों को दण्ड दिया जा सकता है? क्या काम के वशीभूत हुए बिना सन्तानोत्पत्ति संभव है? समाज में यदि सब ब्रह्मण ही ब्राह्मण या बनिए ही बनिए इकट्ठे हो जायें तो क्या वे जीवन-निर्वाह कर सकते हैं?

हिंदुओं ने लुहार, तरखान, मोची, नाई धोबी आदि मेहनती व्यवसाइयों को नीच, शूद्र और अछूत कह कर समाज से गिरा दिया। हाथ का काम करने वाले शिल्पी अपाहज होकर मुसलमान बनने पर विवश हुए। पाधे पण्डितों ने, मुसलमानों की परिभाषा में, "उम्मत को छांट डाला काफ़िर बना बना कर।" किसी को कमीन, किसी को शूद्र किसी को अछूत और किसी को अन्त्यज ठहरा कर हिन्दू धर्म से बाहर ढकेल दिया गया। इस लिए पोथियां पढ़ने और नून-तेल बेचने वाले ही समाज में प्रतिष्ठित बने रहे। सार्वभौम धर्म का प्रचारक कहलाने की डींग मारने वाला आर्य समाज भी इस समय एक मित्र के शब्दों में, खत्री ब्राह्मण-सुधार सभा से बढ़कर और कुछ नहीं। ऐसी अवस्था में गुण्डों के उपद्रवों से हिन्दू समाज की रक्षा करे तो कौन करे। वकील कचहरी में मुकद्दमा लड़ सकते हैं, डाक्टर घावों को चंगा कर सकते हैं परन्तु जहाँ छुरियां और लाठियां बरस रही हों, वहां पर बाबूदल क्या कर सकता है?

मुसलमानों का दौरात्म्य को दबाने का उपाय क्या है, अब बताने की आवश्यकता नहीं रही। यह अपने आप स्पष्ट है। हिन्दू समाज में उन लोगों को भी सम्मानपूर्वक रहने का स्थान दीजिए जो मेहनत मजदूरी और कला कौशल से अपना जीवन निर्वाह करते हैं। इन बलवान् लोगों के रहते मुसलमान गुण्डों को उपद्रव करने का कभी साहस नहीं हो सकता। श्रम-जीवियों की लड़ाई में श्रम जीवी ही मुंह तोड़ सकते हैं, बाबू और दुकानदार नहीं। परन्तु श्रम-जीवियों का नीचपन, अछूतपन, शूद्रपन और फलतः अलगपन तब तक दूर नहीं हो सकता जब तक कि जन्ममूलक जात-पात को तोड़कर, गुण कर्मानुसार, हिन्दू मात्र में विवाह का व्यवहार नहीं किया जाता। आज हिन्दू विवाह सम्बन्ध में जात पात का भाव छोड़ दें, कल ही देखिए मुसलमानों का बना बनाया किला एकदम नीचे गिर पड़ता है। पञ्जाब में हज़ारों गूजर राजपूत, जाट, कुम्हार, लोहार, तरखान, शेख और नाई आदि हिन्दू बनने को तैयार हैं। हसन नजामी आदि का प्रचार उनके लिए निरर्थक है। वे केवल इतना चाहते हैं कि हिन्दू हों अपनी बेटी दें और हमारी लें शूद्र होकर भी वे समाज से अलग अलग पड़ा नहीं रहना चाहते। हिन्दू जन्माभिमान छोड़ने को तैयार नहीं। यह बड़ी घमंडी जाति है। रस्सी जल गई है, परन्तु बल नहीं गया। किन्तु ईश्वर का नियम किसी पर दया नहीं दिखाता। जब तक हिन्दू लोग जात पात का भाव छोड़ कर अपने सारे भाइयों को गले नहीं लगाते—हिन्दूमात्र के साथ रोटी-बेटी का व्यवहार आरम्भ नहीं करते—तब तक वे मुसलमानों की दुष्टता का शिकार होते ही रहेंगे। सरकार और इनके दैनिक पत्र इनकी रक्षा नहीं कर सकते। यह काम कठिन है परन्तु इसके बिना और कोई उपाय भी नहीं। बहुत से पेटू मिल कर दण्डधारी हाथ का सामना नहीं कर सकते। उनका पिटना अवश्यम्भावी है।

सन्तराम बी. ए.

—०:—।#:—:०—

मद्रास प्रांत में वैदिक धर्म प्रचार

बंगलौर संस्कृत कालेज में वेद पर व्याख्यान

(संवाददाता द्वारा)

कर्नाटक प्रांत में वैदिक धर्म के प्रचार के समाचार पाठक समय समय पर प्राप्त करते रहे हैं। पुरुषों के अन्दर वैदिक धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न कराने का यत्न तो गत चार वर्षों से हो ही रहा था अब गत ३, ४ मास से देवियों के अन्दर भी धर्म विषयक इस उत्सव को विशेष रूप से मंगलौर में तथा अन्यत्र पैदा किया जाने लगा है। इस बात का बहुत सा श्रेय स्ना० धर्मदेव विद्यावचस्पति की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती देवीजी को है। जौलाई मासके प्रारम्भसे आर्य स्त्री समाज की स्थापना नियम पूर्वक करदी गई है जिसकी प्रधाना देवी विद्यावती जी उपप्रधाना श्रीमती पद्मावती जी और मन्त्रिणी कु० सीतादेवी जी हैं। साप्ताहिक अधिवेशन प्रति बृहस्पतिवार होते हैं। गत ५ जौलाई को स्ना० धर्मदेव जी ने अपनी धर्म पत्नी सहित बंगलौर के लिए प्रस्थान किया जहां हिन्दी प्रचार सम्मेलन के अतिरिक्त समाज प्रचार का प्रबन्ध करना था। हिन्दी प्रचार सम्मेलन में उनका एक लिपि विस्तार पर हिंदी के साथ साथ कर्नाटक में भाषण हुआ जिस में उन्होंने एक राष्ट्र भाषा हिंदी और राष्ट्रलिपि देवनागरी की आवश्यकता पर अच्छी तरह से प्रकाश डाला। सम्मेलन में देवी जी के दो भजन भी जनता के अनुरोध पर हुए। सम्मेलन बहुत ही सफलता पूर्वक हुआ। उपस्थित ६ हजार के करीब होगी। स्वागताध्यक्ष श्रीयुत श्रीनिवास राव जी का प्रारम्भिक भाषण कई दृष्टियों से बड़ा ही महत्व पूर्ण था। कर्णाटक प्रांत में हिंदी के प्रचार का इतिहास देते हुए आपने बताया "सब से पहले आर्य समाज के उपदेशक पं० सत्यव्रत सिद्धांतालङ्कार और पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति आदि ने बंगलौर और मंगलौर की जनता में हिंदी की जागृति उत्पन्न की। फिर मद्रास के हिंदी प्रचार कार्यालय की तरफ से कर्नाटक के कई शहरों में हिंदी प्रचार का काम शुरू हुआ गत ५, ६ वर्षों के आन्दोलन का फल यह हुआ कि कर्णाटक के हजारों स्त्री पुरुष हिंदी के प्रेमी हो गये (मुद्रित भाषण पृ० १) आगे चल कर राष्ट्रभाषा विषयक आंदोलन का प्रवर्तक ऋषि दयानन्द को बताते हुए उस भाषण में उन्होंने कहा "हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा होनी चाहिये" यह कोई नया आन्दोलन नहीं है। आज से ५० वर्ष पूर्व आर्य समाज के स्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने घोषित किया था कि हिंदी हिंदुस्तान की सार्वदेशिक भाषा है और उनकी मातृभाषा गुजराती होने पर भी उन्होंने अपने प्रायः सब ग्रंथ हिंदी में ही लिखे थे इत्यादि। सम्मेलन में भाषण होते ही व्याख्यानार्थ अनेक निमंत्रण अनेक संस्थाओं की तरफ से आने लगे। सब से पहले जैन सज्जनों की तरफ से निमंत्रण आया जिसके अनुसार ११ ता० को सायङ्काल गुजराती हाई स्कूल में स्नातक जी का कर्णाटक भाषा में यज्ञों में पशु हिंसा वेदादि शास्त्र विरुद्ध है। इस विषय पर विस्तृत विचार प्रकट किए। सभापति का आसन श्रीयुत

कृष्णराव ने जो मद्रास लेजिस्लेटिव के सुप्रसिद्ध सदस्य हैं ग्रहण किया। इस सभा में यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ कि मैसूर महाराज से यह प्रार्थना की जाय कि वे आगामी जयन्ती महोत्सव के समय जो १ अगस्त को होना है अपने राज्य में गो हत्या को राजनियम द्वारा सर्वथा बन्द करादें। १२ ता० को प्रातः संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल महोदय के निमन्त्र पर वेद-प्रचार' विषय पर लगभग १॥ घंटे स्नातक जी का धारा प्रवाह संस्कृत में भाषण हुआ सभापति का आसन कालेज के वेदोपाध्याय श्रीनारायण शास्त्री ने ग्रहण किया। व्याख्यान में 'वेद पढ़ने का अधिकार' इस पर विस्तृत विचार करते हुए स्त्रियों तथा जन्म शूद्रों को भी वेद पढ़ने का अधिकार है यह सिद्ध किया गया था कि तथा वर्ण अवस्था गुण कर्मानुसार ही होती है इस पक्ष के समर्थन में शास्त्रीय प्रमाण प्रसङ्ग वश दिये गये थे। इधर के लोग कितने कट्टर हैं यह इस बात से मालूम हो सकता है कि लगभग ७ जौलाई को प० मालवीय जी का व्याख्यान शङ्कर मठ में हुआ था जिसमें उन्होंने अपना यह विचार प्रकट किया था कि द्विजमात्र को वेद पढ़ना और यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये तथा शूद्रों को भी 'ओ नमः शिवाय' इत्यादि पञ्चाक्षरी मन्त्रों से दीक्षा देनी चाहिए इस पर भी पण्डित मण्डली गरम हो उठी और बहुतों ने बीच २ में टोक कर माननीय मालवीय जी को हैरान सा कर दिया और सभा विसर्जित होने पर वह शोर मचा दिया कि मालवीय जी हार गए। किन्तु यह हर्ष की बात है कि स्नातक जी के व्याख्यान को उपस्थित पण्डित मण्डली ने जिस की संख्या ढाई या तीन सौ होगी बड़े ही ध्यान से सुना और बीच में किसी तरह का कोलाहल नहीं किया। व्याख्यान समाप्त होने पर चार पांच पण्डितों ने और स्वयं सभापति महोदय तक ने कुछ शङ्काएं व्याख्यान की अत्यन्त प्रशंसा करते हुए सभ्य तौर पर रक्खीं जिनका सन्तोष जनक उत्तर स्नातक जी की तरफ़ से दिया गया। अन्त में प्रिंसिपल महोदय ने व्याख्याता को अत्यन्त धन्यवाद देते हुए समय २ पर अन्य विषयों पर व्याख्यान देकर पंडित मंडली को अनुगृहीत करने की प्रार्थना की। इस व्याख्यान से पंडित मंडली में बड़ी खलबली मच गई।

१२ ता० को सायंकाल गुब्बी थियेटर में डा० राम राव के एम. डी. सभापतित्वमें स्नातक जी का वैदिक सन्देश।' पर कर्णाटक में प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। उपस्थिति छः सात सौ के करीब होगी। इस व्याख्यान में मूर्ति पूजा, जाति भेद अस्पृश्यता इत्यादि को वेद विरुद्ध सिद्ध करते हुए आर्यसमाज के उद्देश्यों पर भी प्रकाश डाला गया था।

१३ ता० को प्रातः वैश्य वेद विद्यालय में जिसे चलाने के कारण बंगलौर के एक ब्राह्मण सज्जन श्रीयुत सुब्बा नरसिंह शास्त्री को जाति से बहिष्कृत कर कर दिया गया है स्नातक जी का वेद पर व्याख्यान हुआ और उसी दिन पञ्चमहायज्ञ पर एक आर्य के गृह में छोटा भाषण हुआ। इस तरह बंगलौर में ८ दिन ठहर कर स्नातक जी ने वैदिक धर्म का प्रचार खूब धूम धाम से किया प्रायः इन अवसरों पर उनकी धर्मपत्नी ने भजनों द्वारा प्रचार में सहायता की।

बंगलौर से स्नातक जी मद्रास इस उद्देश्य से आये कि समाज की स्थापना की जाय और वैदिक धर्म की जागृति जनता में पैदा की जाय। अभी-तक इस विषय में म० शान्तिस्वरूप जी विद्यालङ्कार की सहायता से जो विधवा विवाह सहायक सभा की तरफ से मद्रास प्रांत में कार्य करने के लिये आए हुए हैं विशेष यत्न किया रहा है। यहाँ की अवस्था कुछ विचित्र सी है। गुजराती पञ्जाबी तथा अन्य उत्तर भारतीय सज्जनों से इस विषय में बड़ी प्रोत्साहना मिल रही है पर मद्रासी सज्जन

बहुत कम उत्साह रखते हैं, जिन के अन्दर उत्साह है और जो समाज सुधार से पूरी सहानुभूति रखते हैं वे भी आगे बढ़ने को तैयार नहीं। देशोद्धारक श्रीयुत नागेश्वर राव सम्पादक "आन्ध्र पत्रिका" प्रो० वीर राघव शर्मा मन्त्री Hindu Social Reform League, श्रीयुत तिरुम्मलाचार्य बी० ए० बी० एल० हाईकोर्ट वकील. कैप्टेन डा० निम्बकर, श्रीयुत संजीव कामथ बी० ए० बी० एल० वकील. श्रीयुत मानिक भाई शर्मा संचालक आर्य भवन होटल, श्रीयुत नेशन् बी० ए० बी० एल० डा० कर्णसिंह महता इत्यादि सज्जनों से मिल कर आर्य समाज की नियमपूर्वक स्थापना के लिये कोशिश की जा रही है। एक बड़ी कठिनाई स्थिर कार्यकर्ता न होने और समाज के लिये अपना स्थान न होन की है। इन कठिनाइयों को दूर करने के सम्बन्ध में यथा शक्ति प्रबन्ध किया जा रहा है। यदि सभा की तरफ से सन्तोषजनक प्रबन्ध हो सका तो आशा है कि यहां शीघ्र ही समाज की स्थापना होकर अच्छा कार्य हो जाएगा। गत २२ जुलाई को सर गंगाराम जी की मृत्यु के उपलक्ष्य में जस्टिस वेंकट सुब्बा राव जी के सभापतित्व में गोखले हाल में सार्वजनिक सभा हुई उस में स्नातक जी के अंग्रेजी भाषण को जिस में मद्रासी सज्जनों के इतने शिक्षित होते हुए भी आत्मिक साहस वा Moral courage के प्रभाव की कड़ी समालोचना की गई थी जनता ने बहुत पसन्द किया। २४ ता० को हिन्दी प्रेमी मण्डल की तरफ से 'ऋषि दयानन्द का आधुनिक भारत के लिये सन्देश, इस विषय पर स्नातक जी का भाषण हुआ। एक वैदिक धर्म पर व्याख्यान माला का प्रबन्ध किया जा रहा है जिस से आर्यसमाज सम्बन्धी भ्रम दूर हो सकें।

कायापलट

(ले० पं० सोमदत्त विद्यालङ्कार)

(१)

सउजनपुर गाँव के प्रसिद्ध ज़मीदार बाबू मधुसूदन ने भोजन के बाद अपनी धर्म पत्नी अनुसूया को पान लगा कर लाने के लिये कहा, और अपने पलंग पर मसनद के सहारे बैठकर बङ्गवासी समाचार पत्र का नया अङ्क पढ़ने लगे। ऐसे बृहत्काय पत्र के पत्रों को बड़ी कठिनाई से उलट पुलट कर उसके अग्रलेख पर दृष्टि डाली। इसका शीर्षक था 'सावधान'! लेख में आर्यसमाज को हिन्दू धर्म का विध्वंसक तथा रसातल में पहुँचने का प्रयत्न करने वाला बताकर पाठकों को इस से सावधान रहने का निर्देश किया गया था।

अनुसूया के हाथ से पान लेकर मुंह में रखकर फिर पत्र पढ़ने लगे। अनुसूया हाथ में लगे हुए कत्थे को दरवाजे की चौखट से पोंछने लगी दूसरे हाथ से अचानक लोटा नीचे गिर पड़ा, इससे मधुसूदन बाबू का ध्यान भंग होगया। अनुसूयाकी

तरफ़ एक प्रेमभरी नज़र से देखकर उसे अग्रलेख का आशय समझते हुए बोले "कहीं हमारा लल्ला भी आर्या वार्या न होजावे, मैंने सुना है कि कुसुमपुर के हरिधन बाबू का लड़का धीरेन्द्र आर्या हो गया है, २० साल की उमर होगई है, बहुत समझाने पर भी विवाह करना स्वीकार नहीं करता जब कभी उसकी माता उसे विवाह के लिये कहती है तभी वह इधर उधर के श्लोक बोलकर कहदेता है कि मैं तो कम से कम २५ साल की अवस्था में विवाह करुंगा। कहीं हमारे लल्ला को भी यह लोग काबू में न कर लें मैंने सुना है कलकत्ते में बहुत से स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के आर्या हो गये हैं „

मधुसूदन बाबू इस प्रकार अपनी धर्म पत्नी से बातें कर रहे थे. वाहर से चिट्ठीरसां ने आकर सांकल खड़काई, अनुसूया सीढ़ी से उठ कर झटसे लम्बां घूंघट खिसका कर पास के कमरे में चली गई। चिट्ठीरसा ने दरवाजा खुलने में देर होती देख कर दरवाजे की झांक से चिट्ठियें अन्दर फैंक दीं और चला गया। अनुसुया ने बड़ी व्यग्रता से पूछा "देखो काली की तो कोई चिट्ठी नहीं आई न जाने उसे क्या हो गया, कहीं बीमार तो नहीं हो गया"

\+ + × + +

(२)

मधुसूदन बाबू का एक मात्र लड़का काली नाथराय कलकत्ते के एक स्कूल में पढ़ता था एक धनी जमीदार के लड़के में जो जो दुर्गुण आसकते हैं वे सब काली नाथ में पूरी तरह आये हुए थे। एक तो मोटी अकल वाला होने से और दूसरे एक धनी का पुत्र होनेसे स्वाभावतः प्रतिभाहीन होने के कारण कालीनाथ बारह साल स्कूल में पढ़ते रहने पर भी अभी ८ वीं जमात में ही पढ़रहा था। पिछले दो साल वह इसी जमात में पड़ा था। उन दिनों परीक्षा के दिन थे। बोर्डिङ्ग केअन्य सब विद्यार्थी दिन रात कड़ी मेहनत करते थे। कोई कोई खाने पीने की भी सुध भुला कर, रात को भी पूरी नींद न सो कर अनवरत परिश्रम कर रहे थे। पर हमारे कालीनाथ राय को परीक्षा की इतनी फिकर न थी। उस के माता पिता भी प्रायः उस से यह कह दिया करते थे बेटा! हमने तुम्हे मुनीम थोड़े ही बनाना है पहिले तन्दुरुस्ती चाहिये पढ़ना लिखना तो होता ही रहता है „

जब रात के ग्यारह बजे बोर्डिङ्ग में अपने कमरे में लैम्प जलाकर विद्यार्थी परीक्षा की तय्यारी में लगे होते थे, काली नाथ अपने कुछ यार दोस्तों के साथ, लोअर चितपुर रोड की सैर से लौट कर ताश में व्यग्र होते थे।

लक्ष्मी पर उन्हें पूर्ण भरोसा था, जिस की सहायता से वह सरस्वती पर भी विजय पाना दुस्तर कार्य नहीं समझते थे। बहुधा कहा करते थे कि हम तो इस साली सरस्वती के पीछे पड़ना जानते ही नहीं। अगर इसे खुदगरज होगी तो हमारे पास दौड़ी आयगी। पर सरस्वती भी ऐसी पागल नहीं है कि इन पर आकर सवार हो जाय, हां ऐसों पर लक्ष्मी की कृपा बेशक रहती है, लक्ष्मी का वाहन उल्लू है।

परीक्षा होगई, परिणाम निकलगया, कालीनाथ पास होगये। परीक्षा की तैयारी में विशेष रूप से लगे रहने के कारण तो नहीं पर ऐरे गैरे कामों से फुरसत ही न मिलने के कारण कालीनाथ ने महीनों से अपने माता पिता को कोई पत्र नहीं डाला था।

आज परिणाम सुनने पर कालीनाथ की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। बहुत से आधी रात को भी, कहीं नींद न आजावे इसलिये खूंटी से चोटी बाँध कर पढ़ाई में मेहनत करने वाले फेल हो गये थे, वे बिचारे रो रोकर अगले वर्ष शुरू से ही मेहनत करने का संकल्प तथा प्रतिज्ञा कर रहे थे।

श्रेणी में प्रथम रहने वाले तथा सर्वदा प्रयत्न करके वे रोकटोक पास होने वाले भी परिणाम को सुनकर प्रसन्न अवश्य हो रहे थे पर जितनी प्रसन्नता कालीनाथ को होरही थी उतनी और किसी को नहीं थी ।

लाटरी में नाम आजाने से जिसे १) देने पर ही १०००) मिल जायें उसे जितनी प्रसन्नता होती है उतनी दिन रात पसीना बहाकर फसल के मौके पर १०००) कमाने वाले किसान को नहीं होती। कालीनाथ को सचमुच लाटरी में यह माल मिला था। यह शुभ समाचार अपने माता पिता तक पहुंचने के लिये आज कालीनाथ ने अपने पिता को पत्र लिखा।

* * * *

(३)

बाबू मधुसूदन ने पत्रों को उलट पुलटा कर देखा और एक पत्र को हाथ में लेकर अनुसूया से कहा 'लो ये काली का पत्र भी आगया, उसने लिखा है कि वह इस वर्ष मिडिल के इम्तहान में पास होगया और शीघ्र ही घर आने वाला है।" माता पिता के हर्ष तथा आश्चर्य का ठिकाना न रहा, उन्हें काली के पास होने की उम्मेद न थी। पीतल की पतीली में पानी उबलता देखकर हमें आश्चर्य नहीं होता पर कागज की कढ़ाही में पानी उबलता देखकर हमारे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहता।

अनुसूया यह समाचार घर के एक २ आदमी को सुनाने के लिए उतवली होने लगी। उसने किसी न किसी बहाने से सब को बुलाकर इधर उधर की बातों के प्रसंग में यह समाचार भी सब को सुना दिया, घर के नौकर चाकरों ने जब यह समाचार सुना तो भागे हुए बाबू साहेब के आकर इनाम माँगने लगे। काली की दादी अपने लड़के के पास आकर पोपले मुंह से काली के विवाह का प्रस्ताव करने लगी। अनुसूया भी सब जगह डौंडी पीटकर फिर वापिस आकर दरवाजे के पास बाहर खड़ी होकर अपनी सास की बातें सुनने लगी। बाबू मधुसूदन विवाह के प्रस्ताव से सहमत होगये। निश्चय हुआ कि अब शीघ्र ही काली का विवाह कर देना चाहिये। विवाहार्थ आये हुए पुराने पत्रों को देखकर फिर पत्र व्यवहार शुरू किया गया। कुछ दिनों में ही विवाह के लिये एक लड़की तलाश करली गई धनपुरे के प्रसिद्ध रईस बाबू धरणीधर की इकलौती लड़की देवकी के साथ कालीनाथ का विवाह पक्का होगया। यद्यपि देवकी से रूप में तथा विद्या में अधिक और बहुत सी लड़कियाँ थीं तो भी यह देखकर कि अपने पिता की सारी जायदाद की यही मालकिन होगी यही सम्बन्ध सब से अधिक पसन्द किया गया।

जेठ सुदा ५ का बड़ा धूम धाम से कालीनाथ का विवाह हो गया। कुछ मास घर रहने के बाद देवकी को साथ लेकर कालीनाथ कलकत्ते चले गये और एक मकान किराया करके रहने लगे। कालीनाथ और देवकी के स्वभाव में जमीन आसमान का फरक था। कालीनाथ आडम्बर प्रिय था और देवकी सादगी में रहना पसन्द करती थी। कालीनाथ चाहता था कि वह उस के साथ अपटुडेट फ़ैशन के वस्त्रों से अलंकृत होकर हाथ से हाथ पकड़ कर सायङ्काल को पार्क में घूमने जाया करे जिससे वह अपने मित्रों से उसका परिचय कराकर उसके रूप की प्रशंसा उनके मुख से सुन कर अपने भाग्य को सराहा करे। घर में मित्रों के साथ ताश खेलने में भाग लिया करे। पर देवकी इसे बिलकुल पसन्द न करती थी वह पति को ही अपना आराध्य देव समझती थी और पर पुरुष का मुंह देखना पसन्द न करती थी।

कालीनाथ को अपना गृहस्थ जीवन दूभर प्रतीत होने लगा पर वे लोक निन्दा के भय से प्रकट में कुछ और न करके उदासीन रूप से गृहस्थी का सञ्चालन करने लगे। एक तो गृहस्थी के झंझटों के कारण दूसरे आन्तरिक वेदना के कारण अब कालीनाथ का ध्यान पढ़ाई में और भी कम लगने लगा। पर सज्जनपुर में कलकत्ते जैसी चहल पहल न होगी इस लिये उन्हों ने पढ़ाई के बहाने से कलकत्ते में ही रहना पसन्द किया।

÷ ÷ +

(४)

कालीनाथ का विवाह हुए नौ साल व्यतीत हो चुके हैं। कालीनाथ के दो लड़के और एक लड़की भी हो गये हैं। कालीनाथ अब कालेज की बी० ए० क्लास में पढ़ते हैं। इम्तहान के दिन पास आगये हैं। कालीनाथ इस वर्ष इम्तहान में पास होने के लिये कठोर प्रयत्न कर रहे हैं। यह तो उन्हें पूरा निश्चय है कि बिना लक्ष्मी की सहायता के वे परिक्षा में पास न हो सकेंगे। कलियुग में लक्ष्मी की सहायता से सब काम पूरे किये जासकते हैं। पिछले दो वर्षों में लगातार प्रयत्न करने पर भी आप परीक्षा में सफल न हो सके थे। इस वर्ष आपने परीक्षा में सफल होने का दृढ़ निश्चय कर लिया है। परीक्षक कौन २ है, कहां रहते हैं, कैसे आदमी हैं यह सब जान लेने के बाद उन्हें काबू करने के प्रयत्न भी कालीनाथ ने अच्छी तरह से कर लिये।

इस वर्ष पास होने के लिये चाहे हजारों रुपयों पर पानी फेरना पड़े पर कालीनाथ ने अपनेलक्ष्य को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

उन के कई कालेज के मित्रों ने इस वर्ष परीक्षा में बैठने का विचार छोड़ दिया था, उन्हों ने कालीनाथ को भी अपने दल में लाने के लिये बहुत प्रयत्न किये। परन्तु 'विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्य माना प्रारब्ध मुत्तम जनाःन परित्यजन्ति"

फिर कालीनाथ तो इस वर्ष परिक्षा में पास होने के लिये सैकड़ों रुपया खर्च कर चुके थे। उन्हों ने अपने निश्चय पर दृढ़ रहना ही उचित समझा।

+ ÷ +

बाबू कालीनाथ का बड़ा लड़का विपिन स्कूल की तीसरी ज़मात में पढ़ता है। रंग रूप में तथा स्वभाव में विपिन अपनी माता से बिलकुल मिलता है। पढ़ने में चतुर होने के कारण सभी स्कूल के मास्टर विपिन से प्रेम रखते हैं। विशेषतया स्कूल के पंजाबी मास्टर श्री नानकचन्द जी का उस के प्रति अत्यन्त ही अनुराग है! वह समय समय पर विपिन को पास बुला कर उसे धर्म तथा आचरण सम्बन्धी उपदेश देते रहते हैं। यह उन्हीं के प्रयत्न का फल है कि स्कूल के बहुत से विद्यार्थी प्रत्येक रविवार को आर्य समाज मन्दिर में जाते हैं। और योग्य विद्वानों तथा प्रसिद्ध प्रसिद्ध सन्यासियों के व्याख्यान सुनते हैं। इस छोटी उम्र में ही विपिन के मन में स्वदेश तथा स्वधर्म के प्रति अटूट श्रद्धा पैदा हो गई है। स्कूल से लौट कर वह प्रति दिन सायंकाल सन्ध्या करता है, इतवार के दिन सब से पहले ही समाज मन्दिर में पहुंच कर वह उचित प्रबन्ध में मंत्री की सहायता करता है।

विपिन के यह समाज-सेवा के भाव इसकी माता को अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान करते थे, परन्तु उसके पिता, समाज में इस प्रकार उसका अनुराग देखकर मन ही मन चिन्तित और दुखी होते थे, कई बार उन्होंने विपिन को आर्य-समाज में जाने से रोकने का यत्न भी किया परन्तु उनके युक्ति सङ्गत उत्तरों से उन्हें चुप ही होना पड़ा। उन्होंने दण्ड देकर विपिन का समाज में जाने से रोकने का कई बार विचार किया परन्तु बाबू कालीनाथ

को अपनी पत्नी के कारण ऐसा करने का साहस न हुआ और वह मन ही मन कुढ़े रहने लगे।

× × × ×

सन् १९२३ असहयोग का युग था। महात्मा गान्धी की दिव्य वाणी से भारतीय जनता में निर्भयता तथा स्वाधीनता की तरंगें उठ रहीं थीं। नेतागण घूम घूम कर सरकारी स्कूलों, अदालतों, तथा शराब और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का संदेश दे रहे थे। विपिन अभी स्कूल से पढ़ कर आया था और हाथ में गुल्ली डण्डा लिए अपने साथियों के साथ खेलने के लिए घर से निकला ही था कि इतने में डौंडी पीटने वाले की आवाज़ उसके कान में पड़ी। यह सुन कर कि आज शाम को मिर्जापुर पार्क में देशबन्धु दास तथा पटना के प्रसिद्ध नेता श्री राजेन्द्र प्रसाद का व्याख्यान ६ बजे से प्रारम्भ होगा, विपिन घर लौट पड़ा और वहां से अपनी माता की आज्ञा लेकर झटपट सभास्थल की ओर चल दिया! जिस समय वह वहां पहुंचा उस समय व्याख्यान हो रहा था। व्याख्यान दाता महाशय बड़ी जोरदार आवाज़ में कह रहे थे कि "सरकारी स्कूलों में जो शिक्षा दी जाती है उससे बालकों का चरित्र भ्रष्ट हो जाता है। आज कल हमारे देश में रावण राज्य है। इस शिक्षा से मनुष्य गुलाम बन जाता है। सोने के पिंजड़े में बैठ कर स्वादिष्ट फल खाने वाले, और मालिक के मनोरञ्जन के लिए ही 'राम राम' बोलने वाले तोते मत बनो। इस पराधीन जीवन से आज़ादी का जीवन बहुत अच्छा है। यह हमारी जाति का नाश कर देगी। इसलिए इन 'गुलामखानों' को छोड़ दो। स्कूलों से अपने बच्चों को निकाल लो। और नये नैशनल स्कूलों में उन्हें प्रविष्ट कराओ।" इत्यादि

इतने हीं में एक श्रोता ने उठ कर व्याख्यान दाता से पूछा कि "क्या आप बतला सकते हैं कि इन नैशनल स्कूलों में पढ़ने से क्या लाभ होगा जब कि उनकी पाठविधि भी वही है जो सरकारी स्कूलों में" व्याख्यानदाता ने कुछ मुस्करा कर उत्तर देना आरम्भ किया। (अपूर्ण)

—— :o: ——

फिजी में वैदिक धर्म का प्रचार

फिजी द्वीप एक छोटा सा पृथ्वी का खण्ड अमरीका के पश्चिम तथा आस्ट्रेलिया के पूर्व की ओर स्थित है। इस टापू में भारतीयों को आबाद हुए ५० वर्षों के लगभग होगये हैं। आबो हवा की दृष्टि से यह भारतीयों के बहुत अनुकूल है। इस समय भारतीयों की संख्या लगभग ६५००० है इस में लगभग ६००० मुसलमान तथा लगभग ५०० ईसाई होंगे।

यहाँ पर जो भारतीय आये वे अधिक तर ग्रामीण थे। शिक्षा के न होने के कारण इन लोगों

ने महान् से महान् कष्टों को सहन करके अपनी अग्नि परीक्षा समाप्त करके अब दूसरे युग में पदार्पण कर रहे हैं। यह युग मैं यदि आर्य समाज युग कहूँ तो अनुचित न होगा। इस समय लोग अपनी सभ्यता को सर्वोच्च सभ्यता समझने लगे हैं। अभी तक ईसाई पादरियों ने इन्हें भूल भुलैयों में डालने तथा सदैव के लिए अपनी मातृभूमि भारत से नाता तोड़ने की भरसक कोशिश की पर आर्य समाज उनके इस कार्य में बाधक हुआ। अब ईसाई पादरी अनुभव करने लगे हैं कि आर्य समाज एक भयानक जन्तु है जिनका डसा कोई व्यक्ति अथवा कोई पौलिसी जीवित नहीं रह सकती। आस्ट्रेलिया में पिछली साल एक ईसाइयों की सभा हुई थी, उस में फिजी में ईसाई धर्म प्रचार के सम्बन्ध में रिपोर्ट पेश की गई। उस रिपोर्ट से पता चला कि पिछले तीस वर्षों में जितना व्यय हुआ है उसका फल बहुत थोड़ा हुआ, अर्थात् बहुत कम ईसाई बन पाये। यहाँ के पादरियों को सूचना दी गई यदि वैसा ही ढीला रहेगा तो भारतीयों में ईसाई धर्म प्रचार का काम बन्द कर दिया जावेगा। आर्य समाजकी बढ़ती को देखकर ईसाई पादरियों की दृष्टि में समाज कांटों की भांति चुभ रहा है। कभी २ तो इनका पारा इतना चढ़ जाता है कि आर्य समाज को फिजी सरकार का शत्रु बतलाकर सरकारी कर्मचारियों को भड़काते हैं। कभी मुसलमानों से कहकर कि देखो ये लोग हम दोनों का अशुभ चिन्तन करते हैं उत्तेजित कर देते हैं।

अभी इसी वर्ष प० श्रीकृष्ण जी आर्य्य मिशनरी देश से आकर प्रचार कर रहे हैं। उक्त पंडित जी के विरुद्ध में इन पादरियों ने खूब रौला मचाया। सरकारी कर्मचारियों को उलटी सीधी बातें कह कर उनके ख्यालात उनके विरुद्ध कर दिये। पर अब जब समझा कि हमारी दाल नहीं गल सकती है खिसिया कर चुप हो रहे।

ईसाइयों के विरोध का असर अच्छा हुआ। जो लोग (हिंदू) आर्य समाज के विरोधी थे वे भी समाज के पक्ष में हो गए। इस समय उक्त पंडित जी धड़ाधड़ वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। उनका असर जनता पर खूब ही पड़ता है। कभी कभी जब भारत की प्राचीन सभ्यता पर व्याख्यान देते हुए भारतियों की वर्तमान अधोगत अवस्था का चित्र खींचते हैं तो लोगों के नेत्रों से अविरल अश्रु धारायें बहने लगतीं हैं।

आर्य समाज के प्रचार का आप इस बात से अन्दाजा लगा सकते हैं कि पिछले वर्ष १० विद्यार्थी फिजी से गुरुकुल वृन्दावन तथा डी. ए. वी. कालेज कानपुर शिक्षा पाने के लिए भेजे गये। इस वर्ष ७ विद्यार्थी डी. ए. वी. कालेज कानपुर, ८ विद्यार्थी गुरुकुल वृन्दावन, २ कन्यायें कन्या पाठशाला देहली तथा ४ कन्यायें कन्या महाविद्यालय जालन्धर भेजी गई हैं। अगले वर्ष कुछ नवयुवक उपदेशक विद्यालय में तथा कुछ सत्याग्रहाश्रम में कपड़ा बुनने का काम सीखने को भेजने का विचार हो रहा है। इस वर्ष भी १ महाशय सत्याग्रहाश्रम साबरमती में कपड़े का कार्य सीखने के लिए पहुंच गए हैं।

यदि हम आर्योंका काफी उद्योग जारी रहा और सार्वदेशिक सभा ने हमारे उपदेशकों द्वारा सहायता की तो आर्य समाज की उज्वल कीर्ति टापू के कोने कोने में दीख पड़ेगी। सर्व शक्तिमान् परमात्मा मेरी इच्छाओं को पूर्ण करे।

गोपेन्द्र नारायण पथिक

अधिष्ठाता तथा मुख्याधापक

फिजी गुरुकुल लाटोका

मद्रास के झोंपड़ों में वैदिकधर्म प्रचार

श्री मान् पं० M. J. Sharma स्वतंत्र आर्योप देशक जी ने मदुरा के जिला की देहात के झोंपड़ों में वैदिक धर्म आर्य समाज ऋषि दयानन्द—का नाद तामिल भाषा में व्याख्यानों तथा पमफ़्लेटों द्वारा सुनाकर तामिल भाषी जनता जिस ने आज तक इस सन्देश को स्वप्न में भी नहीं सुना था इतना खुश किया कि श्रीमान् जी पं० M. J. Sharma के व्याख्यानों में बार बार ताली पीट कर अपने हृदय के प्रेम भाव वैदिक धर्म आर्य समाज ऋषि दयानन्द के लिये प्रगट करते थे-जिस शैली से आप इस कठिन भाषा भाषी देश में धर्म का प्रचार के लिये योग्य है वह सराहनीय है--

आप की आर्थिक दशा बहुत ही गिरी हुई है इस लिए आप आर्थिक कुष्ट से महान दुखी हैं हमारे उत्तरीय भारत के आर्य भाई आशा है कि आप की आर्थिक दशा का काफी नोटिस लेंगे आप जिला बिजनौर के रहने वाले हैं करीब १३ बर्ष से इधर आप स्वतंत्र रूप से इधर की भाषा तामिल सीख कर बड़ी कठिनाईयों में से निकल कर इस आर्य मिशन के एक ही योग्य उपदेशक इस तामील देश में है आप पुराने आर्यों में से हैं मेरे अपने विचार में और कोई दुसरा उपदेश इतना योग्य तामिल भाषा भाषी देश के लिये अभी तक आर्य समाज के क्षेत्र में इतनी योग्यता का नहीं है।

वैदिक धर्म का सेवक

गुलाबशंकर

अप्राप्य कौशिक सूत्र का प्रकाशन

जब से स्वामी दयानन्द सन्यासी ने वैदिक धर्म की आवाज उठाई तब से जन साधारण का ध्यान संस्कृत भाषा तथा उस के सहित्य की ओर अधि आकृष्ट हुआ है। और अनेक अप्राप्त पुस्तकों को खोज कर प्रकाशित कराया है परन्तु अभी अनेक वैदिक पुस्तकों का पता तक नहीं है जिस का प्रमाण भाष्यकारों ने अपने भाष्य में दिए हैं। सायण भाष्य में अथर्ववेद के भाष्य में कौशिक सूत्र वैतान सूत्र, आमिष्य कल्प, शान्ति कल्प, बचन कल्प आदि के नाम आये हैं परन्तु वे अब प्रायः लुप्त हो गए हैं। बड़े परिश्रम के पश्चात् कौशिक सूत्र का पता लगा। वह जर्मन की छपी है। इसकी एक प्रति सरस्वती भवन में मौजूद है। एक आद- को लिखाई देकर यह पुस्तक लिखाई गई है।

इस सूत्र ग्रन्थ में अथर्व के मन्त्रों का विनयोग बड़े ही विस्तार से दिया गया है। जिस से अथर्ववेद की महिमा लोगों पर प्रकट होगी। वैतान सूत्र भी पूर्वाध मिल गया है। एक अथर्ववेद के परिशिष्ट सूत्र का पता लगा है वह भी लिखवाया जा रहा और पुस्तकों के खोज के लिए यथाशक्ति प्रयत्न किया जा रहा है। परन्तु जब तक ये पुस्तकें छपती नहीं उन का यथोचित प्रचार न

होगा कोई बुकसेलर उसे छपाना नहीं चाहता क्यों कि अगर वे अप्राप्य पुस्तकें छापी न जांयगी तो वैदिक धर्म की बड़ी हानि होगी। कितनी लज्जा की बात है कि हमारी धार्मिक पुस्तकें भी हमारे पास नहीं है। इसलिये प्रथम मैंने कौशिक सूत्र छपवा कर प्रत्येक समाजों में तथा जन साधारण में पहुँचाने का विचार किया है। पर काम तभी हो सकता है जब कि प्रत्येक आर्य समाज, हर एक संस्कृत तथा वैदिक धर्म के प्रेमी इस कार्य के सम्पादन में सहायता प्रदान करें। यदि कम से कम ५०० ग्राहक भी मिल जावेंगे तो इस पुस्तक का प्रकाशन हो जावेगा और अथर्ववेद के एक बड़े भारी यन्त्र का उद्घाटन हो जायगा। यदि मुझे लोगों ने उत्साह दिया तो अथर्ववेद सम्बन्धी और पुस्तकों के प्रकाशन की व्याख्या भी की जायगी। आशा है कि मेरे इस अपील को सुनी अनसुनी न करके लोग गम्भीर चित्त से इसपर विचार करेंगे। और ग्राहक बनकर इस ग्रन्थ के छपवा डालने के उत्साहित करेंगे। नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा और पुस्तकें खोजने से भी न मिलेगी। पुस्तक का मूल्य अधिक से अधिक ३) रु० तक होगा।

भवदीय—

जे. पी. चौधरी काव्यतीर्थ

मन्त्री—आर्य समाज

काशी

—— :०: ——

आर्य धर्म का विस्तीर्ण क्षेत्र

(लेखक—जी० डी० जोशी सार्वदेशिक सभा देहली)

प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि जब २ धर्म में सामाजिक बुराइयों का (Social Curruptions) समावेश होता है तब २ परमात्मा की तरफ से विशेष शक्ति प्राप्त एक न एक सुधारक आ ही जाता है। प्राचीन काल से लेकर अब तक के समय पर विचार करने से ज्ञात होता है कि जबतक धर्मके अन्दर सत्यता सामयिक विचारानुकूल-बुराइयों के रूप में परिणित नहीं होती तभीतक संसार में इस का अनुसरण उचित रूप से किया जाता है ज्योंही सत्यता ही को लोग बुराई मानकर छोड़ देते हैं वे इस ईश्वरीय नियम का उल्लङ्घन कर पापमय जगत् में प्रवेश करते हैं, इसी लिये अवश्य इस सत्यता को सिद्ध करने के लिये (To revive and ameliorate the truth) ईश्वर अपनी विशेष शक्ति देकर ऐसे मनुष्य को भेजता है जो वास्तव में सत्य को मिथ्या होने से बचाये वैदिक धर्म ईश्वरोक्त-धर्म समझा जाता है, तो फिर क्यों संसार में इस की अवहेलना हुई। To err is human and to forgive is divine के कथनानुसार मनुष्यों ने वैदिक धर्म के समझने में भी चूक की और जो समझे चाहे वह गलत भी हो उसी पर डटे रहे। इस प्रकार से वैदिक धर्म में

बारम्बार त्रुटियों का समावेश हुआ और समय २ पर वह त्रुटियाँ विशेष-शक्ति-शाली-पुरुषों के द्वारा दूर भी कर दी गई जैसे इतिहास के प्रमाण-नुसार व्यासादि मुनियों ने वैदिक धर्म का प्रचार किया-इस के पश्चात वर्षों तक यही वैदिक स्थिर रहने से इस में कुछ बुराइयों का आविर्भाव हुआ तब महात्मा बुद्ध ने संसार में जन्म लिया उन्हों ने "अहिंसा परमो धर्मः" रूपी शस्त्र से दिग्विजय किया-इसी प्रकार बौद्ध धर्म भी जहां अहिंसा परमो-धर्म था वहां धन की मात्रा की प्रावल्यता तथा व्यभिचार की आशंका हुई-वही पवित्र व ब्रह्मचारी भिक्षु-भिक्षुणियां अधर्ममें रत हुये। ठीक इसी समय में श्री स्वामी शंकरा चार्य ने जन्म लेकर इस का समाधान किया यहां तक कि जन्म स्थान से इस धर्म की हस्ती मिट गई, और जिन देशों में अब है भी जैसे (चीन जापानादि में) वहां भी "हिंसा परमोधर्मः" का कथन है। श्री स्वामी शङ्कराचार्य ने आस्तिक मत का स्थापन करते हुये भी लोगों को वेद की वास्तविक सत्यता का अवलम्बन दिया। कोई भी बौद्ध अथवा अन्य इनके सामने न टिक सका और सारा भारतवर्ष वेदान्त मतावलम्बी हुआ यहां तक कि वेद के वास्तविक उद्देश्य को सब भूल गये। प्रकृति के नियमानुसार यह भी (पौराणिक धर्म) दूसरे रूप में परिवर्त्तित हुआ। ब्राह्मणादि जाति व्यवस्था ने जिस को एक बार आवश्यकता थी दूसरी बार आवश्यकता सिद्ध हुई। लोगों के अधिकार दबाए जाने लगे, उन पर अत्याचार हुआ और आपस का वैमनस्य बढ़ा, इस प्रकार अशान्ति और अन्याय का राज्य स्थापित हुआ और दूसरीतरफ आततायी मुसलमान शासकों की धर्मान्धता ने जोर पकड़ा। यद्यपि इस समय भी छत्रपति शिवा जी और गुरु गोविन्द सिंह जी ने समाजिक अशान्तियों को बुझाया परन्तु यह पर्याप्त न था-अनेकों ईश्वर-प्रदत्त शक्तियों का आविर्भाव हुआ सबने सत्य को ध्यान में रखते हुए सामयिक दशानुकूल लोगों को मार्ग बताया, लेकिन एक सत्य के निर्दिष्ट-लक्ष्य पर पहुंचने के लिए इस प्रकार के भिन्न भिन्न मार्ग ईश्वर को स्वीकार न थे ऐसे भिन्न भिन्न मार्गों के देखने से प्रजा असमञ्जस में थी कि किस मार्गका अनुसरण करे। ईश्वर दयालु है उसने प्रजा की असमञ्जसता तथा सत्य के अवलम्बनार्थ इच्छानुसार कार्य किया। बालक मूल शंकर का जन्म हुआ कौन कहता था कि वह कट्टर शैवानुयायी जो महा अन्धकार रात्री में भी शिवोपासना में जागता रहा वेद के रहस्य को समझेगा तथावैदिक धर्म का पुनः प्रवर्तक होगा। यही मूल शंकर स्वामी दयानन्द थे जिन्होंने वेदोक्त सत्यता के आधार पर संसारिक वैदिक आर्य धर्म (A Superior Universal Vedic—religicn) की स्थापना की परन्तु इतने मार्गों से पौराणिक धर्म, मुसलमान, इसाई, जैन, बौद्ध सिक्ख पारसी आदि पथिकों को रोक कर एक स्वयं आविष्कृत मार्ग पर चलने का आग्रह करना एक साधारण कार्य नहीं है जो हो स्वामीजी ने सत्य को लक्ष्य में रखते हुये अपने कार्य को दृढ़ किया और संसार ने भी उनके अविष्कृत मार्ग का अनुसरण किया वह सारे भूमण्डल में वैदिक धर्म ध्वजा का अवश्य फहराते परन्तु बीच ही में Whom God love she dies soon के अनुसार ईश्वरने उनको अधिक देरतक न रहने दिया। यदि स्वामी जी दश बरस भी इस लोक में और रहते तो कोई स्थन न ऐसा देखने में न आता जहां वैदिक धर्म की स्थापना न हुई होती परन्तु वह अपने अनुयायियों को मार्ग दर्शाकर ही चल दिये और भविष्य के लिए कार्य समाप्ति को छोड़ गए। यदि स्वामी जी यूरोप अथवा अमेरिका में जन्म लेते तो सारा विश्व उनका अनुयायी होता, परन्तु भारत को ऐसा सौभाग्य प्राप्त होने पर यहाँ के निवासी इस अमूल्य वेश कीमत वस्तु की यथार्थता को

नहीं पहचान सके—अस्तु, जिस देश में स्वामी जी की प्रचार—शक्तियों की इस प्रकार अवहेलना की है तो उस देश में उनके अनुयायियों की शक्ति किस सीमा तक फलीभूत होगी, यह तो पाठकों को विचारना है, परन्तु मैं यह दर्शाना चाहता हूं कि क्यों इस देश में इतनी शीघ्रोन्नति नहीं हुई। प्रथम तो राष्ट्र की भाषा का माध्यम न होना जिससे भिन्न २ प्रान्तों के निवासी स्वामी जी के उद्देश्यों को न समझ पाए और न समझ रहे हैं—दूसरा तीन प्राबल्य धार्मिक कट्टरपने की शक्तियों का सामना करना—धर्मान्ध मुहम्मदी भाई जो आर्य सिद्धांतों के सर्वथा विरुद्ध हैं जिनकी जन संख्या भारत की १ चौथाई है और जिन के अन्ध विश्वासानुकूल आर्य सिद्धांत का एक भी उद्देश्य सुचारु रूपेण लागू नहीं हो सकता जिन्होंने वैदिक धर्म का प्रसार देख कर चुप्पी साध कर उसको माना ही नहीं बल्कि उसके विपरीत आवाज उठाई और उठाते रहे हैं। इस प्रकार इसकी दृढ़ता के बाधक हैं। दूसरे ब्राह्मणों ने अपने जन्म सिद्ध अधिकार की महत्ता को घटते देखकर इसको दबाना चाहा। ब्राह्मण सर्व श्रेष्ठ थे यदि उन्होंने ही दबाया तो और कैसे अपनाते. और तो (क्षत्री, वैश्य, शूद्रादि) ब्राह्मणों के हाथ के लड्डू हैं। तीसरे विदेशी शासन होने से राज्य-धर्म की तह मे बहुत से आदमियों ने विश्राम पाया और इसके विमुख रहे-आदि। अब यह विचारना है कि यदि इन्होंने नहीं अपनाया तो किसने—इसका अनुसरण किया-प्रत्येक आदमी ने चाहे वह किसी समुदाय का क्यों न हो जिसने तर्क शास्त्र व बुद्धि वाद से काम लिया, जिसके विचार मनुष्य मात्र को दृष्टि से गुण-कर्म पर आधारित होकर एक समान हुये तथा जिसने Dogmas and superstition पर विश्वास न किया और यह सोचा कि वैदिक उद्देश्य मनुष्य मात्र के हितार्थ हैं, उसी ने इसको अपनाया। भारत में विद्या के विचार से महात्मा गांधी तथा महा कवि टैगोर जैसे विद्वान् भले ही उपस्थित हों परन्तु जन साधारणतया यह देश संसार में सब से अधिक अशिक्षित है। जहां लोग अशिक्षित हुए वहां बुद्धि से काम नही हुआ-यही कारण है कि यहां का अशिक्षित समुदाय तर्क या बुद्धि की बातों को क्या समझे। इस लिए इस कमी के होने से लोग यहाँ अन्ध विश्वास और प्राचीन परिपाटी को प्रथम स्थान देकर पूजते हैं-इन्हीं कारणों से भारत का राष्ट्रीय-निर्माणक आन्दोलन भी सफल नहीं होता। जहाँ बुद्धिवाद (Rationalism) ही नहीं वहाँ जाति प्रेम (Nationalism) कैसे हो। निष्कर्ष यह है कि आज आर्य संस्थायें जितनी शक्ति इस देश में व्यय कर रही हैं उसकी आधी शक्ति भी उन देशों में व्यय करती (यूरोप, अमेरिका आदि) जहां बुद्धि को प्रथम स्थान देकर पूजा जाता है तो आर्य सभ्यता तथा धर्म का बीज उस विस्तीर्ण और उपजाऊ क्षेत्र में अधिक महत्वपूर्ण धान्य पैदा करता-इस लिये मेरा आर्य संस्थाओं तथा उन के संचालकों व आर्य जगत् के महान् पुरुषों से निवेदन है कि वे इस विषय पर मनन करें और यदि उचित समझे तो आर्य-प्रचारकों को बड़ी संख्या में विदेश में भेजें। जहां समय उनकी सफलता का मार्ग देख रहा है।

———:o:*:o:———

मोरिशस में आर्यसमाजियों की वर्तमान परिस्थिति

मारिशस टापू भारतवर्ष के दक्षिण में लगभग ३॥ हजार मील दूरी पर बसा है। इस टापू की लम्बाई ४० मील और चौड़ाई लगभग ३४ मील है इसमें चार लाख के लगभग लोग निवास करते हैं, जिनमें तीन लाख हमारे ही भारतीय बन्धुगण हैं। जो कि ७० या ८० वर्ष से वहां पर पधारे हैं और एक लाख में कुछ फ्रांसीसी कुछ जर्मन कुछ चीनी कुछ संख्या में अफ्रीका के हबशी हैं जो कि अपने आप को क्रियोल करते हैं। मोरीशस में मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी है। पाठको! अब उनकी परिस्थिति की ओर जरा दृष्टिपात कीजिये। पहिले इस टापू में कितने ही लोग आये जिन्होंने अपना निवास स्थान बनाया। परन्तु किसी ने भी सफलता न प्राप्त की। यहां के जीव जन्तुओं से हार मानकर सब अपने अपने स्थान को लौट गये। सब के चले जाने पर अन्त में फ्रांसीसियों ने यहां पर आकर अपना निवासस्थान बनाया।

वे यहां पर कुछ अफरीकन हवशी भी लाए थे जो कि उनके खेतों में काम धन्धा करते थे। वे प्रायः सब खरीदे हुए दास थे। जब फ्रांसीसियों ने वहां पर गन्ने की खेती और चीनी बनानी प्रारम्भ की तब उन्हें खेतों में काम करने के लिए बहुत कमी प्रतीत हुई, क्योंकि हवशी कुलियों से जमींदारी का काम नहीं चलता था। अतः उन्होंने विचारा कि भारत से कुछ कुली मंगाने चाहियें। उस समय भारतवर्ष के मद्रास प्रान्त में फ्रांसीसी आ चुके थे और कई एक स्थानों को अपने अधिकार में करके शासन कर रहे थे। उनमें ही भारत की सारी परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त करके भारत सरकार से मोरीशस में कुली भेजने की प्रार्थना की। सरकार ने भी तत्काल ही उस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और वे लोग स्वेच्छा पूर्वक यहां से कुली भेजने का प्रयत्न करने लगे। वे कितने प्रलोभन देकर लाखों की तादाद में हमारे गरीब अनपढ़ भारतीय भाइयों को बहका बहका कर यहां से वहां ले गए। उन बेचारों को कहा गया कि वहां पर पत्थर उलटने और चीनी फटकने से मोहरें मिलती हैं। लोग इस हालत में वहांपर ले जाए गए और वहां पर उनके बच्चे और उनकी स्त्रियों की जो दुर्दशा हुई है वह आप लोगों से छिपी नहीं है।

अब वहां की उनकी परिस्थिति सुनिये। तीन, पौने तीन लाख हिंदुओं में कोई सात आठ हज़ार आर्यसमाजी भी इस समय विद्यमान हैं। पाठक यह सुन कर आश्चर्य करेंगे कि वहां पर आर्यसमाजी कैसे पहुँचे (१) १५ साल पूर्व वहां पर श्री मणीलाल जी पधारे थे, उन्हों ने मोरिशस की बहुत कुछ हालत सुधारी। वहां की परिस्थिति के अनुसार आर्यसमाज ही उपयुक्त था, आर्यसमाजियों के लिये खुला क्षेत्र था। क्यों कि यहां के लोगों में प्रायः ईसाईयत की बू समागई थी। इस

हालत में इन्हें, शैवी वैष्णवी तथा सिख, कबीर पन्थी आदि कुछ नहीं कर सकते थे। इन के सुधार के लिये कोई धर्मवीर आर्यसमाजी नेता की आवश्यकता थी। उन्हों ने भारत वर्ष में पदार्पण करते ही-पूज्य श्रेद्धय लाहौर निवासी श्री डा० चिरञ्जीव भारद्वाज जी को मोरिशस् के सब हाल सुनाये, और वहां जाने के लिये आग्रह पूर्वक अनुरोध किया। अपने पीड़ित भाइयों का दुःख सुन कर उन से सहा न गया वह तत्काल ही वहां जाने के लिये प्रस्तुत हो गये। उन्हों ने अपने सुखों की कुछ भी परवाह न की। मोरिशस् जाकर उन्हों ने चार साल पर्यन्त अपने सारे सुख को तिलाञ्जलि देकर रात दिन घोर परिश्रम कर के चार साल में ३६ समाज कायम कर दीं, और एक प्रतिनिधि सभा। उन्हों ने किसी पार्टी का आश्रय नहीं लिया शुद्ध हृदय से वैदिक धर्म का प्रचार किया! दिनमें तो वे प्रचार करते ही थे परन्तु रात मेंभी २०-२०- मील पैदल चलकर भूखे प्यासे समाजें कायम की। जब उन को अवकाश मिलता था तब रात्रि में दो दो घण्टे वहां के लोगों को इकट्ठा कर के उन्हें आर्य भाषा और सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि पढ़ाये। लोगों को सन्ध्या और हवन करना बड़े प्रयत्न से सिखाया। हजारों कष्ट सह कर गवर्नमेण्ट से हमारे अधिकारों की रक्षा की, लाखों की तादाद में भारतीय भाइयों को कष्ट में देख कर उन्हों ने भारत से नवीन कुली मंगाने वालों का घोर प्रतिवाद किया। उस घोर प्रतिवाद का फल यह हुआ कि उस बार कुलियों का भेजना बन्द कर दिया गया। इधर उनकी धर्मपत्नी स्त्रियों में रात दिन प्रचार करती रही और उन्हों ने भी स्त्रियों के लिये स्त्री समाज स्थापित किया। और उन को हिन्दी बोलना पढ़ना सिखाया। उन के दो पुत्र थे एक ९ वर्ष का और दूसरा १२ वर्ष का उन दोनों ने भी माता पिता के अनुसार ही कुमार सभा की स्थापना की और कुमारों को रात्रि में अपने दो दो तीन २ घण्टा बचा कर हिंदी भाषा पढ़ाया। आज मोरिशस में ७ या ८ हजार आर्य समाजी विद्यमान हैं उस का श्रेय इस सम्मिलित परिवार को दिया जा सकता है। इन के बाद वहाँ पर--श्री. १०८ पूज्य स्वामी--स्वतन्त्रानन्द जी पधारे थे। उन्हों ने भी वहां पर २॥ साल तक घोर परिश्रम कर के समाज में--जागृति पैदा करदी। उन्होंने एक परोपकारणी सभा की स्थापना की और उसे गवर्नमेण्ट से रजिष्टी भी करवाई। प्रत्येक जिले में भ्रमण करके उन्हों ने वैदिक धर्म का प्रचार किया और लोगों को संस्कार करवाने के लिये उत्तेजित किया। इसी बीच में उन्हें नेत्र की बिमारी से बाधित हो कर भारत वर्ष लौटना पड़ा। मोरिशस् का भाग ही कहिये कि उन्हों ने भी कहीं पर किसी पार्टी का प्रचार नहीं किया।"

परन्तु उनके बाद एक दो विद्यार्थी वहां गए हैं उनकी पक्षपात कूट नीति से वहां के भोले लोगों में भी पार्टीका बीज अंकुरितहो चुका है। इससे यहां के लोगोंमें भीषण गृहकलह पैदा हो रहे हैं। पहिले वहां पर एक ही प्रतिनिधि सभा थी, और सब समाजें उन के आधीन थी अब तो कई प्रति निधि सभायें खुल गई। कोई आर्य प्रति निधि सभा कोई सतधर्म-प्रचारक सभा कोई हिन्दू महा सभा कोई कालेज महासभायें खुल गई हैं इत्यादि कारणों से मोरीशस में विशेष कलह पैदा हो गयाहै कुछदिन हुये यहां से श्री मेहता जैमिजी वहां पर पधारे थे जिस से और अलग एक पार्टी खड़ी हो गई। आज कल वहां पर श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी प्रचार कर रहे हैं। उन की भी एक अलग पार्टी बन गई है। इन कारणों से मारीशस में इस समय बड़ा हलचल मच रहा है। यदि और कुछ दिन ऐसा ही रहा तो समाज की बड़ी हानि होगी। अतः इस समय सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ताओं को चाहिये कि जरा इधर भी खबर ले

नहीं तो इन के नये प्रचारकों की करतूत से एसी आग भड़क उठेगी जिस का बुझाना विद्वानों के लिए भी दुष्वार हो जायगा। जैसे वे और २ प्रान्तों पर जोर दे कर इस समय विशेषतया सुधार का कार्य कर रहे हैं, उसी तरह कोई सुयोग व्यक्ति को भेज कर मोरीशसके दुःखित आर्य भाइयों का कष्ट दूर करेंगे तो वहाँ की जनता उन्हे कोटिशः धन्यवाद देगी।

लक्ष्मणदत्त विशारद
प्रवासी छात्र

—:o:—

महान् देश-व्यापी प्रतिवाद

सार्वदेशिक सभा ने श्री भैरोंसिंह व बद्रीश ह जी की क्रूर हत्या तथा बरेली के हिन्दुओं पर मुहर्रम पर किए गए अत्याचारों पर शोक प्रकट करने व सरकार को उसके न्याय का परिचय देने के लिए एक विज्ञप्ति निकाली थी कि तमाम भारतवर्ष मे ता० ७ को स्थान स्थान पर सभायें करके सरकार को यह चेतावनी दी जावे कि मुसलमानों के द्वारा हिन्दू धर्म व जनता किस प्रकार सताई जा रही है। उस विज्ञप्ति के फल स्वरूप मे स्थान स्थान पर जो कार्रवाइयां हुईं उनका निम्नलिखित सारांश है:-

दिल्ली के ५०००० हिन्दुओं की सरकार को चेतावनी

७ अगस्त सायंकाल को ६ बजे दिल्ली के हिंदुओं का एक अपूर्व जलसा रायसाहिब ला० केदारनाथ जी एम. ए. की अध्यक्षता में कम्पनी बाग में हार्डिङ्ग लायब्रेरी के पास हुआ। जलसे में उपस्थिति का अनुमान ५० हजार का किया जाता है। शहर के बहुत से हिन्दुओं ने ४ बजे से ही अपनी २ दुकानें बन्द कर दी थीं। विशेष कर बजाजा तो बिलकुल ही बन्द होगया था। जलसे के मैदान में पुलिस भी पर्याप्त संख्या में मौजूद थी। चारों ओर से जलसे को पुलिस ने घेरा हुआ था। जलसे में आर्यसमाजी, सनातनधर्मी जैन और सिक्ख आदि २ लगभग सभी मतों के मनुष्य पर्याप्त संख्या में सम्मिलित थे। प्रधान के चुनाव के पश्चात ला० जमनादास जी ने एक हिन्दी कविता पढ़कर सुनाई जोकि इसी अवसर के लिए बनाई गई थी। इसके पश्चात श्री स्वामी रामानन्द जी सन्यासी ने निम्न प्रस्ताव पेश किया।

प्रस्ताव १

गत मुहर्रम के अवसर पर बरेली में आर्य समाज तथा आर्यसमाजियों के साथ मुसलमानों तथा पुलिस के कुछ अफसरों ने जो अन्याययुक्त व्यवहार किया है, उस पर यह सभा घोर दुःख और रोष प्रगट करती है। सभा की सम्मति में शहर कोतवाल और तहसीलदार का जूते पहने वेदी पर चढ़ना, साप्ताहिक अधिवेशन में विघ्न डालना फिर निरपराध आर्य्य पुरुषों को गिरफ़्तार करना, बारहदरी के पुलिस सब इन्स्पेक्टर का कुछ आर्य पुरुषों के जनेऊ उतरवाना अन्याययुक्

और बलात्कार पूर्ण कार्य था। इस से आर्य्यसमाजियों के धार्मिक अधिकारों पर हस्तक्षेप और धर्म का अपमान हुआ है, जिससे आर्य जगत में गहरा असन्तोष और क्षोभ उत्पन्न होगया है। सरकार का कर्तव्य है कि वह इन सब अन्याय पूर्ण कार्यों के लिए उत्तरदाता अधिकारियों तथा अन्य अपराधियों को उचित दण्ड देकर आर्य पुरुषो के हृदयों को आश्वासन दें और आगेके लिए ऐसा आदेश दे जिस से इस प्रकार के धर्म का अपमान करने वाले कार्य असम्भव हो जाये। आपने अपना भाषण करते हुए कहा कि बरेली आदि की घटनाओ ने निःसन्देह अमन व अमान से जीवन बिताने वालों की हालत खतरे में डाल दी है। जिस प्रकार से मजहबी दिल आजारी बरेली में की गई यदि वहाँ हिन्दू लीडर अमन पसंद और बुरदवारी से काम न लेते तो बरेली की गलियों में खून की नदियाँ वह जातीं।

इस के पश्चात डा० आर० बी० काली ने कहा कि हिन्दू जाति सदैव से कानून पसन्द रही है पर अब विविश किया जा रहा है कि हम भी दूसरों की तरह कानून के खिलाफ काम करें। मैं इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ और साथ ही एक तजवीज करता हूं कि आपको चाहिए कि हर एक बच्चे के हाथ में सूअर की मूर्ति बनवादें ताकि मुसलमान उनको हाथ न लगा सकें।

इसके पश्चात ला० माठूमल ने समर्थन करते हुए कहा कि बरेली के आर्य भाइयों पर जो अत्याचार हुए हैं वह आपको मालूम हो गये हैं। इस कार्रवाई से केवल आर्य भाइयों का ही नहीं वरञ्च २२ करोड़ हिन्दुओं का अपमान हुआ है। अब स्पष्ट मालूम होता है कि सरकार अमन पसन्द लोगों के साथ न्याय करना नहीं चाहती।

ला० अजुध्याप्रशाद जैन ने भी इसका समर्थन किया।

ला० विसन स्वरूप कौयले वाले ने समर्थन करते हुए कहा कि इस समय हिन्दुओं के जीवन और हत्या का प्रश्न है। सीमा प्रांत के हिंदू अपना घर बार छोड़ कर निकल आए हैं। उन्हों ने वीर हकीकत राय से भी बढ़कर यह बतला दिया है कि हिंदू जाति आज भी धर्म के लिए मरने को तैयार है। (तालियां)

इनके पश्चात श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी के समर्थन पर प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ।

प्रस्ताव नं० २

हिन्दुओं की यह सार्वजनिक सभा देश के भिन्न २ स्थानों में आर्य समाजो कार्य कर्ताओं के धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा मारे जाने के समाचारों पर गहरी चिंता और उनके धर्म के लिए बलिदान हुये आर्य पुरुषों के कुटुम्बियों से हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है इस सभा की सम्मति है कि ऐसी सब हत्यायें केवल दीवाने व्यक्तियों के पागलपन का परिणाम नहीं प्रत्युत एक गहरी साजिश का परिणाम है। आर्य समाज के सर्वमान्य नेता श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या भी उसी साजिश का फल था। यदि सरकार श्री स्वामी जी के बलिदान के पीछे षड्यन्त्र को खोज कर अपराधियों को सजा दे देती और अन्य आर्य पुरुषों की हत्यायें न होती और अब भी यदि असली अपराधियों को न पकड़ा गया, तो यह रोग फ़ैलता हो जायेगा। इस कारण यह सभा पूरे बल के साथ सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इन हत्याओं की तह में कार्य करने वाली साजिश का पता लगा कर अपराधियों को सजा दे अन्यथा सम्भव है परिणाम भयङ्कर हो।

पं० नेकीराम जी शर्मा महामन्त्री हिंदु महासभा ने दूसरा प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि सरकार ज्यादातर जो हिंदुओं के पैसे से चैन करती है इस ओर ध्यान नहीं देती। श्रीस्वामी जी

को धमकी पत्र मिले थे। यदि सरकार साजिश को पकड़ती तो वह काण्ड न होता। जिसका फल यह हुआ कि हिंदू-रत्न श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का खून हो गया। पर सरकार ने फिर भी ध्यान न दिया जिसका फल यह हुआ कि आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता ला० बद्रीशाह का बहराइच में और भैरोंसिंह का अजमेर में कत्ल हुआ। सरकार दूसरे देशों से सुलह करना चाहती है पर भारत में जिन हिंदुओं के बल पर वह राज्य कर रही है उनकी ओर ध्यान नहीं देती।

स्वामी चिदानन्द जी ने अनुमोदन करते हुए कहा कि शांति का अंत हो गई क्योंकि एक के बाद दूसरा खून हुआ और तीसरा हुआ और दूसरों को पत्र आ रहे हैं।

लाला श्री कृष्णदास जी लोहिया मंत्री महाबीर दल दिल्ली ने कहा कि हिंदुओं में भिन्न भिन्न मत वाले पृथक २ उन्नति चाहते हैं। यदि सनातन धर्मी आर्य समाजी जैन सिख सब प्रण करलें कि हम जो कुछ करेंगे, वह हिंदू होकर करेंगे तो सफलता अधिक होगी। इनके पश्चात् ला० मङ्गतराय जी कोयले वाले के समर्थन करने पर प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ।

प्रस्ताव नं० ३

[क] पञ्जाब के मुसलमानों के रंगीला रसूल की आड़ में आन्दोलन से प्रभावित होकर सीमाप्रांत के नवाबों तथा वहाँ के मुसलमानों ने हिंदुओं पर जो अत्याचार किए हैं, उन पर दुःख और रोष प्रकट करती है। अत्याचार पीड़ित हिंदुओं के साथ सहानुभूति प्रकट करती है और हिंदुओं से अनुरोध करती है कि वह उन अत्याचार पीड़ित हिंदुओं को आर्थिक सहायता देकर क्रियात्मक स्नेह का प्रमाण दें।

[ख] इस सभा को यह देख कर दुःख होता है कि भारतीय सरकार सीमांत में बसने वाली हिंदू प्रजा के अधिकारों की रक्षा में असमर्थ रही है। वह सरकार से बल पूर्वक आग्रह करती है कि वह उन पीड़ित हिंदुओं के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करती हुई उनकी जान व माल की रक्षा का अत्यन्त शीघ्र प्रबंध करे।

पं० इन्द्र जी ने तीसरा प्रस्ताव पेश करते हुए कहा कि सीमाप्रांत पर जो कुछ हो रहा है वह सरकार हिंदुओं और मुसलमानों की परीक्षा है जिम्मेवारी सरकार की है। सरकार की ताकत का दिवाला निकल गया है।

ला० देशबन्धु गुप्ता ने समर्थन करते हुए कहा कि हिंदुओं की सन् २० में खिलाफत की सहायता करने में परीक्षा हो चुकी। अब जो सीमांत पर हिंदुओं पर जुल्म हो रहे हैं। उनके लिए कहा जा रहा है कि यह कुदरती अमर है। हिंदुओं के विरुद्ध गंदी से गंदी पुस्तकें लिखी जा रही हैं लीडरों को कत्ल किया जा रहा है। फिर भी कांग्रेस में मुसलमानों को हकूक देने का प्रश्न आता है। सीमांत पर हिंदुओं पर घोर अत्याचार होता है। हिंदुओं को तन मन धन से उनकी सहायता चाहिए।

ला० सत्यनारायण गुड़वाले ने समर्थन करते हुए कहा कि हिंदुओं की आबादी ३ गुना ज्यादह है पर उनकी कामयाबी का राज यही है कि वह समय पर एक नहीं होते हैं और उनमें जाती खुदगर्जी नहीं है। इस लिये हमको अपना सङ्गठन करना चाहिए।

सरदार गुरबख्श सिंह जी ने कहा कि सरकारी राज्य के अन्दर आज हिंदुओं और सिक्खों को अपने घरों से निकाल दिया गया। मुसलमान लीडर भी इसके विरुद्ध आवाज नहीं उठते। सीमांत में खुल्लमखुल्ला इस्लामी राज्य बरता जा रहा है। सिक्खों ने इसमें क्या अपराध किया? वास्तव में सिक्ख और हिंदुओं ने जो माँस और नाखून का सम्बन्ध है वह टूट नहीं सकता। गुरु

महाराज ने हिंदुओं की रक्षा के लिए सिखों की फौज तैयार की थी । यह सब त्याचार हमारी निर्बलता का कारण है हम सब को एक हो जाना चाहिए । इसके पश्चात् पण्डित जानकीनाथ जी शर्मा के समर्थन पर प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ ।

प्रस्ताव नं० ४

यह जलसा उस लापरवाही व चुप्पीके विरुद्ध जो कुछ पंजाब सरकार ने उन्नसवीं सदी के महर्षि नामक प्रस्ताव और दिल्ली सरकार ने अखबार मनादी के "पसन्द करलो शुद्ध हो जाओ" रिसाला दीन दुनिया के 'फारम दिल्ली टू अहम दा बाद" व अखबार मुबलिग के "दयानन्दी व रामी" लेखों के लिखने और प्रकाशित करने वालों के विरुद्ध बार बार याद दिलाने के भी कानूनी कार्रवाई करने में दिखलाई है घोर विरोध करता है और हजूर वायस राय से दरख्वास्त करता है कि इन निहायत ही हतक आमेजू और हिन्दू आजार लेखों के लिखने और प्रकाशित करने वालों के विरुद्ध मुकद्मे चला कर उन को उचित दण्ड दें ।

डा० ज्ञान चन्द जी ने चौथा प्रस्ताव पास करते हुये कहा कि उन्नीसवीं सदी का महर्षि अहमदियों ने लिखा है । रंगिला रसूल पर तो इतना तूफान खड़ा किया गया था पर उन्नीसवीं सदी का महर्षि के सम्बन्ध में सरकार ने कुछ नहीं किया । ख्वाजा हसन निजामी को भी सरकार ने भूलकर कह दिया कि माफी मांगलो । फिर भी उसने लिख दिया कि मैंने माफी नहीं मागी पर सरकार ने टस से मस नहीं की । इस के पश्चात श्री पं० गंगाप्रसाद शास्त्री महोपदेशक स० धर्म सभाने इस का अनुमोदन और खलीफा हरी सिंह ने समर्थन किया अन्त में सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास हुआ ।

जलसे के प्रधान का भाषण ।

अन्त में प्रधान जी ने कहा कि मैं सब प्रस्तावों से सहमत हूं पर सब भाषणों से नहीं । क्योंकि औरों पर तो एतराज करते हो और स्वयं हिंदू विधवाओं पर जुलम करते हो अछूतों को सताते हो सहस्रों वर्षों के पश्चात भी तुम्हें बुद्धि नही आई कि तुम किस के साथ चल कर काम करो और किस के साथ मिल कर न करो । तुम ने एक बदबख्त जानवर को आस्तीन में रखा उसने तुम को काटा यह सब अपने कर्मों का फल है । तमाम हिंदू नेता विचार करें कि इस समय हमें क्या करना चाहिये । सीमान्त के हिन्दुओं की सहायता करो । अन्त में प्रधान के धन्यवाद देने पर जलसा समाप्त हुआ ।

पांच सहस्र के लगभग चन्दा वहीं सुनाया गया ।

संयुक्त प्रान्त

भारत वर्ष के अन्य प्रान्तों से यू. पी. में समाजों की सख्या अधिक है और यहां ही मुसलमानों का अत्याचार भी हुआ इसलिये प्रत्येक नगर व ग्राम२ में ता० ७ का सभा करके यू. पी. सरकार व भारत को उपरोक्त प्रस्ताव पास कर के भेजे गये जिस की लिपि सार्वदेशिक सभा को भी भेजी गई वही सूचनार्थ प्रकाशित की जाती है ।

मेरठ

७ अगस्त को ७॥ बजे टौन हौल में हिंदुओं की विराट सभा हुई-श्री कांग्रेस नेता प्यारेलाल जी शर्मा ने सभापति का आसन ग्रहण किया-उपस्थिति लगभग ४००० थी-श्री मति आ० प्र० सभा यू. पी. के प्रधान श्री घासीराम जी वकील, श्री चौधरी मुख्त्यासिंह जी वकील एम. एल. ए. श्री चौ० विजय सिंह जी एम. एल. ए- श्री ज्योतिप्रसाद जी वकील श्रीमान् विशम्भर दयाल जी, श्री पं० शिवदयाल व पं० इन्द्रमणी जी आदि के इन दो प्रस्ता-

वों पर रोषपूर्ण भाषण हुआ और खुले शब्दों में बरेली पर आठ समाजियों में किये गये अत्याचारों का विरोध किया गया भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि वह शहर कोतवाल व तहसीलदार व कलेक्टर को उचित दण्ड दे—

(२) श्री स्वा० श्रद्धानन्द, वीर भैरोंसिंह व महाशय बद्रीशाह के वध पर दुख प्रकट करते हुये सरकार को जताया गया कि वह उन षडन्त्रों का पता लगावे—

(३) सीमा प्रान्त के हिंदुओं के साथ मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों का घोर विरोध किया और हिंदू सभा व सार्वदेशिक से निवेदन किया कि वह इस पर उचित विचार विचारें।

कानपुर-इलाहाबाद—

बरेली में आर्य भाइयों पर किये गये अत्याचारों के सम्बन्ध में कानपुर इलाहाबाद में बड़ी २ महती सार्वजनिक सभायें हुई और मुसलमानों द्वारा बरेली में किये गये अत्याचार पर घोर विरोध किया गया-सरकार को चेतावनी दी गई कि वह अन्यायियों को कठोर दण्ड दे—साथ ही सभा ने उन मुसलमानों के दुर्व्यवहार और नीच कार्यों का भी घोर प्रतिवाद किया जो— सीमाप्रान्त के हिंदुओं के साथ किये जा रहे हैं- सीमाप्रान्त के हिंदुओं की आपत्ति पर दुख प्रकट किया गया और सरकार से प्रार्थना की गई कि वह शीघ्र इन अत्याचारों पर कार्रवाही करे।

अवध

जौनपुर, फ़ैजाबाद, बाराबङ्की, सीतापुर, उन्नाव, बहराइच आदि सभी छोटे बड़े शहरों तथा गावों में सार्वजनिक सभायें की गई और से प्रार्थना की गई कि वह बरेली के आर्य समाजियों पर मुहर्रम के समय जो अत्याचार मुसलमान सरकारी अधिकारियों की ओर से किया गया है इस पर पूर्णतया विचार करके अधिकारियों को घोर दण्ड देकर दुखी आर्य जगत को आश्वासन दे। सीमाप्रांत के मुसलमानों का हिंदुओं पर जो अत्याचार हुआ उसका प्रतिवाद किया गया और सरकार से प्रार्थना की गई कि वह उचित कार्रवाही करके हिंदुओं के दुखी हृदयों को शांत दे।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, बा० भैरोंसिंह व महाशय बद्रीशाह की मुसलमानों द्वारा की गई हुई हत्या पर शोक प्रकट किया गया और सरकार से प्रार्थना की गई कि षड्यन्त्र कारियों का पता लगा कर भविष्य के लिए हिंदू नेताओं की जान को खतरे से बचा कर दुष्टों को उचित दण्ड दें।

मुरादाबाद सहारनपुर अलीगढ़ बुलन्दशहर

भिन्न भिन्न प्रान्त के हिन्दू धर्म के सभी सम्प्रदाओं ने मिल कर मुसलमानों पर किए गए अत्याचारों का सार्व-जनिक सभायें करके घोर विरोध प्रकट किया और सरकार से प्रार्थना की कि आर्य समाजियों पर किए गए अत्याचारों के करने वालों को उचित दण्ड दिया जाय ताकि सन्तप्त हिन्दू हृदय शान्त हो जाये।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्री भैरोंसिंह जी व महाशय बद्रीशाह जी आर्य कार्य कर्त्ताओंके मुसलमानों द्वारा किए गए बध पर शोक प्रगट किया गया और धर्मान्ध आततायी मुसलमानों के षड्यन्त्र कारियों को कठोर दंड देने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया ताकि भविष्य के लिये ऐसी घटनाएं उपस्थित न हों।

सीमा प्रांत के हिन्दू भाइयों की करुणाजनक कहानी पर सहानुभूति दर्शाई गई।

आगरा

ता० ७ की शाम को आगरा निवासियों की एक महती सभा में बरेली में सरकारी कर्मचारियों की लापरवाही से मुसलमानों द्वारा आर्य

समाज की वेदी का अपवित्र किया जाना व आर्य पुरुषों के यज्ञोपवीतों का भ्रष्ट किया जाना आदि पर रोषपूर्ण वक्तायें दी गईं और सरकार को प्रस्तावों की लिपि भेजकर प्रार्थना की गई कि वह अपने न्याय पूर्ण शासनकाल में ऐसे हिन्दू धर्म पर होने वाले अत्याचारों को पूर्णतया विचारे और आततायी मुसलमान दुष्टों को कठोर दण्ड दे।

आर्य पुरुषों के अमानुषिक कृत्यों के षड्यन्त्रकारियों को पूर्ण दण्ड देने की सरकार से प्रार्थना की गई।

सीमा न्त के दुखित-हिन्दू भाइयों को सहायता देने की और उनके साथ पूर्ण सहानुभूति दिखाने का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ—

इसके अलावा संयुक्त प्रान्त में सिलदर शाहजहांपुर, बरेली पीलीभीत, मैनपुरी, बृन्दावन, इटावा, गाजियाबाद, हापुड़, मसूरी धामपुर, बिजनौर, शिकोहाबाद, अमरोहा, सरधना, तथा अन्य प्रत्येक स्थानों पर सभा क के उपरोक्त प्रस्तावों को पास कर उनकी कौपियां प्रांतीय सरकार व भारत सरकार को भेजी गई हैं।

पञ्जाब

लाहौर

ता० ७ को भिन्न भिन्न स्थानों में सभाये की गई सभी सम्प्रदाय के मनुष्य उपस्थित थे सर्वसम्मति से ये प्रस्ताव पास हुए:—

(१) बरेली में मुहर्रम के अवसर पर आर्यसमाज मन्दिर में शहर कोतवाल का व० तहसीलदार का जो अन्याय युक्त कार्य या उसकी पूर्ण निन्दा की और सरकार को सूचना दी ताकि भविष्य के लिए मुसलमानों का उत्साह न बढ़े और दुखित आर्य जगत् को आश्वासन देवे।

(२) गत महीनों में आर्य कार्यकर्ताओं का मुसलमान आततायियों के द्वारा बध पर रोष और शोक प्रकट किया गया और उनके कुटुम्बियों के साथ हार्दिक सहानुभूति करके सरकार से प्रार्थना की गई कि वे षड्यन्त्रकारिणी समिति का पता लगावे जिससे आगे के लिए कोई भय न हो।

(१) सीमान्त प्रान्त के हिन्दू भाइयों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट की गई और सरकार से प्रार्थना की गई कि वे ऐसे अत्याचारों से हिन्दू और सिक्खों को बचाए।

इन प्रस्तावों की लिपियां पञ्जाब सरकार, भारत सरकार और यू० पी० सरकार को भेजी गई।

अम्बाला

रविवार तदनुसार अगस्त १९२७ को ८ बजे प्रातःकाल हिन्दू हौल अम्बाला में सर्व हिन्दू जनता की बैठक की गई और नाना विचारों के अनन्तर सर्व सम्मति से निम्न लिखित विचार पास हुए:—

(१) हिन्दुओं की यह सार्वजनिक सभा देश के भिन्न भिन्न स्थानों में आ० समाजी कार्यकर्ताओं के धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा मारे जाने के समाचारों पर गहरी चिंता और शोक प्रगट करती है और उनके कुटम्बियों से हार्दिक सहानुभूति प्रगट करती है इस सभा की सम्मति है कि सरकार इन षड्यन्त्र कारियों और साजिशो का पता लगा कर अपराधियों को सजा दे।

(२) गत मुहर्रम पर बरेली में आर्यसमाज तथा समाजियों के साथ मुसलमानों तथा पुलिस के कुछ अफसरों ने जो अन्याययुक्त-व्यवहार किया है उस पर सभा दुख और रोष प्रकट करती है—सभा की सम्मति में शहर कोतवाल और तहसीलदार का जूते पहिले वेदी पर चढ़ना, साप्ताहिक अधिवेशन में विघ्न डालना, निरपराध आ० पुरुषों को गिरफ्तार करना और पुलिस इंसपेक्टर का आ० पुरुषों के जनेऊ उतरवाना अन्याययुक्त और

बलात्पूर्ण कार्य था–सरकार का कर्तव्य है कि इन अपराधियों को उचित दण्ड दे और आर्य पुरुषों के हृदय को आश्वशन दे।

इन प्रस्तावों की लिपि भारत सरकार, पञ्जाब सरकार व यू० पी० सरकार के पास भेजी गई है।

शिमला

श्री राजा नरेन्द्रनाथ जी की अध्यक्षता में शिमला निवासी हिंदुओं की एक सार्वजनिक सभा ता० ७ अगस्त को हुई–राजा साहब ने बताया कि मुसलमानों की आंख सदा आर्यसमाज पर है क्योंकि आर्य समाजी मुसलमानों के धर्म की वास्तविकता को दर्शाते हैं। इस प्रकार बता कर दोनों प्रस्ताव को सर्व सम्मति से पास किया गया।

पं० देवीचन्द ने बताला कि गवर्नमेंट कहती है कि हर एक आदमी को धार्मिक स्वतंत्रता है मसजिद के आगे बाजे का बजना पीढ़ियों से चला आता है तो फिर क्यों बरेली में बन्द करवाया गया।

पं० बुद्धदेव विद्यालङ्कार ने कहा कि हिंदू जाग रहे हैं वह दिन समीप आवेगा जब कि शिवाजी और गुरु गोविन्दसिंह की तरह हिंदू स्वतंत्रता से धर्म पर चलेंगे और मुसलमानों की धर्मांधता का नाम मिट जायगा।

सीमाप्रांत के हिंदुओं से सहानुभूति का प्रस्ताव पास किया गया।

पेशावर

आर्य समाज मन्दिर पेशावर में ७ तारीख को सर्व सम्मति से यह दो प्रस्ताव पास किये गये:–

[१] बरेली के समाज मंदिर में मुसलमानों द्वारा सताये हुए आर्य पुरुषों की दशा पर विचारते हुए सरकार से प्रार्थना की गई कि वह अन्यायी सरकारी कर्मचारियों को कठोर दण्ड दे।

[२] आर्य पुरुषों की अमानुषिक निरपराध हत्याओं पर सरकार से प्रार्थना की गई कि धर्मांध आततायी मुसलमानों की षड्यन्त्रकारी समतियों का पता लगावे। प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुये।

स्यालकोट, शिकारपुर, लुधियाना, हिसार

पञ्जाब के सभी आ० समाजों में चाहे कौलेज सेक्शन के या दूसरे ता० ७ को सभायें करके बरेली दिवस मनाया। सभी बड़े २ शहरोंमें, विराट सभायें करके सरकार को सूचना दी कि इस प्रकार का अन्याय पूर्ण कार्य जैसा कि बरेली में किया गया है गवर्नमेंट का मुसलमान धर्मांधों का पक्षपात है और यह प्रस्ताव पास किये गये:–

[१] बरेली में मुहर्रम के अवसर पर मुसलमान कोतवाल व तहसीलदार का आ० समाज की वेदी पर चढ़ना और आ० पुरुषों के जनेऊ उतारना गवर्नमेंट के न्यायपूर्ण शासन में धब्बा लगाता है। यह सभायें गवर्नमेंट यू० पी० भारत सरकार, व पञ्जाब सरकार से प्रार्थना करती है कि मुसलमानों के इस प्रकार के हौसलों को रोके।

[२] आ० पुरुषों के वध से आज हिंदू समाज को जो धक्का पहुँचा है उसने लिए सभा शोक प्रकट करती है। और गवर्नमेंट से प्रार्थना करती है इस प्रकार के षड्यन्त्रकारियों का पता लगावे।

[३] सीमाप्रांत के हिंदुओं के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है।

इसके अलावा लायलपुर, रावलपिंडी, गुरदासपुर, फालका, कांगड़ा, शाहपुर, डलहौसी अन्य सभी छोटे बड़े स्थानों में ता० ७ को सार्वजनिक सभायें करके प्रस्ताव की सूचियां पञ्जाब सरकार, यू० पी० सरकार और भारत सरकार को भेजी गई और सभी स्थानों पर मुसलमानों के अत्याचार की निन्दा व सरकार का हिंदुओं की तरफ लापरवाही दर्शाई गई।

सिन्ध
किरांची

ता० ७ को करांची नगर में हिंदुओं की एक विशाल सार्व जनिक सभा हुई। सभापति का स्थान डा० चौथराम जी ने सुशोभित किया। बहुत सी वक्तृतायें हुई और अन्त में निर्विघ्नता निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए।

[१] हिंदुओं की यह सभा आर्य समाजी कार्य कर्त्ताओं को को भिन्न २ स्थान पर मारे जाने के लिये शोक प्रगट करती है और सभा की सम्मति है कि ये हत्यायें किसी षड़यन्त्र का परिणाम है। इस लिये यह सभा पूरे बल के साथ सरकार से प्रार्थना करती है कि वह हत्यारों और साजिश का पता लगाकर उनको सजा दे।

[२] गत मुहर्रम पर आर्य समाज बरेली में मुसलमानों ने जो अत्याचार किया है उस के लिये यह सभा बड़े वेग से रोष प्रकट करती । सभा की सम्मति में शहर कोतवाल व तहसीलदार का आर्य समाज की वेदी पर चढ़ना, आर्य समाजियों के जनेऊ उतारना अत्यन्त जुर्म और बलात्कार कार्य था। इस के लिये यह सभा सरकार से प्रार्थना करती है कि अत्याचारियों को उचित दण्ड दे और दुखित आर्य पुरुषों को अश्वाशन दे जिसमें भविष्य में ऐसे कार्यों का होना असम्भव हो जाय।

हैदराबाद, शक्खर, लाड़काना, मुलतान

आदि में निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकार हुए—

[१] हिंदुओं की यह सार्व जनिक सभायें जिसमें सनातनी आर्य समाजी, सिक्ख तथा जैनी आदि सब मतों के सदस्य उपस्थित हैं। सीमांत प्रांत के रहने वाले हिंदू, सिक्ख परिवारों को अपने २ पैतृक स्थान से वहाँ के शासकों द्वारा निकाल दिया जाने में अत्यन्त चिन्ता, उद्विग्नता और सहानुभूति प्रकटकरती हैं और भारत सरकार से प्रबल शब्दों में यह निवेदन करती है कि वह हिंदू और सिक्ख अधिकारों व स्वत्वों की रक्षा करे।

[२] यह सभायें देश के भिन्न २ स्थानों पर आर्य समाजी कार्य कर्त्ताओं को मुसलमानों द्वारा मारे जाने पर गहरी चिन्ता और शोक प्रकट करती है और आर्य पुरुषों के कुटुम्बियों से हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती है यह सभायेंऐसे दिवाने मुसलमानों को किसी साजिश की गुप्त समिति का सदस्य समझती है इस कारण सरकार से प्रार्थना करती है कि वह अपराधियों का पता लगाकर उनको घोर दण्ड दे।

[३] गत मुहर्रम के अवसर पर बरेली में आर्य पुरुषों पर मुसलमान सरकारी अधिकारियों द्वारा जो अत्याचार हुआ है उसका घोर विरोध करती है। सभाओं की सम्मति में शहर कोतवाल और तहसीलदार का जूते पहिनें वेदी पर चढ़ना सप्ताहिक अधिवेशन में विघ्नडालना, फिर निरपराध पुरुषों का गिरफ्तार करना और बारहदरी के पुलिस इन्सपेक्टर का जनेऊ उतारना अन्यान्य युक्त और बलात्कार पूर्ण कार्य थे जिससे आर्य जाति में गहरा असन्तोष उत्पन्नहोगया है सरकार का कर्तव्य है वह इन अन्याय पूर्ण कार्यों के उत्तर दायित्व को उचित दंड देकर सम्हाले और आगे के लिये अपमान जनक कार्यों को रोकें।

राजस्थान

अजमेर में ता० ७ को विशाल सभा हुई जिस में निम्न प्रस्ताव पास किये गयेः—

(१) यह सभा आर्य समाजी कार्य कर्ताओं के भिन्न २ स्थान पर मुसलमानों द्वारा मारे जाने पर गहरी घृणा और शोक प्रकट करता है इस सभा की सम्मति में ऐसी हत्याये एक किसी गहरे षडयन्त्र के परिणाम हैं इस लिए यह सभा बलपूर्वक सरकार से प्रार्थना करती है कि सरकार इन साजिशों का पता लगा कर अन्यायियों को उचित दण्ड दे।

(२) गत मुहर्रम के अवसर पर आर्य समाज

बरेली में किये गये अत्याचारों पर घोर रोष प्रकट करती है इससे आर्य जगत में खलबली मच गई गई है। यह सभा सरकार से प्रार्थना करती है कि वह उन ०.न यी मुसलमानों शाशकों को उचित दण्ड दे।

धोलपुर, बीकानेर, आबू रोड़, डीग

राजपूताने के बड़े २ शहरों में ता० ७ को बरेली दिवस मनाने में बड़ी सभायें हुईं। उपयुक्त दो प्रस्ताव पास करके भारत सरकार, यू० पी० सरकार वसार्वदेशिक सभा को उनकी कापियां भेजी गई जिन्हें सब सूचनार्थ प्रकाश करते हैं।

बड़ी २ प्रभावशाली वक्तृतायें दी गई और सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुएः—

(१) बरेली में आर्य समाज पर मुसलमान अधिकारियों द्वारा जो अत्याचार हुए हैं उनकी ये सभायें घोर निन्दा और गहरी चिन्ता प्रकट करती हैं और सरकार से प्रार्थना करती है क वे दुःखी आर्य समाजियों को आश्वासन दे और अन्यायी अधिकारियों को उचित दण्ड दे।

(२) स्थान २ पर आर्य कार्यकर्ताओं के मुसलमानों द्वारा वध किये गये जाने पर यह सभा शोक प्रकट करती है और ईश्वरसे प्रार्थना करती है कि उनकी आत्माको शान्ति और कुटुम्बियोंको सुख मिले और सरकार से प्रार्थना करती है कि वह इस प्रकार की गुप्त सम्मतियों का पता लगा कर अन्यायियों का दमन करे।

इसके अलावा ग्वालियर, कोटा, उदयपुर, नजफगढ़, शाहपुर आदि अन्य स्थानों के प्रस्तावों की लिपियां भी हमारे पास हैं जिनको हम स्थान की कमी के कारण अलग २ प्रकाशित नहीं कर सकते—यहीं दो प्रस्ताव (१) बरेली में मुसलमानों द्वारा किया हुआ अत्याचार (२) आर्य पुरुषों का भिन्न २ स्थान पर वध—पर प्रस्ताव पास हुए और यू० पी० सरकार और भारत सरकार व समाचार पत्रों में भेजे गये।

मध्यप्रान्त

मध्य प्रान्त भी सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत होने से यहाँ भी भिन्न स्थानों पर ता० ७ को सभायें हुईं, जबलपुर आर्यसमाज गन कैरिज फैक्टरी में एक महती सभा हुई जिसमें उपरोक्त दो प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास किये गये।

(१) बरेली पर मुसलमानों ने जो अत्याचार किया उसका यह सभा घोर विरोध करती है और सरकार से प्रार्थना करती है कि वह अन्यायियों को दण्ड व दुखी आर्य समाजियों को सन्तुष्ट करे।

(२) स्थान २ पर आर्य पुरुषों को दुष्ट मुसलमान गुण्डों द्वारा किये गये वध पर यह सभा सरकार को बताती है कि यह कार्य किसी षडयन्त्र कारिणी कमेटी का है। इसलिए सरकारको उचित है कि उसका पता लगा कर अन्यायियों को दण्ड दे।

खण्डवा, मड़ी, निवाड़, मलहारगञ्ज, चाँदूर, इलचपुर आदि स्थानों में भी यही प्रस्ताव पास करके भारत सरकार, यू० पी० सरकार कलेक्टर बरेली, व सार्वदेशिक सभा को भेजे गये हैं।

बम्बई

बम्बई में ता० ७ आर्य समाज मन्दिर में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुएः—

(१) हिन्दुओं की यह सभा आर्यसमाज मन्दिर पर बरेली में जो अत्याचार किये गये हैं उन पर उनका पूर्ण रीति से प्रतिवाद करती है और सरकार से प्रार्थना करती है कि वह उन अन्यायी मुसलमान अधिकारियों को उचित दण्ड दे और दुखी आर्य जगत को दिलासा दे।

(२) स्थान २ पर आर्य पुरुषों का मुसलमानों द्वारा किये हुए वध पर यह सभा शोक प्रकट करती है और सरकार से प्रार्थना करती है कि इस गुप्त सम्मिति का पता लगा कर उनको उचित दण्ड दे।

जौनपुर मिर्जापुर

आदि अन्य स्थानों पर भी सभायें हुईं और सब जगह से प्रस्ताव पास करके वायसराय महोदय, यू० पी० गवर्नर, प्रान्तीय सरकार व सार्वदेशिक सभा को भेजे।

बिहार बङ्गाल

कलकत्ता में ता० ७ अगस्त को आर्य समाज मन्दिर में सब हिन्दुओं की एक महती सभा हुई और सर्व सम्मति से निम्न प्रस्ताव पास होकर वायसराय महोदय, बङ्गाल सरकार, यू० पी० गवर्नर तथा सार्वदेशिक सभा को भेजे गए —

(१) यह सभा स्थान स्थान पर मुसलमानों द्वारा आर्य पुरुषों के बध पर शोक प्रकट करती है और सरकार से प्रार्थना करती है कि ऐसी गुप्त समितियों को उचित दण्ड देकर आर्यसमाज को धैर्य दे।

(२) बरेली में मुहर्रम के अवसर पर मुसलमानों द्वारा आर्यसमाजियों पर किए गए अत्याचार का पूर्ण विरोध करती हैं और सरकार से प्रार्थना करती है कि वह ऐसे अन्यायी अधिकारियों को जिनके कारण झगड़ा उत्पन्न हुआ उचित दण्ड दे।

पटना में ता० को दानापुर, रंगमपुर, बढ़ में महती सभायें हुई और सर्व स्वीकृति से निम्न दो प्रस्तावों को पास करके सरकार को सूचना दी गई:—

[१] यह सभायें स्थान २ पर आर्य पुरुषों के मुसलमानों द्वारा वध किया जाने पर गहरी चिंता और शोक प्रकट करती है और सरकार से प्रार्थना करती है उन गुप्त षडयन्त्रकारिणी सभा के कार्य कर्त्ताओं को उचित दण्ड दे जिससे प्रजा की शाँति में विघ्न न पड़ता हो।

[२] बरेली में गत मुहर्रम के अवसर पर मुसलमान अधिकारियों द्वारा आर्य पुरुषों पर जो अत्याचार हुए उनका यह सभायें घोर विरोध करती हैं और सरकार से प्रार्थना करती है कि उन मुसलमान अधिकारियों को दण्ड दिया जाय।

इनको लिपियां भारत सरकार, यू० पी० गवर्वमेंट और प्रांतीय सरकार को भेजी गई।

इसके उपरान्त मुजफ्फरपुर, खड़गपुर, आरा, कमेगैय (दरभङ्गा) रांची तथा अन्य स्थानों में भी सभायें हुई और यही प्रस्ताव पास करके वायसराय महोदय, प्रान्तीय सरकार, यू० पी० गवर्मेंट तथा सार्वदेशिक सभा को भेजी गई।

मद्रास

मद्रास में भी ता० ७ की शाम को एक सभा हुई जिसमें बरेली के मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों और आ० पुरुषों के स्थान २ पर मुसलमानों द्वारा किए गए वध पर प्रस्ताव पास हुए जिनकी सूचना सरकार व सार्वदेशिक सभा को दी गई है।

बरमा

बरमा में भी मर्चीना, माण्डले, रंगून आदि स्थानों में भी ता० ७ को सभा करके यही प्रस्ताव पास किये गये हैं।



सामाजिक जगत्

अनुकरणीय दान

मोमनेर आगरा के पं० भोलानाथ जी की विधवा श्रीमती मथुरादेवी ने अपना एक बड़ा गोदाम जो बारह भाई की गली बेलनगञ्ज, आगरा में स्थित है और जिसका मूल्य दस हजार रुपये के लगभग है दान दिया।

सहकारी मन्त्री।

मेरठ में अछूतोद्धार का देखने योग्य दृश्य

हर्ष का समाचार है कि शहर मेरठ निकट केसरगंज मंडी में सनातन धर्म के प्रसिद्ध विद्वान कीर्तन कलानिधि श्रीमान पं० राधेश्याम जी कवि रत्न बरेली निवासी के शिष्य पं० ठाकुर दत्त जी कथा वाचक मेरठ निवासी [जो कि आज कल देहली महल्ला गंधी गली मे कथा बांच रहे हैं] के लघुभ्राता प० चमन लाल जी अछूत [जाटव] भाइयो को उत्साह पूर्वक रामायण की कथा सुना रहे हैं जाटव भाई य उपदेश बड़े प्रेम के साथ सुनते हैं और प्रति दिन जाटव भाइयों की संख्या कथा में बढ़ती जाती है हम आशा करते हैं कि जिस प्रकार पं० चमनलाल जीने अछूतोद्धार का सच्चा प्रमाण दिया है यदि इसी प्रकार पं० राधेश्याम जी और उन के शिष्य भी अछूतोद्धार की ओर कृपादृष्टि करें तो देश का बहुत कुछ उद्धार हो सकता है।

हिंदू सरे बाजार पीटे जाते हैं

'सौराष्ट्र' को पता लगा है कि कोडिनार [काठियावाड़] में हिंदू मुसलमानों में मत भेद बहुत बढ़ रहा है हिंदू सरे बाजार पीटे जाते हैं। धानी से सेना की सहायता बुलाई गई है। तीन मन्दिर भ्रष्ट कर दिये गये हैं मूर्तियां नष्ट करदी गई हैं। सरकार से तुरंत व्यवस्था करने और पुलिस से निमन्त्रण करने को कहा गया है।

ख्वाजा हसन निजामी माफी माँगे

पूना १२ अगस्त—पेशवा में शिवाजी पर जो घृणित लेख लिखा गया था उसके लिये लेखक ने माफी मांगली है।

परन्तु मरहट्टों का कहना है कि इस माफी से उन्हें सन्तोष नहीं है। उनकी मांग है कि जबतक 'पेशवा' के संरक्षक ख्वाजा हसन निजामी मांफी नहीं मांगेगे तबतक उनको तसल्ली नहीं हो सकती।

सरहद में नादिरशाही जारी है

पेशावर १३ अ०--श्री मन्त्री हिंदू सेवा संघ पेशावर से तार द्वारा सूचना देते हैं कि यहाँ एजेंसी टेशन अभीतक बन्द नहीं हुआ। मालव. [illegible]जन्ती और दुरगई में जोरदार आन्दोलन जारी है, और खिड़की अबफेल में हिंदुओं को तंग किया जारहा है हिंदुओं ने इस इलाके को खाली कर दिया है। अब समालखेल में मुसलमान मुल्कों के सामने हिंदुओं को खड़ा किया गया, और उनको हुक्म दिया गया कि वह तीन दिनोंके अन्दर बाकीइलाके को खाली करदें या मजहब इस्लाम को मानलें। मज़दूरों का हिंदुओं का असबाब उठाने को रोका गया कई परिवार ११ अगस्त को मर्दान पहुँचे और अपने पीछे सहस्त्रों रुपये की सम्पत्ति छोड़गये ६ अगस्त को महमान खाने के सामने हिंदू जज बात का खून करने के लिए शरए आम पर एक

बैल को शहीद किया गया। हिंदू दुकानों का बाय काट किया जा रहा है। और कानून के खिलाफ कार्रवाही करने के जरिये अख्त्यार किये जा रहे यह तार सेन्सर होकर आया था।

[मिलाप]

अब्दुलरशीद प्रिवी कौंसिल में

लंडन से समाचार आया है कि मि० ओस्बर्न ने लाहौर हाई कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध अब्दुल-रशीद का मुकद्दमा प्रिवी कौंसिल में रख दिया है। मि० ओस्बर्न ने मि० सीरल लार्ड आस्क्विथ, और मि० हौब्स को भी अपनी मदद के लिए ले लिया है। मि० हौब्स, प्रिंस आफ वेल्स के कानूनी मदद गार हैं। गर्मियों के लम्बे अवकाश के कारण मुकद्दमे की अगली तारीख निश्चित नहीं हो सकी है। मगर उम्मेद है कि अगले अक्टूबर में फिर से पेश होगी।

एक हिन्दु विधवा की दर्दनाक कहानी

नीचे एक विधवा की जो कि मुसलमान होकर शुद्ध की गई है आत्मकथा दी जाती है।

मेरा नामरामप्यारी और पिताका नाम नत्थू है। ग्राम वामोरो रियासत भोपाल की रहने वाली हूं। सात वर्ष की उम्र में मेरा विवाह मेरी जाति में हुआ था। मैं लोधी हूँ जब मैं तेरह वर्ष की थी तब मेरे पती मर गये। तीन चार वर्ष बाद स्वजातीय मनुष्य से मेरा पुनर्विवाह हो गया। मैं अपने इस पति के साथ इन्दौर रियासत कालदा गाँव में रहने लगी। यहां से मेरा पती एक वेश्या के साथ चला गया। वहाँ कुछ दिन अकेली रह अपने जान पहचान के ब्राह्मण के साथ इन्दौर चली गई। वहां से बुरहानपुर गई। वहां से जब मैं खंडवा [रियासत इन्दौर] जा रही थी, तब मेरे साथ बुरहानपुर स्टेशन से एक मुसलमान डिब्बे में बैठा। रास्ते में उसने मुझ से बात चीत की और जब मैंने कहा खंडवा जाती हूं तो उसने कहा मैं भी वहीं जाता हूँ। खंडवा स्टेशन पर वह मेरे साथ उतरा। मुझ से कहा कि रात्रि की गाड़ी से चलेंगे। उसने मुझे बहकाया और कहने लगा कि बुरहानपुर चलो तुमको दुकान लगा देंगे। मैं उस के साथ बुरहानपुर चली आई। यहाँ आने पर मुझसे मुसलमान हो जाने के लिए मेरे इनकार करने पर उसने अपने मकान की कोठरी में बंद कर दिया। दो तीन दिन तक खाने को भी नहीं देता था। जब कहीं बाहर जाता तो मकान को ताला लगा देता था। इस प्रकार ऐसी तकलीफ में लगभग ग्यारह महीने तक रही। एक दिन मौका पाकर मैं यहां से निकल गई। उसके घर में और तीन हिंदू औरतें हैं। उनमें से दो मुसलमान हैं। जिन्हें वह गये वर्ष यहां मुहर्रम के समय खंडवे से लाया था अब मैं करीब छः महीने से बहादरपुर में हरिसिंह के आश्रम में हूं और मैंने अपनी शुद्धि ता० २५-७-२७ को बुरहानपुर आर्य कुमार सभा द्वारा बहादुरपुर में करवाली है।

कलकत्ते के हिन्दुओं को बधाई

हर्ष की बात है कि कलकत्ते के पी० डबल्यू० डी० के स्वेच्छाचारी अधिकारियों ने व्रजनाथ शिवलिंग का ध्वंश कर हिन्दुओं के धार्मिक भावपर जो भयङ्कर आघात पहुंचाया था उसमें हिन्दुओं का परिश्रम सफल हुआ! बङ्गाल के गवर्नर ने हिन्दू डेपुटेशन से मिल कर कर्मचारियों की भूल स्वीकार की और इसबात कावचनदियाकिशीघ्र ही उसी स्थानमें शिवलिङ्ग स्थापित कर दिया जायगा। पुलिस कमिश्नर को इनके प्रबन्ध की आज्ञा भी दी गयी है। इस विजयलाभ के कारण कलकत्ते के हिन्दुओं को हार्दिक बधाई देते हैं। पर जिस उच्छृङ्खल कर्मचारियों ने हमारे देवस्थान का घोर अपमान किया उसे दंड देने की क्या व्यवस्था की गई है?

भीषण हाहाकार

गुजरात और उड़ीसा में अतिवृष्टि तथा बाढ़ के कारण प्रलय का दृश्य उपस्थित होगया है।

इस दैवी विपत्ति के कारण लोगों में भीषण हाहाकार मच हुआ है धनजनकी भीषण क्षति का अनुमान लगाना अभी कठिन है। अहमदाबाद ही में हजारों मकान नष्ट होगए हैं आसपास के गावों का तो प्राय नामनिशान तक मिटगया है। केवल बड़ौदा शहर में दो करोड़ की क्षति का अन्दाजा लगाया गया है। इधर उड़ीसे की प्रायः सभी नदियों में भीषण बाढ़ आजाने से लोगों का कष्ट चरम-सीमा तक पहुंचा हुआ है। बम्बई में गुजरात के बाढ़पीड़ित सहायता का आयोजन हो रहा है। बम्बई के गवर्नर की अध्यक्षता में उस दिन जो सभा हुई थी उसमें २ लाख १० हजार का चन्दा लिखा गया है। अन्य लोग भी सहाय ा के लिए आगे बढ़े हैं। ऐसे सङ्कट के समय सबको यथाशक्ति सहायता करनी चाहिए। बिहार निवासियों को भी इसके लिए उद्योग करना चाहिये।

———:o:———

दान-सूची सार्वदेशिक सभा मास जुलाई

श्रद्धानन्द भवन

धन		दाता
११॥।)	महाशय	महता चूड़ामणि आर्य टोला बेगम पुर (पटना) के उद्योगसे संगृहित
१०)	"	गुरु प्रसाद सिंह आर्य समाज साउतरी (पटना।)
१५)	"	रामावतार शर्म्मा मन्त्री आर्य समाज मोहन लाल गन्ज लखनऊ
१४३।)	"	मन्त्री आर्य समाज पेशावर सिटि
१०)	"	ए० वेकेन्ट गन्टूर
१९०-)		

मद्रास प्रचारक दलितोद्धार

धन		दाता
९५०)	"	सेठ जुगल किशोर बिड़ला
९५०)		

विविध दान

धन		दाता
२)	"	ब्रजनन्दनसिंह वकील बिजनौर
१)	"	जगनलाल प्रशाद जी सुजान गढ़
३		

श्रद्धानन्द भवन	१९०)
मद्रास प्रचारक व दलितोद्धार	९५०)
विविध दान	३)
अखबार की आय	७०)
वान प्रस्थाश्रम	१००)
श्री दलितोद्धार सभा	८२०॥)।
पुस्तक बिक्री	३४॥-)
सूदस्थिरराशि	१८६७)।
	४००५॥=)॥

ह० रघुनाथ प्रशाद पाठक
अकाउन्टैन्ट

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ।

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रंथ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को, वैदिक प्रेस की अपेक्षा कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रन्थ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है--इसके मंगाने के लिए शीघ्र आर्डर भेजने चाहियेः—

(१) आर्याभिविनय	।-)
(२) सत्यार्थ प्रकाश	१)
(३) काशी शास्त्रार्थ	-)।
(४) सत्यधर्म विचार	-)॥
(५) पञ्च महायज्ञ विधि	-)॥
(६) आर्योद्देश्य रत्नमाला	॥)
(७) संस्कार विधि	॥)
(८) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१॥)
(९) व्यवहार भानु	=)॥
(१०) वेद विरुद्ध मत खण्डनम्	=)।
(११) शिक्षापत्र स्वा० नरायण मत खण्डन	=)
(१२) भ्रमोच्छेदन	-)
(१३) भ्रान्ति निवारणम	=)
(१४) गो करुणानिधि	=)
(१५) स्वीकार पत्रम्	॥)
(१६) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय ३ रंगीन फोटो महर्षि स्वा० विरजानन्द का फोटो तथा ३ चित्र परोपकारिणी सभा के सभासदों व अधिकारियों के--	।)

पुस्तक मिलने का पता :—

आर्य सार्वदेशिक सभा, श्रद्धानन्द बाजार, दिल्ली।